



2011
ASHA ARCHIVES



वज्रपाणिः जिह्वाया उला कश्चन ॥ ८ ॥ ममात्सक मज्जायाय कार्त्तु सर्व निवर्तनार्थं किं त्वं सज्जायते मे शीघ्रं वीजस्य म
मनु रदं ॥ ९ ॥ अजद दिन जन्मान् कया मज्जा अत्राजित मूलं मया वायुः अत्रा मितं कश्चुलि ॥ १० ॥ अत्र ल
दिन वा इति किं नाम तिल दद शु दिन वाम जान् मह वल ॥ ११ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ १२ ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ १३ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ १४ ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ १५ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ १६ ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ १७ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ १८ ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ १९ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २० ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २१ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २२ ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २३ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २४ ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २५ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २६ ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २७ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २८ ॥
अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ २९ ॥ अत्रा मितं कश्चुलि स्वर्ग मधु स पन म म ॥ ३० ॥

धन
वज्र
१

पद्मा ४ नेत्र साग्वधजा ४ वायु वांग स्ववजा ४ गङ्गा नस्य नसवजा ॥ १९ ॥ पूर्व बाह्य पनिकाया ४ मेघा ४ मेघि
यक्रि निग ४ दजिनस्य पुनिकाया ४ वज्रपा निस्वर्ग द्याया ॥ २० ॥ पश्चिम सूर्य पनिकाया ४ लाके ग्वे नमः ४ ग्राय
सर्व निवल ल विष्कं मि ४ सम कर ४ इत्य उरु न ॥ २१ ॥ पूर्व द्वा प्रयमान क ४ दजिन दाने प्रह्ला नक ४ पश्चि
म द्वा ने प्रमा नक ४ उरु न दान विद्या नक ॥ २२ ॥ गङ्गा न को न अचर अज्ज को ॥ नर्कि नाज नेत्र सूर्य
निज दक्षु वायु वेस्य मद्वा वनः ॥ २३ ॥ य ४ नथा गत वाफा दिष्टि दिग विगं धि नारु व वनु पृथिवी मलु सरु वं पुव
रु क वच ॥ २४ ॥ ॐ तिग्री वज्र सत्त काय स्य नथ गत वाफ गनं समा फं ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ यध माणा दि ॥
ॐ नमा वक्षाय ॥ गुरु वत मा धर्माय ॥ नायि ते न मा सुदाय ॥ मरु ले म नमः ॥ ॥ यद वा सं नि म नो वन क नक
म न म लि ने य च य का पा ता न थ रु जं ग म सु नि म ति कि न ॥ ॥ धरु स र्वा ध का ना ४ के ला अ मि वि ला से प्र मू दि त
ह द या मे च वि द्या ध ने द्रा रु मा ज द्वा न रु तं मू नि व ल व च नं ॥ ॥ गु मा या नि स र्व आ यां ता ॥ ॥ पु का अ स न स न न न

२

सिधगंघर्वनाग॥१॥ कृष्णभुक्तिन्ननेषोदागवृद्धनिहनागकृष्णमादिदवाशापूजापचपचात्रेस्तुतुवननमीनमदि
तिन्नंरुयकृष्णहवाचयामियसमिन्नसीनसाः नमहामानसूत्रनमावकायनमाधर्मायनमासद्याय॥ ॐ नमा
श्रीमंशनाय॥१॥ अथवज्रधनसिमानइदीनदमक॥१॥ विलाकविजयिवीनागुचनार्कूलि
लाज्वर॥१॥ विदधपुत्रिका॥१॥ पानरुलकमत्रानन॥१॥ जालयनवज्रवनस्वकननमरुमू॥१॥ २॥
हकृन्तिन्नंगप्रमुखेत्रननेवज्रपानिहि॥१॥ इदीनदमकेविनेविनेवीरुत्सत्रुपिहि॥१॥ ३॥ उज्जालयति॥१॥ स्व
कनन॥१॥ पुस्तकवज्रकाटिहि॥१॥ पुष्पायमहाकननागगदर्थकने॥१॥ पत्रे॥१॥ हृष्टुष्टुगयमदिने॥१॥ का
विग्रहत्रुपिहि॥१॥ वृधकृष्णकनेनथि॥१॥ साईपुनविग्रहे॥१॥ पुष्पमाथसवधरुगवनंनथगतं॥१॥ कनोडलिप
नहत्वा॥१॥ इमाहस्थिनोगुन॥१॥ ई॥ मदिनायममाथाय॥१॥ नंकंपायमविहा॥१॥ मायागानाहिसंवाधियथारिह
वामरु॥१॥ अहानपंकमग्नना॥१॥ कृगवाकनचनसा॥१॥ हिनायवसत्वा॥१॥ नमन्ननरुलापय॥१॥ ८॥ युकासय

धन ॥ सर्वथा हगवान् स्रुतगन्तुः ॥ ८ ॥ महासमयं कुरु ॥ ९ ॥ दियस्य वित्तं न ॥ १० ॥ हगवान् हनकायस्यः महाविषमगी हन
नमः ॥ मङ्गली हनसत्त्वसा हनमूर्तिः ॥ ११ ॥ यत्नवः ॥ १२ ॥ गतिगार्थमूपागार्थमहाधमसमासिवा ॥ आदिमध्यांतकलाती नाम
३ संगतिमुरुमां ॥ १३ ॥ याति नैलाविगावधे लापियं न हनागतिः ॥ पुस्त्यन्नेच संवधे याहाखनपूनः ॥ १४ ॥ माया जान
महातये याचास्मि संपगी यत ॥ महावज्रधने हधे नपुमये महुधनिहिः ॥ १५ ॥ अहचे नाधयिष्यामि निर्गीतचहटाग
पशायथा हगवान् महनाथ सर्वसेवक्युधधुके ॥ १६ ॥ पुकासयिष्यमत्ताना यथासयविष्णुषतः ॥ असुरतकगनासाय
अगाखरुह्ननहानये ॥ १७ ॥ उवमधुष्युधे प्रावजपातिनयगनः ॥ क्लोजलिपुणरुत्तापककायस्थितीग्रुतः ॥ १८ ॥
अगावत्ता हनगधमिगु ॥ अथगभकेमनिरुगवान् संवधदिपदाहमे ॥ निर्धमयायतास्ती गस्वजिज्ञास्वम
खांकुलं ॥ १ ॥ स्मिगसंदर्भलोकानामपायकयस्वधने ॥ वेलासकनेतचहुमालालीसासने ॥ २ ॥ डिताकमापून
यत्नवममधुनमागीना ॥ पुणराखनगुधे इवजपाधी महावले ॥ ३ ॥ साधुवज्रधने ॥ गोमासाधुनवज्रपानिय ॥ यत्नव

[illegible]

समस्तवपुदगः॥ १०७॥ महावेनाचनवृद्धामहामे निमहामनिः॥ महामनयः॥ महामनयः॥ १ ॥
दगपात्रमिनापाकादगपात्रमिनासयः॥ दगपात्रमिनागुदिसपात्रमिनासयः॥ २ ॥ दगपात्रमिनागुदिसपात्रमिनासयः॥
रुमिपुर्हिष्टिः॥ दगपात्रमिनागुदिसपात्रमिनासयः॥ ३ ॥ दगपात्रमिनागुदिसपात्रमिनासयः॥
अजखविग्यार्थकनादसाकानवसिमहातः॥ ४ ॥ अजखविग्यार्थकनादसाकानवसिमहातः॥
नथाकावीअनन्यवाकः॥ ५ ॥ अजखविग्यार्थकनादसाकानवसिमहातः॥
॥ ६ ॥ सर्वतलमभाद्यगतिस्तथागतमनाजवः॥ जिनाजिनातिविग्यार्थकनादसाकानवसिमहातः॥
गललमगलपतिवसिः॥ महान्तवाधोनयाः॥ अनन्यथा महानयः॥ ७ ॥ वाग्यः॥ वेवाकवः॥ वेवाग्यीवाचस्यतित्रनंतजिः॥ म
नवादिचचपुः॥ सपापदसकः॥ ८ ॥ अवेर्वकाहनागमिखः॥ पुन्यकनायकः॥ नानातिग्यार्थकनादसाकानवसिमहातः॥
कात्रनः॥ ९० ॥ अहकिनासर्वारिहवेनानागमिखः॥ पुन्यकनायकः॥ नानातिग्यार्थकनादसाकानवसिमहातः॥ ९१ ॥

धन ॥ विशाचननसंपन्नः सुगता सावत्पन्नः निर्नमानि नरका नः सपद्यनया ॥ १२ ॥ संसात्रपात्रका दिस्थः कृत
कृतस्थः ॥ स्थिरः केवलयः ननिष्ठो नः पक्षः सत्त्वविदाननः ॥ १३ ॥ सद्धर्मधमनाकुलसात्रलाका साककः न
पन्नः धर्मज्जगधर्मी ताता अयोमा गमपदगकः ॥ १४ ॥ सिधार्थः मिधिरुपुः सर्वसंकल्पवर्जिनः निर्विक
साकथाः धुद्धमेधुः पनायायः ॥ १५ ॥ पूषावानपुषः सतना सतना नाकसंमहः ॥ कानवांसदगः हानीसला
नाद्ययसंरुः ॥ १६ ॥ गमज्जगविज्जगतायागिध्वानः अयोमिधियापतिपुषात्मवेद्या कृतसः पन्नमापत्ति कायधुः ॥
१७ ॥ पचकायात्मका वृधः पचहानात्मका विधुः पचवृधः समुद्रः पचरु नसंगधुः ॥ १८ ॥ जनकसर्ववृ
धाना वृधपुः पनावनः ॥ पुष्टरुवरवयानिधर्मयानिरुगवाथाः कृतः १९ ॥ घनेकगमना वज्रात्मा सशाजा नाजग
त्यलिः ॥ गगना हवः स्वयत् ॥ पुष्टरु नाना सामहः ॥ २० ॥ वनाचनो महादिफि हानन्या निवनाचनः ॥ जगत्
निपाहाना स्कोमहानः ॥ पुष्टरु स्वतः ॥ २१ ॥ विद्यानागोयमः ॥ अमरु नाजामहाथः कृतः ॥ महाह्री पाहः कृतः ॥

॥ वदति विषयस्य ति ॥ २२ ॥ सर्वदृष्टं सारादात्मनो दानं दत्तावनं ॥ विष्णुं पितृं भक्तं वपुःशो मायां महाश्रुतिं ॥ २३ ॥
 कृतं मधनामं गीमहासमयं मेघधृकं ॥ तत्त्वमयं धनं धृतिमाश्रुमं दत्ताकं ॥ २४ ॥ अमाद्यपात्मविजयी वज्रपा
 त्मा महाश्रु ॥ वज्राकृममहाश्रु वज्रहेन वरिहिकं ॥ २५ ॥ शुविगुधकर्म भद्रुह्य नमः ॥ पचविति ॥ ॥ क्रोधना
 त्मा विहिमं ॥ २६ ॥ पत्तुः शुजा वति ॥ दष्टा कना लकं कालहला हला नन ॥ २७ ॥ ममोक्तं कविश्रुतां गवजं वलां वयं
 कनः ॥ विष्णुवज्रा हृदया माया वज्रा महादयेन ॥ २८ ॥ कतिनां दत्तायति वरं मजानरापुमं ॥ अचले कजना नपा गजच
 र्मपादधृकं ॥ २९ ॥ हाहा कना महाधाराही कना हयानकं ॥ अहं ममहाश्रु वज्रहामा महावनं ॥ ३० ॥ वज्रमस्त्रा महास
 त्वा वज्रनामा महाश्रु ॥ वज्रचंगा ममहाश्रु वज्रहं कालहं कृति ॥ ३१ ॥ वज्रवा नायधधना वज्रगर्जे निकुं नन ॥ विग्ववजधना वजि
 लकवर्जी लनं गह ॥ ३२ ॥ वज्रनामा कला नागा वज्रना नासिना नह ॥ वज्रवर्म ममहाश्रु गमाज्ज वज्रना चन ॥ ३३ ॥ वज्रनामा द
 त्ता न वज्रनामेक विष्णु ॥ वज्रकाति न वज्रना वज्रमाला नानु वि ॥ ३४ ॥ वज्रनामा धनं गीमानं वज्राहनं नरुति व ॥ हाहा हाहा

॥ म. ॥ सा निर्घाषा वज्रघाषः षष्ठः ॥ १० ॥ मंरुर्धारासहनादमुत्साहेकनवा महान् ॥ आकाशधनुषयः काशघातार्थचक्रावनः ॥ ११ ॥
॥ आदर्शनकान्तगन्धदगः ॥ तथैवाहूतवेनात्माहूतकाशितनेऊनः ॥ गुण्यगदि वृषहागहिनादानमंगनः ॥ १२ ॥ धर्मसंखा
महागदाधर्मगती महामनः ॥ अप्रतिष्ठितनिर्वाणदण्डिगः ॥ मूर्ध्निहः ॥ १३ ॥ अन्पात्रपुष्पाः ॥ नीलात्रयमनामयः ॥ स
र्वत्रपावतासेधोत्र ॥ अत्रपुनितिविबुधः ॥ १४ ॥ अप्रधुषोमहामहः ॥ मेधापुत्रकमहः ॥ समृद्धिगार्यमार्गस्थः ॥ धर्मकगुमहादयः ॥
॥ १५ ॥ देवादेककुमालोगस्थविनः ॥ प्रजापतिः ॥ द्वाप्रिगत्तत्रधनाः ॥ कावमुत्साहेकसुन्दनः ॥ १६ ॥ लोकस्त्रानुनाचार्थः ॥ सा
काचार्यविगनदेदः ॥ ताथाम्नागात्रिलाकाकाः ॥ गगनगायनिनूतनः ॥ १७ ॥ गगनालगसंलगः ॥ सर्वरुद्रानसागतः ॥ अविद्या
उकागरुद्राः ॥ वपुजलजाननः ॥ १८ ॥ गमिनागवसुक्तगः ॥ संसारार्थवपात्रगः ॥ हानलिधः ॥ कर्मकृत् ॥ सम्यकसंबुद्धरुद्रः ॥
॥ १९ ॥ प्रिष्टवः ॥ खगमनस्येतावनन्तुमुक्तिगः ॥ सर्वार्थविधिमुक्तः ॥ आकाशसमतागतः ॥ २० ॥ सर्वकुगमनातिरुः ॥ स्याधान
॥ गतिगतः ॥ सर्वसत्त्वमहानागः ॥ गुनस्त्रानुनाचार्थः ॥ २१ ॥ सेवापधिविनिमकृत् ॥ व्यामवत्तनिमस्थीतः ॥ महाविनामनि

[illegible]

॥ २॥

वानद, धानिनाय ॥ सुप्रवृद्धा विवृद्धा दुमाः सर्व ॥ सर्व ॥ २२ ॥ विह्वानवैद्यमनानि नाः हानवद्वनूपधृक ॥
तिर्विकल्पा निनालग ॥ सुप्रवृद्धा कार्यकृत् ॥ २२ ॥ अनादिनिधनावधः आदिवृद्या निनन्वये ॥ हानवैकचइनेम
लोः हानमृकि सुथागत ॥ २४ ॥ वागीश्वरी महावादि वादिनावाति दिपुंगव ॥ वनगावगावधः वादिहिर
पनाजिन ॥ २५ ॥ समनदगी प्रामायः राजा मासि सुदर्शन ॥ गीमा कुपुलादि पीः हासूनक प्रयुति ॥ २६ ॥
महारीषधन ॥ अष्टगनहर्षा निवृत्तेन ॥ अस्वखरखधन ॥ कसया धिनहासिपू ॥ २७ ॥ अस्वक किलक
कास ॥ गीमानचुयमदल ॥ दगदिगया मपर्यताः धर्मधनमहाकुय ॥ २८ ॥ अगच्छुक्ति कविपूला मेणीक नृम
अल ॥ पञ्चनिर्लखन ॥ गीमाननलकुश महाविपु ॥ २९ ॥ सर्ववृद्धा महागा ॥ सर्ववृद्धा लवधक ॥ सर्ववृद्ध महा
योग ॥ सर्वधक गगन ॥ ३० ॥ वज्रनलाहिषक ॥ सर्वनलाधिपग्वन ॥ सर्वलोक ग्वनपति ॥ सर्ववज्रधनाधिप
॥ ३१ ॥ सर्ववृद्ध महाविह्व सर्ववृद्ध मनागती ॥ सर्ववृद्ध महाकाय ॥ सर्ववृद्ध सनसुनि ॥ ३२ ॥ वज्रसूर्य महा

कलाकवजं विमलपुरुषं विनागदिमहाभावं विश्ववर्णं जलपुरुषं ॥ ३३ ॥ सर्वध्वजपर्यकावधसंगातिधर्मधुक
 वधपञ्चाशद्वर्गीमानसर्वहृद्धानकागधुक ॥ ३४ ॥ विश्वमायाधनानां जलपुरुषविद्याधनमहानवजकिं महाव
 ळविगुधपनमाकृतं ॥ ३५ ॥ इत्युक्तमोहयानवधधर्मासुहायधुध ॥ जिनजिह्वजगलीयवजवेधिर्यथैक ॥
 ३६ ॥ सर्वपानुमिगपुत्रिसर्वरुमिविरुतन ॥ विगुधधर्मानेनात्मासम्यक्ज्ञानं इह न्युत ॥ ३७ ॥ मायाजान
 महायागः सर्वतुष्टाधियं पन ॥ अणववजपर्यकातिगखहृद्धानकायधुक ॥ ३८ ॥ समनरुडसुमतिः
 क्रितिगर्जजगत्पतिः ॥ सर्वगैर्लोकवृद्धमहागणविश्वनिमाधवकधुक ॥ ३९ ॥ सर्वलावस्वलावाग्वु ॥ सर्वलाव
 स्वलावधुक ॥ अनुत्पादधर्माविश्वार्थः सर्वधर्मस्वलावधुक ॥ ४० ॥ सिमितसुपसनात्मासमेकसर्ववधधुक ॥ पश्य
 जः सर्ववृक्षानां हृन्निवि सुप्रलखन ॥ ४१ ॥ पश्यवर्गं स हृन्निगमं धावत्तात्रिगतं ॥ ४२ ॥ कथं साधुकेऽपन
 सर्वपायविगाधकः ॥ सर्वसत्त्वानामाधः सर्वसत्त्वमाधकः ॥ ४३ ॥ किं स अमृतसूतकश्च हृन्निपनपुर्हाः धीर्गुण

[illegible]

स्थः सर्वनिर्यासदशकः ॥ १३ ॥ द्वादशगंगहवास्ता नारदादगम कानगुधधक ॥ चतुःशमयेनया कान नृ पृह्णाताववाध
 धक ॥ १४ ॥ द्वादशगम कान सत्याथः षोडशगम कान नृ त्वविक ॥ विगंत्वा कानमं कषि वीवृधः सर्ववित्पत्रः ॥ १५ ॥ अम
 यवेष निमानः कायकातिविलावकः ॥ सर्वकृत्नाति समयः सर्वचिह्न कृतार्थवित् ॥ १६ ॥ ना नायाननयापा
 यः जगदधीश्विलावकः ॥ यानति कयनिर्यातः कयानरु नृ सुतः ॥ १७ ॥ केगधनु विगुधः आत्मा धर्मधनु
 क्रयं केनः ॥ गद्यादधिसमूही ॥ यागकागनतिशितः ॥ १८ ॥ केगधनु विगुधः आत्मा धर्मधनु
 लाकनृनाः अमाद्यजदेगर्थकृत् ॥ १९ ॥ सर्वसह्यपुहिनाः अविह्ना नार्थानिनाधकृत् ॥ सर्वसत्त्वमनावित्वमः स
 सर्वसत्त्वमनागकीः ॥ २० ॥ सर्वसत्त्वमनां कृत् सचिह्न समनागतः ॥ सर्वसत्त्वमनानस्थः सर्वसत्त्वमनानति
 ॥ २१ ॥ सिद्धो गविप्रमापतः सर्वशक्तिविशुद्धितः ॥ निःसदिग्धमनिस्यः ॥ सर्वाथतिगुनात्मकः ॥ २२
 पचस्कन्धार्थद्विक्कातः सर्वकृत्नविलावकः ॥ चकृत्नाति सर्वधः सर्ववृधस्वलावधकः ॥ २३ ॥ नृ नृ गकायकाया

॥ १ ॥ कायकोपिविस्तारकः ॥ अंगीस्व नृपसदग्रीनत्त के पुर्महामतिः ॥ २८ ॥ समग्राह्यनगमधचतुर्विंशतिः ॥
 ॥ २ ॥ सर्वसंशयध्यायव्यावृधवाधिननरुनः ॥ अनङ्गनामयानिर्मलामकुकलपुयः ॥ १ ॥ सर्वमज्ञा
 र्थजनकाः सदाविश्नननरुनः ॥ पंचाग्रनामहासंन्याः विङ्गुन्याः खगुङ्गनिः ॥ २ ॥ सर्वाकावनिनाकावः
 पादगमकाडविंशधकाः ॥ अकलशकननागिनगवपुधधनिकादिधकः ॥ ३ ॥ सर्वश्चानकलाहिरुः समाधिकूलः
 गमविद्रुसमाधिकायकोमागुः सर्वसहायकायनादः ॥ ४ ॥ निम्मानकायेकाः ग्राह्यवधनिर्मातवंधकः ॥ दगदिमिः
 ग्वनिर्माताः जगद्वजगदर्थकृतः ॥ ५ ॥ दवादिदवादेः वदुः सुनेडादानवाधिपः ॥ अमनदः सुनगुनेः पुमार्थः
 पुमर्थग्वनेः ॥ ६ ॥ उक्तिः रुवकांतानः कसासाजगजुनः ॥ पुल्यानदगदिगलाकः धर्मादानपतिमहानः ॥
 ७ ॥ मेनुसनाहसंनरुः करतोर्वसवर्मितः ॥ पुराखर्षधनवानः कगमज्ञानननंजहः ॥ ८ ॥ मानानिमानजिद्वीनः
 ग्वठमीनरुमानकृतः ॥ सर्वमासचमूजनाः सर्वधलाकः ॥ ९ ॥ वयुः पुष्पातिवायग्वः मोतनि यचनिरूपगः ॥ अचनि

यत्तन्मात्मान्मा तमस्य ४ पत्तमगुत्त ४ १० ॥ ऐलाकेककुमगतिः वीमपर्यन्तविक्रमः ॥ १० ॥ वीथिः १ ॥ अथियपूतः १
खगहिरूः ४ ५ ५ नस्मृतिः १ ११ ॥ वाधिसत्त्वामहासत्त्वः लाकागिनामहर्षिकः १ ॥ पुष्पापालमिगानिष्टः १ ५ ५ नत्ता
समागतः १ १२ ॥ आत्मवित्तनविसर्वः सवाधैर्योग्यपूगवः १ ॥ सर्वप्रमामतिकोताः रुधाह्वानाधिपः १ ५ ५ १३
॥ धर्मदानपतिः १ ५ ५ वदुमदार्थदगकः १ ५ ५ पात्यतमागगतोः निर्यात्तययापनाः १ ५ ५ १४ ॥ पत्तमाधविगुद्वय
केलाकेगुहः १ ५ ५ महत्त ॥ सर्वसपत्नः १ ५ ५ मानमह्वीः १ ५ ५ मगोवतः १ ५ ५ १५ ॥ हृत्वा दृष्टानह्वानगमथापचदजमी
॥ १०० ॥ नमस्तुवतदवजाश्वः १ ५ ५ कातिनमस्तु ॥ नमस्तुगुत्ततागरः १ ५ ५ वृधवाधिनमस्तु १ ५ ५ १६ ॥ वृधवागनम
तस्तु १ ५ ५ वृधकायनमानमः १ ५ ५ वृधपिति नमस्तु १ ५ ५ वृधमापनमानमः १ ५ ५ १७ ॥ वृधस्तु नमस्तु १ ५ ५ वृधहासव
मानमः १ ५ ५ वृधवाचनमस्तु १ ५ ५ वृधलावनमानमः १ ५ ५ १८ ॥ वृधवाहवनमस्तु १ ५ ५ वृधसंरुवः १ ५ ५ गगत्ता
हवनमस्तु १ ५ ५ नमस्तु १ ५ ५ नमस्तु १ ५ ५ १९ ॥ मायाशालनमस्तु १ ५ ५ नमस्तु वृधनागकः १ ५ ५ नमस्तु सर्वसत्त्वः १ ५ ५

[illegible]

॥५॥

99

परिषद्दिनामधयमा प्रमपि अष्टानि वाचयानि १ यावत्पुष्पकगर्भेण मपि ग्रहकृत्वा ५ नयिष्यन्ति १ प्रपद्य
पदिपमास्यवित्पवर्णवीवलक्तवधजद्यप्युपकाकारि १ पुजयिष्यन्ति १ न पतिति ५ मयपुननवदवर्षग
कायुषारुविषयानि ॥ यचखलपुनमशुग्रीसत्वास्तुपतिमिनायूहानसुविनिविदकाज्ञानायाकथागना
याहकंसमस्तुवृद्धायेनामास्तुलनगपशुअनिधनयिष्यन्ति वाचयिष्यन्ति १ कषा मपि आयुविवर्द्धयिष्यन्ति
१ कस्तुर्हि मशुग्रीदीर्घायुस्तुकांषार्थयिषुका मा १ कुतपुत्रावाकुलइ हितावा नमपतिमिनायुषस्तुथागन
स्यनामास्तुलनगकं १ अष्टानि लिखिष्यन्ति लिखापयिष्यन्ति कस्ता मपि मग्नानुससाहविष्यन्ति ॥ १ कुं नः
मा रगवत अयलिमिनायूहानसुविनिविदकाज्ञानायाकथागनायाह कसम्यक् वृक्षाय कथयथा कुं प्र १ २
माहापुन अयलिमिनायूहानसुविनिविदकाज्ञानायाह कसम्यक् वृक्षाय कथयथा कुं प्र १ २
सुखविशुद्धमहानमपतिवातेस्ताहा ॥ १ ॥ १ मंमशुग्रीस्तुथागनस्य नामास्तुलनगकं यद्विनिविदका

सिखापयिष्यन्ति पस्तकगतामपि गृहहृत्वा धात्रयिष्यन्ति वा वयिष्यन्ति नपसिन्ति नायुखः पुनत्रयवर्षगतायूषा
रुविष्यन्ति ० नश्चत्वा अपसिन्मितायूषस्तथा गतामवदन्तु उपपद्यन्त अपसिन्मितायूषरुविष्यन्ति अपसि
मिन्मितायूषसंचयाय लोकभादु ॥ ॥ ॐ नमो गवतः अपनिमितायूषा नसुविनिश्चितकजा नाजायतथा गतायार्ह
कसम्पत्तिरुधायकधया ॐ पुनः २ महापुनः अपसिन्मितायूषा अपसिन्मितायूषपुनः नसुलानापचित ॐ सर्वसंस्कार
नपनिगुधधम्मकगगतसम्पुद्धकस्वरावविगुधमहानयपनिवानस्वाहा ॥ २ ॥ नरखलपुनसमयननवनव
कितावधकादिनामकमनेकस्वनननठठदमपनिमितायूषपुनः लिखितं ॥ ॥ ॐ नमो गवतः अपनिमिता
यूषा नसुविनिश्चितकजा नाजायतथा गतायार्ह कसम्पत्तिरुधायकधया ॥ कथथा ॥ ॐ पुनः २ महापुनः अपनिमितायूषा
अपसिन्मितायूषपुनः नसुलानापचित ॥ ॐ सर्वसंस्कारनपनिगुधधम्मकगगतसम्पुद्धकस्वरावविगुधमहानयपनिवा
नस्वाहा ॥ ३ ॥ नरखलपुनः ४ समयनचतुनथा कितावधकादिनामकमनेकस्वनननठठदमपनिमितायूषपुनः

कृष्ण
१२

वि नं कुं न मा रु ग व र्ण अ प लि मि ना य ह न स वि नि मि त्त क र्ण ना ना ज्ञा या स्र था ग ना या र्ह न स मा कृ व र्णाय ॥ क य था ॥
कुं प ॥ २ महा पृ ॥ अ प लि मि त्त पृ ॥ अ प नि मि ना य पृ ॥ ह न स र्ण ना प वि र्ण ना कुं स र्व स स्का न प नि गु ध ध र्म क
ग ग न स मू र्ज क स्त ला व वि गु ष्ठ म हा न य प लि वा न स्था हा ॥ ३ ॥ क न त्व ल ए न १ स म य स फ स फ ना व र्ण का टि ना
म क म न नै क स न न १ ० ० ० म प नि मि ना य १ मू र्ज ल वि र्ण ॥ कुं न मा रु ग व र्ण अ प लि मि ना य ह न स वि नि मि त्त क
र्ण ना ना ज्ञा या स्र था ग ना या र्ह न स मा कृ व र्णाय ॥ क य था ॥ कुं प ॥ २ महा पृ ॥ अ प नि मि ना य पृ ॥ अ प नि मि ना य पृ ॥ ह
न स र्ण ना प वि र्ण ॥ कुं स र्व स स्का न प नि गु ध ध र्म क ग ग न स मू र्ज क स्त ला व वि गु ष्ठ म हा न य प लि वा न स्था हा ॥ ३ ॥ क न
त्व ल ए न १ स म य न प च ष ण ना व र्ण का टि ना म क म न नै क स न न १ ० ० ० म वि मि ना य १ मू र्ज ल वि र्ण ॥ कुं न मा रु
ग व र्ण अ प नि मि ना य ह न स वि नि मि त्त क र्ण ना ना ज्ञा या स्र था ग ना या र्ह न स मा कृ व र्णाय ॥ क य था ॥ कुं प ॥ २ म
हा पृ ॥ अ प लि मि त्त पृ ॥ अ प लि मि ना य पृ ॥ ह न स र्ण ना प वि र्ण ॥ कुं स र्व स स्का न प नि गु ध ध र्म क ग ग न स

१२

मर्गनस्तु वविग्दुमहानयपनिवात्रस्वाहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ पच, पचा। गतिना वृध कादिनां मकमन
नेकसुनेन नन्दमपनिमिनाय सुदंलापिकं ॥ ॐ नमो रगवतश्चपनिमिनाय हानसुविनिश्चि क न यो गायान् तथा
गाया हकसम्प सुवधाय ॥ १ ॥ पृथ २ महापृथ अयनिमिनाय पृथ अयनिमिनाय पृथ हानसे राना पचिन्।
ॐ सर्वसस्का नपनि सुद धर्मन गगन समुद्र कस्तुला वविग्दुमहानय पनिवात्र स्वाहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ स
मयन १ वत्ता निंगती ना वृध कादिनां मकमन नेकसुनेन नन्दमपनिमिनाय सुदंलापिकं ॥ ॐ नमो रगवतश्चपनिमि
नाय हानसुविनिश्चि क न यो गायान् तथा गायान् हकसम्प सुवधाय ॥ ॐ नमो ॥ पृथ २ महापृथ अयनिमिनाय
पृथ अयनिमिनाय पृथ हानसे राना पचिन् ॥ ॐ सर्वसस्का नपनि सुद धर्मन गगन समुद्र कस्तुला वविग्दुमहान
यपनिवात्र स्वाहा ॥ १ ॥ ननखलपुनः ४ समयनपच विगति ना वृध कादिनां मकमन नेकसुनेन नन्दमपनिमि
नाय सुदंलापिकं ॥ ॐ नमो रगवतश्चपनिमिनाय हानसुविनिश्चि क न यो गायान् तथा गायान् हकसम्प सुवधाय

श्रु ५
१३

नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अपलिमि नाय पू ॥ हानसरात्रापचित ॥ ॐ सर्वसंस्कारपत्रिगुह
धर्मनगग ॥ समूह के स्वरावविगुह महानयपत्रिवाने स्तोत्रा ॥ १० ॥ ते नखलूपून ४ समयदगगगम नदिका
लुकापमानां वधकाटिनां मकमकनेकसुनन ॥ १० ॥ दमपत्रिमि नाय पू ॥ १० ॥ ॐ न मा हगवन अपत्रि
मि नाय हानसुविनिश्चितनना नागायाहकसम्यकवधाय ॥ नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अ
पत्रिमि नाय पू ॥ हानसरात्रापचित ॥ ॐ सर्वसंस्कारपत्रिगुह धर्मनगग ॥ समूह के स्वरावविगुह महान
यपत्रिवाने स्तोत्रा ॥ ११ ॥ य ॥ १० ॥ दमपत्रिमि नाय पू ॥ सुप्रतिस्तिष्ठंति लिखापयिष्यंति सगतायुषावखग
तामृषारविष्कि ॥ ॐ न मा हगवन अपत्रिमि नाय हानसुविनिश्चितनना नागायाहकसम्यक
वधाय ॥ नदथा ॥ ॐ पू ॥ २ महापू ॥ अपत्रिमि न पू ॥ अपत्रिमि नाय पू ॥ हानसरात्रापचित ॥ ॐ सर्वसं
नपत्रिगुह धर्मनगगनसमूह के स्वरावविगुह महानयपत्रिवाने स्तोत्रा ॥ १२ ॥ य ॥ १० ॥ दमपत्रिमि नाय

१३

४सु३।लेखिष्यन्ति लिखपयिष्यन्ति सतकदाचिन्नकषूपपद्येन नतिर्यागानि नयमला कनचशुभपयर्हो नकदा
चिरुपुनितनप्यके॥ यद्ययजमपपद्येन नय नयमानो जातिस्मानाहविषंकि॥ ॐ नमो गवत अपत्रिमिनायर्हो नसुवि
निश्चिन्नकजा नजायस्तथागनायाहं न समकं वक्ष्यामि॥ नयथा॥ ॐ पूष २ महापूष अपत्रिमिष्वपत्रिमिनायर्हो
पूष हानसलानापचिन्न॥ ॐ सर्वसंस्कारपत्रिगुह धर्म नगगल समुद्र न स्वलावविगुह महा नयपत्रिवा नसाहा॥ १३
॥ य४०० दमपत्रिमिनायर्हो सु३ लिखिष्यन्ति लिखपयिष्यन्ति॥ ननचतु नमिति धर्म नाजिकासहस्रा निपुनिकापिना नित
विषांकि॥ ॐ नमो गवत अपत्रिमिनायर्हो नसुविनिश्चिन्नकजा नजायस्तथागनायाहं न समकं वक्ष्यामि॥ नयथा॥ पूष २
महापूष अपत्रिमिनायर्हो पूष हानसलानापचिन्न॥ ॐ सर्वसंस्कारपत्रिगुह धर्म नगगल समुद्र न स्वलावविगुह महान
यपत्रिवा नसाहा॥ १४॥ य४०० दमपत्रिमिनायर्हो सु३ लिखिष्यन्ति लिखपयिष्यन्ति॥ नस्यपंचानं नर्यानि कर्माव
नपत्रिगुयगच्छन्ति॥ ॐ नमो गवत अपत्रिमिनायर्हो नसुविनिश्चिन्नकजा नजायस्तथागनायाहं न समकं वक्ष्यामि॥ न

[illegible]

[illegible]

大國

पद्मगवैद्यतुगावदतियचरुविष्णुतिनिर्याणनिगमानांमगयजिनादजि[॥]क[॥]पृ[॥]निपुलि[॥]॥ नसेवे ॥
 अनुरनायासम्यक्कैवापिमति संलत्सुक ॥ ॐ नमो रगवत अपत्रिमिनाय ह्यनसूविमि रतना नायाय ह्य
 थागनायाहं नसम्यक्कवृक्षय ॥ गद्यथा ॥ ॐ पृ[॥]२ महापृ[॥]अपत्रिमिनाय पृ[॥]अपत्रिमीनाय पृ[॥]ह्यनसंसा
 नापचिर ॥ ॐ सर्वसंस्कानयनि सुखधर्म गगना सु सुख न स्वलावविगु[॥]महा नमपत्रिका न स्वाहा ॥ २०
 ॥ यः ॥ ॐ दंमपत्रिमिनाय १ सुव निरिवांकि निरिवापयिषं कि नस्य लि ला वासक काचिदपि पुनिल्यया न
 ॥ ॐ नमो रगवत अपत्रिमि नाय ह्यनसूविमि रतना नायाय ह्यथागनायाहं नसम्यक्कवृक्षय ॥ गद्यथा
 ॥ ॐ पृ[॥]२ महापृ[॥]अपत्रिमिनाय पृ[॥]अपत्रिमीनाय पृ[॥]ह्यनसंसा नापचिर ॥ ॐ सर्वसंस्कानयनि सुखधर्म गग
 ना सु सुख न स्वलावविगु[॥]महा नमपत्रिका न स्वाहा ॥ २१ ॥ यः ॥ ॐ दंमपत्रिमिनाय १ सुव नत्त गगधर्म पया
 मः ॥ मृदिग्ययत्र क मपि कार्तायका नदासांति ॥ गनपि साहसु महासाहसु ला कथा दुसफनत्तमये पति पृ[॥]

कृत्वा दानं दद्यात् सुपुत्रं सुसुखं सुप्रमाणं गनयितुं न त्वमपि मिताय ४ सुप्रपुत्रं सुप्रपुत्रं सुप्रमाणं गनयितुं
ॐ नमो रोगवत अपि मिताय हानं सुविनिश्चितं तज्जागाय सुप्रमाणं माहं कस्य सुप्रमाणं नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महा
पुत्रं अपि मिताय पुत्रं अपि मिताय पुत्रं हानं संलनापचिन्त ॥ ॐ सर्वं सुप्रमाणं नमो रोगवत अपि मिताय हानं सुविनिश्चितं तज्जागाय सुप्रमाणं माहं कस्य सुप्रमाणं नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महा
विगुप्तं महानयपुत्रं विवातं स्वाहा ॥ २२ ॥ यः ४ ४ ४ ४ मपि मिताय सुप्रमाणं माहं कस्य सुप्रमाणं नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महा
सुधर्मपुत्रं नद्यथा ॥ ॐ नमो रोगवत अपि मिताय हानं सुविनिश्चितं तज्जागाय सुप्रमाणं माहं कस्य सुप्रमाणं नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महा
नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महापुत्रं अपि मिताय पुत्रं अपि मिताय पुत्रं हानं संलनापचिन्त ॥ ॐ सर्वं सुप्रमाणं नमो रोगवत अपि मिताय हानं सुविनिश्चितं तज्जागाय सुप्रमाणं माहं कस्य सुप्रमाणं नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महा
धर्मं नमो रोगवत अपि मिताय हानं सुविनिश्चितं तज्जागाय सुप्रमाणं माहं कस्य सुप्रमाणं नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महा
कासाय नमः सुनिपुत्रं नमो रोगवत अपि मिताय हानं सुविनिश्चितं तज्जागाय सुप्रमाणं माहं कस्य सुप्रमाणं नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महा
मानं सुप्रमाणं नमो रोगवत अपि मिताय हानं सुविनिश्चितं तज्जागाय सुप्रमाणं माहं कस्य सुप्रमाणं नद्यथा ॥ ॐ पुत्रं २ महा

大

95

[illegible]

ॐ पृथ्वी महापृथ्वी अपनिमित्तपृथ्वी अपनिमित्तपृथ्वी ह्यनसंलाना पचित ॥ ॐ सर्वसंस्कारपनिमृद्धधर्मोत्तमगगनसमृद्धनस
सत्तावविगुह्यमहानयपनिवान स्वाहा ॥ २६ ॥ अथ रत्नवास्तुसाम्यलाया ॐ मागथा अलावट ॥ ॐ ॥ दानवलेनस
सूक्तवृद्धः दानवलाधिगगनलसिंहाः दानवलेस्य चतुःशतमिहसंघाः कार्त्तनकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ २७ ॥ गीलवननस
सूक्तवृद्धः गीलवनाधिगगनलसिंहाः गीलवनस्य चतुःशतमिहसंघाः कार्त्तनकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ २८ ॥ क्रानिवलेनसमृद्धनवृ
द्धः क्रानिवनाधिगगनलसिंहाः क्रानिवलेस्य चतुःशतमिहसंघाः कार्त्तनकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ २९ ॥ वीर्यवलेनसमृद्धनवृद्धः
वीर्यवलाधिगगनलसिंहाः वीर्यवलेस्य चतुःशतमिहसंघाः कार्त्तनकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ ३० ॥ ध्यानवलेनसमृद्धनवृद्धः
ध्यानवलाधिगगनलसिंहाः ध्यानवलेस्य चतुःशतमिहसंघाः कार्त्तनकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ ३१ ॥ सुहृद्वलेनसमृद्धनवृद्धः
सुहृद्वलाधिगगनलसिंहाः सुहृद्वलेस्य चतुःशतमिहसंघाः कार्त्तनकस्य पुत्रपुत्रविभक्तं ॥ ३२ ॥ ॐ नमो भगवते अर्पयामि
नामः ह्येतस्मिन्निमित्तं नमो नमो यस्तथा गतायां हं नमो नमो वदामि ॥ नमो नमो पृथ्वी महापृथ्वी अपनिमित्तपृथ्वी अपनि

५५
१७

मित्रपुत्र अत्रिमित्रा यूपुत्र न संलगापचिरं ॥ कुं सर्वसंस्कारं पत्रिगुह धर्मकगगनसमस्तं स्वलो व विगुह माहा नय
पत्रिवात्रिस्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ दमवाच हगवाना लमनाम चरि रुधा धिस चो महास चो मावस वा वि निपष सं देव मा नृत्वा सुत्र गत्र
किन्नग शर्व च लाकार ग ॥ वना लषि कम सन नु नि वि ॥ आर्य अत्रिमित्रा नाम सधात्री माहा या न समा फं ४ ॥ कु
न धर्मा द्यादि ४ ॥ ॐ न मा र्गवत् अर्य पक्ष पाल मिनाये ॥ न वं मया ये न म क मित्स मय र्गवानु अव
स्वा मिह न कि म् ॥ ॐ न व ने इ ना थ पि तु द स्या नो म स ह ता रि ऊ स ये न सा द् प लि पु र्क्ष ना ह न रि ऊ स ह म श वो धि म
लो ना च महा स लो ना महा स वा ह न ना ना प पु र्क्ष द ग ति वा धि स त्व स न स ह मु ४ सा द् स र्व न वि नि व र्क्ष नि म न नू ल
ना या स म्म वे वा ॥ न य थ ॥ म स र्क्ष या च क्म ल रु ते न मे ये य न व अ स न् प ति हा ने च अ नि दि क् पु न न व
न व प म् वि द ग ति र्वा धि स त्व ग न स ह मु ४ ॥ अ थ स त्व म र्क्षी क्म ल रु ता १ ॥ अ न्म न म न न का ल स म य स का दि हा ना
नि कु म्पा न न र थ ग न वि हा न रु ना प सं क्रा म इ प सं क्म व हि द्वा वि हा न सि न्ना रु ह थ ग न स्य द ग ना य प र्क्ष पा

१७

सनाय॥ अथ यथा नृपि नृपु ॥ सुकादिहाना निष्कमय न तथा गत विहा नरु नाप संका ना रग व नीदग नाय
व न नाय प र्था स नाय॥ अथ यथा न पि पु र्था मे द्राय नि पु र्था॥ अथ यथा न पि महा मो म लाय न ॥ अथ यथा न
पि महा का म्प प ॥ अथ यथा न पि महा का लाय न ॥ अथ यथा न पि महा को विल ॥ सर्व पु र्था च म हा मुव का ॥
सु रु स्व के ला विहा न ला निष्क मय न रग व नी विहा नरु नाप संका ना उ प संक मी का क न र ॥ अथ यथा न रग
ना र्थ को ना ति क न महा भा व क सं नि पा न वि दि चा सु का दि हा ना निष्क मय व हि द्वा ति हा न सी को के पु रु फ व वा स न
नो र्था प न ॥ नि वि द च र ग वा न ग न ने वा य म न ग न द्वा नि पु र्था म न कु य न र ॥ क न र्थ म ल द्वा नी पु र्था क ल म वा ग न
न तथा ग त वि हा ल हा न स्थि न ॥ अथ यथा न पु र्था क ल म वा ग न रग व नी म न द वा च न ॥ सर्व पु र्था न रग व नी मे
॥ श्री यं क मा स र न मा म न कु य न र ॥ स र्थ विल ल म र्थी ॥ सर्व पु र्था म न न तथा ग वि हा न द्वा न सि न ॥ तथा ग न र
द र्ग ना य प र्था स ना ॥ अथ यथा न पु र्था क ल म वा ग न रग व नी म न द वा च न ॥ अथ यथा न रग व नी व म न र्थ म न ॥

आह्वान
१८

सर्वप्रथम नमः स्वागतं ४ स्वकादिहनात्रिक्रमयेन नथागतविहनाहनापसंक्रान्तपसंक्रान्तिकस्थितालाव
नादगनायपर्युपासनाय ॥ नत्कस्यादनात्थाहिरुगवन्नरुफाहनात्थागतस्यदगनिनवदनयापर्युपासननच
यदयहंरुगवस्तथागतस्यपसंक्रमासिदं सनायचन्दनायपर्युपासनाय नत्सर्वसत्त्वा नामार्थयसचहंरुगवस्तथाग
नादपूवातदिनवा ४ पर्युपासितवा ४ नुवदपूवा ४ नुवददिनवा ४ पर्युपासितवा यथाहंपस्यामि ॥ यथाहंवेद ॥ यथा
हंपर्युपास्य ॥ नुवन्तथागतोदृष्टवनिनवदिन ४ पर्युपासितम् ॥ अहंचरुगवन् सर्वसत्त्वानाकृताग ४ नथागतपस्या
मी ॥ अहंरुगवनाह ॥ कथंमरुपी ४ नथागतोदृष्टवायावेत्युपासीनवा ४ ॥ मरुपीनाह ॥ नथनाका नेन तथागतपस्या
मि ॥ अहंरुगवनाका नेन नुपनंरुयाजन ॥ नुवन्मन्त्यादाको नेन तथागतपस्यामि ॥ यावदज्ञावाका नेन तथापस्या
मि ॥ नचनथागतसंमूदा गच्छन्ति नुवन्तथागतपस्यामि ॥ नथनाहंरुवनिवित्तवनि ॥ नुवन्तथागतपस्यामि नतथा
गादगस्तु नपुदगस्तु ननुवन्तथागतपस्यामि ॥ नथनाहंरुगवनागा नतप्रकृत्य ननुवन्तथागतपस्यामि नतथाः

१९

नमो यपु लवि नानाद्यपु लवि न॥ एवं तथ गतं पञ्चमि॥ नृ नथ नासं किं च न॥ नमो वदो य न॥ एवं तथ गतं प
स्यामि॥ नमो यना उ त्पद्य न नति नमः न॥ एवं तथ गतं पस्यामि॥ एवं च तथ गतं ह दी र्वति॥ वदि नः पयु वासिन
न्वे॥ एवं मू के र्गवान मरु शी यं कू मा नरु नमो नद वाच न॥ एवं पञ्च त्वं मरु शी १ कि पस्यति मरु शी नाह॥ एवं न पस्य
नरु र्गवान कि कि स्यामि॥ एवं समहर्ग त्पञ्च न क स्य विधर्म स्यात्पादं प स्यामि॥ ननि नाध पस्यामि॥ आ थय भ्रा के
नद ती य पु शो मरु शी य कू मा नरु नमो नद वाच न॥ इक्ष्म न का नरु न स्व मरु शी र्य स्वं तथ गतं म व पञ्च सि॥ एवं पयु पो स य स्य
च नमो सर्व सत्त्व नाम कि के महा मेत्री पु श्च प स्ति नान च न का चित्सत्त्वो पल वि १ सत्ता हि नि वे ग्म वा स र्व सत्त्वो पति नि निर्वा
य वा सि य नि पु त्रान च न का चित्सत्त्वो हि नि वे ग्म शा पु र्व र्त्त न स र्व सत्त्वो ना चि न ह न स १ स त्रा ह १ स त्र ह १ सत्त्वो नृ प ल म्भ य
ज न या वे द ला व या ग न॥ एवं मू के मरु शी १ कू मा ल र्गवान आ म्भ्रा न नद ती य पु श्च म नद वाच न॥ एवं न ह द न्म
नद ती य पु श्च यथा कथ यति स र्व सत्त्व पति नि निर्वा य स नाह ॥ य स र्व द्वा न च म का चित्सत्त्वो पति वि र्वा सत्त्वो हि नि वे

भक्त
पुस्तक
१८

अथ वा नायं रुद्रक गणपति प्रवृत्तः ॥ अथ सत्त्वधर्मा नूतनत्वं वा कुर्यात्पूर्वस्त्वित्यस्य स च हृदयगुण नूतनी प्रवृत्तिः
पत्रिकला मूयायु के कस्मिंश्चिद्गुणगणनदिवात्र का समावृत्तिरुपवर्तते के कश्चन धर्मा गता गगनने दिवात्रिका समा
कलांस्तिष्ठेत्स चादिदिवधु धर्मादगयमान न के कया धर्मादग न या याव का गगनने दिवात्र का समेव धर्मा र्गवानाह ४ सत्त्वा
विनिगता वन ४ सत्त्वाने के के सत्त्वधर्मा गत न या विनयतु ॥ अथ कमपि कृत्वा न वसत्त्वधर्मा नूतनत्वं म्यापू
म्यापू मने ॥ नत्त्वस्मादग ४ सत्त्वविविकत्वात्सत्त्वोत्सव हृदयगुण नूतनी प्रवृत्त सत्त्वधर्मा नूतनी नत्त्वम्यापूत्वं म्यापू मने
अथ मूर्क श्रमूपा नूतनी नूतनी प्रवृत्ति मशूपा यकु मालरुत मने दवी चतु ॥ यदि मशूपा ४ सत्त्वविविकत्वात्सत्त्वोत्सव धर्मा नूतनी
वी नत्वं न पूर्वत्वं वा यशूपा मने ॥ नत्त्वस्मादग निवेधिमहि सर्वधर्मादग यिष्य सि ॥ अथ मूर्क मशूपा ४ कृमानरुत ४ म्यापू
कं सा नूतनी प्रवृत्ति मने दवी चतु ॥ यदा नाव हृदयगुण नूतनी प्रवृत्ति मशूपा सत्त्वानूतनी नूतनी नूतनी सत्त्वोत्सव धर्मादग
ग यिष्य न ॥ नत्त्वस्मादग निवेधिमहि हृदयगुण नूतनी प्रवृत्ति मशूपा कर्तव्या सर्वधर्मा नूतनी नूतनी ४ अथ नूतनी नूतनी मशूपा मशूपा

१८

यद्मासुहृन्मनदवाचन॥ दातावंमशुश्री नरु कनयसर्वधर्मा नूपसुखिः न किं मिदानिहृत्तमपि स ह्यपयिष्यति॥ अपिचम
नल्लामशुश्रीः कश्चिदवपेक्षकियकः सत्वाः ०० नितिके कस्य त्वेवद॥ मशुश्री नाह॥ न स्याहृगवन्नवपेक्षकः ०० वंदयावकः
०० वंदधधर्मा ०० निसव हृगवंपूनलपि पक्ष कियनपुमाः ०० सत्वाः ०० नितिके॥ न स्याहृगवंपेक्षकः ०० वंदययत्पु माः ०० वंदधधर्मा
यः ०० हृगवानाह॥ सचपूनत्रपि न मंशुश्रीः कश्चिदवपेक्षकः ०० किं पर्यापनस्य त्वधनुनिति॥ किं कस्य त्वेवद॥ मंशुश्री नाह॥ न स्याह
हृगवन्नवपेक्षकः ०० वंदययत्पु माः ०० नृत्यान चिह्नता॥ हृगवानाह॥ सचत्पूनत्रपि न मंशुश्रीः कश्चिदवपेक्षकः ०० वंदययत्पु माः ०० वंदधधर्मा
न ०० सत्वाः ०० नितिके॥ किं नस्य त्वेवद॥ मंशुश्री नाह॥ न स्याहृगवन्नवपि च ०० वंदययत्पु माः ०० वंदधधर्मा
किं नसत्वाः ०० नितिके॥ हृगवानाह॥ यस्मिन्समययत्पु माः ०० वंदधधर्मा ०० नितिके॥ न दौ कृत्पु निष्ठाः ०० वंदधधर्मा ०० नितिके॥
०० मंशुश्री नाह॥॥ यस्मिन्समययत्पु माः ०० वंदधधर्मा ०० नितिके॥ न दौ कृत्पु निष्ठाः ०० वंदधधर्मा ०० नितिके॥
हृगवानाह॥ अमिषु नितिके न स्या न मंशुश्री नाह॥ सचहृगवन्नपु माः ०० वंदधधर्मा ०० नितिके॥ हृगवानाह॥ यस्मि

अनन्ता
पुष्प
२०

समयमहती ४ पुष्पातमिनां रावयसिक ननता कृगत मूल नस्मिसमय उपचयंग चतुपचयं वा ॥ महती नार ॥ नमलगवस्तुस्मि
समयकिं किं लुगलमूल रूपचयंग चतुपचयं वा ॥ नालोप पुष्पातमिनां रावयति ॥ यस्याकस्यचिधर्मोपापचया वाञ्छवचया
वाहवति ॥ नमलगवन्पुष्पातमिनां रावना वादितवा ॥ याकस्यचिधर्मोपापचया वाञ्छवचया यवापुष्प पसिना ॥ साहगवन
पुष्पातमिनां रावना या नैवपथ अ नधर्मी नृजहति ॥ नापि वृधधर्मी नृपादले ॥ नत्कस्मादेनो रुथाहिरेगवपुष्पातमिनां
वनान कस्यचिधर्मोपापतम न पयु पसिना यधर्मी पञ्चस्यार पादिंदेनवान् ॥ साहगवन ना या नैव संसा नदीत्वा नृपया
तिननिर्वाण्ड ता न ॥ नत्कस्मादेनो रुथाहिः रगवन संमानभवता वत्रसमं नृपधर्मिक ४ पुनर्वा ४ संसा नदीत्वा निर्वाधमवतावता
पत्ररतक ४ पूर्वा वादति वान मुना नृद स्यामि ॥ साहगवन पुष्पातमिनां रावना यत्र कस्यचिधर्मोपापनं वाग्रहवा ॥ संवालि ४ सन ४
वासाहगवन पुष्पातमिनां रावना या न कस्यचिधर्मोपापनिर्वाधवृधिवर्तिलपतपत ॥ नत्कस्मादे ४ नहिरेगवन नृनृया दहियत
वावदु नदीयं वरगवन रावना सा पुष्पातमिनां रावना या नैव संसा नदीत्वा निर्वाधमोपापनं वाग्रहवा ॥ साहगवन पुष्पातमिनां रावना या न कचि

२०

धर्माभ्यामपि विना धर्मविना ॥ सा ह गवन्पुष्पापात्रमिना लवना या न कस्यचिधर्मो न च वापुर्हृत्वं वा कना ती या ह
गवन्नेवं लवना सेवं रगवन्पुष्पापात्रमिना लवना ॥ पुन न पत्र रगवन्पुष्पापात्रमिना लवना या ने वा विन्या धर्मा न प
थय न न पाद सि का न अपि पुस्तक पुन ४ रगवं सुद पिन सं विद्य न ये न प्रोथ न य न पार्थ न य न प्रार्थ न य न व लवना
रगवन्पुष्पापात्रमिना रगवन्पुष्पापात्रमिना लवना एवं पुस्तक पश्चि न ४ म धर्मा १ म धर्मा ना हि ४ नि ना पि
ना धर्मा नू य न र ॥ य षा धर्मा ॥ म गृ न वा हि न ना वा स्या न ॥ एवं पुष्पापात्रमिना लवना या ग न ये क ४ कु ल पू य सर्व धर्मा ४
नो प ल ह ॥ न र गवन्पुष्पापात्रमिना लवना कश्चि धर्मा मृ गं वा हि न ना वा व स्य य ति ॥ न क स्या द ना अ र ग व न नू त्पा द स्य ॥ क
श्चि द गं वा ना पि न थ ना ह न को ष्ठा वा या व त्स र्व धर्मा ॥ किं चि द गृ म्वा न व ल वा ना र ग नू पु ष्पा पा त्र मि ना ल व ना ॥ ए व मू क र ग व
न मं रू शी यं कू मा न रू म न द वा व नू ॥ न पु न ४ म रू गी न ग रू ध र्मा ॥ म रू शी ना ह ॥ अ गृ म्वा रू ग व न्ना ग रू ध र्मा ॥ ना
किं पु न रू ग व न् सर्व धर्मा गृ म्वा ४ ति न थ ग न ना हि स र्व धर्मा ॥ रू ग वा ना ह ॥ ए व म रू म रू शी ४ गृ म्वा १ सर्व धर्मा न थ ग न ना हि स

अत्र

अत्र

२९

ब्रह्ममर्शनी नाह ॥ तत्की पून ४ रगवत्तु न ता मा ज्य ना या न ही न ता वा प्र ह्य य न ॥ रग वा नाह ॥ सा धू सा धू मं श शी न व म व
न त्मं श शी र्य था क थ य सि न पू न म श शी न नू ल ना यो वू द ध र्मा ॥ म श शी नाह ॥ न व म नू द ग व त्र नू ल ना वू द ध र्मा ॥ न क स्मा ह
का स थ हि र ग व रू ष के न ध र्मा न सं वि द्ध न ॥ ना प ल ह्य न न क ज् नू ल ना वू द ध र्मा ॥ पू न न प न र ग व त् सा प्र ह्य पा न मि
ता ला व ना मा न वू द ध र्मा ॥ मा ना ध न ता ये स म्ब रू न प थ ज् न ध र्मा ॥ प्र हा ना य स म्ब रू न न वू द ध र्मा ॥ न मि शी न स म्ब र यि शि
न वं ता व ना र ग व त् प्र ह्य पा न मि ता ला व ना प्र ह्य वा या न क शि ध र्मा चि क य न वि ज्ञा नि त्प ॥ र ग वा नाह ॥ न स म श शी वू द ध र्मा
चि क य सि ॥ मं श शी नाह ॥ ना र ग व त् चि क य य म ह र ग व त् वू द ध र्मा ॥ प रि मि षा हि म् य ध य न र ग व प्र ह्य पा न मि ता ला व ना
क स चि द्ध र्मा स वि क ल न प र्प र्प रि ता ॥ न प थ ज् न ध र्मा ॥ म मा व क ध र्मा ॥ म प्र प क वू द ध र्मा ॥ म स म्ब रू वू द ध र्मा ॥ ति
॥ न क स्मा ह का स म व न ध र्मा म्ब रू पा न मि ता ला व ना या ग म नू मू क ४ कू ल प र्प ना प रू त य ह्ये ता ध र्मा ॥ प थ ज् न ध र्मा ॥ वा नि दि
र ग न् ॥ जे रू ध र्मा ॥ वा नि दि र ग न् ॥ जे रू ध र्मा ॥ वा नि दि र ग न् ॥ स म्ब रू वू द ध र्मा ॥ वा नि दि र ग न् ॥ न म क क त या ध र्मा न स म नू प र्प

२९

मि॥ त्वं त्वं वना र्गवन् प्रह्लापा नमिनां लावना॥ न र्गवन् प्रह्लापा नमिनां लावना गमनं यत्कस्य कलप्रसूये वं हवति॥ अयं कामभनय
रूपक्षतु नयमा नृपाक्षतुमा वंदयंति शोधक्षतु निति॥ तत्कस्माद्विस्तृप्तिं सहर्वेर्गं न कश्चिद्विद्वन्मायानि शोधधर्म समनूपयति॥ त्वं त्वं
व नार्गवन् प्रह्लापा लमिनां लावना वदितव्या॥ पूनतप नं र्गवन् प्रह्लापा लमिनां लावना यान कस्य विद्वन्मायानि शोधधर्म स्थपका नं वा अयं
का न क्क क्कति॥ न हि र्गवन् प्रह्लापा नमिनां लावना वृद्धधर्मा अंदा विन पृथग् न धर्मा अंमा क्कति॥ नृषेव सार वन् प्रह्लापा नमिनां ला
वना॥ यानेव पृथग् न धर्मा अंतिना अं न वृद्धधर्मा अंप्रति लंर॥ त्वं त्वं र्गवन् मंशाय क्कमात्र हत म न दवा च न॥ साधू साधू म
शाय स्यं मिमम व रूपगमि न धर्म दग य सि॥ स्त्रा विना न म ग्रा त्रिय मूडा वा धि स त्वाना म स स त्वाना मा हि मा नि का ना व ग्म व
का ना सो प ल मि वा ना च वा धि स त्व मा नि का ना यथा प त्रै ह त पु नि व धा म न न म र्ग शी ४ क ल प्र श वा क ल इ हि ना ना वा नृ क वृ ध प य
पा सि ना र वि षा ति ने क वृ धा व ना पि न कू ग स मू ला य ७ मं ग मि न प्र ह्ला पा न मि ना नि द ग ७ त्वा ने नु सि ष कि सि षा कि न स क्क॥
सि ष कि न स क्क स मा प त्म क॥ अ पि नु ख प न मं शाय न ति क र्म न वृ ध स ह मा नि व ना पि न कू स ल मू ला र वि षा ति॥ य ४ ३० मा ग

३२

२२

किं नृप ह्यपात्रमि तां निदगग्ने त्वा विमोक्ष किं नो दुःशा किं न स नो समापत्स्य न ॥ एवं मूर्के मंशुश ॥ कुमाल ह गलगव न म ॥ १५ ॥
वाच न ॥ प्रहिला किं म लगव न रुय स्या माय पाप ह्य पात्र मिता पि निर्दग् ॥ १६ ॥ यति ल तु न मंशुश नि किं ल ग व न स्या वा च न ॥ नृ
श नाह ॥ मखा सा लगव न प्रह्य पाल मिता ला व ना व दि न वा ॥ या न क स्य सि ध र्म स्या ध्या ल व ना य पु न्यु प सि न्ना ॥ त त्क स्या द
त्वा सु धा हि रु ग व त्रि न म्भ ना ॥ सर्व ध र्म नु वे ला व ना रु ग व य ह्य पाल मिता ला व ना ॥ पु न न य न रु ग व न् सो प्र ह्य पाल मिता ला व
व ना या न क सि ध र्म सं किं ध क म्वा वा व दाय न वा स म न्द्र स्य किं व ला व ना रु ग व न् प्र ह्य पात्र मिता ला व ना ॥ सा वि खा ल ग व न् प्र
ह्य पात्र मिता ला व ना ॥ अथ त्व ल ग व न् मंशुश यं कुमाल ह न मा म न्द्र य न स्या ॥ किं य क स्य या मंशुश सु धा ग ना ॥ १७ ॥ पर्यु पा सि ना ॥
मंशुश नाह ॥ या व अ रु ग व न् मा या पु न्त्र त्व स्य चि ह चे न सि का ति र्ध ॥ १८ ॥ म न्द्र म मा रु ग व न् त था ग ना ॥ १९ ॥ पर्यु पा सि ना ॥ रु ग वा ना ह
न त्व मंशुश ॥ बृद्ध ध र्म स सि न्ना ॥ मंशुश नाह ॥ व श्चि त्प न ॥ रु ग व न् ध र्म उ प ल य न या न बृद्ध ध र्म सं सि न्ना ॥ रु ग वा नाह ॥ क स्य
पु न मंशुश ॥ न न बृद्ध ध र्म ॥ मंशुश नाह ॥ रु ग व न् नु व ना व द न् बृद्ध ध र्म ॥ ति ना म न स वि ध न ना प ल य न् कू न ॥ पु न न त्वा म्

२३

विष्णुकि॥ हगवानाह॥ पाफा नमंशुती नसऊना॥ मरुतीनाह॥ नयथा गावदहं हगव नुसऊने वनत्किं कथाहमसऊनामन
पाप्मामि॥ हगवानाह॥ नत्कि निषर्त्तुती मरुती कधिमा॥ मुमंशुतीनाह॥ हगवाने वगावकाधि म॥ निषर्त्तु ४ कथं पुननह
निरवत्तामि हगका निप्रमानि कृत्य॥ हगवानाह॥ हनकाटि त्रिनिमरुती ४ कस्ये नदधि वचन॥ मरुतीनाह॥ हनका
त्रिनि हगवनसत्कायस्ये नददिवचन॥ हगवानाह॥ किंसम्भयमंशुती नववदसिमरुतीनाह॥ असं नखहगवकाय ४ नेष
सकामनिनावसंकामनि रुनेवसकामा असंकाय ४॥ अथ खलु आयुष्मान्सा नद्व निपूत्रा हगवनक म नदवाचन॥ कियगा
हं हगवनवाधिसत्तामहासत्त्वा हविष्णुकि वाधयय ० मं प्रहाणनमिना निर्दगग्रत्वा धिमायु कता वसिष्ठा कि नसऊ
मापत्स्यके॥ अथ खलु मेधवाधिसत्तामहासत्त्वा हगवनक म नदवाचन॥ आसति हगायै कुरुव नुवाधिसत्तामहासत्त्वा हविष्णु
कि वाधयय ० मं प्रहाणनमिना निर्दगग्रत्वा अधिमायु कता वसिष्ठा कि नसऊ समापत्स्यके॥ नत्क समाह्वना नेषैव हगवन
नमावाधियेषाधर्मा म नूवाधना॥ अथ खलु मरुती ४ कुमाल ह नम नदवाचन॥ वृक्षयं वने हगवनवाधिमत्तामहासत्त्वा ४ क

[illegible]

23

वृधविखयवृन्ना नालुमिति रदकगभनद्विपू॥ अविहृफिकपदविहृफिकमिति॥ रदकगभनद्विपूवन्नकृकविहृपयि
तुं संस्कृतत्वे न वाया वदसंस्कृतत्वे न वा नृका॥ चविहृफिकनदविहृफिकं॥ सर्वधर्माहिरदकगभनद्विपूविहृफिक॥ नका
त्मादनास्तथाहि सर्वधर्माः सापार्लोवा नासि॥ यस्मिंस्तत्त्वाविहृपयन॥ मायामिज्ञानकर्मापसु नाञ्चि न्यपसुनासायवा न्य
पसुनास्तनपसि नास्त॥ नत्कस्मादना न्नदचि न्यमिति रदकगभनद्विपूवृदपदमन॥ यपावि न्यसमन्तागता नेवन स्वर्ग
गमिना नापायगमि नातपत्रि निर्वाणगमि त॥ नत्कस्मादना न्नदचि न्यगमनागमने नपुन्यपसि त॥ यावन्नपत्रि निर्वाणगम
नागमने नपुन्यपसि त॥ यपिरदकगभनद्विपूवन्नकृकविहृपयन॥ नत्कस्मादना न्नदचि न्यगवकगभनद्विपूवृदपदमन
दस्यमस्त॥ इगुम्बिषात॥ अमृतरिहृत्रित्यपनिष्ठितस्य रिहृन्नदधिवचनं॥ उत्पन्नमधिवचनकतमिहृधिसमाशापरदकमान
द्विपूवन्नकृकविहृपयन॥ नत्कस्मादना न्नदचि न्यगवकगभनद्विपूवृदपदमन॥ अकारदकगभनद्विपूवृदपदमन
हमिहृदयापत्रिहृशूनं॥ अगभनद्विपूवृदपदमन॥ नत्कस्मादना न्नदचि न्यगवकगभनद्विपूवृदपदमन॥ कालिकादकगभनद्विपूवृदपदमन॥

पह
२८

निगुआदयपनिरु क॥ अकस्मि कारमे दकअनहनिपुवहिहृनहिनिगुआदयपनिरु क॥ असंमपहतनति क॥ हि
नहकिनागुर्व ०० य ०० न॥ सानहनिपुव आह॥ किंसन्धनमरुगी नववदसि॥ मरुगी नाह॥ नसंमगासमपहकासुव
वसानेजी ०० दं सधायरदक सानहनिपुव ववदामसमप ह ननकिः काहिहृनहृनकी आसर्व ०० य ०० न॥ अन्दी ००
ल ०० निरुदकअनहनिपुव आह॥ जी ॥ सर्वस्येनदिधिवचनं॥ अनहनिपुव आह॥ किंपुन १ सन्धयमरुगी नववदसि
मरुगी नाह॥ असूत्यपिनसूर्याभीनसविद्यन॥ नकिंसूरुनिषुनि॥ कदसंधारदकअनहनिपुव ववदाम नहि
लय ०० लहं न १ ०० नासर्वस्येनदधिवचनमिनिअनहनिपुव आह॥ अन्त्यत्राकिक ०० निमरुगी १ कस्येचदधिवचनं॥
मरुगी नाह॥ अनहदकअनहनिपुव अन्त्यत्राकिक ०० निमरुगी १ सडचन अन्त्यत्राकिक ०० नि॥ अनहनिपुव आह
अविनिनरुह केत्रिनिमरुगी १ कस्येनदधिवचनं॥ मरुगी नाह॥ अविनीकाहिहृनिमिरुदक सानहनिपुव आह १
जी ॥ अन्त्यत्राकिक ०० निमरुगी १ कस्येनदधिवचनं॥ नकस्मादु कात्रवि नयाहि विनिता नचि नयाविनिन १॥ कस्येनदधिवचनं व ०० नि योस

२८

मृडागगनात्पन्नानिनात्सक॥यनकेनचिधर्मसमन्वागततापत्रकिचित्पदमहदमपदसोनहृदकग्नानद्विपूवधिवच
नंयइतवृधच्छति॥तथागतंरुदकग्नानद्विपूवपर्यधिंदुकामनआत्मापर्यधिनवाआत्मतिरुदकग्नानद्विपूवइत्येकदधि
वचनयथाआनेत्माअएकमानसंविद्यननापलएक॥तथावृद्धापएकनयामंविद्यननापलएक॥यथाआत्मानकचिधर्म
वचनीयसुथावृद्धापिनंकनचिधर्मवचनियायवनकाचित्संखासूनागवृधच्छति॥नवेतहृदकग्नानद्विपूवसूकमा
ह्वानुमात्मनियनधिवचनमवमिहृदकग्नानद्विपूवसूकमाह्वानवृधच्छयनधिवचनं॥अथखत्वायुत्मानाग्नानद्विपू
वोएगवकमनदवाचन॥नायंएगवमश्श्रीःकुमानरुतसुथादसयति॥यथाकर्मकवाधिसत्ताआश्रितियः॥अवमूकमर
श्रीःकुमातरुतआयुमेकग्नानद्विपूवमनदवाचन॥नाहृदकग्नानद्विपूवतथादगयमीयथाकनविनावाहकश्रीहृसा
किनापुहृसुथादगयामि॥यथाकश्चिद्विहृसाकिनेकस्मादननेवाधिः॥कश्चिद्विहृसानापिसंवृधनदह्वनसूगानसूगानात्ता
दिगननिनाधिनानधिनानापदिफानापदसि॥अनावदमहृदकसानद्विपूवयावनावाधिःसाचवाधिर्नरावातापरावः॥नकस्मा

पुस्तक
२५

नानाधा किं हि स वाधवा नापि वाधि। वाधिमहि संवृद्धं ॥ अत्र द्विपुत्र आह ॥ नमश्चालग वगाधर्मा धातुन हि संवृद्ध ॥ मरु
शी नाह ॥ नरदक अत्र द्विपुत्र हग वगाधर्मा धातुन हि संवृद्ध ॥ नरक साधुना सुथा हि रद क अत्र द्विपुत्र धर्मा धातुन वरुग वात्र
सकृत् पूर कलर हि हृत् जीनीयूर्य ॥ मं प्रहृत्ता नमिना निदगय ॥ वाधिमाधु क ना प्रसिष्य कि न स क सिष्य कि न संक्रा समापत्स
क ॥ मूढा च पुनिय हिष्य कि न न सान द्वती पूयय न सदा न प न मार विष्य कि ॥ मरुदान न म वि सिद्ध दान प न य स अ न द्वती पूयगील
संपना शपन म वि गि क जीला ॥ शील शुन संप ध्या का य ॥ मं प्रहृत्ता नमिना निदगय ॥ वाधिमाधु क ॥ ना प्रसिष्य कि न स प्रसिष्य कि न स
क्रा समापत्सा प स क ॥ न न सान द्व नि पूय प न मया ना क्त्वा प न म न विर्य ल प न मी द्या ने ॥ प न मया ॥ य निसमया प्रहृत्ता समया
समत्वा ग मा ह विष्य कि ॥ न न अत्र द्विपुत्र वा धि सत्ता मरुसत्ता ॥ या वत्सर्वा को न व ना प न न सर्व हृत्ता न न समना वृग गो ह वि
ष्य कि ॥ य ॥ मं प्रहृत्ता नमिनिदगय ॥ वाधिमाधु क ना प्रसिष्य कि न स क सिष्य कि न स क्रा समापत्स क ॥ पुन न प न रग व
न मरुगी य कुमाल हृत् न म न द वा च न ॥ किं पुन हं मरु ॥ अ न व स प न हृत्ता न हृत्ता न सं म क्त्वा धि म हि सं वा द ॥ मरुशी नाह

२५

सुवेदहृगवन्वा (धयं संपु निरुपमव मह मिदु यमहि संवाधं आ हरगव न्वाधिपार्थयामि ॥ नक्तस्माद गवाधिसत्ता नवे
खो याममेश्ठी ॥ कृमात्तल्लुग ॥ नवमूक हरगवान्मरुगी यकृत्तल्लुग मरुदवी चत् ॥ साधुसाधु मरुगी यस्व मिमामवन्वातिग
की नानिस्तानानि वक्तु सि ॥ यथापि नामत्वं पूर्वज्ञी नकिनाधि ना इ नूपत्तु वनि नवमूकवर्ग्यशा मरुंशी नाह ॥ तत्तु हरगव धर्म
स्मादय ह मन्पन म्वा निष्ठा ॥ नवमूक हरगवान्मरुगी यमात्तल्लुग मरुदवी चत् ॥ पस्यामित्वं मरुंशी निमा मयमावका पसंयद
मरुंशी नाह ॥ पस्यासि हरगवन्वा ॥ हरगवानाह ॥ कथं पस्यासि ॥ मरुंशी ना नाह ॥ तथा हरगवन्वा पस्यासि यथा नेवपथ ऊ नायगभा
मी नेवालो जी जानगभासि ॥ नेव पस्यासि ॥ नव पस्यासि ॥ तन्ने वरुन्वगभासि नो यत्ता कात्तगभासि यनेव विदिता स्यास्यामि ॥ अथव
तु आ यमाच्छा नद्वि पूश मरुंशी यकृमात्तल्लुग मरुदवी चत् ॥ यत्तत्वं मरुंशी ॥ अवकयामिका न्यवंपस्याति सम्यक् वध पात्रिका न्प
नत्तं कथपस्यासि मरुंशी नाह ॥ वाधिसत्ता न्नि हरगवन्वा गन्ध नि पूश नाम वृत्तम नूपस्यासि न्नि संवृत्त क व्निताम धर्म नस मन्
पस्यासि ॥ नव हृदक गान द्वा नि पूश सम के वृधमानिका निगभासि ॥ अ गद्व नि पूश आह ॥ सु था गद्व मरुंशी कथपस्यासि ॥ मरुंशी

७५
२६

नाह॥ केवुं रुदक गभन दनि पूना लम मां मरु ना गय र्ह य॥ एवं मुके आ युष्मा सा नद नि पूना मंरु श्री यं कुमाल ह त म नद वा चर
वृ ध ० नि मरु श्री क स्मि त द धि व च न मंरु श्री नाह॥ यु प्र पु न ४ रु द क सा न द नि पू न अह॥ अ नू त्या द स्मि त मंरु श्री न धि व नं॥ य र ना
म नि॥ मंरु श्री नाह॥ ल व म व रु द क गभ न द नि पू न य स्मि त द व च न आ त्म नी त स्मि त द धि व च न वृ ध ० नि॥ अ पि तु रु द क गभ न द नि
रु अ प दा धि व च न मं न न य दि द मू च न वृ ध ० नि न म रु द क गभ न द नि पू न सू क नं वा ना हि वि हा व यि तु वृ ध ० नि॥ वा ग पि रु
द क गभ न द नि पू न सू क ना नि रू प यि तु मि यं वा ग नि क उ रु द क गभ न द नि पू न यः द व म द हि॥ ० दं स म्म य रु द क गभ न द नि पू
अ वं व दा म वि नि ना रि रु त्रि त्प र्ह न॥ श्री ल श व स्मि त द धि व च न॥ सा न द नि पू न अह॥ अ धि चि रु च त्रि ती नि मंरु श्री न वं व द मि
मंरु श्री नाह॥ न थ हि रु द क गभ न द नि पू न वा धि क ना॥ ल व मु के आ युष्मा न द नि य पू ना मंरु श्री यं कु मा न ह त म न द
वा च र॥ सा ध सा ध मंरु श्री य स्मं य था द न त्रि अ श र्व स क थ य मि॥ मंरु श्री नाह॥ ल व म न रु द क गभ न द नि पू न य थ रं द हि
श्री ना य वा स्मि न चार्ह क ल्क स्मा धि गो ल थ हि रु द क गभ न द नि पू न श्री ना म अ श वा ४ अ व क ह मो चा पु ल क व रु द क मो वा अ

२६

ननहदकगननहनिपूयपर्यायनकीनाग्रवानचास्माहन् ॥ अथखनूतगवान्मंरुगीयकूमालरुतमनदवाचन् ॥ स्यात्मंरुगी
पर्यायावाधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषर्त्तुत्वा ॥ अथादन्तुनांसम्यक्वाधिमहितवाधुं ॥ मंरुगीनाहे ॥ स्यात्तुल्यग
वन्पर्यायायधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषर्त्तुत्वा ॥ अन्तुनांसम्यक्वाधिमहितसंबुद्धं ॥ नत्कस्मादनास्तथाहिवाध
वनूनपिधर्मानसंविद्यननावननस्यनाचनअन्तुनांसम्यक्वाधिनितिसाज ॥ वाधिनन्तुनाननकचिद्वर्मासंविद्यन
नापनस्यकयावाधिमनुनिषीदकयावाधिसर्वसंबुद्धं ॥ यनवाधिमहितमहितसंबुद्धं ॥ यवावाधिमहितसंबुद्धं ॥
यवावाधिमनुत्तिष्ठतिदिनि ॥ अतनहगवन्पर्याय ॥ अथवाधिसत्त्वामहासत्त्वावाधिमनुनिषर्त्तुत्वा ॥ अन्तुनांसम्यक्वाधिम
हितसंबुद्धं ॥ नवमूर्केरगवान्मंरुगीयकूमालरुतमनदवाचन् ॥ वाधिनितिमंरुगी ॥ एकस्तेनदधिवचनं ॥ मंरुगीनाह ॥ वाधिति
निलगवन्पंचानांमाननर्या ॥ अमनदधिवचनं ॥ नत्कस्मादनास्तथाहिवाधिपुनरिक्तान्यवनानिपक्षनकर्म ॥ त्वनांवत्कार
नेषावाधिनानकर्मपुनरिक्तान्नकर्म ॥ नामहितसंबुद्धमानावाधिवचपत्तकीलावनासर्वधर्मवृत्ताधि ॥ नत्कस्मादनासर्वध

३५२
२७

कथापापैति कुरुनक मेचिदहि संवसानकान्त ह्यता यावद विदिता नु वमखा वापि अ पितु खलप न रगवा काना
हिनिके ४ सुपिगाना तांनि ॥ अरि सवध यावतु पथे कि कृता निनुवंसूके लगवा मरु शीय कूमा न हन मनदवाच ॥ क
क मरु शीय माकि कय वर वति न थाग गोम न थाग न ॥ मरु गी ग्राह ॥ ना हि दं रग वतु न कृत्वा धन न मरु गव नो व र व र
थाग गोम न थाग न ॥ गत्क स्माद्ध ना सु था हि वेवं न थ ना च न थ गा तु था च व सु था हि रग वतु न थ ना ग था ग न विरु
पय कि नापि सु थाग ना सु थ ना विरु पय ति ॥ न कृत्वा धन ना सु था हि रग वतु पन मा थ ना अ र वा ना न थ ना ॥ अ र वा व सु थाग म
स्मो र हि रग वतु म नु वं र व ति न थाग गोम न थाग न थ ॥ अ पिकु ग थाग न ॥ कि रग वता म थ य मा न म म क न नो मो न
न थाग गोम नु म नु वं र विरु ति ॥ न थाग गोम न थाग गोम न थाग न ॥ रग वाना हि ॥ सं म य सु म र्ग आ सु थाग न ॥ मं र ग
नाह ॥ ना हि दं रग वा वतु सं स य ॥ स च का चि र थाग र प नि नि वा ति स्था न थाग गोम नु रि वा न थाग न प नि नि वा ति वा ॥ नु वं सू के
रग वा नु मरु शीय कूमा न ह न म न द वा च ॥ न न व म र्ग गी न व र ग व ति उ त्प न न थाग न ॥ मरु शीय ग्राह स्मा त्मी रग व

२७

त्रयथागमा ०० निसंखर्म्म या ना तत्प हि १ स्था ॥ नाभि म्च सत्वं मर्श ॥ ४ गगन दिवान् का पमा वृक्षार गव न १ पमि
निविता ०० नि ॥ मर्श ॥ ग्री ग्राह ॥ कचि र्पुनर्गव न्न कवि खया वृक्षार ग का य दि मचि न्प विखया १ ॥ गव नानाह ॥ तु वम न्त्वे म
रुशी गाह ॥ न न हि र गव न्न न गगन दिवान् का पमा वृक्षार ग वा न ॥ ४ पमि निर्वृ ना शा न ल्क स्मा ६ का सुथ हि र गव न्न न क वि
खया वृक्षार ग व का य दि द मचि न्प विखया १ ॥ न चाचि ना उत्प य क वा नि नू ध वा न स्मा ६ ग व न्न वा पिसं वृ ध न ये पी न पि
पि न अ ना ग न्द नि न था ग न्द अ ह क १ स म्प क वृक्षार वि ध नि अ हि सं वृ धा न व क ॥ न ल्क स्मा ६ ना न्द चि न्क ना अ दि ना वा
अ ना ग ना वा पु र्पु र्प ना वा ॥ न स्मा ६ ग व न्न वि य म्प क वा लो क स नि व स १ पु प च य कि न्द ग व न्न लो क स नि व स य वा म व क
नि उत्प न स्मा ६ ग ना या वत्प नि नि र्वा स्य नि वे नि ॥ न व म्प के र ग वा न् ॥ म र्श ॥ य क्मा ल ह व म्प ते द वा च न् ॥ न न हि म र्श ॥
नि द न था ग ना चि न्प न था ग न स्य वा श न उ दा ह न नू ह न न वे व हि क स्य वा पिसं वृ ध न्म हा सत्वं स्य चार्ह ना वा त्रि ना न्द व स
॥ न ल्क स्मा ६ ना सु थ हि र ग्वा ने वा न ह्म स्य नि ॥ ने व ध नि को अ कि ॥ न ल्क स्मा ६ ना सु थ हि र चि न्प म वि न्प नि वे

पृष्ठा

२८

स्यंमरुशी नाहा नृचि स्या नानिचि स्या नाह गवन्न सर्वधर्मा ता को वा नृहा सि निवा ॥ पु नि को ध नि वा ॥ नृगं ॥
यत्थेवमरुशी कृ था ग ना नि चि स्या ॥ नृथेवपथज्जना अ पि नि चि स्या ॥ मरुशी नाह ॥ पथज्जना अ पि र ग व न नृथे
व नि चि स्या ॥ नृग वा नाह ॥ एवमनृमरुशी ॥ नृक म्मा द ना कृ था हि सर्वा नि चि स्या नि ॥ मरुशी नाह ॥ नृक म्मा द ग व न व
मा हा यत्थेव न था ग ना नि चि स्या ॥ एवपथज्जना अ पि चि स्या ॥ नि ॥ न नृह ग व पथज्जना स म पि नि च्चं स नृक म्मा द
ना ॥ नि चि स्या हि र ग व न सर्वधर्मा ॥ य क थि ह ग वे नि नि र्वा ता य म्मा वा वि ह स्य के नृह ग व कृ क म्मा द ना र्थे व नि चि स्या
ना द व प नि र्वा ना य प म्मा वा वि ह स्य के नृह ग व कृ क म्मा द ना र्थे व नि चि स्या ना द व प नि नि र्वा ता नृम ना हि र ग वा ना सि नि
चि स्या ना या ना ना लं य पि नृह ग व न व मा हृ त्रि म प थ ज्ज न ध र्मा ॥ नृय आ र्थ ध र्मा ॥ नि ॥ नं ॥ द म्म च नी या ॥ क स पा न मि
त्रा ति ना व ल्प र्थ पा स ध न न ॥ प म्मा नृहा स्या ॥ म ॥ प थ ज्ज न ध र्मा ॥ नृय आ र्थ ध र्मा ॥ नि ॥ नृव म्मा कृ र ग वा अ र्थि यं कृ मा
तृ लु म न द वी च नृ ॥ नृज सि लं मरुशी ॥ नृथा ग न सर्व स ता ना मग्गं ॥ मरुशी नाह ॥ नृय मरुशी र ग व कृ था ग न सर्व स ता

२८

नामगुप्तं संवदिह काचित्सत्तपनिनिष्पत्तिः स्यात् ॥ हगवा नाह ॥ ॐ कुसिलं मंरगी १ तथा गतमचि न्यधर्मसमन्तागतं ॥ मंर
गी नाह ॥ ॐ कुयमह हगवन्तथा गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥ संवेत्तं चिदचि न्यधर्मसमन्तागतं १ स्यात् ॥ हगवानाह ॥ ॐ
क्षितिपुनस्तमंरगी १ तव विमयवकासः ॥ गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥ मंरगी नाह ॥ ॐ कुयमह हगवन्तव विमयवकासः ॥ गतमचि
निनिष्पत्तिः ॥ संवेत्तं चिदचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥ मंरगी नाह ॥ ॐ कुयमह हगवन्तव विमयवकासः ॥ गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥
नक्तस्याह कासुथाहिहि न तुवं धातुनसकी ॥ ॐ धातुयइताचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥ मंरगी नाह ॥ ॐ कुयमह हगवन्तव विमयवकासः ॥ गतमचि
न तात्वेनूपनपत्तिः ॥ हगवानाह ॥ तत्तमंरगी १ तव विमयवकासः ॥ गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥ मंरगी नाह ॥ ॐ कुयमह हगवन्तव विमयवकासः ॥ गतमचि
न पृथक् १ तथा गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥ मंरगी नाह ॥ ॐ कुयमह हगवन्तव विमयवकासः ॥ गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥
कश्चिधर्म १ समदागच्छति नशीयतनुवंतव न पृथक् १ ॥ तद्वचविजं पृथक् १ तद्वचविजं पृथक् १ ॥ अपि तु तत्तु पुन १ हगवन्तागतं
मंरगी १ तव विमयवकासः ॥ गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥ मंरगी नाह ॥ ॐ कुयमह हगवन्तव विमयवकासः ॥ गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥
मंरगी १ तव विमयवकासः ॥ गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥ मंरगी नाह ॥ ॐ कुयमह हगवन्तव विमयवकासः ॥ गतमचि न्यधर्मधर्मन्तागतं ॥

७५५

२९

॥ अथ खलु न स्या वेला या वदा नूतन वन खद्वि का न महा पृथी वा न ॥ इह न ॥ धी न गम ना धि र्हि रु सा ह मा ॥ अम न स्या दा सु व न
चि ग नि वि म का नि स फा ना च रि रु ती गी दा ना य या ना वा पा स क ग ना ना धि र्वा नि ग न ल्भ पा सि का स ह मा ॥ अथ खलु च का मा व च ना ना
द व का नि नि य न ग ना ना वि न र्ग ॥ वि ग न म ल ध र्म च ध र्म च रु न न स्य तं ॥ अथ खलु च पा य ष्णा ना न द उ त्का या स ना द कां ग चि
व ल पा ॥ द स प द रि न ग न म गु लं प थि यो प रि क्का य य र ग वा रु ना र्ग ति प न म र ग व क म न द वा च न ॥ की र ग व न ह गु १ पृ थ य
स म ह न ४ पृ थि वि वा न स लो क पा इ र्ग वा य ॥ अथ खलु च र ग वा ना य ष्णा न मा न द म न द वा च न ॥ अथ य मा न द पृ थ र्ग नि र्द र्भ ना
म ध र्म य र्था य ४ पृ थ के न पि वृ द्ध र्ग व हि त स्मि न्न व प थि य द गे ल खि न ४ ॥ अथ य मा न द ह गु न यं पृ थ य स म ह न ४ पृ थि वि वा न
न स म ह न ४ पृ थि वि वा न स लो क पा इ र्ग वा य ॥ अथ खलु च र ग वा ना य ष्णा न मा न द म न द वा च न ॥ अथ य मा न द पृ थ र्ग नि र्द र्भ ना
र ग व न म र्ग ४ न ल्भ स्या द नो क्थ स्या य य द व पु ति ल नि ॥ न ल्भ चि न्त्य म व पु ति ल नि ॥ अथ खलु च र ग वा ना य ष्णा न मा न द
न मा म नु य न स्या ॥ अथ य मा न द म र्ग ४ य थ ग म न द नि पृ थ र्ग नि र्द र्भ वा च न ॥ अथ य मा न द म र्ग ४ य थ ग म न द नि पृ थ र्ग नि र्द र्भ वा च न ॥ अथ य मा न द म र्ग ४ य थ ग म न द नि पृ थ र्ग नि र्द र्भ वा च न ॥

२९

वैकचिक्रमवप्रतिहति ॥ एवंमूकमर्शग्रीः कृमासहगव नमनदवाच नृ ॥ नहिरगव नचिन्त्यं पुरातिचि
त्समवहवत्सवेदवेदचिन्त्यप्रतिहया ॥ अपि तु न क्लिंचिद्यत्राचिन्त्यसर्व ॥ सहास गव नचिन्त्य ॥ ताचाचिन्त्य
गद्यानासद्य नवागद ॥ गच्छतिदृष्टं ॥ रगवा नाह ॥ समापदसे पुनसत्वं मर्शग्री नचिन्त्यं समाधि मंरुग्री नाह ॥ ताहिदंरु
गव न्राह रगव नचिन्त्यं समाधिं समापय ॥ तत्कस्माद्वनासुथाहिरगव न्रहमवाचिन्त्य ॥ समाधि ॥ समाद्यह रगव नचिन्त्य
माहिंसवेदाहं चिन्त्य ॥ समाधिति निरुगव न्रिच्छिन्त्या चिन्त्य मंरु ॥ तत्कमचिन्त्यं समाधि समापत्स अपि तु खलू पुन
रगव न्रहसु पूर्वमापिकर्मिकसोवसमूदा चात्रमचिन्त्य ॥ समापलवो ऽति ॥ नमरुगव न्रहर्हि रूयो वसमूदा चात्र ॥ स
मूदाचा ॥ तति अचिन्त्य समाधिं समापय हमाति ॥ तद्यथापि नामरुग वन्निष सा नार्थस्य पूर्वमादिकर्मिक ह मासिक्रमान
स्य सर्वं समूदा चात्राहवकिण्म कीला न्यवविश्वयपिति ॥ सयदापापित्त वधतिषा न्राहवति नदान तस्य पुननेवसम
दाचा नृत्त्यय ॥ किंमहंरूया ग कीला न्यवविश्वयमिति ॥ यदिदंवालवधमृ सिजि नत्वा ॥ अथचपर्यं वा कोननिवा

७५*

३०

लवधनाया नदादयन्नेव विधनि ॥ लवं मवरुगव नरु मपूर्वमवसमूदावा नो रचि न्यसमाधिं समापदह मिनि ॥ नदामनमाधिं
समापन्नानेन समाधिं विहतामि ॥ नदानसमावृत्त्युत्वं रुति ॥ अतनासमाधिना विहर्तव्यमिति ॥ तत्कस्माद्विनायकयदा अततस
माधिं नाविहतामि ॥ नदानदयवसमाधिं नयुक्तं फिक ॥ अथ खत्वा यष्मान् गानद्वनी पूजा रुगव क म नदवा च ॥ अयुहि रुगवत्
मर्त्यो क्मात रुगा न विगमिनि ॥ अथ नाचि न्यत समाधिं नाविहतामि ॥ अस्मिन् न र्गवत्तस्या दचि न्यात्समाधन न्य ॥ अक न न ॥
समाधिति नि अथ खत्वं मर्त्यो ॥ क्मात रुगा यष्मान् गानद्वनि पूजा म नदवा च ॥ कथं त्व दन्यग्न नद्वनि पूजा निषग्न क न खान्
अचि न्य ॥ समाधिं त्रि ॥ यदया यष्मा गानद्वनी पूजा त्वं माह ॥ अस्या स्माद चि न्यात्समाधन न्य ॥ अक न न ॥ समाधिं त्रि ॥ स चेह दक
गानद्वनि पूजा चि न्य ॥ समाधिं संविद्य न इ पल ल्ये न स्या दस्या दचि न्यात्समाधन न्य ॥ अक न न ॥ समाधिं ॥ गानद्वनि पूजा आह ॥ अथ वि
मर्त्यो न चि न्य ॥ समाधिं न संविद्य न नापल ल्ये न ॥ मर्त्यो ग्राह ॥ नथा धर खरु दक गानद्वनि पूजा अचि न्य ॥ समाधिं नैखा रचि न्य ॥
समाधिं न संविद्य न नापल ल्ये न ॥ अवि रुदक गानद्वनि पूजा कश्चि नाचि न्य ॥ समाधन न्य ॥ सर्वे सत्वा अपि रुदक गानद्वनि पूजा ॥

३०

चिन्त्यस्यसमाधर्माहीने॥ नत्कस्माद्विनासर्वहिचिन्त्यमचिन्त्याचिन्त्यानाश्रयमचिन्त्यसमाधिसुखासवसत्वाश्रयचिन्त्यस्यसमाधित्वा
हित॥ अथखनुरगवान्मर्शुग्रीयंकुमानरुतमामकुयनसम्॥ साधुसाधुमेरुगार्थस्यसर्वथाभावावन्पातिगतिरानिस्तुनानिननिर्द
गसियथापिनामस्तुपूर्वजिनरुगाधिकानाश्रयपनरुवित्रचत्रितवस्त्रचय्यस्तिकिकमर्शुग्रीनवरवतिप्रह्मपात्रमिनायास्तित्वा
वमाह॥ मर्शुग्रीनाह॥ सचत्मेरुगवन्नेवमाह॥ प्रह्मपात्रमिनायास्तित्वावमाह॥ त्वमपिस्वाइपेत्तरेस्तित्वावमाह॥ अत्मसंख्यास्तित्वा
त्वावमाह॥ यावहावसंस्तित्वावमाह॥ नत्कस्माद्विनासर्वहिचिन्त्यमचिन्त्याचिन्त्यानाश्रयमचिन्त्यसमाधिसुखासवसत्वाश्रयचिन्त्यस्यसमाधित्वा
मित्वास्तित्वावमाह॥ अथवाअस्तुनत्रप्रह्मपात्रमिनायास्तित्वावमाह॥ अपिउत्तरेप्रह्मपात्रमिनायास्तित्वावमाह॥ अत्मसंख्यास्तित्वा
नमचिन्त्यसंस्तित्वावमाह॥ नत्कस्माद्विनासर्वहिचिन्त्यमचिन्त्याचिन्त्यानाश्रयमचिन्त्यसमाधिसुखासवसत्वाश्रयचिन्त्यस्यसमाधित्वा
तामियंप्रह्मपात्रमिनायास्तित्वावमाह॥ अचिन्त्यमचिन्त्याचिन्त्यानाश्रयमचिन्त्यसमाधिसुखासवसत्वाश्रयचिन्त्यस्यसमाधित्वा
नचधर्ममचिन्त्यावमाह॥ सचत्मेरुगवन्नेवमाह॥ प्रह्मपात्रमिनायास्तित्वावमाह॥ त्वमपिस्वाइपेत्तरेस्तित्वावमाह॥ अत्मसंख्यास्तित्वा

[illegible]

पृष्ठा ४

३२

॥ म॥ श्री गुरु ॥ यत्नं व न संसाधनी ॥ अविष्णु किमपि निर्वीत धर्मा ॥ सुधिमा ॥ यत्नं सत्काया न च पिना येषां नागवेषमाहा
तजिना सुखस्माद न नैव कुय ४ जीयन पत्रिकुय स्वागतिय संसागान्न संतिका कान संसा न संत्वा ॥ कुनिय नैव माल्य विनहि
न न माग्न संहा प्त्वा दय कि न इत्य त्ति न स्मार्थ माहा स्मक्ति ॥ नुवं मुक्क रगवा न्म ॥ श्री यं कू मान रु न म न द वा च न् ॥ साधु साधु म
॥ श्री १ मूल विना न ॥ यं वा कू अथ ख तू न स्मा ख ला या मायुष्मा न्म हा क सा पा र ग व क म न द वा च न् ॥ अविष्णु न्म नाग न ध निरुत
कुचिद स्य गति न स धर्म विन य स्या च गं हि ना या ४ प ह्म पा न मि ना या ४ स ॥ अ ना ना अ वि मा ऊ न ४ ॥ अ ह्म ना न ४ प नि ग्र हि ना ना वा ॥
नुवं मुक्क रगवा न्म य म न्म न्म हा का स प म न द वा च न् ॥ ॥ हे व न का म्भ प प र्ब दि लि रु ॥ धू पा स का य २ ना ग न ध नि ॥ अ स्य ग म्ही न स
धर्म विन य स्या स्या च ग म्ही ना या ४ प ह्म पा न मि ना या ॥ अ ना ना अ वि ष्णु न्म धि मा न्म अ ह्म ना न ४ प नि ग्र हि ना ना वा अ वि ष्णु कि ॥ न द थ
यि ना म का म्भ प ग रू प ति र्वा ग रू प ति पू श वा स न स ह म्भ मू त्य न म नि न त्वे न न ४ न इ ४ खि ना इ र्म ना ना रु म ना रु वे ने व प्ति न य
न सु खि न ४ ॥ सो म न स्या ना रु व न् ॥ वि ग न प र्क व स्म म न सि का न ४ ॥ नुवं म व का म्भ प ना स र्दि रु हि रु ॥ धू पा न का पा सि का ना मि मा

३२

गमि नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य नां प्रह्लाप निपति र्ना या वद ता नाम गृ त्व नाम वं ह विष्णु नि ॥ कथं व प त्राम ० मा म वं नृ पा
गमि नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य नां प्रह्लाप कि निपति ति वृ ना या वं द ता व न गृ त्व म स्तु चा व त्र ता का त्र त गृ त्वा आत्मन स्तु त
विष्णु कि सु खि ता सु म न श्व वि ग त प र्श व स्तु न म न सि का ॥ ८ ॥ वं वं वा च रा षि षा क ॥ अथ नृ वृ द्ध र्ग न म ह न धा ग त प य्युः
पा स तं च य तु ना मा स मा हि त्रि य ग मि नां प्रह्लापा नमि ना या व द ता ना नृत्य ना या वं द ता वा ग्र ना ॥ तथ य पि ना म का प न्द वा
मु य त्रिं ग म आ ह म न स्तु त व न्त्वा न दि पो नै त्रि ज्ञा तं वा वि द्वा न स्तु त्वा न न्द स्तु त चि त्र त व ता यं पा त्रि ज्ञा तं ८ का वि द न ॥ सर्व प
त्रि स्तु त्वा त वि षा ती ति ॥ ९ ॥ वं म व का ग्ध प ना हि रु हि रु ॥ पा सि का पा सि का ० मां ग म्ही नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य ना
या व द ता वा ग्र त्वा आ व म न स आ न दि ना त वि षा ति ॥ य च न आ ह म न म आ त दि ना त वि षा त्प ना ग त ॥ नि ॥ ० मां गः
ग रि नां प्रह्लापा नमि नामज्ञा नाम नृत्य नां या वं द ता वा ग्र त्वा नि षा तं तं नृ का ग्ध प ग च्छु ० हे व न प र्श दि म मा ह व न य न आ
ह म न स आ न दि ना त वि षा त्प ॥ ना ग त ॥ नि न पा न या आ ह म न क न या चा नं दि न या च न चि त्र त पृ ति कां कि त वां सर्व

सहस्र
३३

पत्रिरुत्तमंगमिषा कियइत सर्ववृद्धमपत्रिरुत्तमया मयि य कास्यगमि नां प्रह्लापा नमिताया वद ज्ञाना वा नूत्त चा नथा
गनस्यो र्थ य नस्थास्यति प्रच निष्ठाति ॥ अनागतं नित नदपि कास्य प वृद्धा धिष्ठा न न वृद्धा नूत्त व न ह्यन वा ॥ नक्तस्मा त्मर्हि का
ग्य पय र्म मांगमि नां प्रह्लापा नमिता यां वद ज्ञाना वा म नूत्त चां ॥ अथा कित्ता य के सां पु थ म क ११ व १ नद्य थपि नाम कास्य
पमनिका नाम नि न त्र पथ न य द आरु ना ह व कि निष्ठा न द ग न वा ना स्य म नि न त्र प थ कं द ग तं पूर्वा नू पूर् व दृष्ट मन
नमनिका न द म ति कौ न त्र तु वं म व कास्य प यं र्म मांगमि नां प्रह्लापा नमिता या वद ज्ञाना वा म नूत्त चां ॥ अथा
न संश्च नंदिना ह विष्ठा कि उ द ग ११ नि स्ये म न स्य ज्ञा ना या कास्य प न सां पु थ ११ व १ य न कां ष प न वं म्मा च ला
विष्ठा के तु न द व न व हा ष स्वय दि द म र्म ११ यं १ कू मा न रू के सां पु ह्लापा नमिता नि र्दं गं या वद ज्ञाना वा नूत्त चां मि ति ॥
पूर्व से म र्म ११ कू मा न रू नां १ पर्यु पा सि ना ह विष्ठा ति ॥ नद्य थपि नाम कास्य प कश्चि द व पु नू वा १ न्य न नं ग मं न ग नं वा नि ग
मं म्मां न न य दं म्मा के न चि द व क र्थं थ ग ना ह व न् ॥ अथा प न न का न ह व न् ॥ अथा प न न का न ह न स्य कश्चि द व पु नू लू षः

३३

उपसंक्रमस्य नग्नस्य वर्त्तुलाषट् ॥ नखां चानामनमनियकात्तजनपदकामनियकात्तानां प्रकृतिश्चानामनियकात्तानां उद्या
ननामनियकात्तानां उत्सृज्य नग्ननामनियकात्तानां प्रथमलनामनियकात्तानां च वर्त्तुलाषट् ॥ सनतचूला तुष्टिविन्दुः ॥
सोमनस्य जात ४ पुन ४ पुन नखाषट् ॥ पुनदवकावहपुनखपत्रिकीर्तयस्वतिसंपुनखपुनवतिसुगता हवामे दनतप
वमने नपुनखननग्नकातिचाना नोमनामनियकमजनपदनामनियकात्तानां प्रकृतिश्चानामनीयकात्तानां उद्याननाम
नियकात्तानां उत्सृज्य नग्ननामनियकात्तानां प्रथमलनामनियकात्तानां ॥ तत्कस्मीदृशसुथहि संचकृत्वा तुष्टुश्रा
त्तनाहवत्तदगु ४ पुनितिसोमनस्य जात ४ ॥ पुनमेवकासापयिर्मस्तुश्रीक ४ मात्ररुते ४ पर्यापासिताहविष्यत्यतिरुं
पसंक्राकीरुविषाकिपत्रिपुष्टुधनखांमिसागमिनां पुनहपनमिनां नृत्यनाश्रुत्वा उदात्रपुतिपामाप्रमुविशक्ति ॥ उ
दात्रपुकीपाभापमृत्यत्सु पुनवाचवाविषाक ॥ पुनदवकावचूल्यामरुतममेवपुष्टापात्रमिनिर्द्धगंयावदजा
गलात्तत्तन्मिति ॥ पुनमेवकाशायुष्मासहाकाशपादगवत्तमनदवाचन ॥ ४० मानि नखांरगवत्तुश्रात्तानां कलपुपानां

उद्गा५

३८

कूलरहिहृत्ताक्षे ३ नागनक्षत्रि आकाशसिद्धा निनिमिगानिरविषाक्तियानिमानिरुगवंगनिदृष्टानि ॥ रुगवानाह ॥
जुवंमनत्काञ्चपयथावाचलाषम ७० मानिकषामनागनक्षत्रिग्रहानाकूलपूजा ॥ कूलरहिहृत्ताक्षे आकाशसिद्धा नि-
मिगानिरविषाक्तियानिमानिमयितर्हिनिर्दिष्टानि ॥ अथ खलु मर्शशी ४ कुमारहृत्ताक्षे रुगवक्तमनदवाचन ॥ अनाका-
लस्य रुगवक्तमधर्मस्य अतिंश्रुत्ताका नागवक्तमधर्मस्य रुपात्रमिगायावदविनिमिराया आनासिद्ध निमिराया क-
थंरविषाक्ति ॥ याचरुगवक्तमधर्मदगनासा अनाका नागसिद्धायावदविमिरातलेथरुगवक्तनाकात्रस्यासिद्धस्यया-
वदविमिरुत्तनिर्दिष्ट ॥ अरविषाक्ति ॥ जुवंमूके रुगवान्मर्शश्रियं कुमारहृत्ताक्षे रुगवक्तमनदवाचन ॥ रुगवान्मर्शशी क-
कुमारहृत्ताक्षे कुमारहृत्ताक्षे आकाशसिद्धा निमिरातिरविषाक्तियन्मांगमी नां पुष्पात्रमिगायावदत्यक्ता-
तामनूनादग्धमानामधिमाश्रुतयावत्यर्थावासाक्तियदुहिमर्शशी ४ पुष्पात्रमिगायावदिपनादववा ॥ रुगविषा-
यनिदिप नादृष्टयायानिमर्शशी ४ पूर्ववापिसत्तचत्रिकां वनं नाकगलमूलेत्रियमनूतनाममकुवापि नरिसंवृक्षानि

३८

कुशलमूलानि समदाने तु कामेन कुलपूत्रेन वा वलरहिना वा ॥ यमवपु हापात्रमिना ॥ अतवा ॥ अग्निमा के वा पिषीतवा ॥
त्रयिन वा वाचयितवा उपयकु वा ॥ स्वाध्यायवा ॥ पूर्वलयितवा ॥ पर्यवाफवा ॥ यामनसिवर्तवा ॥ लावयितवा ॥ यावत्सूष
पाधूपदियगंधमात्यविलपनचूर्णवीवनकुशधजघा ॥ पनाकावेजयति हिंदीपदानप्रह निहिश्रयजा हिर्मथाग
कायथवनपूजयितवा ॥ सत्कर्तवा ॥ सर्वसावकपक्षकवृक्षमुमिमनि तु कामेन कुलपूत्रेन वा कुलरहिना वा ॥ यमवपु
हापालमिना ॥ अतवा यावत्सत्कर्तवा ॥ ० ॥ यथा मशूत्री न वेवर्ति कुरुमावकाकिर्हवति ॥ यव ॥ अतमामनवत्तपूत्रे
वा कुलरहिना वा ॥ यमवपु हापात्रमिना ॥ अतवा यावत्सत्कर्तवा ॥ यमशूत्री ४ कविधर्मास्तुर्वातनूत्तादसमनयो धिमा
कु कामेन कुलपूत्रेन वा कुलरहिना वा ॥ यमवपु हापात्रमिना ॥ अतवा यावत्सत्कर्तवा सर्वधर्मा अग्निं शूत्री नीहि वृद्धा
तथागतत ॥ मनिदगमधिमा कु कामेन कुलपूत्रेन वा कुलरहिना वा ॥ यमवपु हापात्रमिना ॥ अतवा यावत्सत्कर्तवा ॥
नक्तस्माद्वानहिसकश्चिद्वर्म ४ संविद्यत उपलप्यत याहि वृक्षतयनवा अतिसंवृक्षतयनवा ॥ यमवपु हापात्रमिना ॥ अतवा यावत्सत्कर्तवा ॥

पृष्ठ २१

नकुलपूजनवाकूलरहितावा ०० यमवपुष्पापानमिता ॥ अतवा यावत्सत्कर्तव्या यावत्सत्कर्तव्या नहिकचिधर्माया नवाधि
त्रित्ववमधिमोकु कामनकुलपूजतवाकूलरहितावा ०० यमवपुष्पापानमिता ॥ अतवा यावत्सत्कर्तव्या सर्वधर्मा न विकल्पयि
तु कामनकुलपूजावाकूलरहितावा ०० यमवपुष्पापानमिता ॥ अतवा यावत्सत्कर्तव्या न कस्माद्वताहर्हिपुष्पापानमिता कस्य
चिधर्मपनिनिष्ठा किं नयविषयस्तपयति दुर्गयति वा सर्वधर्मानुसंक्रियते नवदायन ०० एवमवर्ति तु कामनकुल
पूजतवाकूलरहितावा ०० यमवपुष्पापानमिता ॥ अतवा यावत्सत्कर्तव्या ॥ सर्वधर्मा नातिता नागवानपुष्पापान ०० एवम
धिमोकु कामनकुलपूजतवाकूलरहितावा ०० यमवपुष्पापानमिता ॥ अतवा यावत्सत्कर्तव्या ॥ न कस्माच्च नो नहि मक्ष्यते
ननुत्पादातिता नागवानपुष्पापान ॥ न कस्माच्च नो ननुत्पादगमवगन ॥ हि मक्ष्यते सर्वधर्मा ॥ लुबन्तुषु सर्वधर्मा ॥ न
निःशयतागतुं कामनकुलपूजनकुलरहितावा ०० यमवपुष्पापानमिता ॥ अतवा यावत्सत्कर्तव्या ॥ यथा मक्ष्यते ॥
त्रिपत्रिवर्हस्यदादगभकालस्य धर्मावकस्य पूर्वनाम्नवति ॥ न कुतु कामन ननुपतिषतु कामन ननुपतिषा कु कामन ननुव

३०

ननु कामत कूलपूतवाक कूलइहिगावा य ०० म व प ह्म पालमि ना ०० न वा यावत्सक र्त्तुं वा सत्ता मेणासु निठु क भन सत्व संसा
या वा सु ॥ ३ काम न सर्व सा क न सा ध म वि व दि ठु काम न सर्व सा क न प ल धि वा व वा ड काम न कूल पू य त वा कूल इ हि गा वा ०० य म
व प ह्म पा न मि ना ०० न वा यावत्सक र्त्तुं वा यावत्सर्व धर्मा नूपा द म व वा धू काम न कूल पू ये त वा कूल इ हि गा वा ०० व प ह्म पाल मि
ना या जि खि रु वां म नू प न क या ०० न ॥ अथ त्वत्स मरु श्री ४ क मा ल रु ना रु ग व क म न द वा च नू ॥ नि र्गु ता या रु ग व नू प ह्म
पा न मि ना या ४ क ० ३ ॥ ४ क नू स त्मा १ ॥ अ कि द्वि स म थ या रु ग व नू प ह्म पा न मि ना या अ स म्प क्ता पि का या अ वि ना सि
क या न सा क शी ध र्म सा य हि का पा न नि य हि का या नि श्च क्ता या या नि र्था पा ना १ ॥ स्व ल व म ज्ञ न मा ना १ स्व ल व म प्र सा
मा ना या क स ग्नि ध र्म सा द धि का या १ सर्व ध र्मा म ना त्म क न नि या या क न र्त्तुं या ना या १ सर्व ध र्मा ॥ म न क त्वा का त्रि का या
१ सर्व ध र्मा ॥ म ना ना त्म का त्रि का या अ कि ना या अ रु या अ वि ना सि का या प य ज्ज न ध र्मा ॥ म र्द क र्मा ॥ म पु न क र्त्तुं ध र्मा ॥ वा धि
स त्व ध र्मा ॥ म पि च न दा ती का या १ न हा त्रि का या १ अ ३ १ कृ ति का या न हा त्रि का या न स स र्वै स सा य हि का पा न नि र्वा धि

त्वान् अकलनियत्वात् ॥ यावदहवत्वात् ॥ यश्च हवः स एह पात्रमिना ॥ अनेन कात्र ॥ नमस्ते श्रीः पद्मपात्रमिना हावना वाधिसत्त्वा नां प्र
ति कां श्री कथा ॥ एतच्च वाधिसत्त्वा नां महासत्त्वा अभिचनः यः सर्वधर्मेष्वभिचनः ॥ अथ वमा ॥ नमस्ते श्री वाधिसत्त्वा महासत्त्वा अभिचनो यः
ना अभिचनः सर्वमानिकसुत्तमाद्वा नात्र दूना दूषणा अभिचनसुत्तने खड्ग च न अभिचनसुत्तनि ॥ पूनत्र पत्रं नमस्ते श्रीः कुमालहृत्वा हावना कमन
दवाचन ॥ कथंचनमा ॥ एतच्च वाधिसत्त्वा महासत्त्वा श्री पुमनूनां सम्यक् वाधिसत्त्वा महासत्त्वा ॥ नवमूके हावना नमस्ते श्रीः यं क
मालहृत्तमनूदवाचन ॥ एह पात्रमिना यांचनमाना नमस्ते श्री वाधिसत्त्वा महासत्त्वा श्री पुमनूनां सम्यक् वाधिसत्त्वा महासत्त्वा ॥ अस्मि मन्त्रा
नकवृहता महाधियः समाधौ च नमा ॥ एतच्च वाधिसत्त्वा महासत्त्वा श्री पुमनूनां सम्यक् वाधिसत्त्वा महासत्त्वा ॥ नवमूके नमस्ते श्रीः कुमाल
हृत्वा हावना कमनूदवाचन ॥ कथंचनमा ॥ एतच्च वाधिसत्त्वा महासत्त्वा नावतर्हवाः कनका ॥ नैकवृहः समाधिरिदं च न
हावना हा ॥ एकवृहः मिमंश गी ननु त्यादस्ये नदधिवचनं ॥ एकवचनं समाधिसवतर्ह कामतकुलपूरी ॥ वा कुल इति गावा पूर्वमेव
एह पात्रमिना पत्रिपुष्ट वाः ॥ ननः ॥ यश्च दकवृत्त समाधिसवतर्ह त्रिष्यकि ॥ नक्तस्माद्वा नात्र कापाहिमन्त्रा ननु त्यादः ॥ अप्रति

३५
३७

पाशाञ्जनापनियः॥ अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः अचिन्त्यः
निगयना नि कर्तुं ना नि॥ असं सग्राता म न वर वि न वं सर्व नि मि ता म न सि का न न प र्या ष्ट व ह्वा नि खि दि न वं न व क न था ग ना म न
सि क र्त्तु वं ॥ सर्व धर्मा ग्य म न सि क र्त्तु वं ॥ अ नू प न म्भु या ण ना यं व न था ग नं म न सि क र्त्तु वं ॥ ल स ना म ध र्म ग्नि न वं ॥ म व द्वा मा ध य
श्रु त्वा प र्य य स्या दि पि स न था ग नं ॥ दि ग मा म्खि क र्त्तु नि खि दि न वं न म व न था ग नं म न सि क र्त्तु वं ॥ न न म न सि क र्त्तु ना नि ना ना ग न
पु न्पु त्प ना व द्वा र ग व ना म न सि क र्त्तु ना र वि ष्य कि ॥ न क र्त्तु ना र क मि दं न था ग नं तं य था म र्त्तु गी त क र्त्तु ना ग न स्या प म यो वृ द्ध गु ॥
अ पु म यं प्र नि ल नं न वं म र्त्तु गी त क र्त्तु ना म्भु या ण ना यं व न था ग नं म न सि क र्त्तु वं ॥ ल स ना म ध र्म ग्नि न वं ॥ म व द्वा मा ध य
य च न था ग नं न र्त्तु ॥ सं म यं वृ ध र्त्तु वि नो द्या व क ॥ र क्त्तु पु न ना द न धा नि ना सा व ना म्भु या ण ना यं व न था ग नं म न सि क र्त्तु वं ॥ ल स ना म ध र्म ग्नि न वं ॥ म व द्वा मा ध य
वृ ह्म समा धि नि षा द्या व द स्या य ॥ य मा ल स्या ता व द व कि र्त्तु न ग नि दानं ध र्म व ग य मा न ॥ य नां प नि कि र्त्तु न वृ मा ना व द चि न्त्तु पु न प
प त्रि की र्त्तु न नां समा दा य व र्त्तु ध म ॥ य था य थे नां समा दा य व र्त्तु धा न था ग न था स्या समा धि गु ना न्द अ थ य र था य दि क्त्तु न च वि पि ना नि

३७

विदिष्यन्ति तस्य सत्त्वं न नखमाधिन संक्लं ॥ पतिनिष्ठापयितुं मूलं लं रुद्धि कावस्तुद्विके मावहावदस्ती के ॥ स्थापयामि
नाममस्तु श्री ॥ कस्य चित्त्वं नृषामा मस्तु श्री मनिनत्तमनश्चे यमनवदा पितं वरुमन कश्चिदववंदन् ॥ किमनन् यहीनपुन
प्राज्ञानिया अथ मया उवाच मनिनत्तम ॥ १ ॥ अथ खलु संपूर्ण सत्त्वं मनिनत्तं दद्यादवदापदार्थं ॥ अथ कायस्य नावहाप
नृखलु दं मनिनत्तं न का ह्यसंति ॥ अथ खलु संपूर्ण सत्त्वं मनिनत्तं गृहीत्वा अथ द्यापकत्रये नवदापयन् ॥ अथ न मनिनत्तं मव
दापमानपतिमूलम् वेत् ॥ यथा यथा न मनिनत्तं मवदापयन् ॥ तथा तथा सामनिनत्तं ॥ अथ न ॥ अथ मवमस्तु श्रीर्यदायदा सं
कूलपूर्वा वा कूलरहिता वा अथ समाधिसमापत्त्य क ॥ अथ न निष्ठापि ॥ न दानं न समाधेर्गत्वा नृदम निनत्तं न सौ कंचिदं मीदं न नायात्र
पुंस्तु पात्रं मिदं न नाय ॥ तथा अपि नाममस्तु श्री ॥ सूर्यमस्तु लम्बानकम् श्री सप्तर्षी काया न न मिहि ॥ स्तु न ॥ अथ मवमस्तु श्री न क
युहं समाधिमागमावतिर्यपतिलत्त नगा काचिधर्मदग नायात्र पहापात्रमीकादग ना अथ मवमस्तु गहन ना सो कचिधर्ममस्तु ना नि
नृद पयन् ॥ तथा अपि नाममस्तु श्री अथ खलु दिशु महासमुद्रं सत्त्वं लल ॥ पूरुषा उदकमस्तु न किं पय ॥ सर्वं नृदक न समवा

बृहत्
३८

लि पयु पइ न ल व न सं न वं म व म रू शी र्यो क शि धर्म द ग न म या द सि ता सर्वा सा ल क न मा य इ न न त्पा द न सा न् र हा व न सा वि म
मु कि न ग न नि रा ध न ग म या पि म धि रू शी ४ वृ ल पू व ७ ह स म रि धि सि ह ना य य म व ध र्म द ग यि षा ति ॥ न त् सर्व म क न सा म न द ग
मि षा ति ॥ य इ न न त्पा द न स म वा हा व न म व वि ना ग न स म व वि मू क्री न स म व नि रा ध न स म व ७ मं म रू शी ४ स मा धि मा ग म
क शि त् स या ध र्मा द सि न सं सं क ल पू या कां क मा आ ल व न् नि दि ति इ प दि ७ न् ॥ ५ वं हि म रू शी ४ सं क ल पू व ७ मं स मा धि मा ग म
या का वि द ग ना सर्वा कां म ग म न त्पा द न ल वा म्मे व द ग यि षा र्प न प न म् ७ न पु न न प न र्म रू शी ४ ना म सं मा धि म ग म् वा धि स त्वा
म हा स त्वा ४ क्रि पं वा धि पा क्रि का न् म्पा र्प नि पृ य क्रि प म वा न रू नां स म्पा कं वा धि म रि सं हा त्पा न् ॥ पु न न प न म रू शी वा धि स त्वा म
स त्वा ना त्म क्ष ना या वं न ध र्म क्ष ना न त्पा दं प सं ति ॥ ना नि रा ध न के क लं ना लं ५ वं क्रि का पि म रू शी वा धि स त्वा म हा स त्वा ४ क्रि प
म न रू नां स म्पा कं वा धि म रि सं हा त्पा न् ॥ या वा न वि क य द न रू नां स म्पा कं स वा धि न सा पि क ल पू व सो वां जा क्रि वा धि स त्वा ध र्मा नां
च पु ति न म्पा य न च वा धि वृ ह त्वा यं सं पा था न ७ नि ॥ ५ वं मि मां म रू शी ४ जा क्रि न स क ल पू व स क्रि क ल पू व सा क्रि प म्पा द म्पा न रू ना

३८

पांसयक वाधो सर्वधर्मा वृषधर्मा ॥ नित्यचवंमधिमा ॥ नतचावनिय न नमपाहंमवेवहि कं चदाम् नूह नायांसमक्क वाधो ॥
नूविनहि नय सर्ववृषधर्मा वकाव ॥ यसां वकल पृथस्यवाकलरहि नावा ॥ नमनिर्दगंश्रुत्वा नस्याह नायितत्त्वा काजायितत्त्वं
वा ॥ ॥ ॥ वंमूक मरुग्री कृमातल्लगवकमनदवाचन् ॥ किंहु दुनिया नलगव नू नूलां समक्क वाधिश ॥ लगवा नाह ॥ नाहिदंरु
गवमरुग्री नेवानूलां समक्क वाधिश उ विर्या ना ॥ नत्कस्माह ना नय नूलां ना रावा वाह दुह दु नित्यो नावा ॥ नत्स्माह ना नगागत्वा स
र्वधर्मा ॥ ॥ नत्स्माह हिमशयी यं नूह गमि नायां पृथपात्तमी नाया ॥ हिं वारिह नित्या उपाग कावाउपासिकावा नावनिधिषकि ॥ याव
नसहिमिषकि न नमस सत्र नेग ना सममा यप्रवृत्तिना सुषां वाहंभस्मा ॥ यामरुग्री ४ वृत्तपृथावाकलरहि नावा ॥ नूह गंमि नायां पृथ
पात्रमियां तसिषा न ना सो वाधिसत्त्वसिग्ग मां गिरु न ॥ नयथापि ना ममरुग्री र्यक विदरुगग्र मा वीरुग्र मा मरुगुत्तोषधिव
नत्स नमा विनाहयकि सर्वे न महापृथिविति सिपुन वंमवमरुग्री र्यक विद्वा धिसत्त्वा नां महासत्तां ना कृगलधर्मा ४ सर्वे न पृथपात्रमि
नायनिष्ठ हिना विधि वी नूटि वेए न ना मापय क न वि स वाद यत्त नूलां समक्क वाधिश ॥ ॥ वंमूक मरुग्री ४ कृमातल्लगवकमन

सहस्र
३७

दवाचन ॥ या यत्न गवन्तप ह्यपानमिना निर्दग्गस्य कचिदिह रुम्हियय
मष्वानं गनष्वान नपदष्वान नपदष्वानं पृहिना तार विषयि न वेमूक रगवान् मंरुश्रीयं वृमात्तु नम नदवाचन
॥ येमंरुश्रीयं पृह्यपानमिना निर्दग्गस्य कचिदिह रुम्हियय ॥ ७० मंम ववयया निव निवृत्त १५ ह्यपा
नमिना निर्दग्गस्य न्यासु निन लभ्य क्रिया वद्वि सुत्र न रगविययि ॥ अ ल वनं ह या नाह नां मंरुश्री मंरु वृ गनम
ला न दामि य मंरुमा गमि नां पृह्यपानमिना निर्दग्गस्य कचिदिह रुम्हियय ॥ नां मंरुश्री नियं प
ह्यपानमिना निर्दग्गस्य कु को मात्तु वत् ॥ ७० वं व व नियं शक्ति न व कूल पृ १८ न न गृह न मात्तु न गृह्णा अश्व दधन १८ मंमि
द न मरु दिनि ॥ न त्कत्मा ह ना न हि क स्य चिध्म मात्तु प नि निषा दि वि वि ह का पृथग न धर्मा लम नृत्पा दा वा वि ना लम वा पृथि न ल
वा निर्दिष्ट न लो न धर्मा नां न पृथक् वृद्ध धर्मा लं सात्ता दा वा वि ना लम वा पृथि न लो वा निर्दिष्ट १॥ ७० वं मूक मंरुश्री १८ रुमात्तु
का रग वत्तु म न द वा च न ॥ या म रग व न् हि रु वा हि रु नि वा उ पा सि का वा उ पा सि का ७० वं वं न ॥ क न्मा य न था ग न स धर्मा क

३८

अपवेत्तारुत॥ तस्माह रगवन्नवपृष्ठं वंदय सर्वधर्मा विनूधा काथा॥ तत्कस्माह गाम्नाहि न काचित्सत्त्वा पलपि १॥ उत्पादन
विनूध १॥ नापि सा केथा केनचित्सत्त्वे न सकनमाह तं॥ तत्कस्माह गाम्नाहि न काचित्सत्त्वा पलपि १॥ पुनत्रपत्ररुगवन्॥ अह
तस्मै वंदयं म नूत्पनाहि नामसाधर्मदग नाह त॥ तत्कस्माह गाम्नाहि रगवन् अन्त्यादस्मा १॥ सर्वधर्मा स्मृता धर्मथागनाया
नाहं गाम्नाय विगमनिदिद १ अहं हर्मिन् च तपुथगय न धर्मा यथा न विनासिता १॥ पुनत्रपत्रं तस्माह रगवन् वंदय नंद
धर्मद सियां कश्चित्सपत्रि निर्वतपत्रि निर्वाति॥ पत्रिनिर्वाति वा॥ तत्कस्माह गाम्नाहि रगवन् तत्क नयं नू पलपि त्वात्सत्त्वा
उवंमहं रगवन् पृष्ठ १ समा न वगं वंदयं॥ पुनत्रपत्ररुगवन् या समा किकादिमागमा नां पहापानमिना (अनुकाम १॥ पत्रिप
चुत्तकारु वां य रगवन् साह कथा पवृत्तारुपति तस्माहं मवं वंदयं स चैतुत्वमिच्छसिना कथां (अनुकामा च मानसमाकृ पय (अप
मिच्छति मा च विहृ मत्पाद य (अप्यामिति॥ माह सिरु पुन्रषमाया पुन्रषस्य पुहृत्तारु गोपहृत्तारु य उवंमिय धर्मदग नागका आ
गका आहृत्तारु स चन्॥ त्वं शो पुन्रष ऋत्तिसिमां धर्मा दास ना (अनु नंद च कि षु तथ पिनामा कास्यग कुनिपदं उवंमिय ग का धर्मा

यह ५०

दशनाम उं सं चामलं लपुत्रं व ०० इ सिमां धर्मदगना ०० ०० न आ द्यमा नम स्वमाद यं ॥ तत्कामादना त्रीहिका विदिह
द्वयपत्रिकिर्हना पत्रिकीर्हना ०० द्वयपत्रिकिर्हना वा ॥ सं च विह सिमां यं व धर्मदगना ०० ०० न आ द्यमा नम स्वमाद यं ॥ तत्कामादना त्रीहिका विदिह
विनासु यद्विह कानि चमा समनिकु मरुं धर्ममा ध्या लम स्वपृथ ज्ञन धर्म स्यमा च ल मिया मरुग वन ॥ ०० ०० क
म १ पृष्ठक महम वं म नू सा स्य तु म नू यु नि काय य यं स च क ल पृथी वा कूल इ हि ना वा पत्रि पृष्ठक वं नि कृ त्रि विग म
स्य अस्यां पु नि लान मू दामा पु नि वि ह न स्य ष अ इ ह नो प ह्वा न मि ना या वं द जा ना ले वा नू स्य चां द ग य यं ॥ ०० ०० मू के र ग
वान म स्य य कू मा न रू म न द वा व न ॥ सा धू सा धू मं ह जि १ सू ला धि न ०० यं वा क ल वं चो रु न व द सु स क ल पृथ स्य वा कूल इ हि
कु र्वा नि धा ग न ड कु का म व प ह्वा पा ल मि ना ल व यि ने वा अ ल व य ज न न था ग न प य पा सि ड का मे नि कूल पृथ न वा कूल इ हि
ना वा ०० व स ह्वा न मि ना ०० व म नू प न म्हा या ग न ॥ ०० ०० ग न ग म स्तु नि बा प द व ०० को मि त कूल पृथ न वा कूल इ हि ना वा ००
व प ह्वा पा न मि ना या सि डि न वं म नू प न म्हा या ग न ॥ ०० ०० न नू नो म म्हा कं वा धि म हि सं वा धू का म न कूल पृथ न वा कूल इ हि ना वा ०० व

५०

पुष्पापानमिनायां गिजिनवां मनहि संस्कारया गन सर्व समाधिको गत्रपनिष्ठा दयितु कामन कलपुत्र न वा कल इ हि नावा
ॐ हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां पुष्पापानमिनायां गन ॥ यावत्सर्वा का न वनापनं सर्व ह हानं पनि निष्ठा दयितु कामन
कलपुत्र न वा कल इ हि नावा ॐ हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां मलावया गन ॥ कलस्माद्वगस्तथा हि यावत्सर्वा का
न वनापनं सर्व ह हानं मकत म न सत्र म न वं सर्व धर्मा ॥ सति ॥ गन नानसं कथि धर्मा यान गनि ॥ स य व म नू ग क का
म न कलपुत्र न वा कल इ हि नावा ॐ हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां यावदलावया गन ॥ सर्व धर्मा अति ॥ स न ता म
कथि धर्मा य ॥ सति ॥ स न ना ॥ कलस्माद्वगस्तथा हि यावत्सर्वा धर्मा ॥ न व मा ह नू कामन कलपुत्र न वा कल इ हि नावा ॐ
हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां यावदलावया गन सर्व सुता वा वै धाय च न कि ॥ न कथि सर्व सुता यान वा धाय च
न कि अग सं सिदि तु कामन कलपुत्र न वा कल इ हि नावा ॐ हे व पुष्पापानमिनायां गिजिनवां यावदलावया गन ॥ क
लस्माद्वगस्तथा हि सर्व धर्मा वा धि समा य ॥ हि सर्व धर्मा वा धि समा कथा वा धि यथा च वा धि कथा सर्व सुता यथा

अह
२९

चसर्वसत्त्वास्तथाचमिश्रविद्यमानत्वात्सर्वोचत्रिनचानिनिमित्तानिचवाधियाचवापिननूपादापिसः॥ अजातिन
पिसायासमिदिदुकामनचवरूपप्रसवधमपुननकुलपुत्रुतवाकुलरहितावाग्देवपुत्रुपात्रमिनासिद्धिनवा
यावदलावात्स्यादयागतयदपिचमरेश्वरीसुथागतविकुर्विकवसुथागतविक्रिठितनदपिप्रहृष्टपात्रमिनापद
गिति॥ नक्तस्मादगनिर्दगताहिसात्रदगपित्रीपुत्रुपात्रमिनात्रवेवर्हिंकांस्तानहमरेश्वरीवदामिपेरिवावा
रिद्रु॥ वाउपागकोवाउपासिकावाग्देवपुत्रुपात्रमिनात्रचतुष्टयदगमथापुमात्रमात्रमपुत्रुहीषकिपर्यवा
प्यकिधनपिषकिवचपिषकियावत्संपकासपिषकि॥ वाश्चननवादायनथत्वापुतिपयंकनियत्तास्तुक्त
पुत्रुश्चकुलरहितश्चवा॥ अयवदिनवंनवूहविषयस्तिनय० मांगमिनापुत्रुपात्रमिनायावदलावात्ननूपात्र
त्वाताप्रसिषकिनसंनुसीषकिनसंनुसमापत्ता॥ उरुत्रिचाधिमायेकनियत्तास्तुविषकिनसर्ववूहधम्मपुत्रुमा
मपुहमरेश्वरीमृदास्तुपयामिब्रह्मनूपात्रागतविहृतासर्वेनहहिसपुतिक्कतामिमामृदास्तुपयामि॥ समगा

२९

चावृहानामियमङ्गनायनिदिपनायावत्सर्ववृहधर्मापनिडिफाअनयाचमस्तथामृदयामृदितावांघिसत्वयानिकः कुल
लपुत्रावाकुलइहितावाइहवीरुवस्यपायगमनायअरुवाअववतुमोपुत्रकवृद्धतुमोवागंतुमवेकमस्तयवा॥अथवृत्त
स्यांवल्लयांगकादवानामिदुमुयसिंभश्चदवपुत्रादिवोनवचनचर्चनदिबोअमाद्यात्रवेऽपुष्पेदिवोअगसेदिवोअच
लकुमदकुभुलीकेर्दिवोअवायेनिमांपुष्पापानमितांपुत्रयमानाहगवेकंमस्तुशायंचकुमालरुतु॥अथवाकिनन्नरिपा
किनन्नवक्षवाचतु॥अदकुगिलमलमस्तुवातुनस्यधर्मात्रस्तस्यपुत्रायेपुन१पुन२उवत्तायकवांतवमयअनयामृद
यामृडीना२५वचत्रकादवानामिदुवाचमलाषनमयमपिरुगवकयागमोपस्यामहा॥अस्यांगमीनाया२पुष्पापानमि
तायावदनृत्यनाया२हजम्बूदीपनषांतथात्रपात्तकुलपुत्रात्तकुलइहिहतां२अनावलासमागनाययावतुषां२मव
सर्ववृहधर्मापनिष्ठादयाययेवाखलपुनर्गत्तकुलपुत्रात्तकुलइहिहतां२चायखहापानमितानिद्वि२अत्रत्यकुं
तश्रुतावलासागमिषकिश्रुत्वाचाविमाश्रुतेअधिमूका२अहिषकिपर्यवापस्यक्रियावद्वचयिषकि१निष्ठा२कुल

पुष्प २
६२

पुष्प २ कूल इति हि हि अत्र त वा दवता पसंहा न च वाय मस्या कमिति ॥ १ ॥ वसूकं रगवानगकु स्यवानामिदममदवाच
रु ॥ २ ॥ वं न कतू को गिक सर्व व धर्म पत्रि निष्पत्ति सुषां कूल पुष्पा ॥ ३ ॥ कूल इति हि हि ॥ ४ ॥ चड व वा नियता थ न पतिको
जि क वा ज नू ह जा या ॥ ५ ॥ सम क वा ॥ ६ ॥ अथ ख ल म र ॥ ७ ॥ १ ॥ क मा ल रू का र ग व क म न द वा च न ॥ ८ ॥ अ धि नि ष्टु सुं ग न ॥ ९ ॥ मं
ग मि न पुष्पा पा न मि ता नि द ग न वा कूल पुष्पा ॥ १० ॥ कूल इति हि हि ना चार्थी य स म न क न रा षि ना च यं वा कं ॥ ११ ॥ अथ ख ल र ग स्य वा
ता या वृ ढा नू ल व न ष षि का न म हा प धि वि वा ना अ नू र ॥ १२ ॥ स म न क न पु च ति ना यां च म हा प धि वि वा ॥ १३ ॥ अथ ख ल र ग वा न सां व ना या
स्मि न म क न न ॥ १४ ॥ स म न क न वा वि ष्टु न व र ग व ना स्मि न ॥ १५ ॥ अथ ख ल र ग स्य वा ना यां पि सा ह म म हा सा ह म् लो क सा दु र्म हा व रा स
न स्रु ॥ १६ ॥ हि दि मं पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि नि ष्टु न ॥ १७ ॥ र ग वा ना ह ॥ १८ ॥ वं मं र ॥ १९ ॥ क मा ल रू का र ग व क म न द वा च न ॥
२० ॥ मा नि र ग व नू र्ध्व नि मि का नि त था ग न स्य मं पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि नि ष्टु न ॥ २१ ॥ र ग वा ना ह ॥ २२ ॥ वं मं र म र ॥ २३ ॥ ने
स्य पुष्पा पा न मि ता नि द ग म धि नि ष्टु न ॥ २४ ॥ मा नि र्ध्व नि मि का नि नू रि ॥ २५ ॥ र्ध्व नि मि ष्टु न वं म धि नि ष्टु ना य पुष्पा पा

६२

[illegible]

यह * गिसम ॥ अथा यत्न म्यार्द्ध निपूया वृक्षावलावेन आर्यवला किं न स्वत वाधिसत्त्व महासत्त्वमगदवाचन् ॥ ७० ॥ हार्यावला किं
* ३ स्वत क पूजा वा कुल इहि ना वाग कि ना या प ह्ण पा न मिना या च र्या भि र्क काम न क थं व व न क स्मा ॥ अवला कि न ग्व न आ
ह ॥ य ४ ख त्र व ल कूल पूजा वा कुल इहि ना वागं कि ना या प ह्ण पा न मिना या च र्या भि र्क काम न क ने वं वा व ला क य ति स
रूप गु नं गु नं वे व न रूप पथ के गु नं का या पथ के गु नं ॥ उ वं व द ता सं ह्रा सं स्का ना वि ह्ना ना नि गु नं ना ॥ उ वं ग न पृ
सर्व धर्मा गु नं ४ स्व ल क ना ४ अनृत्य ना ४ अनिरूपे ४ अचू ना ४ अच ला ४ विमे ना ४ अना ना ४ अस पृ ४ न स्मा रु हि
सा नी ए द गु ना गा या न रूप न व द ना न सं ह्रा न सं स्का ना न वि ह्ना नं न च रु ४ न ग्रु नं न द्या ॥ न जि ह्ना न का य न म भा न न
पा न स द्वा न स्मा न न सा न पु ष्ट वा न धर्म ४ न च रु धा दु उ वं या व न धर्म धा दु ४ या व ना वि द्या ऊ या या व न ज्ञ ना म न स क य
न इ ४ ख न समू ड या न नि रा ध ४ न मा र्ग न हा न न पा फी ना पा फी ४ न स्मारु हि गु न नि पृ य अ या फि ला न वा धि सत्त्व महा
सत्त्वो प ह्ण पा न मि ना यि सु वि ह्ना न कि न चि ह्ना न म न मा द्वा द न रू ना या सम्प क् वा धी पर्या सा नि युक्तो नि द्यो ल पा फा म

अथ वल्लि ना सर्ववृद्धे न पि प्रह्लापा न मिनायितु अनरुनाया समुक्तां वाधिमति संवक्ष नस्मान हि कुलपुत्र ह्यन वं पश्य
पालमिनामनु महाविद्यामनु ॥ अनरुनामनु ॥ अगसमा मनु ॥ सर्वइत्थपसंमनामनु ॥ सत्यमधत्वात् प्रह्लापा न मिनाः
यायू कोमनु ॥ नद्यथा ॥ कुंगनगन पानगन पान संगत वाधिसाहा ॥ ० ॥ अवंगमनीयु गगमिनायां प्रह्लापा न मिना
यासिजिनवा वाधिसत्त्वनमहासत्त्वन ॥ अथ नरुगवान् सोमाधि वृद्धाय आर्यावना किन ज्वने तं वाधिसत्त्वनं महासत्त्वनं सा
धुका नमदात् ॥ साधुसाधु कृतपुत्र अवंमनन गगमिनायां प्रह्लापा न मिनायां त्रिदिक्कद नूमाय सर्वे न थागनै त्रिनि ॥ ॐ ॥
ठूदमवाच नरुगवान् सोमाधि वृद्धाय आर्यावना किन ज्वने तं वाधिसत्त्वनं महासत्त्वनं सा च सर्ववति पर्वत्त
दवमा नृणां सूतग नूतग चर्वथना कारुगवना लाधिनमत्तन नृत्रिनि ॥ ॐ ॥ आर्यपच विंगति का प्रह्लापा न मिना
नामधन निपत्रि समाफ ॥ ५ ॥ कुंनमा नूगवत आर्य प्रह्लापा न मिनाये ॥ अवंमया गुरुम कस्मिन् समय रूगवा वाजा
हविहन निस्मा ॥ गहकृष्ट पर्वत महगति रुस पगने नन के वाधिसत्त्वा का निनियत गत सहस्रे ॥ गहकृष्ट वस्त्रला कपात

पृष्ठ ४

४४

नपुमरेय्यदवमानूषासूनकादिगनसहस्रेष्टपुमरेय्यपनिवृत्तः॥ ग्रातत्रगकंसिंहासननिषर्त्तुष्टगवान्धर्मदगम
निष्ठा॥ आदिकल्पानमध्वकल्यानं परमं वसां न कल्याणं सर्वं सुखां न कवनेपनिपूर्त्तुपनिष्ठं पर्यवदातं वक्ष्ये
यं सप्रकाशनिष्ठा॥ अथ खल्वार्यावलाकिरग्वनावाधिसत्त्वामहासत्त्वः॥ उक्तायां सनादकासमूहनांगकृत्वा
दक्रिनज्ञानमल्लपृथिव्यापनिष्ठापयनरुगवांसुनां ज्ञेयं तस्य प्रहसितवदनारुत्वा रुगवकमनदवाचनं॥
दगयतु रुगवंतं प्रह्लापात्रमिना स्वल्पांशं महापूजितं यस्यां सर्वं नमाते न सत्त्वा नां सर्वं कर्मावनानि कृपयिष्यन्ति॥
नियंदाधिपनाय नरविष्णुकि॥ यच्च सत्त्वा मनुसाधुना ह्युक्ता कथां चाविद्यनमनु सिद्धं त्रिकि अथ खलु रुगवान्नाम
वलाकिरग्वनाय वाधिसत्त्वामहासत्त्वामहाका नूनि काये साधुका नमहागा साधुसाधुकुलपुत्रयस्तु सर्वसत्त्वहिनायः
सूखायपनिपन्नसर्वसत्त्वार्थदीयना तुं मधिकस्तु न हित्वं कुलपुत्रं नृसाधुचसूक्तु मनसि कुरु लोचिष्यहं॥ नृपह्ला
पात्रमिना स्वल्पांशं महापूजितं यस्यां सर्वं नमाते न सत्त्वा ॥ सर्वं कर्मावनानि कृपयिष्यन्ति॥ नियंतावं वाधिपनायः

४४

। आरविषादि॥ यसत्त्वा मनुसाधनं शुद्धा न पांचविधु न मनु सिद्ध न त्रिनि॥ अथा र्था वला कि न्गव ना वाधिसत्त्वामहा
सत्त्वा र्गव न कम न द वा च न॥ न न हि सुग न रापि तु सर्व सत्त्व हि नाय सुखाय च॥ अथ खलू र्गव नां सुखाय च॥ अथ खलू र्गव नां सुखाय च॥ अथ खलू र्गव नां सुखाय च॥
युमा च निना म समाधि समापय ते स्मा॥ यस्यां समाहि न या उ र्गा का गम इ विव ना कला दन का नि त्र सि का नि त्रि यु क्त ग न स
ह म्पा ति नि श्र त्र वि स्मा ह॥ ने श्र त्र सि हि ४ सर्व वृ ध कृ णा नि स्मृ ता रू व न्॥ य वं सत्त्वा सु या स रू या सृ ष्ठा रू र्ग व नि न ग न
नू रू ना यां स म्पा कं वा ध्या॥ या वत्ता न का सत्त्वा ४ सर्व सत्त्वा स म्पा र्णि ता रू व न्॥ सर्वा नि च वृ ष्ठा रू ग ति ष धि का न प वि च र
दि वा नि च द्रु न चू र्ग व र्णा ति त था ग न पा द मू ल पा व र्ष न्॥ अथ खलू र्गव नां सुखाय च॥ अथ खलू र्गव नां सुखाय च॥ अथ खलू र्गव नां सुखाय च॥
न यथा॥ वाधिसत्त्वेन महासत्त्वेन सर्व सत्त्वेन ४ समचित्तेन रू विनवां॥ मित्रचित्तेन रू विनवां कृ न चित्तेन विनवां कृ न
न वे दाना च रू विनवां सर्व पाप विन हि ना च रू विनवां रू दं च प ह्ना पा न मि ता हि द पि मा व रू यि त वां॥ न मा न त्र न या य॥ न म
ग क मू न य न था ग ना या रू के सं म्पा कं वृ ष्ठा य॥ न यथा॥ कुं मू न २ महा मू न थ स्वा हा॥ अस्यां प ह्ना पा न मि ता या ना ल त्म या न

हिमखितवन्ति न अथ खल्वप्यवलोकिन्स्वनावाधिसत्त्वा महासत्त्वा हगवन्मनदवाचत ॥ कनकात्रयानर
गवन्त्रियं पुष्पापानमिनां संजिफा ॥ हगवानाह ॥ अलोपायत्वा यपिसत्त्वा साहस्रपीमां पुष्पापानमिनां स्वस्याङ्गाध
त्रयिष्यन्ति वाचयिष्यन्ति लिष्यन्ति लिखाययिष्यन्ति न सर्वा इत्यापायनवाधिसैपनानां हविष्यन्ति अतनं क
न ॥ कलपुत्रसंजिफपुष्पापानमिनां च वंमूक आर्यं वनाकिन्मन्त्रवाधिसत्त्वा महासत्त्वा हगवन्मनदवाच
त ॥ आर्यं हगवन्पुत्रमोथर्यसुगन ॥ वाचैर्गैदवरुगवना सर्वसत्त्वहिना यमसूत्राय अथ धर्मपर्यायादसिनाम
दे पुष्पापानमिनां च सत्त्वा नाहिना यमसूत्राय च त ॥ ४०५ मवाच हगवानवाधिसत्त्वा माहासत्त्वा ॥ सा च सर्ववन्ति परस
दवमानूखासुत्रगन्तुं गन्धर्वलोकां हगवन्नाखितं महानाद्विति ॥ ॥ ॥ आर्यं स्वस्याङ्गात्रा हगवन्मिनां पुष्पा
पानमिनां नामधेननिपत्रि समाप ॥ ४॥ ६ ॥ ॥ नमो हगवन् आर्यं पुष्पापानमिनां च वंमया श्रुतम
कस्मिन् समय हगवानात्रा जगत् विहन्ति स्म ॥ गृह्णन्त्येव नमो हगवन्मिनां च वंमया श्रुतम ॥ ननु खल्वहगवानां य

अहो
६६

वृद्ध

अथ सूत्रं निमोसं कुयने समं ॥ यकचित्सूत्रं अवकः मावयीसिजिउ कामने ०० यं भवयुष्मपात्रमिना ॥ अ
नया ॥ उरुहितं वा ॥ धनमिना वा ॥ वाचमिना वा ॥ पर्यावाफ वा ॥ ०० हे वं प्रहृषा पात्रमिना योड पायको गत्य समना
गनेन वाधिसूत्रे नमहा सत्वेन सर्वधर्मसमदागमाय याग कत्रिनि यं ॥ नत्कसाह ता ॥ ०० ह्यि पु ह्यपात्रमिना
विसूत्रे न सर्वधर्मा निदि ॥ ०० ॥ यत्र वाधिसूत्रोतिजितं वा यागमा न व्यमिति ०० नू ह्यनायां सम्यक् वा ॥ धे मिजि
दु कामने ०० यं भवयुष्मपात्रमिना उ पां य को गत्य समना गनेन वाधिसूत्रे नमहा सत्वेन सर्वधर्मसमदागमाय ॥ या
ग कत्रिनि यं ॥ नत्कसाह ता ॥ ०० ह्यि पु ह्यपात्रमिना वा विसूत्रं ॥ सर्ववृद्धधर्मा निदि ॥ ०० ॥ यत्र वाधिसूत्रे नमहा
जितं वा ॥ यकचित्सूत्रं नत्क गलधर्मा ॥ वाधियका ॥ अवकधर्मा वा पुत्य कवृद्धधर्मा वा वाधिसूत्रधर्मा वा वृद्धध
र्मा वा नमि का गलधर्मा वा वाधियका धर्मा अवकधर्मा पुत्य कवृद्धधर्मा वा वाधिसूत्रधर्मा त्वं ॥ यत्र पु ह्यपात्रमि
ना यां नू कर्मा नू प्रविष्ठा ॥ संग्रहं समवगनेन गच्छ किह गवानाह ॥ नयथा ॥ सूत्रं दानपात्रमिना जितपात्रमि

००

गङ्गा कि पात्र मित्र विर्य पात्र मित्र धन पात्र मित्र पुरुष पात्र मित्र ॥ अर्ध आत्म सून्यता ॥ वहिर्ध आगु न्यता ॥ अर्ध आत्म वहि
ध आगु न्यता ॥ अगु न्यता सून्यता ॥ महागु न्यता ॥ अर्ध आत्म वहि ध आगु न्यता ॥ महासू न्यता ॥ पत्र मा र्थगु न्यता ॥ संस्कृत सू न्यता ॥ अ
संस्कृत सू न्यता ॥ अर्ध क गु न्यता अनव नाग गु न्यता ॥ अनव नाग गु न्यता ॥ अनव कान सू न्यता ॥ पुरुष गु न्यता ॥ महा
गु न्यता सर्व धर्म गु न्यता ॥ गुल जन गु न्यता ॥ अनूप म गु न्यता ॥ अर्ध व गु न्यता ॥ त्वरा व गु न्यता ॥ अर्ध व त्वरा व गु
न्यता ॥ चत्वारि सुत पस्कृतानि ४ चत्वारि मम कृतानि ४ चत्वारि उद्विष्टानि ४ म नन्दियानि ॥ पक्ष वलानि ४ सफ व
धालानि ४ आर्या कर्म मार्ग १ ॥ चत्वारि ध्यानानि चत्वारि पुमाणा नि चतस्र आरूप समाप नय ४ ॥ अर्ध विमात्र नवा
नूपूर्व विहान समाप नय ४ ॥ सर्व धन ति सुख दान न धन न चत्वारि वैश्वानरानि ४ ॥ चतस्र पक्षि संविद ४ ॥
महामेदि महा कर्तृता अर्ध दशाव निक वृष धर्म १ ॥ अर्ध नापति रूल संके दागमि रूल ॥ अर्ध नागमि रूल ४ अर्ध रू
त ४ ॥ सर्व हेताय अर्ध मय सुकृत कृत धर्म ४ वाधि पञ्च ४ अव क धर्म ४ पक्ष क कर्तृ धर्म ४ ॥ यत्र प्रह्लापा न मित्रा

पृष्ठ २
५७

यां ४ अना गता ॥ अनपुर्विका ४ ॥ संग्रहं समवसनं गच्छति ॥ सूरुतिनाह ॥ अहं अहं इति वग्राहावत ॥ यः
पुष्पापानमिता ॥ यः हि नाम न कृत्वा धर्मा ४ वापि पञ्च ४ अ व क धर्मा ४ पत्य क वृद्ध धर्मा ४ वापि सत्त्व धर्मा ४ ॥ ब्रह्म
धर्मास्ते कियन्ते पुष्पापानमितायां अ कर्गता अनपुर्विका ४ संग्र ॥ हं समवसनं गच्छति ॥ लगवा नाह ॥ अत्य क मरु
त्वा सूरुते पुष्पापानमिता ॥ सूरुतिनाह ॥ अहं अहं इति वग्राहावत यः पुष्पापानमिता ॥ लगवा नाह ॥ अत्य क वि
शुद्धं लो सूरुते पुष्पापानमिता ॥ सूरुतिनाह ॥ अहं अहं इति वग्राहावत यः ४ लगवन् पुष्पापानमिता ॥ लगवा नाह ॥ अत्य
क विगुहत्वा सूरुते पुष्पापानमिता ॥ न स्माहर्हि सूरुते आकाशमपमा पुष्पापानमिता ॥ सूरुतिनाह ॥ अहं अहं इति वग्राहावत ह वै
गवन् पुष्पापानमिता अनहियुक्त ॥ लगवा नाह ॥ न व स व न यथा वदसि ॥ इति धिमा वा पुष्पापानमिता अनहियुक्त न पमि
न कृत्वा ल मूल इति धर्मा अनविकृत ॥ सूरुते न हिन पद्य न पापमि श्री यमहिने न पापमि ॥ सर्व हं वरुत न पापमि ॥ समादा
प कृत ॥ सूरुती न क सप्त त्वागत न ॥ आदिक मी कृत ॥ अत्य नृप न अपनि पक्क क ज्ञा नाय न ॥ इति सुसंवलनी यन कृति

५७

द न हि न स त्व न हि न हि मू क के न कूल पृ ष्म ष् अ न रि यू के न ॥ त स्मा व हि मू रू क इ न धि म च्यां पा हू पा न मि रा म च के ॥ ए
 न न प न मू रू क य ४ क चि त्कू ल पृ ष्ठा वा कू ल इ हि ना वा ० मा य हू पा न मि नां ग मि ना ल य कि ॥ धा न मि ष कि वा च यि ष
 ति प र्य वा प्पा कि ॥ सा इ ति ना ना ग नू ष मू ल्य त्रा ना रू ग वा नू वा धि स त्ता धा यि ष कि वा च यि ष कि ॥ त स्मा व हि मू रू क कूल पृ
 ष्ठा वा कू ल इ हि ना वा ॥ अ धा स प ने हि कू वा कू स मा कू वा धि क मू ॥ अ रि हू प हू पा न मि ना स न र्था उ रू ही त वा धा न मि न वा
 वा च यि न वा प र्य वा प्पा वां ॥ त ना कि सै प वे स नू रू नां स मा कू वा धि म सं हा त ठू ति ॥ ० ॥ ०० द म धा च हू ग वा ना ल म ना
 अ य धा नू स हू ति न च रि कू वा वा धि स त्ता य सं द व मा नू षा स न ग नू ष ग न्ध व य लो का रू ग व कू ल खि तं म के न द त्ति नि आ र्म
 रू ग व ति अ ह ग ति का य हू पा न मि ना प त्रि स मा फ ४ ॥ ० ॥ ०० न मा ४ स फ वू रू ल्य ४ ॥ उ त्प त्ता व धू म णा न प ति व ल कू ल
 मा वि ष्ठी ति ना म्ना य म्ना मि ति स ह आ न म न न गू ना ना य ना सि कू ना ना ॥ य ना वा फे जि न त्व द ग व न व सि ना पा न ला वि कू मू न तं व य
 हू न वा त्रि प म मि न स कू ल हू ग व कि रि ने क ॥ १ ॥ द ग य धि य न त्ता म्हा ति ए न व न य ४ पु षा ना रू षा अ व र्वा ना मा य

सफर
५८

नासित्कलननिधिर्यस्य यानि संघाफा यनवा ४ पत्र हिरुपट् नापु नापुलु निकस्य मूत्र तं वन्दे हान नासिगिरिव
मिरिव लुपा फसं सान पात्रे ॥ २ ॥ या जाता नाप मायां पविग कय संसाम न्य पाथि विना मायुष वी सह मा निरु म द न म न
क य स म्ब स ना ना ॥ जित्वा कुगा न लाषा न म न म धा ग क य न सान स्य मूत्र न व द धर्म ना जं लु व न हिन क न वि श्व तु ना म ध
य ॥ ३ ॥ जे मा व त्या य जा ता म नू ज य नि स मा या व सि वि वं जे मा य व न र्वा य ना नि पु व न गु न नि ध र्य स चा सि द न न ॥
जे न डं ने न ल प्प ति ह व वि व ध क न हानं त्व जे ४ गि नि ष व द १ ह सि ष्टि का य सु ग न म नू म नं कु क्कु च दं मू नि द्य ॥
५ ॥ ग्म ल व त्या ष्टि जा नां न न प नि नि हि न जी न य स प सु ना य स्या यू नां सह मा ध नि ग य व ए नू र्वा मि सु ना यू र्व लु व ॥ व
ध त्वं य न न त्वा च ल व न गु नि ना इ र्म न पां फ म गु न व द ग्मा सि ता नं क न क मू नि म धि ध र्मा हा न्ध का न ॥ ७ ॥ वा ना न स्या
व ति ष ष्टि नि य नि म हि न वि पा वं जे हि जा ता य स्या त्वा यू सह मा ध नि स य सह ना वि ग नि र्व त्स ना लं य न ना ग्म ध मू न वि ह
व ज न नि धि सा नी ता हान दि फ्या तं व द व द नि य मू नि व न वृ ष र्का स्य प ना क ना थ ॥ ७ ॥ या जा ता ४ अ वि ग्म ल ४ क पि

५८

लवनगमकनाडडवंगयस्योसिदयन कंकगकमिहदांसर्वसाकेकच (अजिष्णाश्वत्थमृत्तमृत्तचिमपिसदा नरुत्रायं वाधिसु
वन्दगमकसिहसूननननमिनं वृद्धमादिनवध ॥ १ ॥ जातिविपुषगपुनपवनमहितकदुमलागहित्वावधत्वंयः
कनिष्ठाकमिगुननिधिआगवृजसामले ॥ अष्टावद्यायमानिष्ठापितरुगवतलाधिसंगमायुर्वन्दमेवयनाथंठुविः
नपूनवनावस्मिनेनंमृनिडं ॥ ८ ॥ मुत्वावेसफवृद्धासकनमृपगगांसफसफार्कलसामयचाष्टममठुनपूनगतरु
वितेलाकनाथं ॥ यत्पुष्पसंपुमृगुगतिरुलददहिनामेवसर्वेचित्वासंस्तपासाभूतय ॥ वचनातिवितिसपुयाकु
॥ ० ॥ ०० निसृगतावदानसफवृद्धमुक्तिसमाफ ॥ ० ॥ ०० ॥ ०० ॥ ०० नमा ॥ सर्ववृद्धवाधिसला नोमलामूलहानकाअनेका
सस ॥ १ ॥ सर्वदिनाअसिमानिष्ठावनदाममयंठुअष्टदालम्बनमगाममसर्वदाअनेकनस्यवयषदाअननअस
मनानकधर्माकखन ॥ महाविनापहसम ॥ असहमहावलेकर्ण ॥ २ ॥ महावलाकिनेहह ॥ वज्रवशाकैयधन ॥ २ ॥ २ ॥ मणुल
वनाग्रविकसकृत् ॥ २ ॥ २ ॥ सर्वनथाहिदाल ॥ २ ॥ अश्वनी ॥ २ ॥ रुद्रस्वाहा ॥ ० ॥ ०० निसृविद्यामकुसिधिनामधान

धनसि
२७

निसमाफ ॥ ० ॥ ॐ नमो ४ वृक्षाय ॥ ॐ नमो ४ गवतु वैत्राचनपुरुकतु नमो ४ यथा गता यो हत सम्यक् वृक्षाय
॥ तद्यथा ॥ ॐ ॐ २ समय २ गत २ दानु समा नृप अना न वे न न म्ब ज सा सवति महाने न निला लु म्ब नि नो कूल नि र्वा
॥ सर्व वृक्ष नां विष्ठा विष्ठा न स्वाहा ॥ ०० ति वे ला च न ना म धा न नि समा फ ॥ १ ॥ ॐ नमो ४ गवतु आर्य शी अश्या
यथा गता यो हत सम्यक् वृक्षाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ कंक नि २ वा क नि २ ना च नि २ शा च नि २ मा च नि २ सं का स य २ प नि ह न २
सर्व कर्म पत्र प ना नि म स्वाहा ॥ ०० ति अश्या ना म धा न नि समा फ ॥ २ ॥ ॐ नमो ४ गवतु नृत्त कतु नमो ४ यथा
गता यो हत सम्यक् वृक्षाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ अमि न २ अमि ना र वे अमि न स ह व अमि न सिद्ध अमि न मिनि अमि न ग
गल कि र्ति क न सर्वा र्थ सिद्ध न सर्व कर्म क सु क ल प्र य क नि स्वाहा ॥ ०० ति अमि ना र वे ना म धा न नि समा फ ॥ ३
ॐ नमो ४ गवतु अमाद्य सिद्धि यथा गता यो हत सम्यक् वृक्षाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ सीद्ध २ स सीद्ध प न म सिद्ध स्वाहा ॥ ०० ति
अमाद्य सिद्धि ना म धा न नि समा फ ॥ ४ ॥ ॐ नमो ४ श्री मं २ नाथाय ॥ ॐ नमो ४ गवतु चन्द्र वज्र काटाय ॥ तद्यथा

॥ हन २ कृ २ तिष्ठ २ वध २ हन २ अमन हं हं हं हं स्वाहा ॥ ७० ॥ नि अमन हं कामधन निसमाफथा ॥ १७ ॥ ॐ न मा ८
श्रीमहनाथाय ॥ ॐ न मा अलपं के नायक मति दहन दयाय मरुती पदा नाय चक्षु का किमनि वृ धिप्रदाय देव
पुरु कं वीरु साय मरुती वानिव लपदा ये स वै सत्वा ना के सानि कूल पू लि कूल प्रजा कूल ॐ श्री ४ धी ४ हं हं स्वाः
हा ॥ ७१ ॥ नि अलपं चमं रुती ४ साधन नामधन निसमाफ ४ ॥ १८ ॥ ॐ न मा श्री ४ गं कृ सिंहाय गनय था ॥ ७२ ॥
निगु नि विजय स्वाहा ॥ न मा सु व्र धाय सु विगु ध वा ध य विगु दं मी धं पति नानू व्र धय ॥ सहर्म पू त्या प ग ता नू ध य
ह ग वा य गु आप नि गु ध व्र य ॥ अहा अहा व्र ध मन रुत ज सं अहा अहा सा ग ल म त्रु ल्यं ॥ अहा अहा व्र ध मन रुत ग
च त्र डा इ स्व त्र पु ष मि वा नि इ त्रं ॥ अहा अहा का नि क रु था ग न ४ सा के कूल न नं दु स र्था ॥ य न द ग ल खि नं सु
प्र मू ल म स व र्ष स त्ता म नू य ह र्थ ॥ ग म रुत ४ ग कृ म नि रु था ग न ४ स त्वा रु म ४ सा क पू न य वि वृ ४ ॥ गं मि न ग म ना
वि ल रु स मा धि ४ य द न वृ कृ ति न व्र ध ग म च ल ॥ गु न्या ४ का य रु थ सी व का ना वि हा न गु न्या धि प दा रु मा ना रु स र्व

जिन कर्महर २ महामेघी वना कित कन २ महाममसिद्धि दन २ महामम २ विजसमन २ अस्मा कसममसिद्धि वां धि २ मह
वाधिसाहा ॥ ॐ माहि २ महामाहि स्वाहा ॥ मति २ महामनि स्वाहा ॥ ॐ निमेदिय पुनि स्म नामसु ॥ ० ॥ ॐ नमा
४ श्रीमेदि नाथाय ॥ लाव विद्यानसंयत्र ४ संमा कं वृक्ष यंसर्वसत्त्वार्थपवित्रचिन्ताय पृषधूपदियगन्धने वीद्यसंसागा
इ ४ रवाकृतमनूतनाय सु मा कं वा धोपनिष्ठाय ॥ ॐ आ ४ मेव यद स्वाहा ॥ ॐ निमेदिय नामध्वा नति समाप ४ ॥
२३ ॥ ॐ नमा ४ गीलाक नाथाय नमो यपा साय नमः ॥ एवं ममांशु नमकस्मिंसमयलगवान् प्राकन कपूर्व न विह्य
तिस्य ॥ श्रुत्यवलकि न गत्रमाह वने ॥ अने के गालगनमाने वमांका स का निमक क नो नात्र त्ववृक्षसमय के
लाहि रे संध नमांशु अस्मादगति हि हिं सहस्र नवनव विरिधे वाधिसत्त्वकीटि निए क सन सुहस्र ४ पवि वन ४ पुनः
नक्तन ० ४ यत्र मह गेल वृक्ष कायिकां द वपु अत धि हो के धर्म ४ गय विर्म ॥ अथ खल्व्या यो वला वि न यना वाधिः
वाधिसत्त्वो महसत्त्वो स्थाया सना द को ग मूर्त नाम ४ क लो द गिन जान संसु लं पथी वाप निष्ठा पाय नलग वासे नागी

५३७
११

लि कृत्वा प्रमुह्यति न वदनात् तत्त्वमवनेम कदाचन ॥ अस्मिन्महावन्महापात्रे नानाहृदयं समयापु
र्वमकृतवन्तिक स्य विलाकितायां लोककान्तिनां केवसमं था जनस्य संकासा इति न मनसत गवन्निः
थ न देवपुत्रप्रमुखानि वरुनिष्ठवासा कायिकद्वयं पुत्रप्रमुखान्यनो कदवपुत्रसहस्राणि स मादपि
गा न नूननां यास्य क्व को भिन्नसमूहस्तत्र ब्रह्मप्रमुखानि च मया दग्मा धिगोक्तं ह्यपि नित्यं चानि ॥ य
स्मिंश्च एतः रगवन्मृथिविषदेऽगच्छेदममाद्यपि गच्छेदयं च तत्र ॥ वदितुं रगवन्मृथिविषदेऽगच्छेद
नमस्तु नमस्तु वरुकायिकप्रमुखानि द्वादशवपुत्रगनसहस्राणि तत्रावतन्मृगपयं स्थासन्ति ॥ चैत्यं संम
रगवन्मृथिविषदेऽगच्छेदविषाति ॥ यद्वदमाद्यपागच्छेदयं च तत्रिषाति ॥ अथ कवृधकोनि नियुक्तगतस
हस्रावनापित कृत्वा तन्मूलास्तु रगवन्मृत्वाह विषाति ॥ यद्वदमाद्यपागच्छेदयं च तत्रिषाति ॥ यः कचिद्भव
गवन्किं लिपकाणां सर्वपापासु च यथासमानं न वा हस्तपादवदवपाञ्चसिन्ना नृणां वा वनाह कचिद्भव

११

[illegible]

धन ॥
१९

एतस्मिन् न वा अलाग्रह निगुन न वा अतिगति ॥ अकगति र्यस्य निगता नाम्ना सत्ता कर्तृ पृष्टि सा क
र्तृ गोपदा सा नि ॥ १० ॥ मानेन वसकु पदानि चिन्तयेत् ॥ अप नि शिपत ४ अरुण ४ अवि के ल्य व न असे
पुते ४ अचि ले ग म न ४ अक ल न न ४ निल प न स म चि कानि जे प ४ विल हिन प च क न ॥ अ न न यो ग न व व
न स्य नि र ज यि न वा ॥ न द वा द स सा दि ग्वा व ध स ल्म स म् त व र्ग न का न पि षां ति ॥ अ ह य द न र्म नो व क नि षा
नि प या न या व त्प स क नि षा त क त्वा गृ हि स्या पी षा नि ॥ किं व र् नो र ग व न न यो न्य मु प्र यो वा श्र ष नि ॥ स्व मि र य
न वा प ना न व ल्या वा उ च ग्ध न ह त्तु ना वा ॥ ग्म षा न क स्य न व र्ग ग व न्पा ति न ना र्मो व लो की र्ग व न स्या न र ग व न र वा के र्ग पृ
स्ति स न सानि य नि षा नि ॥ न य थ पी ना म स र ग क शि ले व प ल ष थ द न म्वा क र्ण र म्वा क लु नि वा श्रा कु र्प यि हा ष मि
ता यो ल जि ला या वा पि स्या अ त्मा नं ले प थ न् ॥ न च न स्य च न स्य क र्ण र क स्य क लु नि का या ग्म व र्ग ग व नि ॥ अ न नो ह मा क
४ ४ ४ नि र ल षि ना वा न्ध ना ति कु मि षा नि ॥ अ पि च स र ग न्ध ए वं स य वं स व र ग व नि द म दि य मा य वा स द्द व यं ४ क शि र्द

१०

ॐ उ त्सापया लं॥ यावत्माया गच्छ नापि पूजयत्ते बाहव न षडं क संसत्ता ना स च वं वृ ग ल हनु ४ ह विष्णु कि॥ यत्र यत्राप
पत्न्य क इ विलहिता श्रु विष्णु कि सिलसमाधिषु ह पूत्य संस्कारं गच्छ न सो गच्छि कम व क नोति य १ क थि रंग व क ल १ ३
वा कूल इ हिता वा रि रु वा रि रु ति वा उ पा ग का वा उ पा सि का वा न द न्या वा क थि त्स ल १ ४ मा ध्या ग ह द य मृ दि ग्ध उ क्रा ष
म्या मृ प वा स क र्था न॥ स फ वा ना न मा ध्या पा ग ह द य मृ दि ग्ध उ क्रा ष म्या मृ प वा स क र्था न॥ स फ वा ना न मा ध्या पा ग ह द य म
ना ना प य रू प नि व र्त्तये त्॥ त स्म र ग व न्द ष नु व न्द म्मा वि ग ति न न सं सा प्ति का कि त्वा १॥ क त म वि ग ति र्य इ त ता ग म्मा
स का य ना त्प त्सा न॥ उ त्प न्ना अ स्या ना ग १ क र्मा व स्य न ग्री षु ष ग म या स न्ति॥ सि ग्ध म ना ह न्द्र श्र अ श्रु वि ष कि॥ व इ ज न पि
य श्रु वि ष कि गु फ न्दि या र्थ्य पु ति ल क्श अ स्य र वि ष ति॥ उ त्प न्ना अ स्या र्थ नि वो ना प मा ष कि॥ अ ग्नी ना न द क्श नाः
द क न ना ग्रा सं क्श कि म न सा पा य ह न्तु॥ क र्मा ना अ स्य म्मा ना र वि ष कि ना स ना व क ल यं र वि ष कि॥ न वा व र्त्त पितृ य
र वि ष कि॥ स फ वा ना न मा ध्या पा ग ह द य न र स्मा द कं वा ष नि ग्पा दि ग्वा दि ग्वा उ द क र्त्त त स्य व अ दा क वा॥ स र्वा प ड

धन ॥
१३

वाउपगमिषाकि ॥ न वाजाहनागजा परकुंग डूवति ॥ सर्वसत्त्वानांच पिया हविषाकि मनश्रायच हविषाकि ॥ न वासा
गकुरय हविषाकि ॥ उत्पन्न आसा गकुरयंथा धुं प्रसमंयासकि ॥ न वासा मनष हय हविषाकि नच कारवा दूरय
नच गकि निरयनयासकि वाक्के ॥ अपक्क ॥ हविषाकि नागिनान विषननगमि ॥ कानक निषाति ॥ दवाचासा
गततंसमितं जहा बर्हगुफियस्फो गकि ॥ यद्यद्यत्रापयसा के पुत्रतडा वीत्तहि नश्च हविषाकि ॥ मेष्टिक नूनाम्
दितोपकाया ॥ १००॥ विगिन नूगंसापुनिकाकिरवां ॥ आप नानदु धर्मा पुनितसा न कतमानधे ॥ मननकोलेत्रा
न्याविलोकिनग्धे आहिरूप तसमूखेदगं नदासकि ॥ सूरवन कालं कनिषाकि नरुद्रा कदृष्टि हविषानहसु विरु
पं कनिषाकि नपाद विरुनाचा नपसा वन्नमश्च नट १ काल कनिषाति ॥ सुपासु नसुतिरुविषाकि ॥ न ॥ ॥ मुख १
कानक निषाति मननं कान नरुयपुल नश्च नरुविषाति ॥ यदुवासा वृद्धे पुननिधिस्त तापयकि हविषाति ॥
वित्तहि नश्च हविषाकि ॥ कल्याणमिर्विदिनदिनेनिका लयी स्वात्रायनिवर्हमिदवा ॥ मयमाहपना गश्च नकत पुसका

जं ३

xxxxx

ननु कश्चिद्विषयार्थिना प्रसादः नृपं चामाद्यपागद्वयधर्मपर्यायः सर्वसत्तावल्लभात्वाभावमित्येवं ॥ आचार्यमूर्तिन क
रुणा ॥ यस्माद्विगतमत्तयात्सपोषापगतवाधिसत्तात्वं किं ॥ सत्ता नामर्थकत्वं न वाधिः ॥ पाप्यनवाधिसत्तानां गननाच्च के गतिः ॥
वाधिरूपा नृपसत्तात्वं उपायः ॥ यतो द्वौ धर्मौ सत्ता नामर्थकत्वं न वाधिः ॥ संचल्लगवन् नृगानि पायच ह मिह दयं तथा ग
तस्य पुनरुक्तिर्लभ्यते न संसां पषमर्थयहि कायसूखाया यथा चै पापकानि ॥ अथ खल्लगवो नार्थावत्ता किं न श्वत्वं वाधिस
त्तमहासत्तमनदवाचत् ॥ तेषां त्वं गच्छसत्तयस्य नने का लं मन्यसा तं न थ गत न पश्चिम का ल पश्चिम वाधिसत्तया न कानां पितृ का
र्यं कनिष्ठांति ॥ अथ खल्लगवो नार्थावत्ता किं न श्वत्वं वाधिसत्ता ॥ निमिषतयना हत्वा लगवत्तमनदवाचत् ॥ ७० नृमलगव सर्व वाधिस
त्तनस्तु नमिदं विनास्तु सत्तमत्तुलं वरुज नहि नायवरुज नमस्ताय सा कानु वं पा ये महता जनकायस्यो यहिताय सखा य ॥ ०॥
॥ ॐ नमस्त्यनृगत पुनिष्ठि नृ ॥ नमस्त्यवृद्ध वाधिसत्तय नमस्त्यपुष्ट कवृद्धार्थ आवक संघत्ता र्की नानागत पत्तुत्तने त् ॥
नमस्त्यसम्पत्तुत्तनां नमस्त्यनृद्वानि पुष्टा महामनय ॥ नमस्त्यश्री आर्यो मेति ययुस्वत्ता मह वाधिसत्तय ॥ नमस्त्यसुपुतिष्ठि न

पानलि
१५

[illegible]

71.

नवद्वनिसमर्थवधनिसमाधिवधनिसर्ववाधियह धर्मवधनिसकवूधधर्मपनिपूत्रतिय स्वाहा॥ नमोनत्तययाय॥ ॐ नमो॥ ४३॥
ब्राह्म्यावितोविरुग्गनायवाधिसत्त्वायमहासत्त्वायमहाकात्रलिकाय॥ नमोमहास्त्रामयाफाय॥ वाधिसत्त्वाय॥ ५३॥ नमस्तुत्वाय
दंमार्थावलाकिरुग्गनायवाधिसमाध्यापागं नागं नामहृदयनथागतं समुत्वं लापितं महापापवदमस्त्रइहमिदानीमावर्ष्य
षासिष्ठाकुमकुपदं सर्वसत्त्वा नां च नृकावकु॥ नमथा॥ ॐ वधश्चिविश्चरुश्चमनश्चिमिनिश्चमनश्चमहाकात्रनिक स्वाहा॥ सं
ॐ धनमकु॥ १॥ ॐ गनश्चिमिनिश्चमनश्चरुश्चिविनिश्चविनिश्चिमिनिश्चिसिश्चकनश्चमहापय्यहस्त्र स्वाहा॥ दवनासं
ॐ धनमकु॥ १॥ ॐ वधश्चवाधश्चवाधश्चवाधश्चकनश्चकितिश्चकनश्चमहापय्यहस्त्र स्वाहा॥ नथागतमकु॥ १॥ ॐ कन
श्चिमिनिश्चकनश्चमहास्त्रामयाफाय स्वाहा॥ नि। वगनमकु॥ १॥ ॐ चनश्चसर्धश्चविचनश्चनृत्तश्चनृत्तश्चिनिश्चनृत्तश्चनृत्त
निश्चनृत्तश्चहहिमहाकात्रलिकाय स्वाहा॥ आकर्षणं मकु॥ १॥ ॐ महापय्यपनिवेगधनश्चिमिनिश्चधनश्चनृत्तश्चमनश्चचनश्चचन
श्चनृत्तश्चमनश्चलनश्चहृत्तश्चहृत्तश्चहृत्त॥ १॥ ॐ कालकयवगधनधिमिनिश्चधनश्चनृत्तश्चमनश्चचनश्चचनश्चचनश्चहृत्तश्चमिगनसहस्र

[illegible]

धनली
१६

वहल स्वाहा ॥ ॐ नमो लोकि कर्त्तुं ॥ १ ॥ इह स्वाहा ॥ नियतानि यत वादनी यागुहस्य मर्गं व न कर्म ॥ १ ॥ गवत ८ पत्रि
यकृत् स्वाहा ॥ ॐ पमह स्वाहा ॥ ॐ वृद्ध धर्म संथाय स्वाहा ॥ ० ॥ पाठ नासिद्ध स्या समनु स कर्मा नित्व किं त्रिः
कात्र जायत पक्ष्म न न र्याति विष्णु धयनि ॥ सर्व कर्मा वन विष्णु च कला ति ॥ अगु नू धू पन सिमा वंधु ॥ रसाद के
नगं पत ना किल काये ॥ सर्व क न पू स्रु कं वे न्वयित वां सर्व व्या धिषू न ते समू द क म्वा प नित्र प दा न वा ॥ कारवा
दहृ द नं गमु त न का सु व न उ द न स न व ॥ ग म द कं विरव ना ग नं श हिं क या ॥ उ द क न वा ॥ च इ ना कै ग ॥ अ न सु ग र क
व न्वे व न्वयि न वा ॥ सि मा व न्व ह व ति ॥ सर्व न का ग उ कं ना द के न वा ॥ र स म के न वा स र्व ग ह रू य च नं दि के स्रु कं ॥ सर्व
जा न प स म न स्रु कं ॥ सं धे कि ना र न ला ह सि ग म ल ग ह ष म ध पि य ति य न ॥ च इ ला ण ग ॥ अ द कं प ना व द के ल ह हि म हा
का र नि के ० ॥ स्व न म ह र म हा र ग ग ल स र ग कं ॥ क न र कि न र क न र ध न र ह न र व न र स न र क न र क न र कि न र क न र
म म हा वि रु ध वि ष य नि बा सि न म हा का र ति कं ॥ स फ प नि वा न म नु ॥ ॥ अ न ग हा प वि न र त्र म क न मा ना ध न सर्व ह सि

जं ई

असि जगाम कृदा ॥ महारुग कमला लङ्का कनका ॥ अनामसमाधिमात्रपु कं पावह सत्त्व संक निप निपात्र नका ॥ महाकात्र
निकं सर्वकर्मा वलन विगु ॥ क ॥ सर्व ह ह नप निपू नकं ॥ सर्व वाधि य नि विमात्र ॥ सर्व सत्त्व समाश्रित न क नि ॥ नम
मुने स्वाहा ॥ अमाद्याय स्वाहा ॥ अमाद्यपागय स्वाहा ॥ हाममनु ॥ अजिगाय स्वाहा ॥ अपनाजिगाय स्वाहा ॥ अमिनागाय स्वा
हा ॥ मानस नप मर्द नाय स्वाहा ॥ अरुयपु दाय स्वाहा ॥ जमाय स्वाहा ॥ विजयाय स्वाहा ॥ जय विजयाय स्वाहा ॥ वनदाय स्वाहा ॥
अकान्त मय्युग्रमनाय स्वाहा ॥ अर्द्ध वै मत्रर्मकू नूनमा सु ने स्वाहा ॥ हृदयमनु ॥ कुं न न २ हं हृद स्वाहा ॥ कुं जय २ हं हृद
स्वाहा ॥ कुं यमि हं हृद स्वाहा ॥ कुं इ जय स्वाहा ॥ कुं श्री ॥ लोक विजया माद्यपागय हं हृद ॥ १ हं १ हं हृद स्वाहा ॥ उपहृदयमनु
॥ कुं वसुमति स्वाहा ॥ कुं ज्ञाना किक स्वाहा ॥ कुं वरुं ले २ स्वाहा ॥ कुं जाला किक जिं १ कुं १ हं हृद स्वाहा ॥ नियमानि यन वेदनि
यासु हस्य भलगवन कर्म ॥ लाला वन १ य निज यकू नू स्वाहा ॥ कुं यमह माय स्वाहा ॥ कुं वध धर्मा सौ य स्वाहा ॥ ० ॥ पठि माहि
रु स्यात्समकु स्य कर्माति हव मिश्री कानगाय नप ॥ न क र्माति विगु धय वि ॥ सर्वकर्मा वनन विगु किं व क नाति ॥ अर्द्ध नू धप

अनं
१७

नसिमाव श्व॥ रुमाद केन गंघा पत्न्यादिना कि ल कथे ४ सर्वज्ञेन सुसूय कं व श्वयिन वं ॥ सर्वथाधिपूष्य नतेन सुद कं वाप
त्रिजपादा न वं ॥ का खिद्ये छेद न समु न न शं सुयन उदन सुयव आद के विष नासन मिर्हिक मा ॥ उद के न वं ॥ च ह नो ॥ ७४
न सुव र्त्त वं धयित वं ॥ द न सुलं कल विन द न व सु सिमा व क्ष प च न गी क सु प्र म क विस नि वा ना त्य नि ज पा च तु पू र्व दि न कि
ल के पू च तु दि ग त्रि रणा न वं ॥ सिमा व श्व व कि ॥ सर्वत्र शा सूयं क ना द के न वा ॥ रु म कि न वं स र्व श ह र्ष प क्ष न कि क
सूय क ॥ सर्वज्ञेन सु ॥ सुय कं ॥ स ये कि ना रू क लो ह लिङ्ग ग ल य सै ह र्ष म ध पि प त्रिय नं ॥ च रु ना ग ॥ अ द कं प ला सो द
कं म ध ॥ द कं वा ॥ सर्व क ति के स ह वि वा दा णा र वा न क्ष द कं प त्रि ज पा मू र्त्त प ह न यि क वं ॥ प त्र वि र व य ना र्त्त ना कू प द वा
न शा सु प र्त्त क ल गं सु य प यि त्वा ३ वि नां सु चि व रु पा वि न त्त म ह नि पू जां कृ त्वा वा च यि त वं ॥ म हा सा नि रु व कि ॥ न न वा द के न
स क व स र्व स त्वा नां त्र शा क ना र व नि स र्व रू प ड वा प स ॥ ४ ५ सा मा कि ॥ मू दि का च द न नि त्र क ह द य ५ क वि ग ति वा ना न
त्रि ज पा क र्त्त वं स व नि र्वा न या मि त्र प यि च कि ॥ ग न न गाय न म ह न ज प क्षि हा म न स र्व स त्वा न ज व न न हा म न स र्व य ह रू

जं ७

ननका॥ जयाविजया अथनाजिमानां कनिश च नां कलि॥ वा नूति अहयपानि ॐ ह्रियपातिगन्धपिपगतं वक्राविष्
काकी॥ सामनाजिसूनन्दाचेति॥ यथासै हवन् इक्ष्वाकु नगनवा नासत्रिजपमनि कृत्वा गितसिवात्र यितवां॥ वात्र
नागत्रनात्रि ॥ विलज्जस्वयं पत्रं सोलाग्ध कसत् ॥ अलक्षिपसमनं पृथक् केन नमसिनां वृद्ध न सर्वत्र आकृता
वनिविषाग्निनां कमनि विषकृतं नोपयत ॥ उत्पन्ना अपि न पीज जनपिषाकि॥ श्रीद्वयसुगमयिषाकि॥ ग्रहायुगमयिषा
कि वानमप्यासनिस्सुम्भनं वात्रि ॥ कत्रविनया सर्वकर्म कलंगा शार्था वला किनश्च न हृदयं पत्रमसिद्ध समाधितवे
तानि कर्माणि कुरुत ॥ अथसाधयिषु मिच्छन्निधि॥ पद ३ ॥ केवर्ष केवर्ष सुनिमामातिरवा र्या वला किनश्च लाजना
मरुदध्वात्रि ॥ शयचकर्म कुरुयन्निवासा ॥ पञ्च पतिवगधन ४ सर्वात्र कात्रविरुषितं कृत्वा पाषाणि केन चित्त कलेन
चित्राययितवां॥ तत ४ साधक ततसा शनोपनिन ॥ मयनम १५ लं कृत्वा ॥ धनपूषा वकिर्ष ॥ अक्षग ॥ अद केपूर्व कृत्वा
४ स्त्राययितवां॥ अक्ष वपहनाश्च १५ षष्ठि रूप कत्रनात्रि॥ वनिमान्नेसत्रुधि नवजिन् ४॥ अगुरुधपदहनाविद्या अष्टसह

अ न ॥
१८

संज्ञापयित्वां ॥ अहं नाशयित नवादि ॥ ३३ ॥ हं जिना वा विष्णु लस्मापि नाशयि वमु प्रावृता हस्ता मा पा दान बां ८ न न ॥
निमामा अग्र न आत्मा न कृति न पस्य कि ॥ ३४ ॥ अहं च पुहिषा क्रिया वत् स्वया मया चार्था व नो कि न न न आग चूति
॥ सर्वा साप नि सां प नि प्र न य कि ॥ ३५ ॥ गिला ह न मा प नि ग पा अजी श्रम यि ला ॥ ३६ ॥ अहं न हं न हं व नि ॥ आ क ल
३७ ॥ कु म ति अयं मा ह हं न व हं नाम स्या धि प्र ति नं ॥ ३८ ॥ यदि च नि न क मा न्ये व सा ध क ॥ ३९ ॥ ॥ ६० ॥ दं म वा
च ह ग वा ना ह म ना न्या यो व सो कि न न न वा धि स स्वा म हा स त्व स च रि ह व स च वा धि स त्वा स च वा धि ग उ वा वो म का
यि के द व पू त्रा सं द व ना नू वा सू न ग नू ग न्ध वा यै ला का र ग व नो ला धि नं म म्प न दि नि ति ॥ ४० ॥ नि म्प यो अ मो ध
पा स ना म ह द यं म ह म्प न म्प नो म धा न ति प ति स मा फ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ ४१ ॥ लो क ना धा य ॥ ४२ ॥ न म्प यो
प स र्प ना यो नो ला सं द र्प ना यो नू का ग वि न्म ना म्प क र लो क वि न सं क म्प स र्प स त्वा ना य सा नि कू नू पू सि कू नू नः
आ कू नू सि धि कू नू ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

१८

नमः कस्मिन्समयेरुगवान्ग्रावस्थां विहृतमिस्म ॥ जनवने न्नाथपिपुसा नाम नवत्वरुगवा नायुष्मन्मानन्दमासकृत्यः
निस्मा ॥ उक्तं ज्ञानमां नन्द ॥ ४० ॥ माषडं नीमहाविद्याधानयनपर्ववापुर्हितकसाहता ॥ ४० ॥ यमा न्दुषुजनिमहाविद्याया उचैहि
महर्षिं कहिमहा नूलावहिलखितां ॥ ननु वृद्ध नरगवत्कावुस्मा नाचसप्रतिनां स के तदवा नामि न्दं धिधितनापुनमात्राः
जनविन्द कनमहा नाजन विरूपाजनमहा नाजन विरूपाजनमहा नाजन ॥ ननु मनुष्यदा निरुवन्ति ॥ नयथा ॥ दपति
नदन्ति किमधुमति ॥ पलुनः का लुनः यश्च कश्चिदानन्द ॥ ४० ॥ माषडं नीमहाविद्यामरुहयन्ति वाचयिष्यन्ति मनसि कति
किपर्यवाप्यन्ति नृजनं संपूतं वंजनं वाधिमूचं न ॥ नायत्यागा ॥ नो नरयागी उदकरयागाः पुण्यधिकरयागाः दवरयागाः
शक्रयागाः गन्धर्वसूतगन्धर्वकिन्नरमहात्रयमनूषामनूषारयत्प ॥ सिंहं व्याद्यदि पत्रिजयं सहेर्गसिग ॥ ४० ॥ महिषसर्व
४० ॥ १५ ॥ ४० ॥ मां मनुष्यदा वं किञ्चि मिथ्यकि ॥ सफसासफास्फटयत् ॥ ननु ४० ॥ मां निमनुष्यदा निरुवन्ति ॥ नयथा ॥ ४० ॥
लउकः काकोन ॥ सकचिक कसि ॥ ननु वनिजसवति नमो वृद्धाय ॥ नमो धर्माय नमो ४ संघाय ॥ नरगवत्काहिकं कलसा

धम्मलि
६०

प्रतिपा गालयन् ॥ दहि ककुलपति व्यागय लुषते ॥ दहि ककुलपति व्यागय ॥ लुषते ॥ वधवकस्य मरुमरु कसिना
रुं यसिंहं नृदिना गालयन् कना गय मरुना गय ॥ जिह्वा गय ॥ उदनसूत्रस्य हृदयसूत्रस्य ॥ नृना हि कस्यः विगुचि
कस्य नाहमा नृसमनूपममि ॥ सत्वा वासुतनिकाय कः ॥ य ० माहिम कुपेनानि ॥ कुं माजिल कुर्यात् ॥ कुं मतिपम
रुं ॥ देहसूत्रपयित्वा ॥ यकिनाम विमना दववर्षसु खान निमूलाव निप्रव ॥ स्थापयन् विगुष कार्हि कमासु ॥ कुं प
मनाहननमकमकय धकि काटिकाटि तुल्या निरुततं ॥ आनन्दधोनाम सस्यं यूलुषित कमी विपाकं ॥ नृदमेवाच
हगवा नारुना नृयुष्मान दालग व नृलुषितं मरुनन्दनिनि ॥ आर्यवठु निमहा विद्यानाम धात्रति समाफः ॥ ३९
कुं नमानील क ॥ ला के गे लाय ॥ कुं नमो आर्या वलाकि नृनाय वासि सत्वाय महा सत्वा महा का नृनिकाय ॥ नयथा ॥ कुं
मतिपमि ॥ कुं सर्ववधनकुदन कनाय ॥ सर्वपापसमुद्रा कष नकनाय ॥ सर्वयाधिषु समन कनाय ॥ सर्वपुण्यदव
विनासन कनाय ॥ सर्वहयषु कनाय ॥ नमो नृससुते ॥ इति आर्या वलाकि नृनस्य सुव निन कंतु ना महिदम आ

६०

[illegible]

सर्वकर्मावननानिममलगवतिसहस्रावर्तिः ४ सर्ववृद्धवलाकि नचरु (अत्र जिह्वा म ना विह्व न वि (अ धनित्वा न यथा ॥ ॐ सूत्रं
सूत्रं नरु नरु सं मरु नरु नरु नरु ॐ सर्ववृद्धा धिष्ठि न स्वाहा ॥ ॐ सर्ववृद्धा वना कि न स्वाहा ॥ ॐ धर्मधनु ग क स्वाहा ॥ ॐ अरु वगव रव
वधर्मा वध ध नि स्वाहा ॥ आय सहस्र वर्त्त नाम धन ती समा फल ॥ २५ ॥ ॐ न मा लो क नां था य ॥ ॐ म नि प म्भ ॥ का न ध
न या ग व न क म ल ध ना ज प मा ना वे रु कि या या क म्भ गि धी नः क ल पू व द द य या न क चि रू प वी धं अ नु ग ना न या नि हि
म क रू न त्वं मं कु ल गी ल गि धं ॐ म नि प म्भ क गि धी नः क ल पू व द द य या न क चि रू प वी धं अ नु ग ना न या नि हि
ग्री क इ ष पा प या च न क कालि त्वं द व र्त्त न ग ति ना र ष अ वा न ना सा उ द क धर्मा का मा अरु य म्भ रू ल द यि ना
ना पि सि दि गि धी नः क ल पू व द द य या न क चि रू प वी धं अ नु ग ना न या नि हि
प म्भ सं रू पा यि गि धी नः क ल पू व द द य या न क चि रू प वी धं अ नु ग ना न या नि हि
सर्व ह्ये लो क नां था सू न न न र नि ना पा तु वा र्त्त न रू तं ॥ ति ॥ प म्भ प मा सू धि न अ प न हि नं ह न दि फी प वी ध य म्भ

अत्र लि
६२

एषा नानाका लोका कलन नूदिना पापम का धर्मो मां मश्री रू नदी पंक्त वति न वगु न लाषिका सर्वला का लीकाना ला क
नाथं पन मगु न क नं गान लि तस्य वाधं ॥ प ॥ मना हियं सम कं सकल समुदिता मिश्रता गुणल कया या वा ॥ ३३ ॥ मा
ना सुक न सुख रु संता हि मा धं य क धं ॥ या व ह ना मय विनि र व समुदिता वा क वा न कु न का क शि त दि र्घ सु धि न म नू ह
दय धि ना पा तु वा ध र्म चि र ॥ मे ॥ इ हं ग ना न य क च क थ स ह ल ना ह ल लो क वा ॥ ३४ ॥ वा धि य हा त्रे य न वि क
त न लो सर्व क थ पु सा नं ॥ वि धा ना वे ध ना थ अ ति क न न रं गं का यं सि धि च का यं ॥ स नू वा अ म ना यी य ष क न क थि ना मि श्र
वि क्रा म शि तं ॥ इ ॥ स म्प कं वू द मा ना त य स क ल ह ना लो क ना थ पु र वा य तू थं प थ मा ना प ह सि त द द या ग न य ना मा क
ला हा आ ए क ल्या न ह तु क थि त न न र ना यां त यां त वि ल षा ला या ना मा नि ना ला अ नू ल स रु न ना गु द ना द ह द वा ४ ॥ ति
थ थ मा इ न ॥ ८८ ॥ न स फ मि श्र न न स य क ष ७ क न स व स मा फ ॥ ३५ ॥ ॥ ॐ न मा लो क ना थ य ॥ न म स्त वा धि स त्वा य म हा
स ला य ना धि नि ॥ आ र्म्य व लो कि त ग म य म ह ग्वा य म रू गि य ॥ १ ॥ प म ग्री रू धि ता ग म य स द र्म व न दाय ने ॥ न म व स क ना य

६२

उवनहृदि कनायक ॥ सर्वदा जगदात्म सर्वतदा नदाय च ॥ सतसहस्रायकाति नम्र श्रवण ॥ ३१ ॥ वडवामृत
पर्यन्तगसिदिगमन नाय चः सर्वधर्मा नूपाय धर्मप्रियाय सूर्ये ॥ ३२ ॥ सर्वसत्त्वमहर्षसंसाहक नाय च ॥
मत्स्याय मूर्जजनुतामाश्नन कलाय ॥ ३३ ॥ ह्यननागर्ह मांगाय धर्मार्थप्रियाय न ॥ नत्तग्रीरुषितं जाय ससु
भगीयुदाय च ॥ ३४ ॥ सर्वनन कलामिनां संगाव कनाय च ॥ ह्यनग्रीसंपुला माय ह्यन लक्ष्मिपदाय च ॥ ३५ ॥ सामने
४ सासूत्रदेयलाके ४ संप्रजिनाय च ॥ नमस्कृताय तत्कायवदिताय तमसादा ॥ ३६ ॥ ज्ञानयदानदलाय पात्रमिताय
पदसिजसूर्यनाचनदिफाय धर्मदीपकनाय ॥ ३७ ॥ कामरूपाय गभर्वसूत्रपाय सूर्यपितृहमनागभिरुद्राय पत्रमा
र्थवियागविभुत ॥ ३८ ॥ ज्ञानिगम्भीरधर्माय ससूत्रवर्गश्रवण ॥ सर्वसमाधिपाफाय स्वर्गतिक नाय च ॥ ३९ ॥ सं
विच्छिन्नगुणाय मुनिपुङ्गवगत्रुपि ॥ वक्षवद्वेधनां समागूनकाय च ॥ ४० ॥ सर्वलावा नूपाय समुपवि
तकानि ॥ वक्षवद्वेधनाय चिन्तामनिसूर्यपि ॥ ४१ ॥ निर्वानमाग्नसकनगंदर्गनपदाय च कृतप्रतिवादिः

अननि
११

निर्याच्छाषकानि॥ १५॥ कृशीरुगायंलोका नाहेषाठुकनिर्वाहिना॥ सर्वाधिवाधिमूकानापत्रिमाचनकानि॥
॥ १५॥ सन्धायनन्दनागन्धयस्त्रासुविनविभुत॥ श्रीमतामाद्युपार्गस्य नृपसंदर्शनायच॥ १६॥ सर्वमकु
गनाहिकोप्रोयसमुद्भादयावजगानिमहायरूविद्रापनकनायच॥ १७॥ प्रेलाकइसत्ता नांरिषनमूर्तिध
त्रि॥ ॥ कृतवगाउकृमालुनरूयकादिदिदद॥ १८॥ निनात्पलसूनशायगमित्रधित्रवृधय॥ सर्वधनाथा
यसर्वक॥ आयहात्रि॥ ॥ १९॥ रूविविधर्मसुवाधिसाअपचिंतायच॥ माकूमार्गहिनूदायप्रचनधर्मविभुन॥
२०॥ प्राफसंवाधिसच्चित्सन्माअपचिंतायच॥ प्रादिइर्गनिकृगपत्रिमाकृतकनायच॥ २१॥ पत्रमानूनगा
संवासमाधिदधननम॥ नमाम्हेलाकनाथायवाधिसत्तायनसदा॥ २२॥ महासत्तायसधर्मगुणसंपत्तिदाय
ननमामितजगच्छासासदाहंगनतवृजन्॥ २३॥ कृजामिसननंरकृनस्यसिदजगन्पुला॥ कृकबमपत्रोधत्तयः
सयापुहकहवन्॥ २४॥ ॥ २५॥ तिग्रीमदयावनाकिंनग्वलस्यजमनाजमुनिसमाफ॥ २६॥ कुंतमाला

६३

क तथा य ॥ नमहंरगवक्षुः सुवलाकिनग्वनायन ॥ पमहंरमहसायसूप्लादकनायच ॥ १ ॥ पमसायपम
शीपत्रिवृतसमूहय ॥ संग्रहपमहसायजगदाग्वमदायिन ॥ २ ॥ एथिवितननायसुगंधपचचरूप ॥ जिननत्वकी
त्रिणयचि कामतिविरुषित ॥ ३ ॥ ॐ नमहंरगवक्षुः सुवलाकिनग्वनायन ॥ महसायज
गहर्लपाशदायमहात्म ॥ १ ॥ एथिवितननायसुगंधपमधनायच ॥ पमशीपत्रिवृतयसूचननकनायच ॥
२ ॥ धर्मधनायनाथायदगहमिश्रनायच ॥ सुनिर्वृतिमहायानसंप्रसिद्धतायसर्वदा ॥ ३ ॥ ॐ आर्यावलाकिन
ग्वनसुउमामहंरग्वनायमाफ ॥ ३८ ॥ ॐ नमो ४ समकुहडाय ॥ अथखनसमकुहडावोधिसखमहसखजगान
वलाकधनुपनयनानहिलापनहिलापवृद्धकृपनमाननरु ॥ समाकलाकल्पसंनानहियागयमानारुयस्यामा
माययागमथहिर्गितनप्रतिष्ठानमकार्षिन् ॥ १ ॥ यावर्कविद्यगदिसीलाकेसर्वहियंशगाननसिंहा ॥ नानरुवद
मिसर्विअस्पष्टान्कायनुवाचमननप्रसन्न ॥ २ ॥ ॐ नमो ४ पमकायपुनामसर्वजिनाकनामिपुनामसर्वजिना

धननि
६५

रि म्पन्नमननः रुद्रचनिपनि। धनवलन ॥ ३ ॥ ७ क न ग्राग्री नमयं वृकान् वृद्धसूगाननिषर्त्तुं कुसध ॥ एवं मया न धर्म
न धनुः सर्वधिमृचमपूर्त्तुं जिनरि ॥ ४ ॥ नृच नृजयं वर्त्तुं समृद्धा सर्वस्वनागसमृद्ध नृगहि ॥ सर्वजिनान्गुना
नृनमानस्तान्सूगानास्वसि श्रुता सर्वान् ॥ ५ ॥ पुष्पवनेरि ॥ चमाल्यवनरि ॥ वायविनपनचक्रवनरि ॥ दि
पवनरि ॥ चप्रवनरि पूजननृजिनानकनामि ॥ ६ ॥ वस्तुवनरि चराचरवनरि चूर्त्तयदरि ॥ चमनसामरि ॥
पूर्वविजि। कृविपूहवनरि पूजननृजिनानकनामि ॥ ७ ॥ याचनृनृनृपूजा उदा नानाधिमृचमिसर्वजिनाः
ना ॥ रुद्रचनि श्रुधिमृकि वननः वदमि पूजयामि जिनसर्वान् ॥ ८ ॥ यच्च कृतं मयि पापहृदयया नागकुक्ष्यपु
माहवस्य न ॥ कायगुवाच मनननथे वयं निदगयामि श्रु सर्व ॥ ९ ॥ यच्च दगदि जिपूषजगत्या लोका श्रु लोका प्रत्येक
जिनानां ॥ वृधसूगानथ सर्वजिनां नां नृ नृमादधिमि श्रु सर्व ॥ १० ॥ यच्च दगदि गी साकप्रदिपा वाधिवि वृध
सुहृत्तपाफा ॥ नावहं सर्वि श्रु धर्मिनाथा चक्र श्रु नृ नृवलनये ॥ ११ ॥ यद्विचनिर्बुदिदगदुकामास्तान-

६५

इयावमिषाञ्जलिहृत् ॥ कृतप्रजापमक लथिहृत् सर्वजगत्पतिताय सुखाय ॥ १२ ॥ वन्दपूजनदगननाय अन्
मादनक्षपनयाचननाय ॥ यच्चसूरमपिसंचितकिंचित् वाधिपिनामयमिच्छे सर्व ॥ १३ ॥ पूजितानुज्जित
कूबधयचमयं विदगदिगिनाक यचञानागकलधृणुपूरुमनात्रयवाधिविवृद्धा ॥ १४ ॥ यावत् कश्चिदज
दिगाशुग्रास्यनिगुधरवकुडकाजा ॥ वाधिदुमन्दगनहिरिन्नमिद्वदसूनेहिश्चराकुपुष्टा ॥ १५ ॥ यावत्
कचिदगदिसि सुखासुखिना ॥ संदलाकुञ्जनाग ॥ सर्वजगत्पतिवामिर्कृत् अर्थाः लोनुपदक्षिनि अक्षतुजाग ॥
१६ ॥ वाधिवनिचैर्हचनमात्साहविगातिस्मत्सर्वगतिषुः सर्वसूजमसूच्यपपतिपवर्जिता अह्नित
वया ॥ १७ ॥ सर्वजिनानन्सिद्धयमानाः लुचनिपनिपुनयत ॥ गीलचनिविमत्रापनिगुद्धानिपुमलुमाचिं इ
चनयं ॥ १८ ॥ देवन्कहिश्चनागन्कहियेककृत् लुमन्नुष्यन्कहि ॥ यानिचसर्वत्रयानिजगत्पतिनामि सुत्राय
दगपिधर्म ॥ १९ ॥ यत्वरूपात्रमितास्वहिमुक्तावाधियचित् मजातुविमृश्यन् ॥ यपिचपापधर्मो वत्रनिस्तः

अनति
६७

वृषत्रिकयूतातु अस्मत्त्वं ॥ २० ॥ कर्मनुकृतातु प्रपथा गाला कगतिष्विष्कि चनय ॥ पमयथागत न अस्ति
फ ४ सूर्यागतिगगलच अगगक ॥ २१ ॥ अचि अयाय ३४ खानपु संमको सर्वजगत्सूखिस्थापयमा ४४ सर्व
जगत्सूहिनायचनयः याव नूकृय यथादिगता ॥ २२ ॥ सत्त्वचनि अनूवर्हयमानो वाधिचत्रिप निपुन यमान ॥ ह
दचत्रिचपलाव यमान ४४ सर्वि अनागत कल्प चनय ॥ २३ ॥ यमूगतागत ममयाचय न हि समागमूनि सखया
॥ कायपुवाचतुचन नो या एकचत्रिपति धातचनय ॥ २४ ॥ यपिचमिशा ममहित कायाः हृदचत्रिय निदगयि
ता ४४ न हि समागमूनि सखया न य अह न विनाग पिजातु ॥ २५ ॥ संमुखनिष्पम हंजिन प ॥ ४४ ब्रह्मसूयाप
त्रिनिर्वृत्त नाथातु ॥ न पूच पूज कनय उदा रा ४॥ सर्वि अनागत कल्पमखि न ॥ २६ ॥ धानयमान जिनात सुधर्मव
धिचत्रिपतिदिपयमान ४४ हृदचत्रिचवि ॥ ४४ धयमान ४४ सर्वि अनागत कल्प चनय ॥ २७ ॥ सर्वल्यष्वच संसात्रं मा
त ४४ पूजतु हातु अशय पाफ ४॥ ४४ हूपा मव समाधि विमा ४४ सर्वगु नैरुवि अजय काष ॥ २८ ॥ एक न जागित

दंज

श्रीपद्मशः सुप्रनक्ति अचिक्रियवृद्धः वृद्धसूगानतिषर्कूमः पश्चिमवापिचरित्रचनमा ॥ २ ॥ एवंमस्य
षनसर्वदिग्मसूगानपथ्यपुत्रियध्वपुमा ॥ वृद्धसमूहपिङ्गुसमूहानाहनिचानिकः कल्पसमूहः ॥ ३० ॥ अकस्म
नागसमूहः नृगसू सर्वजिनानस्वनागविगु ॥ सर्वजगत्स्ययथागयद्याषां वृद्धसमूहसूतिमा मननित्यं ॥ ३१ ॥ नृपचर
उ यद्याषनृगसू सर्वदूयधगानजिनानां चकनयापनिवर्हयमानाः वृद्धिवलनं अहपुविनायं ॥ ३२ ॥ अकज्जन
नृनागतसर्वानकलाषवगज्जहपुविनायं यपिचकल्पयधमानाः स्मृजनकादिप्रविष्टचनयं ॥ ३३ ॥ येचह्यधगता
ननसिंहगता इपश्चिमचकज्जनन ॥ नृपचरगमिगमाहानिनिर्णयः मायगतनविभाजवनन ॥ ३४ ॥ येचदूयधसू
प्रविप्रहा ॥ स्नानइनिर्हचकनजाग्ननुवमलाषनसर्वदिग्मसूदाहनिप्रविप्रहजिनानां ॥ ३५ ॥ येचनृनाग
नलाकपुदिपाः नृपविवृधनचकपुर्किः यपिचदगननिष्ठपुसादिगतनसंपुपसंकुमिनाथान् ॥ ३६ ॥ अदिव
लनसमकजवननयानवलनसमकमुखन ॥ चर्यविलनसमकगुलनः मेषीबलनसमकगतन ॥ ३७ ॥ पृथ

अनलि
६६

वलनसमकगहनः शालवसनः संगतनः पहाडपायसमाधि वलनः वाधिवलनसमदापयमानः ॥ २८ ॥ कर्मवलपति
अधयमाक्षेः सवति यत्रिमर्दयमानः ॥ मानवलनः अवसाकं यमानः ॥ पूनयिरुद्रचत्रिवनसर्वः ॥ २९ ॥ अद्रसमूहः
विश्वधयमानः ॥ निधिसमेदेषैः यैः मौनैः सत्वे समूहविभाचयमानः ॥ धर्मसमूहविषयमानः ॥ ह्यनसमूहविगह्य
मानः ॥ ३० ॥ तर्कसमूहविश्वधयमानः ॥ निधिसमूहपूजयमानः ॥ वृक्षसमूहपूजयमानः ॥ कल्पसमूहचनयमखिव
॥ ३१ ॥ यचरुयधगनानि नानां वाधिवनिपुनिधनविश्ववा ॥ नानरूपनियसविश्ववान्ः रुद्रचत्रियविश्वधियं वाधि
॥ ३२ ॥ यचकयः सुगुसर्वजिनानां यस्याच नासमकलदः ॥ तस्यविश्वसुगचत्रियः नामयनि कुल्लं कुल्लं सर्वः ॥ ३३ ॥ काय
तुवाचमतस्यविश्वधियविश्वधयद्रुविश्वद्विः ॥ यादगनामनहविश्वः तादगनाकुसममनन ॥ ३४ ॥ रुद्रचत्रियसमकग
लयः मरुगीयपनिधचत्रयः ॥ सर्वीशनागनकल्पखिवः पूनयिनाहियसर्वीशसुखं ॥ ३५ ॥ मानपुमाथरुवयच
त्रियमोचप्रमाधुवयगुलानां अयमानूचत्रियापाधिहिलाः जानयिसर्विकुर्विदुर्गर्षी ॥ ३६ ॥ यावगनिपुनरुस्यर

६६

वयाः अनाश्रुत्वा तन्निष्कृत्येव ॥ कर्म उक्त्वा गतुयावततिष्ठः तावन्निष्कृत्य ममपि निधत्तं ॥ ५७ ॥ यश्च दगदिसिद्धिं न क
नन्तश्च को न देशजिना नो ॥ दिवचमानूष सोख विमिष्यतश्च न ज्ञापमव स्य ददया ॥ ५८ ॥ यश्च लूमपनिनामनना
जं ॥ अस्त्वसर्जुनपदमपि मुक्तिं ॥ वाधितनामपार्थयमानाः ॥ अयं विनिष्ठुर्वदिमूल्या ॥ ५९ ॥ वार्द्धितननरुवकि अर्पाया
वार्द्धितननरुवकि कुमिताशाद्रिपुसपञ्चनितं अमिताहं ॥ पस्य समुद्रचत्रिपुनिधत्तं ॥ ६० ॥ लोहसूत्रसूत्रिवतु नषां ॥ सागु
नन्तमानूषजन्मशायाह गसोहि समकलद सुपितथान विनिष्ठुर्वदि ॥ ६१ ॥ पापकृपके अतनन्निपानि ॥ यतश्च लो
नवलातकनानि ॥ सा लूमरुद्रचत्रिहत्तमान ॥ अद्रिपुपत्रिमुननि अर्पाया ॥ ६२ ॥ हानुनूपतुलननग्यः ॥ वर्द्धितुलम
रुतातुनूपन ॥ निथिकमानगतहिनधुषा ॥ अद्रिपुनरुकिव सर्वविलाक ॥ ६३ ॥ अद्रिपुसगच्छानिवाधि कर्मदुःखत्वे निधि
पनि सत्वहिनायः ॥ वृषियवाधिपवर्द्धयिचक्रं षषमिपा नूसेन कसर्व ॥ ६४ ॥ या लूमरुद्रचत्रिपुनिधत्तं ॥ अत्रयि वा
यिदगयिगावा वृषिविज्ञाननिया ॥ इव विपाकधिविधि ॥ अमका अतनथ ॥ ६५ ॥ मरुगीनिधत्तं ॥ तनुसूनरसा च समकल

धनसि
६७

इत्येवमवच्यते नृसिंहाय नमः ॥ नामयमिगलं मसर्व ॥ १६ ॥ सर्वगुणगते हि किं न हिर्यापि नानाविह ॥ १७ ॥
॥ नामयमिगलं मसर्व ॥ नामयमिव न हृदयनियं ॥ १८ ॥ कातुकि मां किं अहं कनमा ॥ आचता नि निवर्तयि सवा
॥ समुखपश्चिमं नृमिगलं नृसुखा नृवर्जये ॥ १९ ॥ नृगुगलं मसर्व निधानः ॥ अमृति सर्वितुव समग्र ॥ २० ॥
॥ हपति प्रीति स्मृतान ॥ सखितं कं त्रियावत लोक ॥ २१ ॥ ॥ हि नमो तुल्य ॥ न नृसुखाः पद्मवत् नृविन उयत्र ॥ वा क
॥ नृसुखा नृगुल ह्या समुख नृहजिनस्य ॥ २२ ॥ ॥ व्याकनं प्रनिल स नृवसि निमि नृकाटिग नृहिन ने के ॥ सखि
॥ नानि नृसुखा नृवर्जये ॥ दिगुगलं सवा नृविवेन ॥ २३ ॥ ॥ हृदयनि प्रनिधान पठि ताः ॥ नृगलं मयि संचित कि विहू ॥ २४ ॥
॥ नृसुखा नृसर्व नृनृगलं मसर्व निधान ॥ २५ ॥ ॥ हृदयनि प्रनिधान मयि दफं ॥ नृसुखा नृमन नृमतिव विविध ॥ २६ ॥
॥ सनोय निमग्नः ॥ यात्वमिगलं नृविन मव ॥ २७ ॥ ॥ नृसुखा नृच निमहा निधान नृनृगलं सवा ॥ २८ ॥
॥ नृमाता कना धाय ॥ नृनृगलं नृसुखा नृवर्जये ॥ २९ ॥ ॥ नृसुखा नृमहा सवा नृनृगलं नृनृकाय ॥ ३० ॥

६७

प्रम क स्मि नमपरागवा नापी वना कि नग्ग ल स्र हगमन पा नन कप वगसिख नसना ना नत्त वृत्त सहस्रसमा धिव व कि स्त
जाम्बून व सर्व र्त्त काये नागसा ॥ ना ना नत्त मय विमा नरु मिपदग विह निस्मा ॥ अ न के श्च द व नाग यद्ग स नग वृत्त कि न
महा नग म न्णा म न्णा का नि त्रिय न ग न सह मे ४ सा र्ध यद्ग प न्ना गवान् पू न स्त न स्र ग ग न्द्र क ना मा नि ४ ५ जि ना
अर्चि ना अ प चा यि ना य नि वृत्त धर्म द म य नि स्मा ॥ आ दी क ल्या न म ध क ल्या न प र्य वसा न क ल्या न स र्थ स व ज न क व लं य
नि र्त्त पा न गु र्द व श च र्य संप्र का नि स्मा ॥ अ थ र व ल व मा या द ना ४ आ र्या व ला कि न ग न स्तु न व कि स्मा ॥ ह र ग व र्त्त ४
कि न क न नि यं ४ अ प नि हि न ल न ४ अ न्ना प स र्थ प त्रि कि न र व स मा ग न स म व ह्ना न स वि मू क वि ह स वि मू क प ह्ना
४ अ ग न या म हा ना ग सर्व व ना व सि प न म पा न मि ना प्र प त्रि र्त्त पू र्त्त ह्ना न स र्त्त ४ ५ नि र्त्त व का ना न ४ प न हि न
य त्त्त ४ म हा क न्ना व द ह्द य ४ प न्ना प न म स ल व त्त्त ४ ४ सू व प द ४ सू र्त्त ह प स र्त्त य सा अ न क स लो ह न ४ ॥ कृ ग ल ह न ४
प नि ह्त्त ४ सू ग ना त्म ४ ४ यि क व न क वां ध व ४ ॥ वि ग न ला ग्म वि ग न द्ध ४ वि ग न मा हा वि म स प हि न ॥ अ वि ध पा न ग ४ ४

धनसि
६६

उरिहृष्टा फः ना लमधपनिहृल ४ द्वादिग लहापुनूखत्रकनधन ४ अगाथन व ४ ना लहनागभु (गंतां) ॥ सर्वर्ष वर्क
कुयविपातु नवगु नमूर्ति ननाग कगः वा नू नजनाधन ४ अगासापापाग धमूर्दी ४ ॥ अमिता हजिनपु क नमिह
लिनवा मपु ४ काच नादिपठि न (गंतां) ४ सुविपु ननगाउ तिहृदिन लाषी ष ४ पुनतिनमनिक यरूप विगार्दक
य ४ ॥ दग हृमि पुमिहृ न ४ दग पनमि ना पुनध ४ अष ४ सिल ४ अ चि न्दगील सिंहविका ननम ४ सिंह विकमम ४ गंतिन नाद
४ सिंह ना ४ विग नाद ४ कामलत लिनगम ४ वृखल ननग ति ४ दति नावलसू ना हि ४ ग मि न ना हि ४ अर्द्ध च न्दाल क ते निनक ४
विष्टि लनाग विवाकाप नम्व ४ नि ननह ४ उतु गम नासिक ४ कनसा को तिगी व ४ दि र्द्यी ग प ल न्द सि म्द र्गा र्से न ख ४ जाल
वन र्द्ध हृस ४ चका लका नपा नि ४ क पा नि धिहा ल तिह ४ ४ ४ अ पु वि ग म न ४ व अ ग मि न ख न ४ हृद य न म प्रिय ग म ४ ४
मनियो दग ति यो ४ नाम्ना द काच न व ४ न म निय के म नो क कमल क न ४ कम ना ह व ४ कमल स म्द व ४ कम ना सु न ४ क प न
मृख ४ कमल हृस ४ कमल नू वा ग म्द ४ क म्द जि न धन ४ विद ४ धन ४ अ धन ४ प धन ४ पु वि न धन ४ पूर्वा हि ना सि ४ अ मि

६६

नवर्वविंशति कल्पसूदृगं कल्पसूदृगं सर्वसत्त्वधनिकं न सर्वव्याधिपसंमनःपीनिकलं सर्वसत्त्वपञ्चिषाः र्वधनिर्मानि
नकायचसूगानवगधनः के कलामकूपसर्वसत्त्वसमानं नृगपृथ्वी नृगकल्प नृगकननिय नृगकगल नृगनि-
श्रयः उत्तमविर्यः संसानतिष्ठाकः सधर्मदावनाद्यातिषकः नानानृगनचन ॥ नृगनिकृत्तः नृगजयवकानयवकास्मृतिव
कः सहाविकृत्तः नृगनवकः मेप्रियवकः गिनवकः दयावकः गानवकः ॥ स्फुटिवकः लघवकः नृगवकः अर्थवकः अर्थवः
दाना नृगसंसयानाक्ताना नृगधर्माः संवका नृगलाकानां सास्त्रानां यनिपूहिचदमपुल्लमूरवः सर्वत्र त्वषचिगां निमपः
वगः सूरवपूर्वसूयी सूर्यासहस्रातिन कनगा नृचित्रगतिनः वृद्धादिनमस्तुतः ॥ ॥ यः कश्चिदाप्यावलाकि
नृगवल्गनामाश्चिन्नगनतम्बुजायहानक्ष्मणः ॥ तस्य पञ्च नृगार्थितिकर्मावतानि पत्रिज्यंगकुकि ॥ सर्वमपुल्लपविष्ट
रुवनि ॥ सर्वमनुनिनस्यसिधे नि ॥ अननकल्पकेटि नियुतगनसहस्रातिरगनि नृगानां अविचिनपविगति ॥ तस्य च
मननकानसमयसूखावणा लाकक्षपुष्पपयंते ॥ गानी गानी अर्मावलाकि नृगवत्रविनही नृगवनि ॥ सनयुजायनम

[illegible]

अनंती
२०

अचरुहं॥ ॐ सर्वविह कायका कचिरुप नाम न वज्रवधन कना मि॥ ॐ सर्वत आगत पूजा प हना या न मान नित्या
नयामि॥ सवन आगत वज्रसत्त अहिषि वाधि छिन्नसामा॥ ॐ सर्वविह सर्वत आगत वज्र कर्मा या न माने नित्या गयाः
मि ॐ सर्वत आगत वज्र कर्मा क नूयामा॥ ॐ सर्वविह एषा पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं ॐ सर्ववित्ते वध पूजा मद्य स
मूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविह आला क पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविह ग मद्य पूजा मद्य समूह रुत नं
समय हं॥ ॐ सर्वविह वा॥ अ म पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविह पूजा हा ग म न्या व नि कि उ सो म्या नूह
न पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविह वस्मान का न पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविह वज्र मद्य स
मूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविह महा वज्र नूह वधान पात्र मिता पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविह अ नू
ह न पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं हं॥ ॐ महा वा अंग दान गि ने पात्र मिता पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं
ॐ सर्वविह नूह न महा वद्य रु कि पात्र मिता पूजा मद्य समूह रुत नं समय हं॥ ॐ सर्वविह संसान प निवै हं ए म्या नूह

ॐ०

नमो हविर्ग्या नमिना पूजामद्य समुद्र रु लनं समयं ॥ ॐ सर्व विदु नू न सो ख विहान ध्यान पा नमिना पूजामद्य समुद्र रु लनं
समयं ॥ सर्व विदु नू न कृ ग च्छ दमहा प्र हा पा नमिना पूजामद्य समुद्र रु न न समयं ॥ ॐ सर्व विदु सर्व पा य ग न न स
नि वज्र ग ल्हा पा नमिना पूजामद्य समुद्र रु लनं समयं ॥ ॐ सर्व विदु द का य नि द्यो न न पू जामद्य समुद्र रु लनं स म
यं ॥ ॐ सर्व विदु वा क निया क न पू जामद्य समुद्र रु लनं समयं ॥ ॐ सर्व विदु चि रु नि यो क या मि पू जामद्य समुद्र रु ल
नं समयं ॥ ॐ सर्व विदु ति ष्ट व ज द टा म रु व ह द य म प्र य च्छ वि धि त सर्व सि धि कै र्दं रु रु रु रु रु ॥ ॐ वं मु षि व ॥ ॐ स
र्व विदु नू नू र्दं र्दं ॥ ॐ सर्व विदु आ ध र्दं सर्व पा प न प न यं ॥ सर्व विदु सर्व पा य वि आ ध नि र्दं र्दं ॥ ॐ सर्व विदु सर्व व
न वि आ ध न म् ४ र्दं र्दं ॥ ॐ म न र्दं महा म न य सा हा ॥ ॐ न मा रु ग व ते सर्व र्ज नि ष त्रि आ ध न ना जा य न था ग ना
या रु न स म्पा क्ति वृ द्धा य ॥ न य था ॥ ॐ आ ध र्दं सर्व पा प वि आ ध न गु ढ वि सृ ष्ट सर्व क र्मा वि न न वी ष ध न सा हा ॥ ॐ सर्व विदु
वज्र चक्र ॥ ॐ समयं ॥ ॐ पु नि च्छ व ज र्दं ॥ ॐ पु नि च्छ व मि ति महा व ने ति ॥ ॐ व ज स ल्प म य क य व र्दं र्दं य नि स

[illegible]

२१

[illegible]

वज्रकर्म्मकृता हवं॥ अ० ज्ञानयुक्ता कपिन २ हह हि विना निविनूपा न स्या य मा य स्वाहा॥ सर्वरुत लय कन कन स्वाहा ह ह सि
विना नि विपात्राय स्वाहा० सु सखा मधु व स्वाहा० ॐ कू व त्राय स्वाहा॥ ॐ रुं रुं रुं शिव स्वाहा ॐ उ र्व व म ॥ स्वाहा॥ ॐ सूर्याय
ग्रहा विपय स्वाहा ॐ च त्राय न रूपा विप न य स्वाहा॥ अ० धा पृथिवी स्वाहा॥ ॐ अमृत त्व ४ स्वाहा ॐ ना ग त्व ४ स्वाहा ॐ सर्वथा
गचिरु मृत्पाद यामि समुद्र रु तनं समय ॥ अ० समाच न स मि न सा न धर्मि न ४ क नू ॥ त्म का ४ जग इव हान य ४ अ० सम न सर्व ३
न सिद्धि दायि न॥ अ० समाच सम वे त्रा य धर्मि ४ न गग ॥ समाप न ना न विद्य न॥ गु न् क न ॥ कनिक ष्य सिनिका रू द स त्व ४ गु व न
सिद्धि दाय कं॥ विग नो पु न रू अ० सम क सिद्धि पू ग न ना म वै र्त्ता नं व ग न धि ना पु सि धा न सिद्धि व त्त्र नि त्रा ध ४ धर्मि ना जग ना र्थ सा
ध नं य ४ ४ समि हि नि स ग न वि त्रा च नि महा रु पा त्म ना नि त्रा ध र्त्मा ना नि त्रा धा त्म क नू नाः चा नि का य ना न॥ व ज्र ग निला क व न
न सिद्धि दाय का ४ अ० मि ना क न रू समा फि त म ना ४ स ग न ग न वि ष्यि अ० म धर्मि ना नि स म या ग सिद्धि व न दो द कु म॥ व न दान ना
सू ग नि ग ना स दा स क व ना नि त्रा क व न सिद्धि दाय का सू ग ना नि ज ग नि ना ना व ना॥ ॐ ग्रा ध न २ ॐ क कं नि नि॥ ॐ न त्त्र ॐ

धननि
२३

असाय ॥ ॐ अमृत २ ॐ पूष २ महापूष ॐ सर्वपापदहनवर्जं हरे ॥ ॐ सर्वपापविशमधनवर्जं हरे ॥ ॐ सर्वकर्मव
नशानिहन्निहन् हरे ॥ ॐ सुवीनासनिमवनानिहन् हरे ॥ ॐ सर्वद्विगमधमवननानिमहं हरे ॥ ॐ इत्येव क
हनश्चलनोतिहरे ॥ ॐ सनश्चसनावननानिहरे ॥ ॐ हनश्चविस्नानानिहरे ॥ ॐ सवावनानिस्नानयहं हरे
॥ ॐ हनश्चसर्ववननाभीहरे ॥ ॐ ८८ २ सर्ववलेनिहरे ॥ ॐ किन्द २ सर्वविलेनिहरे ॥ ॐ दहश्चसर्ववन
नानिहरे ॥ ॐ दहश्चसर्वनलकगतिहरे ॥ ॐ पच २ पुनगगंतुहरे ॥ ॐ मथ २ सर्वनिर्यर्जनिनयहरे ॥ ॐ
सर्वपापविशमधनिनिधर्मश्चपयश्च हरे ॥ ॐ सर्वद्विगमधनिपृष्विलाकिनहरे ॥ ॐ सर्वपापविशम
धनिहानावलाकनिहरे ॥ ॐ सर्वपापगतिनागनेगन्धहरे ॥ ॐ ननकगतिप्राकर्षनिहरे ॥ सर्वननकपूषने
निहरे ॥ ॐ सर्वपापविशमधनिहरे ॥ ॐ सर्वपापगतिग्रहनविनासनिहरे ॥ ज४ हं ४ वं हा ॥ हगवन्तुहिमहोका
नृत्तिकोयहज्जहा ॥ ॐ पूष २ महापूष अपनिमित्तपूष २ अपनिमित्तपूष हानसं हानापचिमापकात्रिनिस्वा

ॐ ३

[illegible]

३५

[illegible]

九

[illegible]

21

॥ ॐ नमोस्तुतं कावगाय ॥ ब्रह्मेहं बहिराधिमानिहोति यत् ॥ नमः ॥

॥ ॐ नमो ब्रह्मणे नमः ॥ नमः सर्वव्यापी सत्त्व ॥ नमः श्रुतमहात्म्यपूजाय नमः ॥ सफलय ॥

॥ ॐ नमो जिह्वा देवनागयन थागनायार्हकसमस्त
साधनानि सर्वत्र वृत्ति संति रक्षा त्रीन साधन ॥ नमो न

॥ ॐ नमो हगवते सर्वपापहर तव शायनं तथा गता मां हं न सम्यक् कृतं यथा तथ

九

॥ ॐ वज्र २ महावज्रिणी यस्मात् आर्य सर्वपापदहननाम धान तिसमाफ १ ॥ ॥ ॐ नमो वज्र सनत्तु ॥ वज्र समाडया ॥ ॐ
वज्र समाज १ यद्वा ॥ ॐ वज्र समाज ४ ज ४ ज १ ह न सत्तु यवसा दि पूर्व कं पु हपा न मिता वज्र पर्य्य समासि नाता वयन ४ ॥ ॐ पिच २
प्र ह्वा वध निजाल २ स्या वद्ध निधिति २ वृ धि वध निस्वाहा ॥ आर्य वज्र स न स्वगी नाम धान तिसमाफ १ ॥ ॥ ॐ नमो रुग वन
सूव र्पुला ४ ३ नाजाय न था ग ना या ह के सम्य स्कं वृ धा य ॥ न यथा ॥ ॐ कृति नि २ अ मि ना द स नि अ यि वि वि नि नि यी नि नि स्वा
आर्य पुं ध विव ध नि नाम धान तिसमाफ १ ॥ ॥ ॐ नमो सध र्म पुं ध नि का य ॥ नमो नत्तु न या य ॥ नम १ प रू द्र नत्ता दि सर्व न
था ग ना न मा न म १ न म सा क्क मून य न था ग ना या ह के सम्य क्क वृ धा य न यथा ॥ अ न २ अ नो वे नो अ म न म म न चि र च त्रि न ॥ स
म स मि ना वि ग न मू क मू क य स मा अ वि स म स म ज य ज य अ जि म सा न स मि न धान ति आ ता क ल सा य स चं ड नि नि धि न र
वि नू न क क न नि अ त्प न न नि वि षू अ न क ए न या नि वि षू धि उ कू ल अ न र प न उ स क जि अ स म स मा क्क वि वि ली कि न ध
म प नि जि षु ए व जि नि स ध नि र्ध नि धा ष नि र्वा ल य वि र्ग ध नि ॥ म नु स क्क ज य न नू क की ग स अ ज य व न ना व कू स व

२दह२पच२मथ२सर्ववृक्षानां वलनामय२चिन्द२हिन्द२तुत्र२विष्ठापय२सर्वसकृत् ॥ सर्वनामसादिनामनूपा मनूपावलन
वन्ध२संकाचनिकाचलिम्बा नयं२गङ्गाय२रुद्र२हन२सर्वसकृत्सर्वमन्त्रा सर्वजगत्सर्वनामसादिनामनूपा मनूपावलन
सर्वपद्मवापसंभवायास्तु ॥ स्वाहा ॥ आर्यः अमिता नामधेयः श्रीसमाफ ॥ ॥ ॐ नमो नलगयाय ॥ ॐ नमो वृद्धाय म-
कात्रिकाय तनति कृतहृदयाय ॥ ॐ आ ॥ सुगतवज्र उवाहा ॥ स्वाहा ॥ आर्यः गुणवज्र नामधेयः श्रीसमाफ ॥ ॥ ॐ नमो
लगवतरेषमकेयूर्यपुत्राजाय नथागतायाह नसमस्तं वृद्धाय ॥ नयथा ॥ ॐ लेष ॥ २ महालेषमसूतेषमस्वाहा ॥ ॥
आर्यः लेषमनामधेयः श्रीसमाफ ॥ ॥ ॐ मनिप ॥ ॐ नमो लगवत आर्यपत्रमगुनवेमहाकात्रिकाय ॥
कमूनयेन थागतायाह नसमस्तं वृद्धाय ॥ नयथा ॥ ॐ मून ॥ २ महामूनय स्वाहा ॥ आर्यः गङ्गाकमुनिनामधेयः श्रीसमाफ ॥
॥ ॐ नमः ॥ सफसफिनामधेयः कुरुधकदिना ॥ नयथा ॥ चने वृत्रचेष्ट स्वाहा ॥ आर्यः वृद्धनामधेयः श्रीसमाफ ॥
॥ ॐ नमो नलगयाय ॥ ॐ नमो समस्तवृक्षानां ॥ ॐ ध्याम कयुत्रः जय २ विजय २ जयवाहिनि । सर्वत्र निपसकंति

ॐ नमः सर्वरूपसुखा ॥ सर्वसत्ता नाच सर्वरूपसुखा ॥ सहाय मो देवन्दा ध जाग्र क यून नामधन श्री अपनाजिग ननकः
चि न्ह ॥ अत्रिक लपन नाक लप वागी ग्रह लप ४ विवाद लप ४ सर्वरूप लप विषयि ॥ ध जाग्र क था गं न ना धन यिग था मा नू य सता
ऊरु चू उ क ॥ वात्रिषि क न धन यत सर्वमि क द लानि मु नू पा व धन येयू नाग वा ॥ नू नि न जा क ना नि ॥ पन से न य य नि प्रा क
का सी ल धि ना म च नि पा प का ॥ ७ द म वा च नू र ग वा ना नू म ना ल च य कू दि द वा हि रु वा ॥ वा धि स लाम हा म ला सा त्व सर्व वि नि प
षत्स द व ४ मा नू शा नू न ग नू उ ग भव थ ना का र ग व का ला धि न म ल न नू नि नि ॥ आर्य ध जाग्र क यून नामधन सिस मा फ ॥
॥ ॐ नमः ४ श्री महा सं स ना य ॥ पूर्व व नू उ नि ग नू ना त न नू र को ना ह व या गी ॥ ग न ना य कं ॥ ऐ न व का नि ना वि नू च क हि
क सूर्य गि मे प नि नि ना ॥ व नू म हा का य कू ध ह नि ना र्क क ख ष्ठ नि नू ना स स फ द ग दि ना व न ज ना म कू न ध न वि वि व ज
४ व ड कं महा ड कू क ला ना ग धा सं वा य स ४ स दा ॥ नि ना पि ना नू क ह नि न क म व च सं वा तुं ४ ग सु मि ना म हा ना डा न स हा स
च ह न व वां व नू हि ष ॥ सर्वा व से वा न वा ॥ अरु वि न य था क र्म ॥ ५ वि व म दि ह लू के व जा सि कू न दि गं ॥ दि स नू य था क र्म

धनसि
७८

पशु कर्हि वानचप्रिगु लहिरिन नदमूद नचकु मनुकी कागदहिरि पात कंगव का हान कदलिकामपि क कागथा ॥ का
कपशु कविकान अग्नि क तुषुषवक ॥ लंगु कादय अवि नाग हा पा निरु रूस अ न नाहू निगदं व हती उतुजन कालि
का कव न्धजा ला नेल केले व तु रूप तु कु माय ॥ वाम द्य ६७ रद नं मूर्धन वान क पात कं ॥ धनूष द्वा प्र पूरु कं तु पि कानि न
नर्जनि न्ध पृ पू स मा ला सि ख ना नि ग म्भ न धे नि का ॥ हा क रु कां ड च र्म के ल व म क व गालि का वा द ना वि ति का ॥ कां कि
मया रु सि न का कं ॥ कं कालि का नि के म य चू के क मु न व हि क ग नि च न की ल कं च वा ज पू न क पू न कं ॥ अ चि तु का च व स
के म य व रु कु ग रु था ॥ ए व कु म ना वि षू या द स फि न ना रु का पं शू मू द क ग र न सं ॥ ध ना ज प न ह न सं ॥ सु न मू तु मा लि
का चे व न पू न ना म न ग वा द्य च र्मा नि व स ना ना मा व नि च य म मा ॥ न स्या ए ना म हा व वि व ज वा ना हि ना द म्भ ६ दि तु नां स र्वा
क हि च वा म क पा न रु था ना व ज द्य भू ला र ग व ला लि ग म हा ना ग्म न ना मि नि ए क व क मू के क ग के ना सु न क व ली का ॥
मू तु मा ला सि ना ग वा सं ग ल ना ला ला सि ल सि क वा न मा ला के दि व ग न्ध मू ला ना नि ना पू न क पू ना दि व ग म्ना म रु वि नि ष या

७८

आहूतः ॥ नमोऽस्तुते ॥ तिनत्रापत्त्यादिसमयादिफिमहाने जपनमञ्जनि ॥ पुष्पायगुखदशे सर्वसन्निधिविग्रहाहू
क हले अविस्मृतकविहावयत् ॥ एवं रूप पुमां विजहूक नु विहावयत् ॥ सर्वसत्तासमायुक्तमाह सिद्धिचदहिमे ॥
नराकायमनु ॥ ॐ आः कायवाक्यिहवज्रहं ॥ ॐ वज्रवात्राहिमहादविहं ॥ मूलमनु ॥ ॐ निसहासं वलहद
यसमाफ ॥ ॥ ॐ नमः श्रीच पुमहावातनाय ॥ श्रीमत्पुत्रविनाय सर्वसत्त्वपकति ॥ नमाविश्रापसह
त्रं कायप्रियकमूकयंकल ॥ ॥ दवखलागसर्वनापायलावनायेन वाभपुष्पां लोवनं नदीनिगकपासन ॥ सफपा
नालपां नोमध्वामायहोदगिनि ॥ गकवम् ॥ पुपात्रत्वा नमः ॥ गददगिनिहमोतक ॥ लाचविनष्टा वामजान
व ॥ मातपहान नसस्त्र नमवेपाकायेन नमः ॥ मञ्जयनजवनाचनमिह माहं धका नोदय ॥ पुष्पायविहावलाक
नवने वकसमूदीपितं कलाचदसमायमाय पुत्रव ॥ ॥ गवजसत्त्वसय ॥ स्वायेनत्सुखसाधनाय जकवकेपुला
निष्टुति नराम कुम्भ ॥ ॥ विश्वलाजदि नसम ॥ गनहीं कानवियां एवद ॥ ॥ हि ॥ पनपि ॥ जगधर्म न द्वाहं सप

[illegible]

شرف

नाग्य २७ काहिकं घाहिकं लाहिकं चाउर्लिकं सर्वज्ञानसन्निपादनरूपं न वातिकपितिकं (२७) कं सन्निपादनकं मा-
साधर्म्यसिकसावत्सत्रिकं ॥ २७ वं सर्वलाभानागय २ इत्या श्रुत्य वज्रपमसर्वसत्त्वा नां च शक्ति कुत्र २ स्याहा ॥ अ-
यज्जिह्वरूपापसर्वनागनामधनसिमाफला ॥ ॥ ॐ नमो भगवते श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो ॥ ॐ नमो
गवति वज्रवा नाहि आर्यपनाजिह्वे लाकमात्रमहावेद्यसर्वहृत्तह्यारुमहावज्रवजासन अजित अयनाजित वस्य क-
त्राप्रशमनि विषय आषनि आषनिका धनिक त्रापितिसंक्रा सन्निपात्रिणी सूप एव नियनागय विनाद्र मुनिरु-
मुनिमाहति वज्रवा नाहि महायोगीनिका मन्त्र निखरुद्रि ॥ नमो ॥ ॐ २ हन २ पागभन खिखिति ध्रु २ वज्रह-
ला आषय २ खडागक पात्र धन नि महापापप्रविन साधन न सिन मा ला ग्राहक धन नि सुमहान २ याना न सर्व सत्त्वा ना-
सर्वपाप सत्त्वा ना सर्वपाप ना मा सत्त्वा दनिका ट मुहिदृष्ट कलाति नि महा मूडा ॥ श्रीहृन्क सागु महिषि महसिनि-
सहस्र बाहवगनगहमा निव द्रु तिन नग सा कला मुखि पिग सना च न वज्रग तिन वस्य निमिसि २ निमिसि २ ह

[illegible]

रवी खीनि धृन् २ वगहसु आषय २ खदां ऊक पात्र धा जति ॥ ॐ नमः ४ नेनात्माय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ वचु नाद विथ इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४
अय वा जीव निय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ महे नु नाथ स्व निय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ सीव नू पाय इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ गति नू पाय इहं हं हं ॥
॥ ॐ नमः ४ एग वनि द विथ इहं हं हं ॥ ॐ नमः ४ महा हें न व च चा य ४ महा पि सि क मां स नि मा नू खां न पा क सा नि धं न न तिल मा
सा ग्र कि न ध न नि सं सृ नि स मू ह न २ पा ना न सर्व महा पु वा ना महा मा स चू द नि कू ट ति मू र्ख ४ इ ष क ला सि नि महा मू द
आ ह नू क स्य म हि षी स ह्म वा ह व सं ह्म स न मि नि ग ह २ हं २ ख २ ध २ धृ २ सू २ अ ह न महा या गि नि प ठि न सि द्ध ॐ २ ध २ य २
य २ ह २ ह २ हि म २ ह स २ वि न हा २ हां हं २ के ला क वि ना ग ति ग न स ह्म का टि न थ ग न प नि वा हं हं हं ॥ सि ह नू प ख ४ ग ज न
या ग ४ कू ला कां द ल म हा स मू द म ष न य ग २ हं हं हं वि ना द ए हं हं हं ॥ महा व ह्म मा ह वि या ण भू ति त्वं सर्व ज की नि ना क ना
व न्द नि सर्व सर्व प ल्प य का नि नि इ ह हं ॥ ह न या ग नि महा वि न प न म वि ज य सि द्ध या गः गुरु भू वि ह हं हं हं स्वा हा ॥ २० ति द्द
य १ म नू १ ॥ ए ग व नि दि ग म्ब ना मू कू कु आ ष पा द वि ना नै क न रा स मू डी ना म लि ना म् ॥ नि खि न ह व य ह न सि द्धि स्वा धि

भारति
८९

तस्मिन्मिदं जिनं ॥ यि नेनात्माहिताम् ॥ अथ ॥ गार्गवनिनां गुह्यविनां संदवहिनां महर्षिनां महामहामुहामाया
कृष्णनि ॥ ते सा क हननखोपे सा संकृतं पुनश्च ॥ य विमियमाता माहमाया हि विष्णुता शक्तौ कता सुनि विद्या प्रपद्यं गुरु
श्वनि ॥ यथा हि हनमा न विष्णुता गंधर्व नि ॥ सर्वद्वग श्वर्गना न यश्च सून मा नूत्वा नू ॥ विद्या धनि पि गभ चाना ॥ नास्तु
गनू उ कि न्न जान ॥ वसमान यतिरुतानि जनरसु सजानि च ॥ महा विर्य कनि विद्या ॥ ४७ ॥ जाल कलि रुथ ॥ माह न रुम
न ॥ श्रेव विद्वषो च दनादिकं ॥ वग्ध कर्ष ॥ अरु न की ॥ अने कविध को तु रु लक्ष्य मिता कू नू न विष्णु वा च सिद्धि च साधक ॥ न
अप न रु क तस्या नाय नासा विधिय न ॥ अ कृ गत ह्व सिद्धि द वि स ए व दाम ह ॥ म नु न वम हा मा या दि यो न ज नू प कि लि ॥
॥ अ न मा र्ग व न शुभ्र श्व नि द व गा यो ॥ वा ना व रू प उ त्त न ॥ मह सिद्ध रु य शानि श्व रू प मह सिद्ध ॥ ने नात्मा द वि स
न्मान रिष क व जा द क द ग म नु पि द गा शानि व्र य अ दू रू न वि मू क पू ष्ण वा ना च सं जा य ते ॥ श्री ने नात्मा ध्या न ॥ अ क मू र्ध म
कू र क म पी न द्र व रू रू वा म र व ह्यो र्द हि न पा यं र व लो ग वि रू षि पा न्य र्थ कू न ए क क म व ॥ प अ न द्वा वि द व व वा ना हा

८९

[illegible][illegible]

यश्च हृदयश्चित्रिश्चित्रिश्च ३३ हृदयश्च नमस्तुते स्वाहा ॥ ॐ नमो गार्गुति हृदय नाम धनसि समाप ॥ ॐ नमो द
काटाय ॥ यन्मातृकप ह्नातृकपञ्चोक्तं अच न विनोक्तं नोक्तं नितवत उष्टिष न कुसुतनाज ४ सर्वकाट ४ एव ४ पूर्व दक्षिणपश्चि
मा उक्तं अग्निवयुर्वे ० सामैव अर्ध उष्टम तदगदिगमालान् ॥ ॐ हृदयमवतूष कृतेनायेदि अग्निवयुर्वे ० अनाधिपति ४
नेमृत्वा दिसकनमाला ४ अशु लवजमाह कायवाकचिह्नत ॥ नय ॥ मानयश्च काययश्च नृयश्च हृदयश्च द्यायश्च सर्वेषा
नागयश्च ३३ हृदयश्च स्वाहा ॥ ॐ हृदयगुकाट नाम धन ॥ समाप ॥ ॐ नमो नत्तयुयाय ॥ नमस्तुते नमस्तुते नमस्तुते
प्रत्यगि अर्ध ४ च कुवहि नाजाय नथागतायार्ह नमस्तुते वक्ष्य ॥ नय ॥ सर्वयक्तु वक्ष्य ४ ॐ हृदयवतव नयश्च वक्ष्य ४ वक्ष्य ४
धनयश्च ० हृदयसि नायनकन चिह्नयादिकं चिह्नं नृ २ हि नृ २ चित्रि २ गत्रि २ मित्रि २ हृदय २ हृदय २ स्वाहा ॥ अर्ध उष्टिष च कुव
हि नाम धनसि समाप ॥ ॐ नमो वक्ष्य ॥ लोकानि नमस्तुते विविक्क ह्नातृकपञ्चोक्तं ॥ यत्तज्जगति नाथय
स्वित्त कर्तृत्वा विद्य ॥ न ॥ स कृत्वा नमस्तुते विविक्क ह्नातृकपञ्चोक्तं ॥ सत्वाथी च पत्रि २ विद अगमस्तं महामू ॥ नपिस्त
अस्त्वया धि मं धि मर्त्य ४ संप्रकोप्तिता मायामत्रिचिगन धर्व नगत्रस्तु सत्रि ॥ हृदय ४ सक्तु वक्ष्य ४ नय ४ वक्ष्य ४ नय ४ वक्ष्य ४

धननी
८३

धनं नाथप्रपूजयति मवसमानता ॥ हनानि च कृपायानि तस्मिन् च रूपेण कथं ॥ रूपं त्वयि वदुवता नयग्रहा निपात्रिना ॥ व
दनियं विना नास्ति वेदना नातिनास्ती का ॥ न च वेद्यस्य रावन नास्ति त्यस्मिन् न च ॥ संहर्षं ध्यात्रे न न्यषां मुखं ददुत वन्ति न
॥ जन्मोऽभिगमा रावस्तथा कुरुवेत वादिनि ॥ कर्तुं स्वैकं प्रकर्म निस्तया कृत्वा वहात्रे न ॥ एतस्य नापुत्रिकास्तु सिद्धिस्तु
मका मया ॥ न कर्तुं नित्यं कास्ति पूर्य पूर्य पुनितं ॥ जन्म निस्तान न र्यागपा कवाचस्य तस्य कं वेवहान न ॥ एतस्य नापु
त्रिकास्तु सिद्धिस्तु हि मना मया ॥ न केनास्ति न लोकास्ति पूर्य पूर्य पदेत्येव नित्यं न क्वाकं वाचस्य तस्य ॥ ज
रूपयानं नाहं विह्वल न विनान न ॥ न स्यात्सखी न हानं यत्नं सुचिवा न वन ॥ लब्धं लज्जन मने च न स्यात्सखी मने न
नया न स्यात्सखी विस्मयं कं धि नत्वया ॥ लब्धं लज्जनं विनिमूकं वा गुवादा हात्रे वेर्जितं ॥ गन्ता गन्तव्यं गदं गदं गतं
हान च रूपं न संस्पृश्यते रावा नापाहं सदस्ति ॥ न स्वगतापि पत्रा न द्वाप्यं जाय न कथं ॥ रावनाथा न तं नासापानार्थं कनं
नं ॥ नृथा न न हवन्ति न नापि नाप्या नथ न न ॥ एकस्व हि पुरा वस्य विना स मूपपद्यत ॥ पृथक् न हिला वस्य विना स मूपपद्य

८३

न विनष्टकाननभावावत्कार्यीत्यर्हि न युद्धेन ॥ न चाविनष्टात्समननुत्थात्तद्विर्मगतव ॥ विवृद्धाद्यानवृद्धादाविगा
दं कृतसमुत्पत्तिः ॥ मायुत्पादावदुत्पादः सर्वमेव त्वया च न ॥ अतस्तथा जगदिदं पत्रिकलसमूहवत् ॥ पत्रिकलसमूहवत् अ
नन्तु नान्यथा नृपस्य निमित्तं समितिसमष्टिः ॥ नेवानित्यस्य संस्मृतिः ॥ स्वप्नेव संस्मृतिः प्रकाशत्वेन त्वविद्यां वत् स्वयं कृतापकृता
वासां कृतसमूहवत् ॥ नास्ति कश्चिन्नृपः ॥ त्वत्त्वात्तु कश्चिन्नृपः ॥ यः पुनितु समुत्पादः ॥ नृपगामेव नासदा ॥ तावदस्वग
तु नास्ति नित्यं नादृष्टं वा नृपः ॥ सर्वसंकल्पाहा नायः ॥ नास्ति नृपः ॥ यस्तु नृपः ॥ मणिर्यत्तु स्त्रियाः ॥ स्त्रीवत्त्वमाहितः ॥ म
निनीसर्वगकामिन्यां मायावत्त्वं यद्वा ॥ सर्वधर्मस्तथा नाथति ॥ स्वरावत् ॥ एकस्मिन्नानन्तव्यात् ॥ तिरुक्किचित्तु किञ्चित्ति
ननाधिन ॥ यथा ये च नृपाः पृथ्वीपञ्चाले तथा वृद्धवानसि ॥ अयं निषवितु धर्मसना वसा हि रावना ॥ निमित्तानि हि विह्वल
रवतिह कथंचन ॥ अतिमिरुहि विह्वलं रवतिह कथंचन ॥ अतिमिरु मना गम माशु नास्ति त्वयूकवान् ॥ अतस्तथा म
हायान नृपः ॥ त्वत्त्वं नृपः ॥ यदवापं मयः ॥ सुखा सुखं लज्जनं ॥ तिमिरं वंधनाय नृपः ॥ नास्ति नृपः ॥ कृति

धन ॥
८८

॥ लाकारि कसुव नाममा प्रसमाफ ॥ १५ ॥ ॐ नमो गीवज्यागि ॥ ॥ एवं मया ग्रामे कसि सुमय रज वान्तरु
उवा वास काये परिगग ॥ न लसुपनि सि न सफ नत्र पविरुगे क चिरु नत्र युह म हा म भुल मायु विह न तिस्म ॥
नृसखिय न वाधिस त्वदव नागजसु सन ग नृग भवसु न ग न न सा द ॥ न दुख नृग वान वाधिस त्वमा म नु य नः
स ॥ उऊ द्रु य य दूत पूय ० मा वज गो गी नि सवृज ग धि न ४ न त्सुख य न ॥ ये दं ॥ संसा न स ग न ना य क सि इ ४ त्वा नृ व सा
मा ह य स र्व स त्व सम का य नि स वि दि न न रू न ४ य थ म व थि त्वा किं क ना का रु न स मा हि स र्वा नृ ह व स र व ॥
॥ ॐ नमो ४ ला नायि ॥ ॥ ना नामा न र्वा य क नि सु न व नी संपू जि ना स र्व दः लो को ना हि न को ति ति ज य
नि सा मा न व जा न रु नि ॥ का नृ ल्ध न स मा यू ना न व रू वि धा न सा मा न हि नृ ग ना ने ना यि न र ग हि यू ना न वि ण नि ज
ग ति लं र य धं सु नी ॥ १ ॥ ग्राम रु पा न ल के न मः ना ना धा उ वि ना जि नः ना ना ड म ल ना की ॥ ना ना पं दि नि रु
दू जी न ॥ २ ॥ ना ना रु य रु ना य नः पृ थ क जी न त्व ने ॥ कि न ने म धू ना जि न नि सै ने ४ म न रु वा न त स रू ल ॥ ३ ॥

८८

सिद्धविद्याधरगर्तेश्वर्यनिनादिन॥मूनिहितीकनालोश्वसनतंसुनिषवित॥ ४ ॥वाधिसत्त्वगसिद्धानेदग
हमिथनेत्रपि॥आर्यनात्रादिहिदेवेविद्यात्राजसहस्रके॥ ५ ॥श्रीधनाजहोम्यस्यैहयग्रीवादिहिर्न॥सर्वस
त्वहिनायूकाहगवानवनाकिनं॥ ६ ॥विजहात्रकन॥श्रीमानपमगर्लसनस्थिन॥महानपसायूकामेया
चक्रययानिग॥ ७ ॥धर्मदिङ्गनस्यासमहन्नाश्वपर्वदि॥नतापविष्टमागमवजपातिमहावल॥ ८ ॥
पत्रमरूपयायूकापृक्तुवत्ताकिनं॥नक्तानागसिंहग्रीजगवाद्योवसुकट॥ ९ ॥सादंयमीमूनसत्तामग्नः
संसात्रसागत्र॥वद्धा॥संसात्रके॥पासिनागद्वयनमामन॥ १० ॥मूचनयनसत्ताकनश्रुहिमहावग॥चवंमकेर्थ
रुगवानपहसन्नवनाकिन॥ ११ ॥ववलाकुदिस॥सर्वमेत्यास्तनयाहम॥द्विनकलमूदुपपुत्तसन्नमठिका
१२ ॥गमवावमहापाह॥साधूमाधूमहागय॥नामानुग॥महालोग॥सर्वसत्त्वैकवत्सल॥ १३ ॥यानिसंकिन्नमन
आ॥समकेसधनश्वना॥आकालमूनिन॥सखायानिसखावनि॥ १४ ॥चवंमकेत्ताजगन्नाथ॥संग्रीमानवत्ताकि

[illegible]

महामूने॥ २१ ॥ अवमुक्तार्थरुगवान्पहसनवलाकिनश्चदव ला कदिगसर्वमित्यासून ॥ यादृग्म॥ २६ ॥ दञ्जिनक-
नमद्वयप्रलरूपमतिरुतं नमवाचमहापाह साधुसाधुमहा नप॥ २७ ॥ नामासूग ॥ महालगसर्वसखेकवत्सल॥ या
निसूक्तसुमनशाः समकसुधनेनवा॥ २८ ॥ सर्ववाधिविनिमूका ॥ सर्वेभ्यर्गु ॥ निमूका ॥ अकालमसूनिनकाः स
खा ॥ यांनिसूखावति॥ २९ ॥ नानहसप्रवक्रमिदवसंघाग ॥ अर्थम ॥ अन्मादतथाधर्म हविषधसूनिर्द्वा॥
३० ॥ ॥ ॐ लोचनसूलाचनः गानः गानाहवसर्वसत्त्वानूकंपि निसर्वसत्त्वान्वितिः सहस्रगुणः सहस्रनव॥ ॐ न
मोहगवतः अवलाकवलाकयमासर्वसत्त्वान्विवर्द्धैरुद्गुह्यमाह ॥ ॐ गुह्य विगुह्यगुधनः विगुधनः सुगतात्म
जः मेदी ॥ हृदयः निर्मल ॐ गुह्यमः गुह्यमरूपिः महापाहः एवनेः एवने हविषे अपनाजितः महानोदिः विग्वत्रुपिमहावन
ः कल्पागीमहातमोलोकधामि महायग॥ सनसूनिविग्वनादिः पुद्गलीवृधिवर्द्धनिः ॥ निदः पृष्टिद स्वाहा ॥
काना कामरूपिनि सर्वसत्त्वहितायूना॥ सर्वसत्त्वगुणयुक्ता॥ सन ॥ अरुगतिवत्सला ॥ ३१ ॥ वागीश्वनिगी वासूमासः

अनशा
८६

अमना विनिजया ॥ यस्तु पात्रमिनादवी आर्यकनामनामना ॥ ३२ ॥ इति वि० सखिनी पूर्ववीचगाह्य प्रियंवदा ॥
चदाननामहा ॥ जेनी श्रुतिनापितवा संस ॥ ३३ ॥ सर्वसत्त्वस्वावहं महा माया महा श्रुगा महा वनपत्रकुमर ॥
महा नोडी महा कठी इष्ट सत्त्वनिमूदनि ॥ ३४ ॥ यमं का गत नूपाच विजया क सनयता ॥ विद्युत्साली धनी षष्ठी चकी
वपि यक्ष यक्ष ॥ ३५ ॥ जंफुति संफुति कानिका ॥ तत्रा विनिगम चनी नरुति माहिनि गंगा को गानी डा विनिमूद ॥ ३६
॥ वाष्पनिवदमाता चगु बाहु धनियामिनी ॥ मागला गंत निमो म्या जनवदामना जवा ॥ ३७ ॥ कपासिनी महा व
मसंक्षसत्यापनाजिता ॥ सार्धवाहक पाद धन नरुमार्ग पदगति ॥ ३८ ॥ वनदा गम सी निगम फी ॥ फी नूपासि न कि कु मा ॥ गवनी
माग ॥ निमिद्धा चगुलि धमिका ध्रुवा ॥ ३९ ॥ धन्यापुष्पा महा रागमगुरु गम धियद र्जना ॥ हनंत नूपासि निहिमा उग्र उग्र
महा नपाहा ॥ ४० ॥ सर्वार्थ साध निरुडा निरुपा सर्वगुण नरुमा ॥ नरुया जे न वपुष्पा श्रीमहा कश्च नात्मजनि ॥ ४१ ॥
नानानामगु ॥ सर्वसापूनिनि ॥ नामा काल नगन कं कि र्ति नरु नरुमा ॥ ४२ ॥ नरु सामरु नरु अंदवा नामपि

८६

इहैर्लह ॥ सारागधरागधकनभंसर्वकिस्वीखनगन ॥ ६३ ॥ सर्ववाधिपसमनं सर्वसुखसुखावहं ॥ त्रिका संय ४५ ॥ १० ॥ वीमानुवि
 स्मानसमाहितं ॥ ४४ ॥ अधनोपिहिकानननाजयीयमकाभूयात् ॥ इक्षितसुमुखं निरुदत्रिडाधनवानुवत् ॥ ४५ ॥ जयाहव
 महाप्राह ४ मधविचनसंगय ॥ कधनाभूचनवह ४ ववहाननयाहवत् ॥ ४६ ॥ गत्रवाभिगुतायांतिगंति ॥ अधदंतिनं ४ गिगु
 मसंकटइर्लनाकारयसंकुन ॥ ४७ ॥ स्मन ॥ धवनामानि सर्वरयानपाहनि ॥ नाकानमस्यहवतिपाशानि विपुलयग ॥ ४८ ॥
 मानुषसुरुलंगमः नष्टिकसामहात्मनं ॥ यस्मिंदपात्रस्थायमानव ४ कालिधिंयति ॥ ४९ ॥ सदियु कालमायूषानुशीयचत्तरेतः
 त्र ॥ वत्तह ४ सर्वसत्त्वानां सर्वसत्त्वहितं कलं ॥ ५० ॥ दवानागभसुथायकृष्णं धर्वकतपूतना ॥ पिग्भवा नास्मात्कृता माननापादनजस ॥
 ५१ ॥ अकिनांनिका ४ दगा ४ सुंद ॥ आतामहायहा ॥ चायापस्मानका ४ ग्यवयचकारावर्द्धकादया ॥ ५२ ॥ वनाजशिचका ४ पयाय
 यचानइष्टुचनसं ॥ चायामपिनलंयनिकिंपूनसुसविग्रह ॥ ५३ ॥ इष्टुसत्वनवाधनवाधयानाकमंतिन ॥ सवेधयगतेकापूजयेति
 अवदग ॥ ५४ ॥ गतिसमनाहवदिमान् कूलीनेष्टपीयडनगन ॥ प्रीतिमांश्च महावाग्मी सर्वभामुविगनद ॥ कल्याणमियसस्यविव

अत्र
८२

विचित्रा विहसितः॥ सकविनहि नावेद्यं यत्र यत्रोपपद्यते॥ अर्थना नारकात्रिकायाः नामाष्टाह नगनंदलखितं पत्रिस
माफः॥ ॥ कं नसा श्री नागये ॥ ३ ॥ बालाका लोकालासुप्रवतसूनगिनया नृवृत्तामनि ग्रीसं सत्समाह नागानरिनः
चिंगात्रकवकलगति॥ हकापापितवार्थकनपूतमूकनागपरः॥ अलमाह सा निष्ठापकनधनवनूतिकसूममुक्तिनत्यर्थव
मि॥ इत्येधइ॥ खवजो विनिपतिमननूहर्गः॥ कादिंग्रीकः॥ किं किमधं कनामित्यसकृदपि कनानमूवयथ स्विन्नः॥ अलारः
पः॥ पनराकृतनयनः॥ ववाभिचडाकलकीः॥ माताकासानिवद्धपत्रगतिगमनः॥ अंशयः॥ पापहीनिनः॥ सर्वसिन्धुमाः॥ अनेन
नवकनः॥ निविश्वधंसरगाः॥ तत्सधनरुहः॥ ग्रहनमूपगतनम्रादगस्यापवस्यः॥ सामर्थ्यं॥ अदितियेस कलरादद्यधः॥ कतिः
माः॥ विस्वः॥ इतिवाहं॥ कथापिः॥ यत्रगतिभिगहाइ॥ कनं॥ विदग्धः॥ अग्निधमां॥ मत्तदलागंधिवसकलनृवापापनृकाभकालः॥ हवा
नं॥ कलककुहिमसकनसिनासिनरहिमचलाः॥ नलदीपयगाल्यादिपत्रमपि॥ अहागकदेनिदनाधिकृत्यापनाधरवति
सवनाकेकअदीन्॥ मातापि॥ अहनाविनूवेरुगः॥ खदमायातिपूतः॥ काटश्चकपिनापि॥ अतिदिवसमन्त्रार्थसमपूकः॥

८३

लघुनेला कवा विपुलरुल महाकला कजाग्रवत्तः सर्वसारार्थार्थविस्तनचरुविक्रियाजातुकाचिन् ॥ यायक्री लोद्यवद्वि
कलितननरुलाननितनस्यतमाः त्यात्मापुरुषमुतिहं कृत्स्नमयि सरुनाइ ४ खपातालमर्त्त ॥ वक्र कयावदकपूरूपनिलवा ४ पाः
तिनाइखवेभस्यकवधयानपुतिधिविधिविनिधियाकावदवानकमा ॥ ०० तिखे नूदवाहो नदतिनू निपदंवापमाकृद
नादः नाहत्या न्यापुपक ॥ ननिजनयितुकिपुलर्यादित्वं ॥ त्वरु ४ पञ्चनयखा मतिमनविरुवापार्थ नापाफकामाः दकसदं
नहयस्तु नमनरुबासुक्तानक ॥ नपापिययमिकमा नयिमममहतिवद्वतलकिलेखाः श्रुत्वास्मत्तावनाम्नापापहनसिह
अस्यापमकात्वमव ॥ त्यकवापानरा नानदसिममिकथकथगानकथ कथं पथ्यत्सनमत्रिपत्यपिविपुलरुपे ४ किमिषमो नपीति
मायाभा सूर्यमान्यहतिहिनधमे सुला कालकमाव सेदावेवायमानामथ कनरु ०० वानकगंधा नतांग ४ ॥ यूप्रत्यादाऊ पूजांरु
नमपिननरुयलुदयेविग्यखाः दवाका र्वाद्यदिनाकूनपननचनास्यात्ममावधकोमा ॥ कत्या कालकवाकृदयिनजसचला
लातकलातहलाः सकृत्ताद्विषवलानटविकचट हूटमादागहासान् ॥ मरूहिर्हि त्वलाके ४ सकनूनरूदिनाकृदनिमन्यम

अनति
८८

देहसकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥धूमाग्नौकारुण्यकाहवगगलगरुत्मजनिगतसूत्रिगःसूक्तकालाक
नालकनेलेनवविगदस्मविगभनगर्या॥स्वयावच्छप्रतासांलिपूटमूकयोगकृताकीनियाचाःपायद्विधाद्विलोमकलज
लदजवेनविषयकृत्तन॥दानाग्नपूर्यमाभारयकरकरकासुषिलोत्तममाताःइकांलाह्यमानसनिगजनिनद्वषव
क्राविपस्य॥दकाकाकुड्मलातानुनिनननसामनस्य॥पृथगिषेष्टतमितलकातिकोपविष्ट॥प्राट
पागप्रहृतप्रहृतनलंगिलहृत्तुलवत्पुत्सवायां॥यादव्याहृताग्रहविलसदजिह्वाकस्मिन्दर्शान्॥दशकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥वज्रकूटप्रहृतनपखनननमृष
हृत्वातमहृत्तुलवत्पुत्सवायां॥यादव्याहृताग्रहविलसदजिह्वाकस्मिन्दर्शान्॥दशकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥वज्रकूटप्रहृतनपखनननमृष
कगासःसुसुनावत्पुत्सवायां॥यादव्याहृताग्रहविलसदजिह्वाकस्मिन्दर्शान्॥दशकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥वज्रकूटप्रहृतनपखनननमृष
नवानवत्सुनडूतनसनात्रकीनागया॥शेष॥पाणनसुहृत्तुलवत्पुत्सवायां॥यादव्याहृताग्रहविलसदजिह्वाकस्मिन्दर्शान्॥दशकृन्मदविषयसुदहिनूतिपत्रस्मिन्नमृत्तियुक्ते॥वज्रकूटप्रहृतनपखनननमृष

८८

[illegible]

धनसि
८९

यथा त्वा निनाः यकायुषिषु विष न पत्र पून पून ४ कर्ष तनर्ष नाथि ॥ त्वा मा ना ॥ वसा वनय वनिवह चामन सन चा
सीः मूर्ध्नि चरु मजा न्ध विष दग न घ ना मूहु ते का क प ना म ॥ सेवा कर्मा कृति लपु ५ म विनिमया पाय पय्यो य नाः पात्रः
मा पात पू ॥ पचिगसू रुरु सं विरु म पा प्रव क ४ वे वाति कामे नि लो रूप न जन न ना नार्थ म लं र्थ रूपाः रू म विम नि वा क चा
मिकं न निके न निधिः निदना पा प्रव हि ॥ चूर्ति के द विल क ४ कृ न निव स न या ल र्य या रू त्या मा नाः इ ना दा त्म र नि त्वा स
जन सूरु सूरु द्ध म् हि व र्ष मा न १ ॥ च या वे द ग ३ ४ ख तु न ग प्र म र्वा खान स्वा मा ग हा नाः मी क स्वा क ४ पु न म्नी व न य इ न इ नाः
जा न नि डा पु वा ५ ॥ च कृ दि के कृ चू वि सूरु न इ नू कि न आ न क ॥ अ ल क ॥ ल कं ग म्भीः ष ड् का द कि म् र्वा श म र्ति ग ल नू चि न ॥
म ला वा व ना थ ३ ॥ ल स रू ल स म य ष म नि ल म त ग न ४ का ष रू त्प र्क का ष ४ स ना नि वी त्से ना र व नि ग व नि ल स सा दा ग न ग म्
स कृ द् थ ३ ना ला ४ सूरु हि म नि गी ला रू सं के न का क ४ का ना कि ना नू ना ग द हि न व न चि नाः ति थ न ॥ थ प चा न ४ ॥ त्वा दि या ल
य सि हि म न य म ध्व नं या नि वि धा ५ ३ ४ ख म्ना ३ ५ म पि ना न तं नु न प नि द्य प्रा ल स ता नि हा र्य ४ ॥ हा ना का क रू ना का ४ य व न क

८९

वलयवद्धमानायगामधुनादात्रवनीननुपनिमलामादमाद्यधिरुहा॥ काचिनादात्रवः॥ अद्वतगतचनादानमंजिननुनयी
सार्थप्राथयेतसंजमदुदिताः सादनादवकंन्या॥ तत्तच्छ्रानवापि कनककमत्रिणीवद्रकिंलमाताः मूमर्त्तुपानिजा
न॥ इममधुनमधुनधुलीविगानंः विनावधुपविनायनपूलनमसिदकमाधुर्यगुर्थाकृत्वापुष्पासपुष्पामनूलावतिचिन
नडना॥ नयाशा॥ कनपुनलासहगत्वमगुननदकादगं॥ दकायां॥ काकाकंदर्पदयाकृत्कचकृत्वावहविश्रकवि
या॥ मकाकिन्याममन्दकनसपिलसत्रिकीउयासूदनिलि॥ कीउकित्वङ्गनाक॥ कनपनिनगरुफपुष्पावाश॥ गीवा
सग्रामनिहिर्विनयन॥ नमोसिहिवन्दीनारु॥ स्वर्गसंगधिरु॥ सत्रकनिनिजनहवा॥ हासिगंगं॥ गचादार्धमका
लातिनलवलपिनाद्यामनामाकर्महि॥ पुनसुदधिवानेनवतिनवतिः सूनमंहीहीनहीनप्रकाश॥ चूडात्रत्नावगंसासनगः
नसुगनवामलम्बीविगानप्रायद्यालार्ककादिपदुनकिननापुष्पमानानुविलाकं॥ प्राटेकपादकुमहनवितमदुभूतुदु
विह्वलदुपंरावमानारुवतिहवहयाचिहृजेयेनमलाजा॥ पञ्चरूपकसकापेपहननकि॥ अरुर्दुर्दार्दुषधुः वापुवोमान

अनंता
९०

नासवतयह निह नाका नूनाहार्य चर्य इकवगसिहासा उमत्र उमत्र कागमनासु नव नावेना नाहाना लप मदमद
हाकेनिका लाहनागम ॥ केचित्के कनामाप्र मगनगगनाहागर हनलस्थः सुसुवध नूडप्रहिति नत्रमत्र त्तिदि
गन्धर्वनागादिका काकोमिधमिस्तिनसूगनसूतान ननिर्मानचिनुवैला कवयसि नेचननचिना (गखलावसुलावा) लास
सिइन नागभूतननकिन नादिसा नाहिसम कशी मत्सा न्दनी नात्यनदत्रिगदनिर्कादनी संनथ न०४॥ किनाधिइय
इ ॥ अधिकनव भवतका के नाहं चकचिह्न रूपं विग्रह रूपं सु टिकवइ पक्षयू कि रदादी हिनां सर्वरूप नदिपप्रकटि
सकनहय नलेकसा श्रीसाक्षाद हि त्वदीयागुनगगग ॥ सर्ववित्सूता बा यनु या नायवक्तुः वसिगुज नदिनमाह ॥ नात्र
ति व्याफसाति कु इक्षकलज निननूज ॥ यन साहासा हनु४॥ य भविहू प्पानानप धेमननमदः सुविग्रह नयाहि नत्याहना
निन कशमविधिनवधः सान संताखहनु४ ॥ किडु सिग्रहमावसा विषमिवपूतना इष्टम म्नीर्यवाचाः हानार्थसापिइ४वी हदः
यलधुनयाससु गोविन्दतिव ॥ कल्या ॥ नन्दसिंधूप कटगसिक लगाहनादहिद्विः पृदिहानापदगं कनूयन कानि ॥ ५॥

९०

यश्च नमस्कृ॥ त्वत्प्रेमो जगत्पवित्रि कृतमनसिमयि (प्रयसस्तु नम के द वं यस्या दमायं जगतिः तव गतं तस्मात् प्रयगानां समुत्पद्युः ॥
द्या वयवमनियत् ये ह मात्सं मया मायत्वं प्रपूज्य ह वां कुरुत्तम धनवसा सा दमा रगुति शराम् ॥ लाकृष्ण नायै लाकृष्णं च न न न न
स्ति कस्तस्ति चिन्म क्रयायं यया यात्सु गतसूत मही नासूखा वस्पा पाख्याम् ॥ ७० ॥ न्यायै ना नारु दानिकायाः ॥ यं यं नास्ति यं स
माफे ॥ ७० ॥ ॐ नमः ॥ ग्राभ्यायं ग्रहा नायै एकजगये ॥ नमः ॥ अवकपत्त क वृध वाधिसत्त्व कोट राजवृध धर्म संध्य ॥ नमः ॥ गव
नमः ॥ गव नमः ॥ महाकाव्य निकाय गभक्त नय नथ ग नायाह रं संयक्तं दधय ॥ एवं मया श्रुतम कस्मिन् समय हगवा नास्य मात्स्य गिति
जिखन विहा नमिस्म ॥ महाकाव्य हि सुसंघ न गभक्त वाधिसत्त्व ग न न ज कोट राजग (गभक्त विद्या धन ग न न थ ॥ लाच ना ह कृति चे वना ना
रुगवति नथ मात्रिचिपर्ष सुवनी माम की पात्सु ना तथा ॥ तत्पु एगव न स्याः ग एगव न वला कित ॥ लाको ना म नू क
म्यायेः गभक्ता यं पत्रिप कृति ॥ एगव न कृति सर्व ह ह न निमि ह लावन ॥ एगव न्ना सुगाना माः कृत मा उ ह गव
त्रिनि कस्या यं गव न्ना नि विद्य कृता क नायक ॥ एगव ना ह ॥ ना ना व ह नि न्ना नि ना ना व ह कृता नि ना क न्नाः का ध पृ ह नि वाधि

धन ॥
९९

सुखसुखं कश्चिदस्मात् ॥ नृणां मया ॥ महाद्या ननित्रस्तु गगनापमं ॥ सुखानां विनयार्थं यत्तु गगनावपूरुषं ॥ अरुहं हि त्राजं न सनिहं
यस्यालीयदाकिनं ॥ दुष्कृतं मया हि सवदनं न विह्वलितं ॥ चकार मत्तिनं प्राह ॥ इहा नाम तुल्यमधमं ॥ मौलागपि न कं
रुताश्मदिनं कनूनाकृतं ॥ अथायदहा समुत्सुकं यस्यां ह्य कने ॥ अवविन्दुनात्रि ॥ विमन ॥ नमस्तुभ्यं ॥ असूनासुन
नमिनें सवृक्षानमिनें सवृक्षाननुपूजितं ॥ वापि सखे गे ॥ नैसंरुतं रगतिवसत्रं ॥ अस्याप्रवम तुल्य सर्वहं वहिनाप ॥
आह ॥ वन्दमहगवस्य मय कर्षभ ॥ रुपा कनूश ॥ धनसि मनुना गानं सर्वसुखं वावह ॥ ॥ आह ॥ साधुसाधु महाप्राह ॥ नृव
कामिधनसि ॥ यस्याग्रवनमात्रेन विनयस्यानयकं ॥ आयनागानधनं सुखसौ लगधवंदनं ॥ यस्यां कंथगनं वापि पूरुषं कस्यापि वि
न ॥ वरुधपि सुखवनस्य नरयविद्यन कचिन्ना ॥ संग्रामगमुसंपातं अजितरुजं गलाकृतं ॥ नारुस्य सर्वपत्रि ॥ नका कवकि नसाचद
वनागसुथा देवा वापि सुत्वा महर्षिका ॥ नककिनं महासुखं यथेनाधननिप ॥ ॥ नृया दानयद्यापि गानका प्राप्ता नि सीगतं ॥
तानमहासुखमय निर्दोषादववर्जितं ॥ अस्या मुधा न ॥ सर्वधर्मस्तु ॥ अहो ॥ सर्वदुर्गं तु प्रत्यक्षं पापं ननु संस

ले ९

यः॥ ॐ महानृणा वाय धात्रिः॥ त्रिमात्रः॥ वज्रपाणिश्च यज्ञश्च वाधिसुखामहर्षिकः॥ हयग्रीवा हयक्रांटा लाचनाया मुक्ता न
ना॥ सर्वरूपपूर्वामुक्तिना वक्त्रा मुदि वीकसः॥ नागा नद्याप नद्यासु थावा नो कृता नगः॥ नाकसां (थेव) नाकसामासा नृधित्रलमगा
नागक न्याविग्न नाका यक्षिणो नृधित्रालिनः॥ नरपत्रं कत्रिण किमहासुखं स्यानिस्पस लाकपालायतः॥ गजश्च लात्रा नागकायिका
॥ उक्ता विष्णुश्च धनद आदि लोयहसं यतः॥ कुमारो हतनागश्च पात्रय किमुदवहः॥ यस्या स्यात्तु हसं त्वस्य क ७७ हस्तधारी ना
॥ यस्मिन्नाजपूत्रवसक्ति नडा जपूत्र निरूप डवं॥ अस्या मुपा ० मात्रे ॥ त्रहृवं सर्वदा कुव॥ लक्का प ० मुसततं न दया यस्य कसा
वीतः॥ नरक मत्स्या ॥ तामक सर्वसिद्धिपदायकः॥ उत्र ह कि समा सिने स युक्ता च प्रदापयत्॥ सर्वमक्रानय च मा धात्रः
ति सर्वसिद्धिदा॥ तस्या हस्त गत सर्वप्रसाक संचनाचनः॥ कु ॥ अपि वगता मति यथे ना धात्रे यत् नत्र॥ तस्या पत्रदि मध्व
उत्सव प्रवाचमाजित्॥ हिता यसर्वसत्त्वा नां रूपयाना मूदाहनेत्॥ ० ॥ ॐ नमो हगवत्पुत्रो र्ध्वय हता नाथिः॥ नमः
सर्वभावक पत्ने क वृद्ध वाधिसुखकाट लाज वृद्ध धर्मसधत्तः॥ ॐ नमो हगवत्पुत्रमशुत्र वमहाका नूनि कायगा क पूनयेन

वहनयनका ॥ लक्ष्मीनय २ वज्रवज्रगर्हवज्रगालानलपुत्र ॥ वज्रगालगर्हवज्रगालामुत्र ॥ नारिकोससैम ॥ वज्रगालाव
लासीतसुनिनवज्रद ॥ वज्राव ॥ वज्रवानाहि ॥ वज्रविषविहसनिमहाकालिगदमनिदह २ रुमिकलसर्वविद्यात ॥ वज्रखजमा
निद ॥ अजित ॥ अपत्राजित ॥ अमिल ॥ अपनिविष्ट ॥ अमिलनसका ॥ पचिन ॥ असमत ॥ असमककयग २ मर्द २ मथ २ प्रम ॥ थथ
निअपतिह ॥ महाविद्यचिक्तामनिसिद्धि ॥ सिद्ध २ साधय २ गवतिममकार्या ॥ सर्वसत्ताना ॥ कलकाने ॥ सुतिनि ॥ अवधूत ॥ अवधू
त ॥ अवधूतनिवासिनि ॥ अवधूत ॥ रुक्ति ॥ विहनादधमनिधम २ नन २ नन २ नाय २ नाव २ कन २ धन २ दन ॥ दान ॥ महानादमघनिः
र्घषनाद ॥ मघनाद ॥ महानाद ॥ प्रिय ॥ मघनाद ॥ अनिलिह ॥ केनरूप ॥ ध्यानादहाससकुगितुवन ॥ धिउव ॥ निधक २ धक २
धन २ विधन २ दम २ गगमा २ धू २ धू २ इ २ मू २ मू २ माचय २ जय २ महाकात्रनिक ॥ पत्रम ॥ सनिवि ॥ अथ ॥ वीविस ॥ वी ॥ कोट ॥ नि
महाकाट ॥ नाग ॥ वी ॥ पी ॥ ० ॥ अत्रि ॥ गमय ॥ गनि ॥ समय ॥ महसमय ॥ समया ॥ नूपा ॥ विनि ॥ समय ॥ वरि ॥ नि ॥ समय ॥ अ ॥ अनी ॥ समया ॥ वनानि
लि ॥ १ ॥ न ॥ समय ॥ समय ॥ इ ॥ वी ॥ लनाय ॥ कि ॥ वज्रनाय ॥ की ॥ पि ॥ नयिकी ॥ काम ॥ अनिकाम ॥ नू ॥ पि ॥ वि ॥ नू ॥ प ॥ मह ॥ अ ॥ न ॥ नू ॥ प ॥ व ॥ इ ॥ वि ॥

धननि
९३

विधिविविधरूपधनीताः महाविरुद्धरूपसहस्रयनिवर्तीनाः ॥ मानादिदर्पदत्रसि महाविश्रुद्ध्यादनि नर्कयः सर्वमानान्
॥ साखयः सफसागान् । धनयः सर्वरुक्ताकीनयः सर्वग्रहान् ॥ माहयः सर्वरुक्तान् ॥ जगयः सर्वजगताकसान् ॥ लग
वनिमहाकनूत्तकोट्यनित्ररुमासपत्रीवोनां सर्वसत्त्वानां च ॥ ॐ मनिः महामनि चित्तमनि धनि मनि यधयमम
नि चंदवजमनि वज्रकर्तृनि वज्रकर्तृनि हृदया मूलनी महाच ॥ किं किं निखिंतीनि वाया शुचर्मा मूदिनजय
नमहाकोधनाजमुद्राहृदयनचननयूगननागभरुद्धनागभरुद्धनिमनि नर्कगनि ॥ रुखनालं कृतविग्रहः ॥ हः
तिरगतसहस्रानि त्रकपलवलसिक्तैः धनुकसूतनमकूटमसिमानादिपत्रितु नपादपि धविश्रमातुवैश्रवूडाकः
बनि ॥ धेकात्रपत्रतिने धनुकवंसे कनिजे साको कर्षति ॥ सर्वनथागतगुहृदय ॥ महामुद्राधिरुद्धमहापाथमायाविः
माहनि ॥ मायाजालनयवलश्चिचलश्चैरुने धनुकं नमकूटनविगसिद्धं नवहनयन ॥ महाकलपाग्निसन्निहः विन
रवीनगवल्लेहीनगनमिनेपनममुद्रा ॥ हः नीजः हवहावजाकूगधननिपागमस्तुद्धनिपिय ॥ वज्रयममहा

९३

[illegible]

धनशा
ले ५

नदाकिनिस्वाहा॥ ह्रीं नाम न समगनस्वाहा॥ धर्मधनुगर्हस्वाहा॥ महावाधिविहवजस्वाहा॥ महासमयस्वाहा॥ त्रैलोक्यधर्मनियः
यस्वाहा॥ महासाहसप्रमोदनिस्वाहा॥ ह्रीं स्वाहा॥ पुं वः स्वाहा॥ सुः स्वाहा॥ ह्रीं वः स्वाहा॥ वज्रवा नाहि स्वाहा॥ वज्रना न स्वाहा॥ सु
र्वमः लविद्याधिपते स्वाहा॥ पं० नकार्ये स्वाहा॥ समस्वास्तकनिस्वाहा॥ अरुयपदस्वाहा॥ नरु २ मा सर्वसत्ता नावसर्व
न पुनः पिशाच आकिनी पस्मानरुय ४ सर्व प्र सर्वनाम सम सर्व सत्ता नाश ॥ कुरु पू विं कुरु नकारु ॥ हगवनिवि
म ना ॥ ऐ क न न ह ह ह ह ह ह ह स्वाहा॥ ॥ यस्यां सर्व स मात्र स सर्वपापा ४ कयगता ॥ ययायु का वज्रका यो न रु स
न मा नमः ॥ यो स न न्ना इ न न रु मा न नं कृ कि सं स्ति नं ॥ प्र क्रियः ॥ श्री विखनया न म रु सो न मा नमः ॥ या न रु व सी ग ४ पुं क
ल सं प्त त व ध न ॥ विषदाह म म व च न रु सो न मा नमः ॥ व म द नो महा ना गाय न कि क म रु के १ नि पू रि ना वि ना ना रु व म रु सो न
मा नमः ॥ हि रु ४ ५ ४ गी त का गी य या क ६ पु व श्वि न ४ पु न मू का य यो स ग न न म रु सो न मा नमः ॥ समुद्र पा न सं रु व बा नि जो पा नि
गो पा न न रु क १ ॥ यो स न सार्थ वा हा रु न मा रु सो न मा र्मे न ॥ यया च प्र नि व ध ना हा र्थ यो स व वा फ वा न् ॥ यसा नि न तु ना ना न न

ले ५

मस्तुष्टेनमानमः॥ दानिद्रायां सुनिद्रात्वादिनात्रपुनरोजिनः॥ नानालसपदानां च नमस्तुष्टेनमानमः॥ यां प्रवृत्त्यां सुविद्युर्द्वजः
कुचुद्रामलोपुशु॥ लब्धकाक्षिजयवजिनमस्तुष्टेनमानमः॥ यस्यामकुवलेर्नवपूर्यपालमिताचखटू॥ मां नजित्वाजिनावृद्धानमस्तु
ष्टेनमानमः॥ अथ नमो धिवधहापिपुत्रिफः सर्वसंकेतः॥ यां सुतः पतिमूकासिनमस्तुष्टेनमानमः॥ ययावन्मिदकः ७७ थमूका
पापश्चसकगानुनगत्रनायकोलुचनमस्तुष्टेनमानमः॥ याचापनाजिगाविद्यासर्ववृद्धश्चत्रीका॥ मृदिनालखिगानित्यं नमस्तुष्टे
नमानमः॥ तिखितामादिगासुत्वहिनायपुत्रिगासदा॥ सुतकायगगाकृत्वा नमस्तुष्टेनमानमः॥ यस्याग्रवनममाग्रश्च इत्यहं पुवनय
यं॥ पा० स्वा॥ यनं वापिनमस्तुष्टेनमानमः॥ यावृक्षरत्नलवृद्धे व्याकृतासंप्रकाशिता॥ महनिधननिर्वा ना नमस्तुष्टेनमानमः॥ म
हावत्तामस्तुष्टेनमानमः॥ महाप्रतापमहापुलावा॥ महाशुभवर्हि विद्या नमस्तुष्टेनमानमः॥ पापसन्धि समयादिमालवन्धपमाचनि॥ जननिवाधिसत्त्वा
त्वानां मेनेस्तुष्टेनमानमः॥ नरुनिपाधिनिध्रिपनमकुविद्यानिनि॥ कात्वाद्विषयाग्नानां नमस्तुष्टेनमानमः॥ महाप्रात्रना नाधि
गृह्णातातिखितां कथापा० यथाकृतानित्यं नमस्तुष्टेनमानमः॥ पत्रयोदिगवेवनित्यमनसिलखितां सुपुस्तकगतां कृतानमस्तुष्टेनमानमः॥

[illegible]

ध्यान

९६

सिंहगच्छे सा सा का संविज्ञा न स ॥ गच्छे ४ वापि सत्तगना नाचव आ विष्णु म ह गच्छे ४ अपनि ह व व डे थः य क्र किन्न न ना
य के ॥ द ग य मा स स द म र्ज न म म् वि ना स नं ॥ न सि न व स न व डारि क्क सी ए व न श्व ग न् ॥ म श्श ग्री ४ सं ह क ध र्म ग व ॥
थ पु प य न ॥ न पु पू षा नि गु डु ति स ग धि नि व ह ति च आ ज य पु ग या स ग भ क सि ह ग म न वं ॥ स द न थ ग न चि ह न
वे न प त्रि च त्रि का ॥ मे ग्र यं पु म् र्वे ४ जि र्वा र्ग वा न् प र्थ य क्त न ॥ वि ला क स क ल प र्व धा गि ति ग न म लि न ॥ न जे लो द ग य व
॥ क्क ग द न ति न त्त न ॥ प द कि न ग्र य क्क लो द कि न गान् म लु लं ॥ सु षा प र्क सौ क न पु वं क्क लो गि ल गि सा प लं ॥ प क्क मा मा स पा य न ४
ग भ क सिं हा ग्ग लो द धिं ॥ क्क ति वृ धा न य ग्री मा न क स कान व ह व स ॥ न आ ग न स य स्या य द र्ग ॥ क्क ति ना मि ह ॥ ग म की ४ पा प स्या निः
य न हं लं कि कि ह वि षा ति ॥ न म द पु र स र्व प न मा र्थ वि चाल वि न् ॥ ए व मू क्क व मे ग्री य र्ग वा न् ल प र षि न ४ ॥ सा धू मे य य न म द्यं स लो
थ य व प क्क मि ॥ व च्चि न त्त क ल र्क लो सा व धा न म ति ४ ग्ग नू वि स म्भी रा ति न का ल श सि ह ड क ष पु ग्रा यू षि ॥ अ सि ति स ह म्भ न का न क सि
न जि न न ॥ वे न्ध व र्णां च लो कं अ वि धा च न न सं यू न ४ वि प म्भी ना म र्ग वा न् क ल र्क सि न ह व वि न् ॥ ना म्भ ति स त्प ध र्म न स व या सा स

९६

[illegible]

अत्र
१०७

आदिर्य कालं वस्तु सानि ॥ सु वमि यमिषि न ३ का लता न ४ स्वयं पुरु ॥ विद्या प्रया कि विलयं सङ्गं ॥ अ न न प ॥ ४
ने प ॥ ४ म त्रि व द्धि । न वि कु म ॥ ४ ॥ स्वा न स्य लो क ग क ल ह न द्वा व म स्य य ग भ व य त म स म ग ग स व स ॥
० नि शी स्व य त् वे त् प र द न का ६ ॥ अ भ उ त्प नो नो म प थ म ४ प नि ह्नु द ३ ॥ १ ॥ पू नो ह्नु त् प्र व र्ण मि ० ॥ मे य य स्या
सु न ह्नु त् न स्य य थ ॥ थ ॥ के द्ध वा त स ह्नु म स ॥ ३ ॥ य द्वा त गाय म नू जा नू द न म्भो ला सु ग ले व रू प य य ॥ च न नि पू जं व
इ ह्नु ग कि न सं स म स्यो र्वा नि ल र्क लो क ॥ सु ग श्री म स्या य प ॥ ४ ॥ क यो नि य स न वि लो म नू जा नू ज सं सु ग भि द हा न वि हा
त्र वि दि फी दो फा र्दे नि लो का ४ प न मार्थ लो का ४ ॥ य धू प य नि रू ॥ म व लो का ४ ॥ का न न वार व कि जा ३ ॥ सू त्रा सू ने
पू नि न पा प्र प ॥ ४ ॥ सु ग श्री मा स्या व ल रू पि ना जा ४ न गु हि ला मा व रू ल ल का षा न रा धि प ॥ न चि न या द प ॥ ४ ॥ जा न प दि
पा ह न मी ह जा त्रा य दि प मा ला च य नि न ॥ नि व द्ध म म्भे पु द्द नि ला का य रू कि यू का ४ सू न सं स न ॥ व ला वि नि षा न न व
व र्क चू ग म ॥ ४ ॥ नो दि नू प स्य व मा ना वि ना न सू चे वि न न कि य म्भे व ला मि ला क प नि पू ज नी या ४ ॥ वि सा ले वं अ ग ॥ ४ ॥ न व
ति या जा न म हा वि फी ग त्रि त र ग ४ ॥ मू का पे वा त्रे र्थ य नि ग ३ ॥ ये र्थ स म यं सू ज ने थ ध म्भे ४ हा नार्ध हा ने व रू न ल वि वे ४

१०८

संज्ञा हि तां गमः गतं न कुरु वक्ति ॥ चतुर्धा निना नाम ति हिर्महहे ॥ संपादिता न्या लमनाद यन्ति ॥ तदवहमि श्वत्र ह न्य वया ॥
 ग्रासयुक्तो धर्मनगर वक्ति ॥ यः २ सिद्धि पुत्रा कानि वल्लभ कानि वधुनि नहा नार्धहा नादि हि नलै काले विभु विना गमः ॥ पु
 त्र कानि साम विना ॥ स्वर्ग मय च सुख सप न्ना वक्ति ॥ वीना धन द्य ॥ मुदंग वा धेन ये श्व गं र्वादि सु दिव्य गे ॥ संज्ञा वना य
 विन न निन स्मा य हि रु या प च हि ना जि य न ॥ न ता २ हि नि मा ल्यं समूह न क्रिय न न ना क समस्त ना ग ॥ कूदि विमू का ह न
 पृथ वा भा रू पु प न्ना ॥ गति नं वक्ति ॥ पक्षि म नै श्व न ग श्व ग र्ह्य स्ता प य नि न मन न न त्वं ॥ म द कि नि ना य मू ग न्नेः स्व व
 धूरी न नि मा व हं नि यः २ सिद्धि सु ख ले प मू द च न क्रि न ना ग ॥ या २ वि क जि नी त्वा ना नि र्वा न व न द य ति ॥ न था चै वा प का गि
 त्या वा पा वि श्व य य सिद्धि ना ॥ द्वा विं सो धर्म धा तुं नं सत्का ना थ मू पा ग ती ॥ दृष्टु ती नं कृ पा वि ष्ट च रु म ग व नु नू च नु ॥ वि ग न २ सिद्धि न द
 पक्ष क र्ति का या स्व य वि ३ ॥ गत २ द्विज २ य सा द्रु दाय न स दं ॥ व स कि ग्राम न ग र सि ग मा ३ व म ॥ प न ॥ ०० ति य प्र का य
 न भ म २ ग्रा र्द नू न व वि न ॥ स्या थ य ल्क नि ष २ हं न स नि ग्र ह न म नि ॥ ०० ति कृ ते ग्री स्व य ३ ३ पू र्ण नि मा र वि षा ति ॥ च नु हा म
 न ख र्ज न नि गि नः ना किं विरू ३ प र्व न २ स य नं वा र्हा मा स धा न वि ॥ ये य य व व पा खा ॥ नू र्ध न सिद्धि ना ॥ न नु ग य व पा षा न

॥ १ ॥ पूर्णं विष्णुं मना नथा कृत्वा वसेत् यः पूजायां हस्तस्वना निवर्द्धनं ॥ अथ मया हस्तस्वना गवान्तरा लघनं ॥ गद्यपुत्रा ॥
 कं ॥ न के वेपुगान चित्तेन न स्मिन्न ह न प्र ॥ अथ स्वयं वेत्तु हस्तो के न नापि न प्र ॥ विज्ञानां सत्त्वा नां विनिष्ठा निधर्मार्थकामः मोक्ष
 लकि ॥ यथा कथं किं नागमथा यानि हि चित्ते यसाद सप्तत्वा रवतिद किना ॥ गथगथ वासधर्म वृक्ष नाग्रव कापिवा ॥ अथ क
 चित्त्वा संवृद्धा वृद्धधर्मा अ निर्मना ॥ अचिन्त्य हि य सत्त्वा ना विष्णो क सात्मा हस्त ॥ आत्मा पूजा न नासमा कृत्वा स्वयं गुना न्वरुत् ॥
 कार्यास्तु येषु सत्त्वा ना विष्णो निमहा हस्त ॥ न स्मिन्न वेत्तु हस्त न क विष्णो षठ ॥ यद्य या पूजा कर्तव्या ॥ ० ॥ ॥ निशी स्वयं
 वेत्तु हस्त न काद ॥ ग पूजा वर्ण ॥ नाम विनिष्ठा ॥ य निष्ठा ॥ १ ॥ अथ प्रोवाच मेव यो हगवन् ॥ अथ विनिष्ठां स्मिन्न वसन्त देवते यो
 ला ॥ यद्य य ॥ १ ॥ न ॥ नामाने नाग वासा ॥ यं ज्ञाता ह ॥ क स्य काले हगवन् कथं अमा दि कम ॥ षठ ॥ नथा गत सत्त्वा काले गत
 नि सप्त षष्ठि वर्ष ॥ मि न पूजा नामा येषि सिद्धे ॥ नाप माया न दा ज्ञान विष्णो मुनि पूजा व ॥ पर्व ना ॥ १ ॥ ह मत्त वग्न क सत्पूज
 न न ॥ न स्मि काले व मे विष्णो चारु नाप थ मध्व ॥ महाची न विखय म ॥ श्री नाम पर्वते ना मा पूजा य ॥ जि ष स्रु निष्ठा ॥ मग्न
 धी ॥ म ॥ श्री न ह व ॥ सा सर्व ॥ सर्व विष्णो न ॥ य चा हि ह म ॥ द वा नामा चार्य स्या सहा यद वि कणि निष्ठा ना निर्व ॥ व न दाय

दिचरुत्वाषाषधसंयतः॥ तत्राचक्रादिनित्रतं४सधर्मधयनयमः॥ तत्रो जागल तत्कत्वाप्रागदानयेथोम४दत्वास्त्रात्वा
पत्रावृत्तसूचिवर्मुविधानविनावजादकंदगमाकेय४पिवस्वर्गलिगुय॥ अष्टाकृतविनिमूक४तत्तत्त्वा मापूयात्॥ कृत
मित्तां कृता ननगु त्रुमंरुग्रीयापूतः॥ मंरुग्रीपर्वतसंग्रीगुत्तत्रितमाययो॥ गय॥ तस्मिन्नेवपुदलासूचित्रमेवस
क्तु॥ दत्तधूत्तुविनत्वादसपद॥ १॥ अपि मरुग्री४पर्वत०० निवित्वात्॥ नवमेधयविश्वनुवस्तथागतस्याहं तस्य
सूवृद्धस्य कालसमयमरुग्री४निर्माणं त्रुपतमरुदवतामावेजाचार्य॥ तजल॥ षयित्वा महाउदावस्तुधपुदगं कृतः॥
॥ ००॥ तिग्रीस्वयंनुचेत्पुद्दात्रकादगयूपकृत्वात्पादनानामरुतिय४यत्रिभुदः॥ ३ ॥ अथमेधययवजा
मिग्रामचतिगमादिकं। यदा१रुवत्तद्दगगु॥ लाकेहिनायचविश्वनुवस्तथागतनिर्वातसंपाप्ति सक्ति॥ ००॥ हेवकल्पः
सिखिननित्रतं सुगुजोगत॥ चत्वात्रिगसूहमानिपुजा नो मायुषिस्मृते॥ कालस्वल्पं कुरुकेन्दविद्याचरत्संयुक्त४अहं
सम्पत्कुरुवृद्ध४कृमावत्तामपगायतेध्यातिपात्तावरुवाहं तदा त्राधनसूद्धिः॥ ततो अक्रुरगवान्॥ सावित्रहा नोपकृ

अनति
१००

द क ॥ पूर्वतगखसंरुचप्रविशगित्वनाकुय ॥ सिनाप्रविशमहाहिकुसये ॥ समन्वित ॥ अर्द्धयथादगगतेवाधिसत्वे
ऊनात्मरिवहृदियोगिहिरुदेवीतनागनननेकग ॥ सर्वश्रवणप्रिकृति समाधि ॥ नविगुह ॥ हवसंसातद्वर्षा
वपनि ॥ अखननामधर्मपय्यायेदगयामास ॥ आमनुयामास ॥ नर्वाधिसत्ता नवाचस ॥ यकथित्तुत्पुत्राथपुवक
ग्रहत्रश ॥ वासना ॥ अद्रिया ॥ गुडाग्रनवापनगतय ॥ हिमालयोपकुन्धाः सर्वकामार्थदक्षना ॥ अवनार्थचकगानि
काखायवसनेर्धना ॥ पुवकापनिवा ॥ सूर्धनांरुपाजना नवहन ॥ हवसंसापेदगकागनासिद्धियथकुमा ॥ सर्वकामार्थ
इ ॥ आनपुःवकाकृत्रते ॥ यय ॥ अततिवचनेतस्यगुनधजपुसूवेर्दिजे ॥ पुसन्निरुतमानसे ॥ अद्रियैत्रयद्रुदे ॥ सह
कायासनेपो ॥ नचकुसुमेपुवजिन ॥ वहु ॥ अ ॥ असीमावधपुवकाग्रहननना ॥ पुवकासिवयेदेवपुवका कर्दमयना ॥ नव
पोवाचरगवानकृत्रधेसामुतचन ॥ गुतधतपुसखा नामरयद्रुदयुयत्न ॥ वासना नाद्रिया नामतपुसखा नामव ॥
कगम्मअनिसेकुलाकपायवसनेवेना ॥ व ॥ पुसुत्त ॥ आवा ॥ पोसुत्त ॥ हि ॥ सुलातिन ॥ तनादिदगलगवाधिसंवाधि
वाचिकात् ॥ सफट्रिगतिहि सूर्धना धर्मजित्तितदिमा ॥ असापवतगखसंमित्रसा निर्मलसुलात्तथाजकलाकुलाय

१००

[illegible]

कसूकसूगहि वा नू ॥३॥ वागमत्यां त्रविंशं सं तं तलावस्थां प्रमादकः ॥ त्रिंशति कनकी ॥ वचनः ॥ स्तुतयमकः ॥ चान्द्रमनिवाग्मत्यासगम
चसूत्रकने ॥ तिर्थसूत्रादिषु कननूय ॥ ओलाग्धलागवत् ॥ नागसूत्रमहापमसा ॥ स्ति ॥ अथाशुविग्रह ॥ पुलावस्थां च वाग्मत्यासगमकयतीर्थ
कः ॥ नासदः सर्वगदु नांशकानि शुद्धहलाग ॥ महाप्रि ॥ तिर्मेययस्याना न्यतानि द्वादश ॥ दानान्तालीषु सिद्धिनामि स्तुवाचङ्गगुं नू ॥
यत्रैका ॥ अत्रैकविंशतिविधिना सन्तानमाचरेत् ॥ पु ॥ तिर्थमहाद्रु दिवगमनकविंशतिज्जुक्कनविनिर्माकः ॥ पु ॥ वासचक्रायन ॥ नक
बलं नत्माननदातेहामादिहि ॥ रुतं ॥ महापु ॥ धवत्रस्त्याना विनत्रागः ॥ पुयत्तगः ॥ पितृनर्पा ॥ संकूर्यात्समा ॥ ममैधीगच्छति ॥ अकति
॥ धेकेकविंशतिदिनयः ॥ स्नानमाचरेत् ॥ त्रागदिवाषगं क्तादिरुतं समहित्वेत् ॥ यत्रैकाग्रचिह्ननजय ॥ नक्रियात्रगः ॥ यत्तुलंलत्तु
नूनपूर्वहस्तसमाचरेत् ॥ यत्रसंकत्रनि ॥ तिर्थतुष्टेकाग्रमनाजमा ॥ एकविंशतिवात्रानिविधिवत् ॥ स्नानमाचरेत् ॥ अकिपूष्पादिननद्रुलं
सम्पजायते ॥ नपहामादिहिरुद्धत्तुलं नत्मापजायते ॥ कतान्ताकाग्रचिह्ननत्तानं श्रीनाजनिर्थाकः ॥ त्राग्यात्राग्धरुलं रुयादकविंशतिवात्रेन
॥ नकवलं स्नाननसूत्रं पहामादिहिरुवेत् ॥ अत्र ॥ रुति ॥ पुयत्तगः ॥ अत्रस्नापयत्स्ववपुः ॥ सदा ॥ तीर्थमनात्र ॥ धकूर्यादिके विंशतिवात्रेन ॥ स्नानं
पाशानि नियतं सती अपनिपुत्रं ॥ तत्रवहो नूनतातेव नपहामादिहिरुवेत् ॥ रुतं यत्तुलं ॥ एति ॥ कर्त्तव्या स्वातिषिचनं ॥ एकाग्रचिह्नय

४ सान्नीर्धनिर्मलं सह कुरु नयः पयस्तेन वासना न कविगतिः ॥ कसोमसा निनं स्यात्किं प्रातिविपुलाश्रीयं ॥ न ह वर्य
 जज्ञन जयहामादिहिरुतां ॥ तिर्थनिधन कुरु न वासना न कविगतिः यः सान्नीर्धनं न ह वर्य न धनान्यानादि कं हतं ॥ सादना जय
 हामादिक्रियाहिरुतां न वर्य ॥ ४० निवृद्धा सदा धिमाने सान्नीर्धनं न जगत्तु वर्य ॥ हानितिर्धः रिषकं यः संपादयति मधुनी ॥
 वासना न कविगतिं रवमाकुरु लं हवत् ॥ अहाना वर्य न ह्याना जयहामादिकं कियं कस्तानि स हतं न सव ह सौ र्वा समुक्त
 यः ॥ सर्वमहासूखं वापि लगमाकुरु लं हवत् ॥ चिकामः सोपन तिर्थं न कविह न धिधनं विगत्य केन दिवं ससादी न ह ज
 न ज्ञन ॥ दिव्यं पुवर्हं पूगार्थमाजसा खंचत एत ॥ वीया धर्मं हतं दासा सूख काम ह ता निनं अहाना वर्य न ह्याना जयहामादिकं कियं
 न ह पृन ॥ पुमादि तिर्थं मुदिनं सयनं ससा न माचनत् ॥ यः कविगतिं वससु धिनि सूख लं हवत् ॥ अहाना वर्य न ह्याना जयहामादिकं कियं
 जयहामादिकं पतं ॥ न तिपिनि हनये सग ह वग्ध कतयदि ॥ कुरु न हतं हतं यं ता ह त्पु न नाचनत् तिर्थं सत क ॥ कुर्याय
 सानचे कविं सति वासना तिर्धुमा सो रान सूख लं हवत् ॥ न कवलचनत् ता न ह्यपना गन नादिहिरुतां ॥ अहाना वर्य न ह्याना जयहामादिकं कियं

[illegible]

धननि
१०३

नामाष्टिः १०३ न० का सिसम्भरुवायंमूनिः कनकनामनः १ सा रावर्षां श्रीनगर्यागजदानुदकनकः १ सुधर्मनामा नामाः १ हंरवा
मिष्टानदापूनः १ वाधिसत्त्वः १ सदासकसुदानाधनत्वेनैतः ॥ नदाचिक्रम्यगीलस्यविहानवसइत्यः १ धर्मग्रामिद्वनामायंरिक्तः १ पंदी
नचूर्णकः ॥ वात्वातादनेसंगीतिनासासादनयुक्तिः १ द्वादसारुतर्था निजातावकुमगकधिः १ तिनश्चिकापनाजानः १ अतप्व
मनसमननः ॥ १०३ ना १ स्थापनदिग्द (अ) मंरुग्रीः १ नामपर्वतः ॥ स्वात्पचसिखसुत्रुवाधिसत्त्वः १ (अ) दधिः १ मंरुग्रीः १ यत्रहत्वा
गत्वापञ्चमचिकयनः ॥ १०३ तिनिश्चित्यनवत्यगुसंपत्तिनाहवत् ॥ यनहनमा ॥ १०३ मकलितिदिने १॥ कुमनवित्वयनस्यः
पापुवा १॥ १०३ यियन्नने १॥ पचाहिरुः १॥ १०३ मंरुग्रीः १ हानवानुननश्च ॥ स्वामुद्दिष्टगनाधैमायामितुं विनिर्मीतं ॥ १०३ इतकेगती
हासां हसंरुमो नवाहयत् ॥ १०३ मंरुग्रीः १ दवमाचार्यदष्टवा सोचेदुननः १॥ १०३ धर्मग्रामिद्वनाचार्याश्रममकदिकं ॥ १०३ पुपकेययत्नेन
मार्गमकनवथः ॥ १०३ नमनात्कियदत्रमरुगीनामपर्वतः ॥ १०३ द्वायतुतमार्गयेनयाफोहवामितनः ॥ १०३ गादनेसिसत्त्वनिवि
तिविहानवसनिमम ॥ १०३ कृत्वातसुतातास्वाहियायगुत्रुयमैर्हृष्टीलावात्यनकसुहवदनुमनचतेत् ॥ १०३ निमन्तिनमिदमत्वा
मंरुग्रीः १ हनमापूव ॥ १०३ मूकानसिहंसोई लावद्याकदापयननः १०३ लो गलापयामास हानरुमो रगदुत् १०३ ॥ १०३ दानीककुवस

१०३

नमः श्री ४ रूप कथन ॥ ननु दहति हर्षं हि १ सावामनिकथन ॥ ननु १ पाह्य के १ गार्ध मरुती १ स्वगहं यथा ॥ कनायितारसास
कथनितेन मूलरुदिहि १ ॥ धर्मश्रीमीश्वराचार्यगुरुमहर्षीमासह ॥ मुखसत्रे नीचककथां नानाविधमिति ॥ ततो नानो
द्वेनस्ते सयनाथागृहे येन ॥ तदुगचाकथं सुफा धर्मश्रीमिदुत्सुते ॥ १०० निविष्टनयकमगयनदिर्घकासि
कं महाधि काय रगवान कथा काका कनिष्ठति ॥ १०१ मिश्रसमूहयसकला मां नुस्मर्ययत् ॥ तद्वा नमूत्रमासु निरु
नक्ष्म मतिस्तुवानेन नाम श्रीयादविवर्गिनिपत्रमगवति ॥ पुयकुरुगवकनं प्रा १ नागमनार्थकं कनाथं नागना
शस्त्रिद्रुगवन्पुहनाप ॥ १०२ निग्रीत्वा गता ॥ १०३ पावाचपत्रमगवति ॥ तिला कमाय दवित्वेन नूवंमिकदकने ॥
यनाथं नागना १ स्मृत्समह १ रमचिकयन ॥ धर्मश्री श्रीमहाहिकुविहानविकुचन ॥ नेवासकाथं संचकनासासंगी
निकसचः नाकथं १ रुदकन द्वादशसुच ॥ विजसमकुसकु ॥ १०४ तस्य समयमागत ॥ १०५ निदविवचनं ॥ १०६ त्वाप्राकवाकं
नगलु ॥ १०७ नूननाकथनखा द्वादशमना कथापुला ॥ १०८ तस्य वाचरगवान् यथा कुष्मांतथा केथा ॥ १०९ रुद्रुद्रनदविष्टीत्यागव

प्रकाशिता॥ अत्र तद्वचनं तस्मिन् हस्तसकलवति॥ दक्षमश्नुयुः प्रोयसा द्विनिनिग्रयनाय यो॥ तत उक्त्वा यविद (धवाष्टो ग
 प्रनतिमतिनथावति कनकलो प्रजायं तस्मिन् तत्र॥ ततः सल उक्त्वा यकमि नियनमश्नुयुः॥ उक्त्वा नयानास तदा कया
 तद्वचनं॥ दानमूल निपतिन दृष्ट्वा वा दृष्ट्वा स त्रनिवदयां मास ततो नूव विदितागम॥ रगवत्याह नादानम
 नगुपः ३ सि किं पूनः जीवत्यवमने वासीत्॥ न ज्ञानं निरूपणां॥ अत्र निवचनं स्यामश्नुयुः त्रुक्ती तः परं॥ समस्तं दान
 रुचमस्तु पाचसादत्रं॥ धर्मश्रीमदुक्त्वा यनम्यामास तं गुत्रं॥ अथ प्रावाच नगुत्रं मश्नुयुः श्रीयं विदं वचः॥ महहा गमस
 प्यात्रुल्लगव नय त्रमार्थचित्तमम कने हरगवत नाम सगितिक सच॥ अर्था यदग नियतं दशयत् त्रिहस्तं॥ नवमूक
 ततः सस्मै मश्नुयुः कवातिनि॥ चिना हि विचचकथं तदमुपदिशते॥ अत्र निवचनं तस्य धर्मश्रीमदुक्त्वा तान निहना
 ३ ह कथं हरगवने कनिषागुत्रं तपा॥ अत्रुक्त्वा वाच धर्मश्रीमिदं गतिनायकः॥ तस्मात् प्रथमं सपोत्पा किचित्तमं नृप
 योजनं॥ धर्मश्रीमिदं नृपत्वा नास ३ ह न हि वचनं॥ अत्रुक्त्वा सपत्र धर्मश्च तु वागीश्वर सच॥ मधु भुत्वा यो मासा
 पूजयामास तत्त्वेन तः तः ३ विधि लिखे न तत्त्वेन तः सा ३ लिषिक वान्॥ अतः तददो तस्मादकं नशा संसृजत॥ अर्थमर्थ

विद्वानिहः कनूना विष्णुमानसायणा लिखका नगुका र्थनरुनवा दगसाच धर्मग्रीमिप्रउकी इयसा दपूतका रुमः॥ इव
उरुपाफवास्ति नार्थ धना च्ये न शीयचसासा नयथागकी पूजयेत॥ नमस्तु यद दो न स्यात्वे न नस्तु शीयायवे॥ अ
(॥) वाचगुत्रमः शी धर्मग्री यवचः धर्मग्री ना पसगी त्यायगार्थ क्रिये नत्वेया॥ अगतः सामह नद्रु को नु न वसमूखान्
०० पूवाच निसमदवाचमि प्रसी या गुत्रोमहधी कस्तुवे मे गवन ह्य स्यामा गत कथं॥ उवाच न स्याजानिहिमा मृत्युलं क
सगुत्रे महापदिनः धर्मग्रीमिप्रः यमदिनस्तु न॥ सोमनस्य पत्रगताः अस्तु सोमनामनं॥ कृत्वा पदकिं अर्चुं तिसाद नान
दसुन्दनः तस्यानिका च प्रकाश्या प्रधून नाग नः॥ विहाय विदुः पुनर्वा वा न विदुः अतः॥ नामा संगितिक स्यापिमः शी
स्तु प्रपाफवान्॥ एकं जिह्वा सना र्थः धर्मग्री मीव कसाच॥ गतिन निर्माय चा नलेमक्रिकाः शिपन॥ यस्तु हस्तलामध्वरु
वान् नगदि सत्रे॥ इदु नत्स्यल कनय सा न्धेम् खा माययो धर्मग्रीमिप्रउ चैः र्थः शीत्वा न चास्ति नात्र नाः गतेन न समुत्ताय ध
र्मग्रीमीप्रउत्सुकः॥ नमस्तु र्दसमा नत्स्य मन्त्रग्री विमूखा त्वेन॥ आसय न स्या विहया धर्मग्रीमिप्र कसाच॥ न हृष्टं मया द
चमि (॥) केन च सज्जति॥ ०० तु केन नत्स्य ना न स्य धर्मग्रीमिप्र कसाच॥ चक्रुः धिपति नत्स्य मी नूदक मी निव दयन्॥ इह दिक्

अत्र लि
१०१

नंदवत्कर्मसुशुभाममहवपुसत्रचिगायमंशुश्रीननिचदयन्। कर्मरुननननपनस्यनियत्नम॥ तथापिह
नष्टस्त्ववेवसाकयनिशितं॥ ००॥ पुष्पा नृदध्वगमस्तानुनर्तनमवचनन॥ पुहि निबना कूनश्रीप्रितिशुवन
नस्तमहेतोश्चमेयुनन॥ एत निनूचनेकेनकसमनिधर्मधनुवागीश्वराइहवेत्॥ ० ॥ ००॥ निग्रीस्यंजुचेत्
हदानकोदधधर्मधनुवागीश्वनेपुवर्तनानामषष्ठमपनिज्जदं॥ ६ ॥ अथावाचमहासतोमेयुयोगगताप
निश्रयग्रीलगवान्धर्मधनुवागीश्वन॥ कदा कनानर्दधपितनत्मे किमर्थमिति कथ्यतां॥ ००॥ निनद्वननश्रुत्वाप
कवानलगवांश्चने॥ गनकालरुडकत्तनिर्बनिपाफवत्येपि॥ मनोग्रीकनकेनविगद्वयसहस्रकं॥ पुत्रानामायुषिपु
फेजानवान्काश्यामनि॥ १॥ वाननसाग्रीनगर्थासूकीमार्गनागदगक॥ अहववाधिसत्वाहंघानिनागोउनादधिभा
शनाधयत्नाकगुनंसर्वकामे॥ यसन्नधीनकालगुनमरीश्रीनिकुंरुंत्वविधायस॥ अकृषायनतावखमरुद्वपुनकल
आलुपुपयसकानिहर्हपुननागन॥ मरीश्रीयव्वनसामि महासुखनिगधि॥ अथकानाकनजेउनापुधर्मपिया
हवेत्॥ पविदुदवहवाला निबिनात्मकवज्रधिक॥ ननुहिविचित्रमसूतंगगतिद्वंमहावत्ः विमिषासिसाउषय

१०१

[illegible]

अत्र
१०६

६ (अधर्म) अत्र बागीश्वराणां नामसफः ४ पत्रिच्छदः ॥ १ ॥ अथ नपासत्राचक्रासि न पात्रस्य च स्युत ॥ सिद्धि
कृष्णमहलवश नूमेति यसादत्र ॥ अह ४ सि नयक्रमयत्रमनियय सर्वदा ॥ सुहिकोवह लाकाफो ने पात्रस्य निनाम
यः ॥ अथ पत्र ॥ कालनइ हिं क न पत्राववा ने ॥ सफ सं वत्स नं कद वृक्ष का बाग्न गोमये ॥ ननु काले र ह व न ह्या गुनका
मद कामहान् र या च वित्र हा हा कश्य मय मस्ये ४ चिका मिमां पत्र मजा त ४ कषु पा य धर्मो १ स्महं ॥ के क यो कृतया
माहं य त ४ सु १ सुखि न ४ पत्रा ४ ॥ एम ग ग य व न ग नि पू न ग नि क नो विनु ४ ॥ सिद्धाचार्यो १ सि न ह न्यं कृष्ण मिनिवि
मर्त्ययत ॥ गत्वा तसा द पुगल न म सुत समाहित ४ क न गी लि पू य हा य सित सिद सम स्य धा त ॥ वै काल वदी नाद वपा
दासुद पिच व्याहं ॥ ला कामे १ ४ शिव नादेव १ कि कृष्ण कृष्ण ४ पत्र ॥ ए वं मू के इर्थ रूपो ला गनी देव स मे चिवा ने ॥ नाग इ र्ही कः
ग नो न्यर्थ मधि वे क न विधि ४ नाग सा धन न कृष्ण कि निध न सै दर्थ द ४ हवा निधि विना गम य ह व नु क न सा ध क ४ ॥ ४ ४ न
कथित मा च कृष्ण की देव न न द्वि धि ४ ॥ ए वं कृ न न कृ न ना नाग य व नू आ द य ४ म नु ए ल वा कृष्ण सान नि पू र्या समाग
ना ॥ ए क क की द को नाग नाग रूप वि ल कृ नं ४ ॥ ल कृ या नाग सै न्द्र पुं ना ग कृ क र्ष दि ॥ अमागत न क मा सो ष अ नी क क उ

१०६

वाचनं ॥ नृपामीश्वरगणेशसर्वनाथः कर्कशकांतहि अरुसाधनं जगत्वाङ्मनसि हानय ॥ स्वतनं यदि नायानिवनादा
नियगाननः ॥ ६० ॥ पुच्छिंशुं न हृपालश्मकीदवसुनं ॥ अगटसतिलदवकथगन्तु चसुक्ते ॥ ननः ॥ गतिक कर्कदवसुमथ
पूतत्रकवानहनिदं समानूषुजदइवातिथाराय ॥ ययुसुमध्यातिननमाजितगमां ॥ मयुलावनरावनरवगागान
यंचनदिके ॥ ५ ॥ विहृपूनीयाः शोत्वयामध्वच नात्पुनः ॥ ॥ गगगयवर्गगतिपूतनागाः ॥ १ ॥ दगनवहिचिकरु
नसि ॥ स्वाविचिद्रुम्भीरूपधनयामि ॥ विचिन्नगीतं कनातिमवसिचित्पसूनहिमनाहः ॥ ४ ॥ धाषंगीनकनातिम ॥ नकाजनप
दवासिनोन्ननगुचाकृतागानः ॥ दिवाद्यावमहिगकुलावसर्वेषां तनिनयनेकचिदकुदगयीतुगनः ॥ १ ॥ दहनेष्टुकासु
नदिवाप्तिधोवनसर्वोत्तरुसंपन्नाः ॥ ४ ॥ दगनमापुनतुर्वकनसक्तु ॥ ५ ॥ दवकनावा ॥ ६ ॥ पुकाकचिकना
पणागनः ॥ १ ॥ सायकसुननविष्टनिमूहं रुमार्तिं ॥ पूर्वदिके ॥ ५ ॥ मउतलदिगंप्रतिदिनगीनकनातिनयस्यनिधोलननाम
अहवत्रगानः ॥ १ ॥ लहितं ॥ १ ॥ गानागसूर्यपरादत्रसां ॥ ५ ॥ कगा ॥ १ ॥ लिहत्वा निवादिनं ॥ १ ॥ दवकथंचलिकासुनक्तिजननपुतिदनगीन
कनाति ॥ १ ॥ गुरुनिमित्तं व अगुरुनिमित्तं वा नगानामिस्त्रिहसिनार्थं विहृपितवान् ॥ ५ ॥ गमिष्यति ॥ १ ॥ गपुतं नातिनाचाचिनाय

धननी
१०७

जावदहि न ४ कल ॥ अग्निनादहनल ॥ पिशानागत ४ ददनं कन अस्वधाषनंदिमूखचिकयनि ॥ किं कना नानाफ
ननादयाह ॥ विसृजितं न किंप्रयोजनं मपि तु महाव नाह नूपनास्त्रयउद्यानपृष्कनलि विधंगयतिवचाक ॥ १॥ नना
नदिमूखमोह ॥ किं गकी न विधंगय ४ हल कार्यसमूपादितथा कनिषा ३ हं विधंगमिता ४ नदानदिमूखअश्वधाषाउद्या
नरुमिसर्वपादपापुषाब्रह्म ७ पसर्वविधंगिता ४ ॥ सखनडीठिनं ॥ नदानउद्याननकिंकनव गहंइषुपनायन ॥ ४ सलनगः
लाहनामरितिसगजनितदिनं ॥ दवमहाना नूद्यानपसयंगनमहावनाहनउद्यानसर्वविधंगिता ४ ॥ नननागा ४ ॥ श्याक
ननेयुलाकुर्गिमुअधधनगहीला अकपूतघ ७ धाषनाकानिनवान् ॥ लालीपोनननामस्त्रा नारुचन्दनार्थसर्वसमु अरु
धन्यायुधंगहीला अमरवान् ॥ पो ननना ॥ लाजसलखन अलासर्वपो सननायाधसमि सगजधनिगत ४ ॥ दवकिमाहापयसि
॥ नानावाच ॥ अगु किं न जानासिउद्यानरुमिप्रसयंगन ४ किंकनिषामि ॥ अमासूवाच ॥ दवनाहापय ॥ नानावाच ॥ सर्वअहम
पिउद्यानरुमिगन नायमहावनाहचन्दनाय ॥ सथागमनां तथा कूत ४ सर्वजना ४ निसलषितं कलाउद्यानरुमिगतवान् ॥ न
नानावाच ॥ लालमकीननायाधनरुतीर्थेयगांदकि ॥ नदिसा अमासूय अमदिसासनापतिरुपानानेनडी नामगानेवा

प० ७
१०७

नै॥ संसाधर्मीत्मकः सत्त्वकस्तत्तात्तुनसंगतः मह विमवसाकस्य सान्नीदवस्य रूपनि॥ सिधायमगमस्य गतसि गतं कन
४६४ संपुष्टसंकलानाचार्यनेस्य सानुः ४ नदिकात्सु रगवत्वेगत्वाचार्यमसास्यते॥ एवं मे ज्ञेयं न पाते दवसायनस्य
सिद्धिदृशा महत्युत्तरावचनं स्यात्तमात्रकामहिः॥ सर्वसांकी कनादव आचार्यं गवमहर्षिकः॥ एवं रूपासमावृत्यं सम
धिषिदधधनो॥ स्वपूनायां गुणोऽधस्तागस्य पाठनमूनं ४॥ धर्मात्मकस्य कल्याणशीलुत्तमिव लचन॥ ४६४ स्वर्गप
माकल्पकस्य सचिगस्य सतितां समागतो॥ त्वमका नागस्य कान्तं किनिगमेनासाक दवस्यतेऽस्यास्तु सत्त्वं तग मन कृत
उवमूके वनायादिहृथा न नियंता न दा ४६४ न्दी स्य चरुपात् ४६४ हिना सुप्रसक्तो॥ साधितिवचनकस्य संनाधत्त त्रितं ययोगत
स्तनायविष्टनपुकातेन सनिर्हयः॥ यावाचादग सकलं कनापि किंचन॥ ननाह ० त्तमानीना गुने कामददनसः॥ अनित्यं
नसायं ॥ वसिका वत्तुच्यते॥ ४६४ मकाप्रसक्तनागोत्सहस्य यत्नः॥ साकि दवनयचोक्तमेवैयकं नाचनं॥ अथपुनरिति
यूष्माहीनं ४६४ विधीयतां॥ कान कालचक्रं नृथ सत्यमि॥ कसदिदिगं॥ निस्यतं नसावचनं कनाहृषिमानमः॥ ववः

अथ
१०८

पूर्वतन्महाभयनामासाकचिकितं ॥ ननुस्त्वपिनास्तुनसर्वनागपुत्रगुरुं ॥ विदुषित्वापटनित्यपूतनितुं सकालवि
तु ॥ अनादयोपसार्यनवविद्यानियतगुरुं ॥ ननुपहि किमेवयकालव्यथिजायत ॥ सुहिरुमृदिनालाका नास्वसमाहि
ग ॥ अथकालाकनकालगुनकामदननप ॥ पूरुस्त्वदीया रूपात्माननेत्या नामजातवान् ॥ सत्योधर्मात्मक ४ सत्ववत्सला
उभसंगत ४ सहर्षिमवसाकेस्यभाकीदवस्यरूपनिगिष्यमगमरुसागतस्त्रीशत्रुक ४ ॥ दृष्ट ४ संप्रद्यसकलानाचार्यनसा
सानद ४ ॥ नदकि कस्तुखवनगलाचार्यसमासयत् ॥ एवमेवयनपानेदवसानस्यसिद्धिरु ४ ॥ महत्यरावचनगुसचरुमाकका
महि ४ ॥ सर्वसात्तिकनादवआम्भार्यधमहर्षिक ४ ॥ एकुरुपसमाहृषासमाधिमिदधेपनं ॥ स्वपनात्पांयगा १ धस्नागलायारुनः
मानने ४ ॥ धर्मात्मकस्यकलाभग्रीगुरुवंचिवसंचन ॥ नई ४ स्वर्गपमाकस्यवक्रविहसूमहिगा ॥ मनानेमासिकुरुत्यसमाधिवरुः
निश्चय ४ ॥ समाध ४ ससमूहयविलकालेनवरुधक ॥ दगयिष्यनिनेपालधर्ममाकपुकाशकं ॥ १०८ ॥ मेवयपथाकोनाक
ननन ४ ॥ १०८ ॥ यंयहिरुतिचूरासुखिगिलासिलक्षत्रिभि ॥ एवद्यांविदधधर्मभक्तुवागीधनश्रसा ॥ मरुश्रीखित्तल्ल्याखिगद्य
पुत्रालीचीत्यना ॥ गीचलचलच ॥ १०८ ॥ स्वाहितिमकु ॥ जयनासमालाकिलानूदिनः नस्वहकायगुद्यत ॥ अस्यापस्तानचयोयवस

१०८

त्वं ध्यापि सावनि ॥ अथ पृथग्वरा वनचेत्याद्यादगवत्सु ॥ पचाहिलासीसारुविषातिनसुगय ॥ ६० ॥ त्रुवाचरुगकुकागभक्षिह
 न्गु ॥ ६१ ॥ तति कोसपवनरिक्तवा वाधिमार्गग ॥ मेघयप्रसूतादेवाः नागला कोसनादय ॥ साचसर्ववतिपर्वदन
 मादन ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ दंसूत्रं खत्तुमातवा नासूद्ववाकं तु विमाकमार्ग ॥ ६४ ॥ अतिवाभवयनमनूषासपानिननसुगक
 साकं ॥ ६५ ॥ अतिग्रीवसूक्ष्म ॥ ६६ ॥ पुनानचेत्यरुद्रनकाद्य ॥ महप्रखववर्गना नासाधम ॥ पत्रिकुदसमाफ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अत्र लि
१०९

खमामनु यित् ॥ सत्त्वत्रमागनमित्त्वब्राह्मणसिन्धुसाध्यापथीनोदवि किमाहूययन्ति ॥ श्रीदाववाच ॥ नदिमू
खं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगनीसूर्यापरवात्रागापहृति कुंगव्यासिमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखवाच ॥ किं
मर्थं गक्रान्ति ॥ श्रीदवावाच ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥
सत्त्वाश्रुसिलसानि क्षममर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥
हृत्तज्ञानो नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥
सर्वं पौत्रज्ञानास्तु यना ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥
पत्रायी नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥
वान् ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥ नदिमूखं नृसंध्याषड्वांमर्त्यमलंगकु ॥
अत्र महासदं कलाति ॥ महावगपननं तमो लकालवह किं ॥ दगदिस आकृतिरुत्वा धूननवह किं ॥ तदायय किं ॥

१०९

राजासंभवेनमूर्च्छितः पश्चात्स्मृतिं त्रयवान् ॥ पतिस्तपितः ॥ अगस्त्यगृहि त्वापावत् वत्राहनहनकन नावत्तुगमत् ॥ ७७ ॥
 निष्पत्तिर्निधुधधनि त्वा राजा अश्वत्थमात्रेय संवेन महावत्राहं दृष्टुं गतवान् ॥ तदा सर्वज्ञना राजा पृष्ठं तपति
 गच्छ किं किंचिद्दृष्टुं गत्वा दग्धितः ४ ये दापयन्ति तदा दग्धितमहात्तु गतः ४ ॥ सर्वज्ञनारुणकृत्वाप निरुप ४ ॥ यदा नदि
 मूखे अस्वधाव किंचिद्गत्वा ॥ तदा राजा ग्रीष्मे गतवान् ॥ तदा नदिमूखे अस्वधाव अश्वसनी लपहनिष्य अस्वनामप्रहनि
 तसति राजा महात्तु गतः ४ सर्वलाके एकः ४ सननाम एकं राजा संगतः ४ ॥ तदा राजा अश्वत्थानि ४ अश्वत्थकृतं जनमश्व
 गतः ४ भनमाश्वसतस्ति गतः ॥ तदा राजा स्मृतिं त्रयवान् ॥ पानियं पादुमिच्छति ॥ सनपानियपादु ४ दहिः सनावाच ॥
 दवपानियनास्ति ॥ मया पानियं अश्वत्थामूर्च्छितं दृष्टुं गतः ॥ सननपानियमप्यथयनविद्यते कथं पानियं ॥ सनीः
 वाच ॥ राजा अश्वत्थकृतं तस्मिन् पानियः संप्रपद्यते म ४ दृष्टुं गतः ॥ कश्चिद्दृष्टुं गत्वा सनदी गच्छत्तु गत्वा च
 त्वनि ॥ त्वनि गतः ४ ॥ तदृष्टुं संतुष्टः जातः ४ तस्मिन् समीपी गतवान् ॥ तस्मिन् समीपे महात्मा न सर्वा १५ नारि ४ वनस

५२

धरनी

११०

मन्त्रं कृत्वा निष्कृतिः॥ सा १ प्रनाम्य हृदयं आह ध्यानयति॥ रामानुजमानवागमने कथं गतः॥ प्रनामवाच॥ सूर्यपराशरान्नाह्वनमा
गताः १६॥ अस्मान्नावाच॥ अहमहा इने कथमागतः १७ प्रनामवाच॥ पराशरा अग्रे य एह निरुद्धं नैव न नागाहं सु सर्वं न नाप्य
गतः १८ नागा मनिष्कृता गतः अग्रे च हं न त्रिस्तु ना नागाहं पातु नार्थं पानिषत्तमा न हं १९ हं मन्त्रं सूत्रं नदि स्वदमा कः
॥ २० ॥ हागतः २१ ममेश्वरं दर्शयतां पामसह न॥ २२ विष्णुसाक्षात् न नदित्तययी त्वात्तु नितं त्रिं ग २३ न हं सितं संतर्प्य दक्षिण
नय २४ पादो वंदनादिकं नाति॥ २५ विक्किवने माता धयसि॥ २६ आदित्यवाच॥ हं मानवगानां सिंहं सर्वदा त्रिदशमा न नार्थ
श्रीवत्सुखं नामाता धयसि॥ प्रनामवाच॥ २७ विगनसुखे मवं ममाहि हि तं युसिदद विवृणुष्य गत्तं न विद्यादि सर्जि क्रीयत्
कुर्यात्॥ २८ वं उ यवा सते न क विन्त्य न वलं कुर्यात् सर्वदा त्रिदशं खना सन हं कि॥ २९ निसलाषनं हं त्वा॥ सर्वं विगनं सूत्रं स
हितं न तं वृत्तं सर्वमावर्तयिष्यमि॥ य ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
कनिष्कसि॥ ५१ हं हं न पथि म ५२ न नागा प्रहति यथा मया दसितं तथा कर्तव्यं॥ महानक्षिमाता धयधनं धनं सर्वं हं न

वसुधैव कुटुम्बकम् २

990

वह नामहिन पिपापन ॥ नवमस्तु महाद विरवना जथाद सितथा दग यामि ॥ पश्चात्तु न संपूर्ण तिलकपात्रनार्थ ॥ ग
धुममसादि पिष्टकानि घृतसक्तनदधि दीयत ॥ तल्ले ॥ समयनसम्यक् तिनाहरेव निनाजो ॥ न प्रापि न पातन वि
खये सर्वत्रानियंज सगृह्णित्वा देविगन नमस्तुत्वा सस्मात्तु न वंरुत्वा ॥ तदासनसूर्यप्रशान्तासमिपस्तु न गत्वा नो जा
ह्नू न तस्मिन्नाह्नु संहाति ॥ नो जा वाच ॥ किं नु चेद्वि न विनं ॥ स नो वाच ॥ क्रमास्वमहा नो जा न नियमव सामान अह
नदविग नदह्नु विचात्रिन ॥ दविगन किं कालमस्ति न ॥ तदा सर्वपाहिन पुनारि ॥ उतमात्ताधसंहाति ॥ मानव
कुना समागत ॥ समउदकार्थ मागत ॥ तदनु नो जा वसंधा नो जा व निसर्वापा न गन मधिष्ठितं ह्नु ममद विसस्मात्तु मयापि
हि अचयामि त्वन मा नो धयायी ॥ नो जा न न न हनु ना विन विन महा नो जा क्रमस्वमपात्रनार्थ दह्नु पित मयं ॥ गधुम पव
दधिसक्त नादि दंत गृहा ॥ ११ ॥ तदा अमृतपा नियंरुजसि ॥ ०० ॥ नु कृत्वा गत मूपे ॥ किं नो जा नो जा ॥ अह नो जा अर्थ श्री
वसंधा नो जा व न वदापिन गृह ॥ न जानामि ॥ ०० ॥ नु कृत्वा सर्वत्रेपा न वेत्तु नृप कनेर्दह्नु सर्वपित मयं सन्न पातं नु ग न महा
समुद्र जात ॥ तदा नो जा चित यकि नथे दं स न नं वेत्तु कर्तुं नु वन जानामि ॥ नो जा वाच ॥ स न वेत्तु नु वन गच्छामि ॥ तदा सह ग

॥ धर्म ॥

॥ १११ ॥

नवको ॥ सुनावाच ॥ राजानं नर ॥ कुवनदवाय वनाय नवा हि नारवमनुज का व ॥ राजावाच ॥ ये यमकुमह नजननो
नको ॥ नदा देवमागत क्रु ॥ संपाफ ॥ नर ॥ कुवन ॥ द विगन नति कुति ॥ धर्म सुतेन नाना पृथमा नाना मयं सिद्ध ॥ देव
राजा प्रह्लाद मन्द लग्नं नपाफं नदस्य विरु पं क थं द विगते त्रिहि न कन ॥ का सावानि द सिद्ध ॥ नाना न सर्व ह नाना
नपुच्छे नि ॥ राजा क था क र्त्तु द वि कुवन न म क्त्वा ॥ नदा स नावाच ॥ राजानम नाहन क थो गृत्वा न दा राजा वाच ॥ अथ
पुहिति हवान् पाध्या या हव नि ॥ स नय म् रवा राजा सहित ब्रह्म मान् धनं कृता न नगत्र स मिय प्री क्त्वा न ॥ न तो अमात्य
पुह ति नाथो नर ना सर्व लागा पृथागत ॥ ति गृत्वा सर्व नग लग्न म नना ग ला मोहा सर्व न व न्द ना दिके नम स्का ले क्त्वा
कृग लय विपुच्छे न ॥ अति गत ला जन घात पाद पिच्छे लन स म य नागा माहा पि न स न पाद वै पृक्षार्थ ले स नावाच ॥ म
हा नाना पादं पुक्ष्म न य क थो नाना विरु माह व नि ॥ राजा वाच ॥ मन पादं पुक्ष्म लय मयान विरु मा न नागा रू पि न न पथ म स
न स पादं पुक्ष्म लय पथा पुजा पादं पुक्ष्म लय ॥ नद के नाना ग ह न क पुक्ष्म वि श्व न स न सा ग म दा पय नि ॥ अथ वं क्त्वा क्वचि

१११

दिनाकनपत्रयामास॥ पश्चादकनपत्रयामासपुनरितिनाश्रुष्ठाह नगनश्रीवसंधनामात्राधयामि॥ त्रिंशत्क०॥ नाताउपाध्या
 यकन॥ यमनपुर्णिमसनाजाचूगकन॥ कृत्वाकाखायवसुमाकायमनगुफेतिनामास्तुपिता॥ तथास्तुपयित्वासंसे
 नगुफउपाध्यायनवतमाधिनंजाजापुएतिश्रुष्ठाह नगकृत्वाकाखायावसुं पाहन्तीवसंधनावतकत्रिषति॥ तदाव
 तसंपूर्णसर्वप्रसूधनयामि॥ तदाचतुर्दशीवनसूत्रधानीचाखहस्तवतसूत्रं कृत्वावागय॥ तत्रचक्रिफं॥ मनक
 तनिवमननिम्वदविस्वसस्विनागदानसमागत॥ सिंहस्तदनमगनार्थ॥ पुनरिदिन॥ कथासिद्धकंसद्वयीत्वादवाउ
 किनागदानपाफयनिधर्मगदगुलावनधनिगा॥ कागमनागमवनसूत्रमयसमकनवनसूत्रदृष्टानमस्तानकृत्वाति
 म्ववनपुण्यागतं॥ तानिगतात्रिनदविमाहपितं॥ दविनागगृहश्रीवसंधनासूत्रागदानपुनरितिस्तुमि॥ तदाचतुर्दश
 वतसूत्रसहस्रं नक्षत्राप्रक्रिफंममा॥ यपतिनंतगृहीत्वाचायदविज्ञानं कृत्वादविबुधसूत्रमात्राधिनं॥ तदनकन
 श्रीवसंधनादविचिकयनिवृद्धिर्नृपनंजादानगच्छामि॥ तिकृत्वा नागदानमागतं॥ तदाचेति कामाक्षानीत॥

॥ ११२ ॥

ॐ हा गच्छ आगता चेति वद्वि किं माहुरपि न ॥ वेद्यो वाच ॥ प्रतिपुतिदिनं ममैव च न माह माता महमागतत्राजग हस्य
विश्वता चूतद विमागतोऽसि नादग यत्कृत्वा कर्त्तुं चेति तदा चेति कात्रा गेर्गत्वा चूतद वि विहृपि ताद विद्वि
मक नतव माह माता महवच कृत्वा त्वं विचास नार्थं त्राजघात्रेति वृत्ति ॥ त्राहो वाच ॥ किं वक्तुं वां ४ मम माह माता म
हकृत्वा वनि किं तु गवाक नदसिंता ४ मम माह माता मदन वर्तने ॥ ॐ तु क्वा सिद्ध ॥ तदा चेति का माह पितृ ॥ च
ति अयं हृदी हता १२ वनं प्रपय सिद्धि वचनमाकर्त्तुं चेति काह ० ३० वा ॥ चेति का उवाच ॥ वद्वि त्राह माह मा
ता मह न ह वि ति द वि स माह प य सि ० ३० हृत्वा पुंन यु क्त्वा इ तं गच्छ ह ० ३० क्त्वा ॥ वद्वि का च य मवन गच्छ २ म्मी वा क्त्वा कृत्वा
गत ४ ॥ दवि श्री वसे धी त्रा पुनेन पिचि किं न ४ चूतद विद्वि तं ग अया प ४ ॥ तदा श्री वसे धी त्रा वधि त्र प्य निम वनं गत
वात्र मूले सिद्धि चेति का माह त्रीन ॥ चेति तव त्राह पति २ विचात्रे नार्थ माता मह वि स ता माग ता ह वि ह प य ० ३० ति
श्रुत्वा लोहा १२ गत ४ ॥ कृत्वा ३० सिद्धि चेति का उवाच ॥ त्राह तव विचात्रे नार्थ विद्वे का दाले म न ति वृत्ति

॥ ११२ ॥

किं वक्तुं निवद वि विवा ल नार्थं चति ह तु पु वरु न किंचिदर्थं ना क्ता नयामि ॥ द। वृ वाच ॥ रुद्र उ प वि ग्ध गं व
क व च नि ग ला वृद्धि आ ग ला र सि उ प वि ग्ध गं व क वं ॥ तदा उ प त्रि ग ला नि स द वि वि वा ला ठि क्त्वा नि षु ति रु
ड किं वु त मा च ति नं ॥ द। वृ वाच ॥ वृद्धि ग्री व सूं धा त्रा वु त मा ना ध यामि म म म न्द रा ग्ध ती अर्थ पा उ न वि य ते ॥ क द सि प
ये न रु तं ॥ वृद्धो वा च ॥ सा धू र म हा द वि न रु ग ति ना स ना सं रु व ति ॥ तदा अ सि स म य वृद्धी रु व ति न व ल ध र्म्य वृ द्धि न
प न स क्ता ग्री व सूं धा ना ग्ध रू प न ति ॥ अ षो य रू प त्रि वा न स हि त न प क सि तं ॥ त ना नि व द वि ना रु ग व ति श्री व सूं धा ना
द क्ता रु प तु षु मा ना रु ला पा दो सि स सा व न्दि त्वा रु ना श्रु ति पू ना रु ला पा दो णि न ॥ श्री द वृ वाच ॥ रुद्र त व दानि वृ ३४
खं न प ग्ध ति ॥ त व की कृ का षा ग न म नि मू का दि प्रा पा रु व ति रु द्ध रु द न द न नि स द व्या ग्ध म हा ल क्षि संपूर्ण
रु व ति ॥ ना रु ग रु सु व र्ण नू ष म य किं कि नि गाल प ति म न म रु स ने व पु व द मि व स र्व ल क्षि संपूर्ण दि र्गि नं द वि व ल
पु सा दं द त्वा ॥ पु न न पि श्री द वृ वाच ॥ वृ स सृ ख म न रु य नां पु न नू कं म या द सि त धा न ति मृ ग हि ष्य कि मा नां वा नां दान

॥ धात्री ॥

॥ ११३ ॥

इदं स्वप्न का ज्ञान पथ नि अचिन्ति न निद्रा विषा न वक्ति न संसय न विहृथ । यत्किं विमहानिधिं सहव
त् ॥ अष्टासुतं पुत्रं महाका धन धान्य का ४ महा धना महा लो ग संपूर्ण पतिवान के ॥ १ ॥ वृवाथे वक्षत लिङ्गः
सुखाद मासु ती या मानसा वत नाश मेरु ॥ वत्स एतत्कृते रुत पाप ते लुप्त कृत्वा न हवति न वक्ति
निवृत्ता का सा तु हवति ॥ न दानि वद विदुः का ज्ञेति पूर्णो हत्वान मस्तु ॥ यदा निवद वि सर्व सुखा पतित या निवृत्ति
निम्व न सर्वना ना विचित्र पुण्य हरि नृप कति ॥ गन्धर्वानि नृपा निवृत्ति नृप निवृत्ति ॥ न न नाश ग ह सुखी दय ना
श व न धर्मा विचार नाथ सर्वजना वत सुप्र क्ष नि न च द द्या वत सुप्र क्ष नि न ॥ नाश वाचे ॥ द विव न व न मूय क्ष नि न ॥
द द्या वाचे ॥ नाश न किं पु या श न व न सुप्र क्ष म ना ग त किं स पूर्ण हवति ॥ न ना ना हि दि के न ग व संधा ना व न द विपु
धि तु न सुके न ॥ नाश चिन्ता पना वाव सि ॥ धि क बुडा विमहा श्च स्त्री संपा फ व न सुप्र न क्ष नि न ॥ नाश चिन्ता पना वा
॥ निव न निम्व द वि मा क्क न या मि ॥ नि चिन्ता पना वाव नि का मा क्क न मा मि ॥ च नि का निम्व व न ग स्वार्थ ना हि मा

॥ ११३ ॥

हूनि तं॥ च नि नि नि व न न पा फा म म व च न मि हा ग च्छु स ख न द वी श्री व संधा नाना मा व उ धा न या मि॥ न त द व न म्बु त्व नि नि
व ना गि ना र्थ ग ना नि व व न पा फा उ प त्रि ग स्त्रो द वि नि वे दि ना॥ द वि ना ह्य पु हि नं ना ज ग र ह पु ष्य ति॥ द वा मां द रि
न सर्व पु हि य ने॥ श्री व सु धा ला श ना ध या मि॥ ॐ त्या क र्त्तु वि पू न न वा च॥ च ति म म श्री व संधा ना व न स पू र्त्तु ए व
नि॥ श्री द वि पु सा द त म हा ल मि संधा फ द द र्ग ना जा कू ले ग म न ए या ज न किं रु वं ति न ग क्ता मि वि ति॥ त द च न स र्त्तु ए
पा ग त ॥ क ना म्बु ती पु टा हू त्वा ना जा स र्व वृ ना कं नि व दि तं न ना जा आ ध्या य मा नी रू त॥ अ हू त जा तं न त्त्स र्व द र्ग
॥ अ त्स् का ना जा द र्ग ना या ग नं नि व व न न पा फ वा न॥ नि व व न स र्व ना ना वि चि त्र पु ष्य रू ल मू ल सो हि त ॥ पु ष्य न थी सृ ग न्ध
वा नि स पू र्त्तु ना ना प कि ग न ति कू जि न ना जा म ति न स र्व र्त्तु म य किं कि जा ल म ति न स॥ आ हा द र्ग य नि पां यं॥ न ना ना
उ क क थं म हा ल मि पा फ १ न न ॥ नि व व न न व ति का द वा ह्य पि त्वा वि चा न ना र्थ द वा ग र उ क वा न रु व द वा ल य स र्व ल
मि स पू र्त्तु ए व ति॥ ए व म व म ति न ग त्वा नि म्बु द वि वि चा ल आ र्थ ग न॥ ना जा वा च॥ द वि म हा न मि संधा फ क थं॥ न ना

॥ अत्र ति ॥
॥ ११२ ॥

वि सर्वसुं ह तान क थि न ना नाम हा सुख न तिष्ठ ति ॥ किं चित् स म य सु कि सि ॥ ११४ ॥ तदा वा ज च उ द वा पा य कृ त्रि नं के
थं क र्त्तुं वा म म ग त्वा ना ज वि रू त्स रू त्वा मा न या या मि चू उ द त्व त्रि तं २ नि व व नं ग त ॥ ११५ ॥ त था नि म्ब व नं व ग ना ज संपूर्ण
धूप धू त्रि पू ष (अ त्रि त प ष्ठा) फ स्त न ना त्थि न न ॥ त न म हा पा न के न त रू ॥ चू उ द वि द्या ल मू र्खी ह व कि ॥ त दा सर्व ज
ना नि म्ब व न धा न मू र्खि प ह्नि त दा ना का म हा स रू का ता ह त गि दं शु ला प ना यि तं १ कि इ तं ग त ॥ ११६ ॥ क न म्म रू मि षा फ
य द्र मा रू प रू त्रि ह्नि द यं द द्र पा नि यं पा न ग त १ व दा स प ति वि स रू द द्वा का ना ह त स रू म रू तं ॥ त दा प ष्ठा न नि
ह व वि गृ ह्नि ता सि को पू रं जे लं न पि व नी स रू खि तं १ कृ त्रि पृ ति ग रू धं कि म र्थ ॥ चू उ द वि वा च ॥ म म म शु रा म्भ
ग्री व रू ध ना द वि द ग नी थ ग क्का मि क न वि त्रा धं क रं पू ष त्र ध वा च ॥ आ व य व च न दे वि वि रू प मः के न म हा पा न
क न आ वां वि गृ ह्नि ता व १ ०३ नि व च न तु त्वा न तु ल द मि त्वा पु न त्र पि कि चि इ तं ग त्वा ग दं शु क ना द द्वा न न व क रं
रू त्र पू र्ण रू त्र ग वं ॥ चू उ द वि वा च ॥ ग्री व रू ध ना द वि द न स न ग क्का मि ॥ गु क ना वा ॥ त थ च के न म हा पा न के न अ त्रि व

॥ ११२ ॥

निष्ठति ॐ नित्ययादिविविधप्रय ॥ ननु लंघयित्वा किंचिद्भ्रमदगपाठकनदृष्टावकवां हगीतिक नमहापाठकनय
तिश्च ननित्यति ॐ नित्ययादिविहापयदवि ॥ ननु लंघयित्वा इत्ररुषसप्यदृष्टावकमात्रेन रुषमर्थचुनदविधात
मूलं एका १ हं खनपएव निसर्वपापमूक ॥ ननु लंघयित्वा किंचिद्भ्रमवीजपुत्रकवनदृष्टावकुक्तिनर्थविज्ञपुत्रकंगला
निदयनददातिहसंनगचामि ॥ गङ्गातिश्चिजपुत्रकवकेव ॐ पुष्पा रुलेहकनपुत्रनयियविशुभापुं हवदि ॥ नगान
घयित्वा १ पागागलेदवोस्मानार्थमागनासर्वधुननपानीयंगहोत्वागन ४ दविपुसादाददगचुठदवीउक ॥ ॐ दस
वर्धुघटगहिताकनगचसि ॥ म्नीलाकनउकेव ॥ हगीतिनगा ॥ मित्वशीवसंक्षत्राहगवतिसानार्थमूदकं यस्य ॥ नये
वतदिवहकि ॥ नइदकननयननयनदयंशानिनंमात्रे ॥ सुहृदीहवनिपिवेतिमात्रसर्वपापकृमाएवकि ॥ नदपिप
विशुभापुत्रनशीवसंक्षत्रापुमूलासर्वगसंदृष्टासावृणदवित्वत्रितंशगङ्गागरुणीवसंक्षत्रायांपादकमूलंवदित्वा १ शुनिप
वर्धयित्वापूर्वानुस ॥ सुत्व १ सुत्वयुसादिहिरागतपसिदधर्मवितनयमम ॥ त्रयामि ॥ श्रीदवावाच ॥ हगीतिउतिक्क १ म
ममाहापय ॐ दकूलयुसागत १ राजगहनाजाय ॥ इति सर्वजनावशमासाधं कुरु ॥ पुनस्तु सर्वमाशुमाशुपुमादनकुरु ॥ ११ ॥

॥अनेनी॥
॥१११॥

कर्म च द विपुनत्रयि विहसिपि न ॥ दविमार्गिस्तु तासा कनसदसि तामसि यमर्थपूजन ॥ दयत संदसि न ॥ कनमहा
पातकनरुपेव पूजनसि दययुद्धं कने ॥ खानपा नश्चानदकातिनेन महा पातकन महापूजनसिये युद्धं कला निष्ठा वञ्
मिद विविहसिपि न ॥ पुनत्रवाच ॥ पूर्वज भगवत्पुत्र गितीरुवति ॥ आरुगीनी नृतपातनेन दका ति खानपातनयुद्धं वति ॥
कन कालनन पूजनसि दयनेन महा पातकन विना ॥ एवति ॥ नवदर्ग ॥ मात्रेस मूका एवति ॥ नदन कन च द विमात्र
पुतनेन विहसिपि न ॥ दविगर्दगु कन ॥ संदसि नमम कन महापातक कश्चेवति षुति ॥ आद वृवाच ॥ पूर्वलाग्य नलाविना
एवति नन विहसिपि न ॥ सार्व ज्ञानाया नपातकचि न्नदका ति स्वगृहीतीयनेन महापातक कन ति षुति ॥ नवदर्ग ॥ मात्रे
मूका एवति ॥ नन ॥ च द विविहसिपि न पुनत्रपि सुखि मूखा ह कथित ॥ कन महापातक कन याति षु व ॥ आद वृवाच
॥ पूर्वज भगवत्पुत्र ॥ एवति नन कि द वचन कन दाना निधर्मा निन कन ॥ नृणा दानि किं पुण्य जनं बुत ॥ कर्तुं वां वचन मयि गुन
॥ कन महापातक कन सुचि मूखा एवति ॥ नवकथित मात्रेस मूका एवति ॥ नदाद विपुनत्रयि विहसिपि न दगं कृगत पापिनस
दधुं संदसि ता केन महापातक कन श्रुत इवीरु ता निष्ठा व ॥ आद वि न दार कृग नाक मर्दसि ता ॥ नयथा ॥ पाना नि ष न ॥

॥१११॥

दत्तनेन नः वागविनाष्टिपूखा नूखादिः विनागं प्रियादिसंज्ञागद्य विरवावाद ७ सहिन्न ८ पेणु न ८ व्यापाद १० इदलादान
पूखादिः प्रीया प्रियाग मिषावादिबदन सम्पन्नपेणु नमी ७ इदकलरुह संपा प्रियापाद मनो हपा नूषा माना लोके इति
कंठरुहिवपनाय नननादयं गगतिवचनं विद्या श्रुता नमूख नत्व व्यापाद मीवध माहिना मथ्य दृष्टा हीनत्व कृत्रज्ञाय न॥
७० नित्यं ४ पापि पूर्व जन्म कृतविपा कठव कथित मातृ नमूको रवति सर्वं त्वाग्रीव सूक्ष्मादविनिपुदे क्रि तिक नपा दो सित
सावदि माचूतद विस्वद ७५ प त्या गत नरा चूतद विविहूपयति ॥ नवगु विमूखावजपापि न कथित्वा २ आगता सर्वपापिन
मूक्ति कृत्वा चूतद विस्वद गमागता ॥ नग नममिषा फवान्नाश ग्रय न ॥ चूतद विमाग न ७० ति ॥ नाशवाच ॥ एव २ ७० युक्ता
आहूति न ॥ अमात्य महात्सर्व नचूतद विनाशग्रह मानय ॥ अमात्यवाच ॥ यथा ह्यपय ममात्य पुहि ति सर्वथो जगनं गत्वा
महात्सर्व नचूतद विनाशग्रह मानय नाशग्रह पा फ ॥ महादद्या नाशपाद कम नसिते मानमस्का न कृत्वा कृत्वा संवाद क
प्राति ॥ पुन नपिवाचा नादिं कृतं ॥ नाशवाच ॥ कथं विनागं जायत कृत्वा गत ॥ चूतद वाच ॥ सर्वं कृतं कथितं ग्रावस
धनादे विपसादा शगता हनार्थ पुन वन न्या क ॥ नाशवाच ॥ यमा नो रूत्वा उत्तो सित कथित वक्त सर्वद व्या सख नया स
५२१

॥ धनं नमो ॥
॥ ११६ ॥

[illegible]

दानपालमिताद विवर्षती दिवा नृपिनि ॥ निधान सर्वमाहुत्य कोर्हित श्री यग १ गुला ॥ दह निमात्र नीच धु सर्व निसर्व माहुका ॥
कण कशासि निरिमा कामासि विग्व नृपिनि विग्व नृपि निविर्य पान मिताद विजगता नन्द लोचनी ॥ नायसी उग्र नाच म
दि सिद्धि वन पदा ॥ ५ ॥ न्यादुत्था महा लग्न श्रुति ताजित विक्रमा ॥ जगदे कहिका विद्या सशाम ता निनि सूल ॥ क्रान्ति पान मि
ताद विजिलिनी ध्यान कथिनि ॥ पञ्च नी पञ्च धनी च पञ्च सन सूरतासिनि ॥ सुध नृपि महा न जाहम वर्तुल कनि ॥ चिक
मनि धनाद विप्र हा प्रक कथ नि ॥ निधानं कूट मा नृया धाना गान धन प्रिया ॥ ६ ॥ दुक महा श्रया दिवा वन न हृषिका ॥ पा
न निसर्व वृक्षानां नल धातु सन स्वनी ॥ गुण गण विनिद विलवा लव विवर्जिनी ॥ वेन यिका विनता च दिपी नी कुग कुदिनि ॥
हि दि निसर्व मानान संपा फपा ल लकोहि नि ॥ वाञ्छ निवेद मा गा च गुप्ता नृ निवासिनि ॥ सन स्वति विग्व नाकी च दुबुद्ध विहः
त्रिनि ॥ तथा गनि महा न स्या वजिनी वक्र धनिनि ॥ कर्म धातु ग्वनी विद्या विग्व जालाहम गुली ॥ वाधि निसर्व सत्त्वानां वाध गुरु
न गणयति ॥ ७ ॥ न्यादि मूका संपत्रा श्रु दया दय लषिनि ॥ सर्वार्थ साधनी रूपा मुनी नृपाजित विक्रमा ॥ दग्धिनि वाधि मार्गी लोचनी

॥ ध्यातुमी ॥

॥११३॥

[illegible]

११११

न कनं॥ सर्वकर्मविधं सन कनं पनं कर्म विडापन कनं॥ सर्वग्रहाद न कनं सर्वग्रहविमा कनं॥ सर्वरूपाकर्षण कः
न सर्ववीद्या म कुकर्मपनाय नः॥ सिद्धा ना सिद्ध ना सिद्ध कनं सिद्धा नां चा विना सन कनं॥ सर्वकर्म पुदं सर्व सत्ता नां न कृत क
न॥ भक्ति कनं एष्टि कनं सर्व सत्ता नां सु कन कनं॥ सर्व सत्ता नां माहन कल ७० मं म कुं महा वतं॥ वृक्ष बला वा यक्रुडा वज्रपाणि
पुष्पलाषण॥ न मा न त्रयया य॥ तद्यथा॥ ॐ नृत् २ गानय २ स्फुट २ स्फुटय २ धूर्ध्र २ धूर्ध्रपय २ सर्वसस्ती विवाधय २ स्वाधय २
यस २ जसय २ जाम २ जामय २ सर्वरूपा निरुट २ संकट २ पूर्वसंक्रुत घट २ संघट २॥ सर्वविद्या वज्र २ स्फुटय वज्र २ कटवज्र २॥
म न वज्र २॥ वजाह ह स नित वज्र सुवजाय स्वाहा ह ह रुत नि स रुत नि घ्न न रुत नि रुत नि वृ २ वज्र विजयाय स्वाहा॥ ॐ वज्र कि
लिकी नाय स्वाहा॥ वज्र कट २ मट २ नट २ मान न प्र मान नाय स्वाहा॥ ॐ वत् २ निवत् २ हत् २ मत् २ मानय २ वज्र विहा न आय स्वा
हा॥ ॐ किन्द २ हिन्द २ महा वज्र किलिकि लाय स्वाहा॥ ॐ वन्ध २ को धमहा किलिकि लाय स्वाहा॥ ॐ वत्सू २ चतु किलिकि ला
य स्वाहा॥ ॐ गगय २ वज्र किलिकि लाय स्वाहा॥ ॐ हत् २ वज्र धनाय स्वाहा॥ ॐ पुहत् २ वज्रय एज नाय स्वाहा॥ ॐ न निष्ठ नव

पिङ्गला उपसर्गसूत्रना ४ नगानि च पसा म्क समसा ४ सर्वमापूतां ॥ आयुश्च वर्द्धनपुत्रं सर्वपापे विमोचि तं ॥ मनिसे र्व
पद्वारि ४ तत्ताकृतसच नै ४ वज्रयुक्ति तपूषी श्वरतमोयुक्त का केन ॥ अटं तु वज्रत वापि सुखी वक्तु न वासितं ॥ एकवि गति
कालवाचालमक्षरु नगतं ॥ जपयेद्द्वज विंशत नंतं म कुसाययेत्पार्थिव ४ सदा ॥ एवं पण्डितदिना कसे नत सपयुक्तं ॥
॥ ००० दम वाच ह्म गवान वज्रपानिर्हा तित म्पुन दि त्रिति ॥ आर्य श्री वज्र विद्वानि ॥ इदमूलमनु भवति मा फं ॥
॥ ००० न मा र्ग वसे आर्य गन पति ह्म दयाये ॥ सुमुखये कदक श्व कपिला गजकर्तृकं ॥ न म्मादल श्व वि कला विद्यु न
मा वि नायक ॥ कुमक तु ग ॥ अधिकाले न वज्रा गजा नन ४ वज्र तु ४ ४ ल्य कभी हित म्ब सूक न्द पूर्वज ॥ धा उ ॥ गे ग नि न मा
नि ४ य ४ प ॥ अच नू यादपि विद्या न म् वि कहे च पद ॥ गति गमन था ॥ संग्राम स ह्म द्देव विद्यु न स न विन ॥
॥ ००० व म या शु त म क सि सम यु र्ग वा न ना ज ग ह वि ह न ति स्म ॥ ग ह्म क न पर्व त म ह्मा ति र्म स ध न सा ध तु या द ग ति ति
रु ग ते ॥ सर्व ह्म ले श वा पि स त्वे म हा स त्वे ॥ न न ख त्पु न ४ समय न र्ग वा ना य म्मा मा न द मा म कु य न त्म ॥ यं ४ क शि
दा न्द ००० मा नि ग न प ति ह्म द मा ना म धा न नि धा न पि षे नि ॥ वा च पि षे नि ॥ वा च पि षे नि ॥ प र्य वा षा नि ॥ न स च सर्व

सर्वदुष्कृतिनस्तु ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ अगस्त्यपुत्रिणश्च अत्रिनामस्तु नागत ॥ मुनिनं त्वाधुमादनच कालमुक्तिमा
दनात् ॥ तस्यामनुपुलावनविषगमुत्तिवाधय ॥ उपदलवाविनस्तु किनमस्तु सेनमस्तु ॥ यस्याप्यधर्म्यमानां यांर ॥ ४८॥
कुसुदेना ॥ वेगद ॥ पत्रजं गुथ नमस्तु सेनमानम ॥ यस्याधनकोलागीवित्तनादकेनच ॥ नागानि नांकात्कुसु
यांतिस्तु सेनमान ॥ यस्यापुत्रलमानायाइष्टसेवाश्चमात्रिका ॥ देवासूनाननाइष्टा नस्तु सेनमानम ॥ ४९॥ किंतिउपसर्गश्चसे
पाप ॥ केलिकाना ॥ इष्टाग्रहावनगाश्च यरुकुमापु नारुमा ॥ ५०॥ य ॥ गन्धर्वा ॥ किन्नरा ॥ पिशाचा ॥ विद्युका ॥ कज्जका ॥ खक्का
नागयानि नस्तु सेनमानम ॥ याविद्या कृज्जनासिद्धास्तु मयकतिसूतं ॥ कर्मकत्रिजयाकानिष्ठितत्तु नवधनी ॥ अग्नयपावता ॥
प्रिसर्वरुह्येकनि ॥ सर्षात्रिष्टुनिह किंचनमस्तु सेनमानम ॥ ५१॥ यस्या ॥ गफंयलपापसायकचतुर्दिगं ॥ जमदनीदयाइष्टा
साविधायनमायुः ॥ अथ श्रीरुगवान्बुधा अंशान् पुनत्रवित् ॥ एवंपुत्रत्वायानिर्गुंधात्रिष्टुयामिमंस्तु ॥ याविद्यासर्ववैद्य
सहविद्यानियुक्तिर्निना ॥ गहिरामादिनीनित्यं अत्रिनालवितासदा ॥ चिकित्तामनसायुद्धाहकीयुकेनलखिता ॥ पूजितामानि
गजन्मपत्रापापक्षिता ॥ सर्वसत्त्वहितार्थेयथागसंलान्तर्धये ॥ नमस्तु कृज्जनिसेनमानप्रजयमय ॥ ५२॥ दमान

वानकः धर्मदिनं वनः स नाह निधना तुलाचनः ॥ यसा कः गनीकः गुहः संकनः पियवावकः ॥ अष्टमूर्तित्रिधिसचरानचर
सुधामयः ॥ अष्टाक्षत्रं खडा अत्रः सूर्यकः गिरिव सकेखः ॥ ध्वनोखधनाधी ॥ अष्टरूपतिः तं धनत्पत्रं कं कानधनिमूलाचना
गयहोपवित्तवान् ॥ जम्बुनामारुतं मूर्तिमाननः ॥ अष्टरूपत्पत्रं ॥ सुधनिताना नष्टादेना मधु विह्वितं वलितु कवलिह्व
ना ॥ ध्वनोवात्रापेना कर्मः सर्वापहान ॥ अष्टरूपत्पत्रं निधविह्व ॥ कानि नचास्य कस्यचिदवगुनं यच्चुति ॥ अवगा
त्पत्तिस्तथा कि नचास्य वाधिचीत्ता कना याहविद्यति ॥ जगो जगो जगि स्म आहविद्यति ॥ ॐ दं मुवाच ह गवानाह
मनास्त्वहिह्वत्पत्रं वाधिसत्त्वा महासत्त्वा साचसर्वतदिपर्षत्पत्रं दवमानुषा सूत्रगत्रुकि वृत्तमहात्रगग भवत्य साकारगव
कारुखितं मधु नदिस्त्रि ति ॥ आर्यगतपत्तिह्व दया नामधनसि समाफः ॥ ॐ नमो ह गवतो आर्या वीषविज
योयै ॥ नवमयाश्रुतं मे कस्मिन्मयह्वान्मत्वा वयोधर्म संगीतिमहा गुह्या साह्वगवान् विद नतिस्म ॥ सुखपुतिष्टि
रुहगवान् मिनायू सुधा गन आर्या वलाकि नवत्रं वाधिसत्त्वं महासत्त्वं माम कुयगत्सः ॥ सनिकुत्तपुष्टिः खिताः सत्त्वा

॥ अथ ॥
॥ १२९ ॥

अथायुक्ताः ते रत्नाः सत्त्वानामर्थे यहिताय सुखाय ॥ ४० ॥ सर्वं तथा गताः विजयी नाम धात्रे त्रयवाचयदग यपर्यवापुया
पत्रे त्वय विस्तरे ॥ संप्रकाशयदि र्घा युक्ता नाम पानयति ॥ अथ त्वत्वा युक्ता नार्था वला किं न ग्वत्रा वाधिसत्त्वामहा सत्त्वः
स्वयासे नात्क गार्त्त लिपुना रत्ना रत्ना वने मरुदवोचन ॥ इग यतु रत्न गवान सर्वं तथा गताः ॥ ४१ ॥ विजया नाम धात्रे त्रयवाचयदगः
यतु रत्न गत ॥ अथ त्वत्वा रत्न गवान सर्वं तन्मिपत्र नम ॥ ४२ ॥ मवेत्ता के समक वना किं न ग्वत्रे नाम समाधिसमापत्र ॥ ४३ ॥ सर्वं तथा गताः
स्वीय विजया नाम धात्रे त्रयवाचयदग ॥ ४४ ॥ नमा रत्न गत सर्वं त्रैता के पुनिष्ठा यवधायन नमः ॥ ४५ ॥ ॐ ॥ ४६ ॥ ॐ ॥ ४७ ॥ ॐ ॥ ४८ ॥ ॐ ॥ ४९ ॥ ॐ ॥ ५० ॥
ॐ ॥ ५१ ॥ ॐ ॥ ५२ ॥ ॐ ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ ५५ ॥ ॐ ॥ ५६ ॥ ॐ ॥ ५७ ॥ ॐ ॥ ५८ ॥ ॐ ॥ ५९ ॥ ॐ ॥ ६० ॥
सुगतवत्रवचनम् ॥ ६१ ॥ ॐ ॥ ६२ ॥ ॐ ॥ ६३ ॥ ॐ ॥ ६४ ॥ ॐ ॥ ६५ ॥ ॐ ॥ ६६ ॥ ॐ ॥ ६७ ॥ ॐ ॥ ६८ ॥ ॐ ॥ ६९ ॥ ॐ ॥ ७० ॥
पवित्रयापनिगुह्य सहस्रं तन्मिसे वादिन ॥ सर्वं तथा गता वला किनि ॥ ७१ ॥ घद्या नमिनापनिपुनिनि ॥ सर्वं तथा गता मो नादग रत्नाम
पुनिष्ठित सर्वं तथा गत हृदया धिष्ठित ॥ ७२ ॥ ॐ ॥ ७३ ॥ ॐ ॥ ७४ ॥ ॐ ॥ ७५ ॥ ॐ ॥ ७६ ॥ ॐ ॥ ७७ ॥ ॐ ॥ ७८ ॥ ॐ ॥ ७९ ॥ ॐ ॥ ८० ॥

पं० पं०

वलेयममायुर्विगुह ॥ सर्वतथागतसमयाधिष्ठानाधिष्ठित ॥ ॐ मुनि २ महामुनि विमुनि मनि २ महामनि ॥ यमनिसूयति
नथगहनकाटिपत्रिगुह ॥ निसूय वृद्धिगुह ॥ हहाजय २ विजय २ सान २ सुन २ स्तानय २ सर्वमूडा ॥ मधिनधिष्ठित
॥ ॐ गुह २ वृद्ध २ वने २ महावज्रवनेगर्ह ॥ विजयगर्ह वज्रका लागर्ह विजा हवे ॥ वज्रसंलवे वज्रिणि ॥ वज्रसंलवदुममः
गत्रितं सर्वस्त्वा नाच कायपत्रिसूदा हवेदुमम सर्वगतिपत्रिगुहिये मूमसर्वतथागतो माममास्वासयनु ॥ ॐ वृद्ध २ सि
ध २ बोधय २ विवाधय २ साचय २ विमाचय २ अधय २ विगाधय २ समकोमाचय २ समकत्रिगुहिये सर्वत
थागतहृदयाधिष्ठित ॥ ॐ मूड २ महा मूड महा मूडाम कुपद स्वाहा ॥ ॐ यसाकूलपुत्रसर्वतथागतो मूड विजयोना
मक्षत्रिगुहिये मूड दं कुरु नापीगमयविनासिनि ॥ तीरिवलोदजपुत्रपुत्र नयुवा ॥ कचिध्वेयम ॥ कुरु मा मित्यसस्तु
यमपुत्रमूडा ॥ लात्रोपुत्रोक्तत्वापुदक्रिनसहस्रकर्तव्यो ॥ यथाविरुवान्नूपन ॥ ॐ सा सर्वतथागतो मूड विजयो
नामक्षत्रिगुहिये ॥ वाचत्वा ने इवाक्र ने नचेत्यमूर्तिमर्चयेत् ॥ यस्पेवक ने दिनाय ४ सफ ४ अय ४ पुण्यागमिपति ४ हृदमवाचह
गवानाहमना शोयवसा कितेश्व नावाधिसत्त्वो महासत्व ४ साचसर्वविकिपर्वत्सु वमानूखासु नथ लाकारुगवता हासित

॥ अत्र नीर ॥

॥ १२२ ॥

महानन्दविति ॥ आर्याह्वयविजयानामभानहि पत्रिस माफ ॥ ० ॥ ॐ नमो हगवत्ये आर्यपर्वसुवनी तानय
॥ ॐ नमो अमिताभयनथगना यां हने स मा सुवधाय ॥ नमो धर्मीय ॥ नमो सदा सुमयाफाय ॥ तामनेत्ये नमस्यामि
त्ये नमस्या वासने ॥ हगवति पिगविपर्वैर्मे निपासय नगुधनिशियानि कानि ह्येयान्पयन ॥ यानि कानि चिन्मेहा
माय केचिदप्युवा ॥ सुवधवा उत्पद्यन् ॥ सर्वा निना निवा लन् ॥ वात्पद्यन् ॥ ननयदि तसुदन नसुत्ये नसुत्यवचनेन ॥ अ
जजज ॥ अहि ॥ पत्रिगा विष्टि ते मनुपदेर्मम सर्वसत्वाय नरा कुरुपत्रिग्रहं कुरुगभनि स्वस्यय नद ॥ पुत्रिहानगमुप
त्रिहानं विखरव नं कुरु ॥ अग्नि पत्रिहान कुरु उदक पत्रिहानं ॥ कार्वा द्देदतं कुरुग्री माव न्धे न कुरु ॥ नयथा ॥ ॐ अमृत
ब्रह्म गारुव ॥ अमि तसं हव सु सु अस्तु ॥ गमागुन १ मासन २ ॥ गमपुगमसर्षी काल मयू नपगमसर्वत ३ ॥ गृहदावा नप
समसर्वद ॥ अमि तसं हव नि पिगविपर्वैर्मे सर्वानि ॥ कुन्ने २ विगुन्ने २ गुन २ शुभ्रमन्त्राहा ॥ ॐ जेनिगु अत्रिच भुतिमान्
गिपुर्वमिस्त्राहा ॥ ॐ नमो सर्वगवना नां हगवति पिगविपर्वैर्मे गवनि स्वाहा ॥ ॐ पिगविपर्वैर्मे गवनि श्रीरुद्र पिगविपर्वैर्मे

॥ १२२ ॥

स्वाहा॥ ॥ आर्यपर्वसु वनिमहा मात्रिपुसमनिनाम धननि समाप॥ ॥ ॐ नमो रगवले आर्यमानि च॥ एवमयाग
नम कस्मि नमय रगवान्ग्रे वणा विह ननिम ॥ जगव न २ नाथ पिनु दसा नाम मह नाहि सु स धन साध मर्दु याद ग हि हि सु
सने १ सर्व स्तुत्ये वाधिसर्व महा सत्वे ॥ ननु ख न रगवान् हि सनाम कु य न म ॥ अस्मि हि सु वा मि नि चि नाम द व ना सा सूर्या च तु म
सा १ पुन ना नू ग च ति ॥ सा न द ग्ध न न ग्ध न ॥ न व ध न न वि नू ध न ॥ न म र्वा न न म्ध न ॥ न द न न न द्ध न ॥ न ह वि न
वा मा त्रि चे र वे ता या ना म गो ना मि ॥ अह म पि न द ग्ध न न ग्ध न ॥ न व ध न म् र्वा ॥ न म्ध न द न न द्ध न ॥ न य थ ॥ ॐ प य क
म्य सि ॥ प ना क र्म सि उ द य म सि चे न म सी अ क र्म सि म क र्म सि ति व म सि गु त्म सि मे वी व न म सि म हा चि व न म सि अ न र्वा न
म सि स्वा हा ॥ ॐ मा ति चि दे व न य थ मा ग्म प उ त्प थ मा ग्म प य ॥ ना न क र्म ना मा ग्म प य ॥ ह स्ति र्वा मा ग्म प य ॥ चै त रे या मा ग्म
ग्म प य ॥ उ द क र्वा ना मा ग्म प य ॥ अ ग्नि र्वा ना मा ग्म प य ॥ पु त्र क मि तु र्वा ना मा ग्म प य ॥ आ क र्म अ न क र्म ॥ म
र्त्ति न पु अ म र्त्ति न पु सि ह ना म न र्ना ग ना मा ल रु ॥ सर्व ना म न र्ना ग ना मा ल रु ॥ ॐ लो ना लो म च ता स ल म् दि ति न र्ना ग ना मा ल रु ॥ म
व प नि वा न स्य सर्व सत्वा ना च सर्व रु य पु र्वा र्वा ॥ स्वा हा ॥ ॐ न मा न त्त न या म ॥ ॐ रग व ले आर्य मानि चि न म ॥ ॐ व न न व र्वा

॥ ध्यानगीत ॥
॥ १२३ ॥

निवेदनिश्चयना निवनाहमस्ति सर्वं इच्छतां यज्ञं मुखं वचनं स्वाहा ॥
॥ ॐ नमो ह्यगव्ये कार्यं गृहमाह्वये ॥ एवं मया सुकर्म कर्मिन्मयं यद्गवा नेत्रं कवर्षां महानगया
वसवो देवनागयस्त्रगन्धर्वसूतगन्धर्व किन्तु नमो नमो दिव्यं स्यात् ॥ नादिदृष्टं वृहस्पतिगुल्फगनिश्चयनादि नेत्रं कवर्ष
हिनष्टा विस्मदि नष्टादि हिम्बु यमा नामा महावसमया तद्गुणनावाह विष्णुनाधिष्ठिता सैहासनं न विहन्ति स्म ॥ अत्र
के वेधिसत्त्व सत्त्वसत्त्वसत्त्वसत्त्व ॥ तद्यथा ॥ वज्रपाणिना च वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ वज्रमणिना च वाधिसत्त्व महासत्त्वेन
वज्रचक्रं च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वे ॥ वज्रविह्वलं च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ वज्रसनेन च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वे
न ॥ वज्रविनायकेन च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ वज्रबाणहस्तं च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ वज्रविकृष्टं च नाम
वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ वज्राधियुक्तं च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ वज्रातङ्कुलं च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ वज्रवि
क्रमेण च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ अतिवज्रं च नाम वाधिसत्त्व नमो महासत्त्वेन ॥ अथ लोकितं सत्त्वं नाचानाम वाधिसत्त्व

॥ १२३ ॥

न॥ ला कशी या नाच नाम वाधिसुत्त नमहा सुत्त न॥ विकसित वक्त्रे ॥ च नाम वाधिसुत्त नमहा सुत्त न॥ यम ननु ॥ च नाम वा
धिसुत्त नमहा हो सुत्त न॥ मरीची न च नाम वाधिसुत्त नमहा सुत्त न॥ मेढी य नाच नाम वाधिसुत्त नमहा सुत्त न॥ एव
प्रमूखे महा वाधिसुत्त ग न सहस्रे ॥ अर्ध पत्रि दत्त व पुत्र सु गत ग वा ॥ अर्ध ग यति स्म ॥ आदौ कल्या न ॥ कल्या ने प
र्य वसा न क कल्या ने स्वर्ग सु विज्ञे न के वत पति पूर्ण पत्रि गुहं पर्य वदा न ॥ अथ च र्य सु प्रका ग यति स्म ॥ अथ सु गवा
न चि का मनि महा ॥ गृहा ते का न नाम धर्म प र्या यं द ग यति स्म ॥ अथ ख त्र वज्र पा नि र्वा धिसुत्ता महा सुत्ता सु सु र्ग म धु त
म वर्य स ना रत्न य स्व ज्ञे द्या धि क्त न न र्ग व क्त म न क स न ॥ अमु य द क्षि नि रु न्य पु न म पु त्त न नि व य स ग र् ॥ प र्या
ह मा सु धू ती त या न त्प र्व त्त ॥ तु त्त म व ता व व ग जी लि ख ह द य पु नि ष्टा य र्ग व क्त मे न द वा च न ॥ गृहा थ र्ग व नै ग्म उ ग
न पा थ त्री ड पा थ कु नो ॥ कु न न्पा थ स त्वा थ वि ह ० य नि क क ल्या ष्ठि न्या ॥ म प ह न कि ॥ क ल्या ष्ठि इ प ड वा थ कु र्व नि ॥
क षा वि दी य का नो स त्वा नां म त्या य ष ॥ कु र्व नि ॥ क षा वि ग ग्रा हा ना थ कु र्व नि ॥ ए व सर्व स त्वा न्प ड व न वा ह य कि ॥

九

गुफिं पत्रिगात्तपत्रिगुहं पत्रिपात्रं अकिं स्वस्य यनद्रय त्रिहात्रसमुपत्रिहात्र विषयं नास तस्मिन्नाव न्वनत्रिहिवन्ध
कुर्यात् ॥ इथसाक मृनिस्तु अगताहं सम्यक् वृद्धग्रहनाम कुपुगाथ लघनिस्तु ॐ मद्यात्कोयेनो स्वाहा सितासर्वे ॐ नका
म कूमा नाय स्वाहा ॐ वृद्धाय स्वाहा ॐ लोभाय स्वाहा ॐ असूत्राय स्वाहा ॐ रुक्मवर्णाय स्वाहा ॐ अमृतपियाय स्वा
हा ॐ कान्तिक नव स्वाहा ॥ ० ॥ ॐ मानिवज्रपातिनवग्रहात्मन कुह दयापठि न सिद्धानि ॥ यथा नू कुमवर्तुह द नदिग
लेग न्वम तुलं कं पद्मम ॥ चतुनमंचतुन दानं चतुस्तानं साहितं ॥ दूतांग नव कुसुमवितं कर्तुं ॥ मत्स्यसितक
मनापत्रि कुं द मग न्वम तुलं कः ॥ दग्धं पुन पुमानचिरेय हा क्त्र न कवर्ध सहस्रसूर्य समग्या मोनिन गोपस नूपध
धनतुगा एपित क मल धनं सिद्ध नवर्तु समतजामातिन विग्रह ॥ अस्य दय त्रिजगत्जनं कु नू नू ध प ॥ मद्यात्को नायः
आदिष्टाय धीतिस्तु नव स्वाहा ॥ ॥ पूर्व सादि सा न क क म नापत्रिपिय गुग न्वम तुलं क सामा वा म न ॐ निरु
यशाहि नवर्तु जग म क ॥ नातुज दया अत्र सूर्य क म तुलं धनं कु म तुलं पूणा वसक ॥ अस्य राजन घृणादने ॥ सिवा

॥ धनपत्र ॥
॥ १२५ ॥

सधपं॥ कुंचद्रामरवि कुमायसी गावस्वाहा॥

॥ दक्षिणस्यादिगिरिकु कमला पत्रिचन्दनगन्धमगुलकलिकुमग

ले॥ अंकनकवर्धनमकु निगकि धन॥ वनदहसं॥ राजनमस्यमाना रुकः॥ गुणदनेवां॥ गुणवधपं॥ नकाहुनसा
कसकुमात्रायसा॥ ॥ पश्चिमायादिगिरिकु पद्मा पत्रिकु की॥ गुणगन्धमगुलके वसन्तारी वृद्धे॥ एतादिनवर्ध॥ पत्र

कौटुम्बैसौवैलैवैमात्रायेस्वाहा॥ नकस्य गु॥ अरुसुयकमगु वधने॥ राजनमस्यमंगमाषकसना॥ धृपागन्धनस॥ कुं
शा नजपुत्रसुपिवर्धयवधायसाहा॥ ॥ उत्तरस्यादिगिरिकु कमला पत्रिचन्दनगन्धमगुलकगुन॥ पत्रिच

नकगुन॥ नफकाकेनवर्ध॥ नकस्य गु॥ अरुसुयकमगु वधने॥ अस्यादयंदधिरुकादतंक्षिप्रमा॥ सधयुनधपं॥ कुं ना
दिनवर्धनिर्जमायविहस्यनरागमायसाहा॥ ॥ अग्नेयादिगिरिकु पद्मा पत्रिचन्दनगन्धमगुलकगुन॥ पत्रिच

धन॥ अमकिलवर्धधवना राजनामकु रासुयकमगु वधने॥ अस्यादयंक्षिसराजनकपर्जनधपं॥ कुं नम॥ अकाधि
पनयसनात्मायगुनहस्वाहा॥ ॥ नैऋत्यादिगिरिकु पद्मा पत्रिचन्दनगन्धमगुलक॥ गनिश्चन॥ कसु

॥ १२५ ॥

॥ १ ॥ कपन कारु यः ॥ नित नपिनत्र नाम क नन क म म ॥ १ ॥ अरु मयु विनिका धनं राजन मत्स्य माषर क क स न ॥ ४ ॥ धृपा ग न
नमः ॥ १ ॥ ॐ ग नि य नो य क र्क व र्धू य क र्क य क स्वाहा ॥ ॥ वायु वा दि गि न को लो ग प नि त ग त प नि ग न्ध म तु ल के ॥ का
य त्रि का ना रू ॥ राजा व र्क व र्क नित न र्ध दे ह ने वि त थ र्था न क लो च न यू ॥ म ड पु क ला ल रू कू ति कू क ल त्ता र ॥ ४ ॥ पंच व र्क
म द्य म ॥ १ ॥ न न गु ग र्था चे त्र सूर्य क त्र रि न य सि ॥ १ ॥ अरु ५ य मा ष मि ष लो ज न ॥ १ ॥ किल कू ग त्र वा वि व र्क धृ प ॥ १ ॥ ॐ न मा वि
कू व का य नू धि ना न रा हा र्ग म ॥ १ ॥ न स निल य अ म न पि या य स्वाहा ॥ ॥ १ ॥ गे नां दि सि न क स त्र नू हा प नि वि
का ग न्ध म तु ल के वा तु ल क तु र व र ॥ १ ॥ धृ म व र्क ॥ १ ॥ कू ग र्क लि ना म कू ति स्व पू कू ल ॥ १ ॥ अरु लो ज नं धृ म तु ल के स कू न
स धृ प ॥ १ ॥ ॐ न मा धृ मा र व र्क स निल य धृ ति ख न व स्वाहा ॥ ॥ म तु ल पूर्व धा ल वृ धा ल ग वा न ॥ १ ॥ द क्रि ॥ धा न व
व र्क प नि प ग्धि धा न ला क ना र्थ ॥ १ ॥ उ र न धा न म रू ग्री कू मा ल ॥ १ ॥ पूर्व कू न कू ॥ १ ॥ सर्व ग्र ह ॥ १ ॥ पूर्व द क्रि न को ॥ १ ॥ सर्व न कू ग ॥ १ ॥
द क्रि न प ग्धि का न स र्वा प ड वा ॥ १ ॥ प ग्धि म उ र कू न र ह त्रि का म हा व वि ॥ १ ॥ रू ग नी ला नू न पि म र्वा पु नि मू ख नि न वृ ष्णु गं ह

॥ अने ॥
॥ १२६ ॥

सुदयनवाख्यानमूत्रादक्रि।। वृत्तिसधनां वासपमवासधना॥ नत्तम कृतिनिवजपर्यहापनिष्ठा चडासनसमाहिना॥
षोडशवर्षाकाना॥ सर्वात्मका लह विना॥ मधुलपूर्वज्ञानवाधधननापुसादधिरुक्॥ दक्षिणवित्रधकस्यदधिमाखरुक्॥
॥ पश्चिमवित्रपाकसाग्रीनरुक्॥ उत्तरनक्षत्रस्यदधिमाखरुक्॥ सिन्धुलसमतं॥ यथा नूकर्मवर्तुहदनपृष्ठादिपूजाकर
वा॥ पृथक्दिपादये॥ घृतमधुलपुत्रयित्वापचपुक्रिणाध्याये॥ सर्वेषामुखां पठादयमिति॥ नवेवर्तुहुहुजाः
सनमूत्राच्चिकानिरुवकि॥ ॐ नमः सर्वतथागत्या॥ सर्वाभपनिपूत्रकल्प॥ सर्वाथरुकि नखाहा॥ नत्तययसामं॥ पृथ
कजपात्॥ सफसफसुमकुमकुमकस॥ नवपूजितासर्वग्रहाविविधनृपि तददकि विपूजान्तागभत्सोत्त॥ अथ नय
वि॥ ॐ मानिकपति नवग्रहानामनेह दयोनिपथि मसिधनि यथा नूकर्मवर्तुहदनगधम ७ ल कृत्वा वादसां
तिपमानम ७ ल मधुपूजयित्वाति॥ तामु मत्स्यनृणादिरुजनेन॥ अर्घ्यदत्वा अर्घ्यं ल सलवात्रमकुजपात्॥ प
श्चात्पूज ४ वजपात्॥ ग्रहमात्रकानामभ्रक्षिमकुपदानि सप्त वानान्वा॥ त्रिधित्वाति॥ नत्तमे ग्रहा आदि त्वा दया नहात्र
उपिनेकत्रिधा कि॥ सर्वग्रहादानि का आचमिषा कि॥ जगायथा दिद्याय पाहवकि॥ यथा खनृप ४ वजपा नेहि ति निवा ज्य

॥ १२६ ॥

गका वापाणि कावा॥ अने कया सत्त्वगतिकया॥ यखा कर्तृपूनिपतिष्ठाति॥ नय अकान मरु नाकालक निष्ठाति॥ यच्च
खनू पून ४ वज्रपा ॥ अग्रह मा ॥ शुलभध पूजयित्वा दिनदिन वाचयिष्ठाति॥ तत्कृत्य धर्मरानेकेषु सर्वग्रहा सर्वशसर्वाः
अपनिपुत्रिष्ठाति॥ तत्कृता दपिदा निडात्राग यिष्ठाति॥ अथ खनू रूगगा कसूनिष्ठ धागन पूनत्र पिग्रह मा रूका नामधन
भीम कुपद निहा खंतिस्म॥ ॐ नमात्रत्त प्रयाय॥ नमायूधाय॥ नमाधर्माय॥ नमः ४ सघाय॥ नमावज्रधना॥ पञ्चधनाय॥ नमाकू
मात्राय नमः ४ नमः सर्वग्रहसर्वाभपनिपुत्रकानां॥ नमानुग्रहानां॥ नमा द्वादशनासिना॥ नमा सर्वापडवानां॥ तेष्वथ॥
ॐ कूर्च १ वज्र १ पञ्च १ सन १ ऐसन १ सन १ कु ७ १ कु ७ य १ म न १ मानय १ मर्दय १ द्या ७ य १ मम सर्वसत्त्वा नाच सर्वविद्या
नचिद्वयै १ हिम १ सर्ववीद्या न्नासय कनू १ मम सपनिवात्रस्य सर्वसत्त्वा नाच कार्य कपय १ सर्वपापानिमम सपनिवात्रस्य
भक्त १ दा १ दापय १ द्रुत दर्शयामो हव कि नर १ मम सर्वसत्त्वा नाच सर्व नरक दुगह पिडा निवात्रय १ रूगवति सय कनू
महामायापसा धय १ सर्वइष्टा नासय १ सर्वपापानिमम सपनिवात्रस्य सर्वसत्त्वा नाच च १ च १ तु १ च १ म १ म १
१ मू १ हवा हव हवारु १ उग्र कपु पूनत्रये १ रूगवति म नानर्थमम सपनिवात्रस्य सर्वसत्त्वा नाच सर्वत आगता विष्णु नो विष्णुः

वक्राहखितं मत्प नंदत्रिति॥ ॥ नार्थग्रहमाह कानामध्वनशासमाफ॥ ० ॥ कुंनमा० ग्रीनाहव॥ ॥ उव॥
मया ॥ नमकस्मि समयहगवानलूठकवत्पामहानगयीमनकदव नागघक्रगन्धवासूनगत्रुकिन्नमहानग
॥ पस्मागोदि लुसामागीनवधृहस्यु कुलसन्निधे नाहकगुहिनकाधिसतिहि धनक्रुगदिहि ॥ १३॥ यमानमहावग
समयांलंकात्राधिसु नाधिसि नसिहोसनविहत्रतिस्म॥ ॥ अनाकवाधिसत्त्वगतसहस्रैसाद॥ गयथा॥ मेग्रीयवाधि
सत्त्वमहासत्त्वन॥ ॥ उवंपुमूमेमहावाधिसत्त्वगतसहस्रै॥ ॥ पत्रिह न॥ पुनरुत्तौ धर्मद गयतिस्म॥ नाहनीरसूनलयः
॥ ॥ वा॥ मसु मयवर्तु गगतमंगमंगु ॥ ॥ आहव नृपधालं नीलांगी नाहविकृतमुखनत्त न प्रकुध्यात् ॥ निनाह काट
नृपकासितसनसीला॥ ॥ हितममध्व कग नाहा त्रिडास्य नृपा त्रविगसिसुतुगनितसिहसूनरु॥ ॥ नाहनमसदह
॥ ॥ का॥ नरुत्रिग्रीसंनितः कर्षवर्तु ॥ १३॥ ॥ आहिन ॥ ॥ नाहवसिंहसूता यवृम तपियायक ॥ ॥ आहवदवताय॥
॥ ॥ वा॥ स॥ क॥ धृ॥ प॥ क॥ क॥ ग॥ ॥ न॥ ह॥ वि॥ न॥ क॥ क॥ य॥ ॥ पी॥ मा॥ य॥ ग॥ न॥ न॥ थ॥ स॥ मा॥ न॥ द्या॥ य॥ द॥ व॥ द॥ न॥ व॥ ग॥ न॥ व॥ स॥ न॥ व॥ र॥ ल॥ अ॥ कि॥ न॥

॥ धननी ॥
॥ १२८ ॥

किं न स हि ताय अ व त न र ग व न् न ज ज मान स म म हि तार्थ ॥ ४० ॥ गुरु म ॥ त म ध नू न प पि ग्ध य स क्रिय न चि तिक न ग म
कि क नो नो ह वा स सा ध या र्थ ग्रा व ज पा ष्म ह ॥ ४१ ॥ ॥ र ग व न् नो ह वा सि ह सू न न अ म त पी य न कू नि ग्ध ग व त व न न
॥ सर्व स त्व स अ यु त्रा ग्ध त्रा ग्म दि ग्म कि र व कि स ॥ स त्वा ना वि रु ० य कि स ॥ उ प ड व कि स ॥ क त्वा कि ड वा म य ह कि स
॥ क त्वा कि न्या ॥ म य ह न ति स ॥ ४२ ॥ ॥ ॐ नो ह व य न विं गं गि ह त्वा यं खे र्गै रू टं को यं उं हं यो रू तं कं गे यं हं हं कं नो यं
॥ सर्व स त्व स नाम प ड ॥ वा ह य कि स ॥ त द्ग य उ र ग व न् न ध र्म प य्या यं यं सर्व स त्वा ना न को र व कि स ॥ ४३ ॥
ॐ नो ह व य न वि स सि ह स्या य ख ड्ग रु ट का य उ र्ध पी ग न क गे य ह र्म क ता ह न ना य स र्व ह म न न य ॥ पूर्व त्रा ग सा का य
न मा न म ४ ना ड्ग द व का यो ग्म की र व कु म स र्व का वा त ज पि त त्रा ग्म ॥ अ षा षा सा त्रि पा ग कि नि ह का स र्व त्रा ग्म ना सा कि र व
कु म र्व का ॥ ४४ ॥ ॥ उ रू न दि गि स स हि ता हि त्रा ॥ न स न नि ल अ मि रु पि या य त्रा ह व स र्व वि श्रु प सा न य न ॥ ४५ ॥ म व
व रू ग व न् न व व ज पा ष्म द य म ल न म्म त्रि ति ॥ ४६ ॥ ॥ आ र्थ त्रा ह वा य ह ग्म की उ ड व ना म ध न सि प त्रि स मो फ ॥

॥ १२८ ॥

ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अवमयाशु नमः कस्मिन्समयस्य गवान् यत्र वस्यो देव नाग यक्ष गन्धर्वी शत्रु गन्धर्वी सुनगत्र
उकि ननमहा नगम अयस्मा नादि यसा क्क सवध वरह सतिशु क्क गनिधु ननाइं कठु रि नम्या विगति न क्क नादि हि ॥ न
नेक कोधिसत्ता दिविह न निधर्म द ग य निस्म ॥ अथ वरुपा ॥ अनाथ यरु व क्क म न द वा च न ॥ गहा थ कठु र ए न नो
डा न ड न्पा थ क्क ना क्क स क्क न थि न थ सत्ता मत्वे न विरु थ य कि ॥ उप ड थ नि क्क पा चि ड थ म प ह न नि पा न म प ह न नि
अव सर्व सत्ता ना म्प ड व न ह न न धर्म द ग य निस्म ॥ ५० ॥ रुग वा ना ह ॥ साधु साधु वरु पा ॥ स क्क च ग न सि क्क
रा वि थ ह न कठु ग हा द ग य निस्म ॥ ५१ ॥ कठु व का स स ना य का न पा म व ग ह स्या य वि क्क क्क ते द व ना य ॥
कुं सु वा स धु म पृ थ क्क सु दि प ग थ क्क सु य हा पु वि न्पी या य क्क सु न थ स मा न् टा य र व ना न व व क्क ॥ ५२ ॥ कि नी
महि ना य अ व न न ह व न सर्व सत्ता ना हि ना थ य ठे द ग ह म पु ल म ध म ध पु वि ग्क न स्या पी नि क ना ग्क नि पु लि क्क र
व ठे ना ना चि क्क वि चि रु सो रि न थ ना व स्या ग मा रु वि ग ह स्या सां ध न च र्म म पा ग वि धु न च र्म पा ग वि धान वि क्क न म्प र

॥ ध्यानपीठ ॥
॥ ११७ ॥

विधु तव गानि सितामसि ४ धुमा धुस सुधुनी न्य सह मधुमा हवर्ध्व वपु कुरु कादि गुग्गुलुगमे नी नपुष्प य हृषाग ना ४
कगवाका ससूनाय खक्र पास हृका ये खग कुल दवता यजमान नस्य शायत्रा नागं सपद ॥ वज्रपा ना हव
मावस निरुपयानिके कवनम ॥ सा का नाहिका थय ना ना लो ग सर्व बाधि विना सय ॥ गुह्य र गवत नो डा नो डन
पाथ वृता कूनचि गथने सत्ता नाते विहथ यति स्म ॥ ४ ॥ अज्ञा हात्र कि ड वा मप हन स्म ॥ कला चित्तान मप हन कि स्म ॥ क
लाचि दी य पस सा मस्य य कू वनि स्म ॥ नवं सर्व सत्ता नां मप ड वत बाह्य नि स्म ॥ ५ ॥ पुन नपि न वय हा दि ॥
दग ना सवा पड जे ॥ ५ ॥ कुं व १ सु १ वज्र १ गन १ पु १ न १ हा १ क १ उ १ य १ सर्व वि श्रान क १ म १ म १ क १ य १ चि १ द १ य १ स
व १ इ १ न १ क १ प १ य १ सा १ क १ द १ प १ य १ क १ न १ द १ र्ग १ या १ न्मा १ न १ क १ मा १ स १ र्व १ स १ त्ता १ ना १ के १ स १ र्व १ ग १ ह १ न १ क १ य १ पि १ ठा १ रु १ य १ ति १ वा १ द १ य ॥ र ग व ति मः
हामा य पु सा ध य स र्व इ ष्टा न ॥ ५ ॥ व य स र्व षा च १ १ च १ ति १ नि १ १ १ न १ १ स १ म १ १ स १ म १ १ क १ १ ह १ वा १ ह १ वा १ रु १ वा १ रु १ वा १ उ १ ग १ उ १ य १ क १ प १ र १ ग १ व १ ति
स र्व सत्ता ना के म ना न थ प नि पु न य स र्व न थ ग न स म य वि वि क स म य सा हा ॥ ७ ॥ द म वा च न् र ग वा ना त म ना व

॥ १२७ ॥

वज्रपातिमत्पुनदन्निनि॥ आर्यकपुग्रहंभानांमध्वरुतिपनिममाफा॥ ॥ ॐ नमो विद्या नकाय ॥ विद्या न कम
हविनद्रैलाकविपुहकात्रिनिमिपि॥ आदिकगसुमात्रोदावजपचकपात्रमेतिनंनित्रवत् शुसहितेयगागिदि
पत्रस्थं पञ्चलपिनित्राचनंनत्रजिह्वागुनक्रनं॥ नागकुलुसखिगंनानात्रत्वमनिमालागव्यदीवोपुत्रितं सर्वत्रजनस
भुक्तं॥ षट्पुत्रुधननाथंदहितकविंदवत्रमहमादाजागनं वामखखाप्रपायुचवजसूत्रपासधनं॥ हस्तिमपुधनपा
दत्रात्रिदोषपादयुगं॥ हस्तिचर्मसुसालवंबाद्युचर्मकटिदधं॥ हात्राधहात्रनागचर्मगुहाहितेदद्विनदिगसुधर्थसर्व
सत्त्वउधननंगीनाचार्यजथासकंइ४खनासंनसुतं॥ अद्विसिद्धिपसादकेहेनवाभात्रमस्तुतेवेदगुनयर्गगुनेपा
पुरुकुगुमभुतपगकोटगनमूलकोटनाजनमोसाइ॥ ॐ निदगकुटधनसिममाफं॥ ॥ ॐ नमो गवत्येवा
र्यामहसहस्रपमई॥ म्यायथद॥ सीधसुसिद्धसत्त्वजन॥ धवसमहावनजफटिसुखनःमखनःखलटखनः
हनिपिंगलनिमिगिलनिमिद्रुतिनिमंगलखाहा॥ सि॥ धनुमममकुपदा४सर्वस्त्रीनाचवेगवत्सनामा

॥ नमो ॥
॥ १३० ॥

वसनेवर्थाधिपतेन च स्वाहा ॥ सायथ्यं ॥ अखइ नखिश्चिनखिवा ॥ अना ॥ चपल ॥ खख ॥ खखन ॥ अश्विनव
नेरुणरुगन्दले ॥ वसवगवर्हिस्त्रिस्त्राहा ॥ मयकुममसर्वसत्त्वानां ॥ सर्वग्रहस्य ४ धुननापुस्यमहानाजस्यना
मावनेनेश्वर्याधिपतेन च स्वाहा ॥ सायथ्यं ॥ खखखमः ॥ खलने ॥ खलामः ॥ खलतिखः ॥ खत्रखः ॥ खतिने ॥ खतिने
खलतिखः ॥ खलतिखः ॥ कमनः ॥ कलटः ॥ का ॥ कलकामिनिविनि ॥ विविधः ॥ विधयः ॥ गयेन ॥ समचन ॥ गमिगमिनिस्त्रा
हा ॥ गमयकुममसर्वसत्त्वानां ॥ सर्वग्रहापद्रवाविन्द्रकस्यमहानाजस्यनामावनेनेश्वर्याधिपतेन च स्वाहा ॥ सायथ्यं
थ्यं ॥ कुगमिः ॥ कुकमनि ॥ कुकसः ॥ कुकसम ॥ कुकुम ॥ कुकके ॥ कुलूम ॥ कुणः ॥ अमल ॥ समगत्र ॥ कद्रुम ॥ इम
अरके ॥ कलमके ॥ कलस ॥ ०० लमिलः ॥ विलज्जगत्रवतिस्त्राहा ॥ स्वस्त्यकुममसर्वसत्त्वानां ॥ वित्रपाद्रुस्यमहाना
जस्यनामावनेनेश्वर्याधिपतेन च स्वाहा ॥ सायथ्यं ॥ असंगखयवने ॥ वलवतिवलनिर्धाषासुनगुधत्र ॥ वज्रग
म ॥ वज्रधने ॥ सुभुसुभु ॥ दृढसात्र ॥ वज्राग्रपात्र ॥ अत्र ॥ धर्मयुके ॥ दिगिविष्टस्त्राहा ॥ स्वस्त्यकुममसर्वसत्त्वा

॥ १३० ॥

नोकेतथा गगनामा वप्रनेश्वर्याधिपतिनचस्वाहा ॥ स्वाद्यथदं ॥ खफ्रखफ्रगर्क ॥ विचक्र ॥ १॥ वक्रात्रात्रा ॥ चक्रः
चपल ॥ हीमपर्वक ॥ खनाग्र कृतिरुक्तन ॥ २॥ काक्रिवर्जवति ॥ सात्रंगवति ॥ चिकुकाकिस्रस्तु कुममसर्वसत्वा नाच
उरुनसादिसिस्वाहा ॥ खमाचापथगर्क ॥ लोकपानामहग्वन ॥ यक्रसनापनय ॥ सर्वहानीतिचसपुत्रिका ॥ ३॥ मापूष
धगन्धपुतिग ॥ कुममाइतिविर्यननगसा ॥ कषामेस्वर्यनवलनच ॥ निहना ॥ सर्वलाग ॥ खस्तु कुममसर्वसत्वा नाच
सर्वहयापदवोपस ॥ जल्प ॥ स्वाहानमस्तु पूरुषावीलनमस्तु पूरुषारुम ॥ नमस्यामा ॥ त्रिकेनाधर्म ॥ नाशनमोस्तु ॥ ४॥ स्वाद्यथदं ॥ ५॥
नसिधनति ॥ पुष्पसनि ॥ लजनि ॥ वीधमति ॥ कीपूष ॥ सकने ॥ सानथा ॥ सानवति ॥ शलधने ॥ शुत्रधनति ॥ शुधचन ॥ ६॥ स्वाद्यथदं ॥ ७॥
अनाग्रि ॥ अकिस्रस्तु कुममसर्वसत्वा नाच ॥ पूर्वसादिसिस्वाहा ॥ खमाचापथगर्क ॥ लोकपाना ॥ महग्वना ॥ यक्रसनापनय ॥ सर्व
हानीतिचसपुत्रिका ॥ ८॥ दपूषचगन्धपुतिग ॥ कुममाइतिविर्यननगसा ॥ कषामेस्वर्यनवलनच ॥ निहना ॥ सर्वलागः
थस्तु कुममसर्वसत्वा नाच ॥ सर्वहयापदवोपस ॥ जल्प ॥ स्वाहा ॥ नमोस्तु पूरुषावीलनमस्तु पूरुषारुम ॥ नमस्यामा ॥ त्रिकेनाधर्म
लाज

४ स्वाहा ॥ वसुधा कव्यथ सुकथना कपानाम हस्वन ४ । यक्षसना पठय ४ सर्वहानि च सपुत्रिका ४ ॥ ॐ दंपुषं च गन्धर्वपुत्रिग
क्रु नु म माहनि ॥ विर्यने नृगसा नखां मे यथ्य ने वत्र न च निहगा ४ सर्वं लोभश्च स्वस्वमु मम सर्वं सत्त्वो ना च सर्वं रथा पड
वा प सर्वं त्यक्त्वा ॥ तमास्तु पूत्रधा विल नमस्तु पूत्रधा तु म ४ न म सा मा भ्रनिक नो धर्मा ना गंत मा मुने ॥ वा न ग्रा वि गजा
ना ग ४ ॥ शुभा ना सा नि पात का ४ निहगा ४ सर्वं ना ग ४ स्वस्वमु मम सर्वं सत्त्वो ना च सर्वं रथा पड वा प सर्वं त्यक्त्वा ४ स्वाहा
॥ सा यथ दं ॥ अ वत्र म च त्र सा त्र म वत्र पु क्रु ति व ॥ पु क्रु ति ति धी र्वा । सम के मूख । स्ति न सु वत्र ॥ वीं पु पु ग दं पु ग
ले पा ल ग म सा न व ॥ सा त्र ग व न ॥ व न म हा व त्र म स र स स्वा हा ॥ स्वा य ॥ सा त्र क सि त । वि ध न सि । य नो ग्र सा न । आ म
ष नि ॥ अ धा व नि स च न । क नि ति क नि का सि व न । रु न ॥ क न क म र स म न क पा फि व ज ध न स्वा हा ॥ अ थ र ग वा रु सा व ना य
मि मां ग म थ र त्र वि न ४ ॥ ॐ म सि वा पु न ४ स्वर्जि ष्वा न त्र व न । सि व स कि । स मा सि ने व न त था ग न न द वा धि व न न नो रु मि न ॥
न सा दि दं न त्र व न पु नि त म न स न न ४ हा या मु स्व सि ॥ अ या वि नो ग म क न त्र व न ४ आ हा य सो ग म क न नि पु त्र वि न ॥ ध र्म
न न स मा सि क शि द मि न स न न अ स स क न ॥ न सा दि दं न त्र व न पु नि त म न स न न ४ हा या मु स्व सि ॥ य कृ ष मि

॥ अत्र भाग ॥
॥ १३२ ॥

षु विधिवत्पुकासितं गमसासदा नरुत्रयोगवाहकं ॥ समाधिना न समानविद्यते वनापमनाद्ययमार्गदर्शिता ॥ न समाधि
दं न त्वेवत्र प्रसिद्धमनेन सत्यं न ह्यहोमो मुखसि ॥ अष्टौ महापुंगव येषु सस्र ४ स्वात्मनि च त्वात्रिये गमनि चे व न कत्रि
नियासु गतेन गिता महाविनाय प्रतिपुद्गलेन ॥ अथ ४ पुदानरुवने महाह्वये विज्ञानि गानि न स्तानियथासु ख्यं ४
पुनिनैवत्र सद्य न त्वमनेन सत्यं न ह्यहो मुखसि ॥ येषु सनामनसाह ४ उपसंकमि गितमसासहि ॥ न प्राफप
फा अमरविंशय न मानदा निर्वृति प्राप्नुवति ॥ ४ दं पुनिनैवत्र सद्य न त्वमनेन सत्यं न ह्यहो मुखसि ॥ न जातुकु र्या
कि विधं हि पापकाय न वाचा म न साधवापि ॥ एच्छेदनीयं सहासा न ह्यथा न दृष्टि गृह न न तखा ४ ४ दं पुनिनै
सद्य न त्वमनेन ४ ह्यहो मुखसि ॥ यथेन्द्रकात्रपथि तीपुनिष्ठि ता चतुर्दिश वायु हि न पुकय ४ ॥ न ॥ अपमापुद्गल
सकि संध्य यत्र मागसा दर्शित ४ ॥ ४ दं पुनिनैवत्र सद्य न त्वमनेन सत्यं न ह्यहो मुखसि ॥ यत्रार्थसत्यानि विज्ञाव
यकि गति न पुह न स हसि ता नि काय पुदान न त्वम न स कृत्वा न न ह्यमके सु म वा प्रवृत्ति ॥ ४ दं पुनिनैवत्र सद्य न त्वमनेन

॥ १३२ ॥

नमस्तु नमो हामु सुखि ॥ अर्चिर्यथा वायवसादिनष्टा अष्टगणने वउपेति संख्या तेथे वसंथा जनविप्रयुक्ता अदुर्गमं यथा
किहि वृद्धपुत्रा ४ ६० दंपनि तं वनसुघनत्वमपिन सत्यन ६० हामु सुखि ॥ यज्जु माग्ना पुन (येव सुवरासि सर्वसत्वा
सुखिना हवकु ॥ अस्तानमग्ने न नदवपुष्पं धर्मनमसाय ६० हामु सुखि ॥ यज्जु माग्ना पुन (येव सुवरासि सर्वसत्वा
सुखिना हवकु ॥ गतानमग्ने न नदवपुष्पं संघं नमसा ६० हामु सुखि ॥ यानि हतानि समागतानि सिद्धानि निरुमावथवा
कत्राक कूर्व कुभे प्रीमनं यज्ञा सुदीवा नाशो च वनकु धर्म १॥ यनेव सत्यन जिना जिना नि सस्य वादि निपुन सनासि
ननेव सत्यन ६० हामु सुखि ॥ सूच कु सर्वय महाह यत्प ४ स्वाहा ॥ सायथ्यं ॥ धि न धि धिन ॥ चल निर्घोष ॥ वनसाने ॥ सानवति
मुन प्रहृण पाफ ॥ अत्रव ॥ अत्र धाष ॥ सानवति ॥ अचूक ॥ वनवने ॥ सत्रपाफ ॥ साने गम ॥ सूर्य ऊम ॥ सूर्य नीर्घोष स्वाहा ॥ सायथ्य
दं ॥ ख ॥ ख ॥ ख ॥ धाष ॥ उ ॥ धन ॥ सानथि पुहय ॥ विपुन पुहय ॥ संक र्षे नि विक र्षे नि ॥ विखा यवति ॥ शुभ साधने ॥ वननवति ॥ वास
व ॥ विखनि विखगम्य ॥ पसूपति पुष्पा ॥ गत्य ४ स्वस्त्य मुमम सर्व सत्वा नाच सर्व हया प्र ड वायाया सत्य ४ स्वाहा ॥ सायथ्यं ॥ कति

हा नामावकाथमवुषे ला कपा लाथयकसे नापतिग्धना ॥ तथाय कामहानम्माहानी निवसूप्रि काविर्य ॥ नजसा
षावठा न कर्मचिद्यु ॥ हिद निवक नत्ता निवक्रिप्रिध न दाहक ॥ वातन सापिनामद्यालकन नवनसुनि ॥ १५ ॥ ने नस
एवाके न काखाई कर्मदङ्गा ॥ नानाग ॥ अस्तथापुषे नि ॥ धीना ॥ सर्वपापका ॥ तयथा ॥ इमं कन कवेति ॥ कर्षनि ॥
खलुनि ॥ शक निजवलेगात्राहनि ॥ अवनिगानि ॥ पुसा निस्वाहा ॥ पुधाव निस्वाहा ॥ मध्वस्वाहा ॥ रुनगुमस्वाहा ॥ स
र्वकाखाई कनवेताठकुद निस्वाहा ॥ १६ ॥ ममकु ॥ सर्वस्वाना चैरसर्वकाखाई वनाजे वधि मकु विषयुयाग ॥ १७ ॥ सर्वदवे ॥ दिना
लदिना ॥ जिना ॥ पनाजिना ॥ स्वाहा ॥ नजसा सर्ववृद्धानां पुन्यकनि नजसा ॥ अहनाचेव वीर्य नानसधषा मकु धानी ॥ १८ ॥ पु
यासात्रिपुत्र समुक्ता मोह ॥ त्याप नसच चरुवाचानि नूध न कास्यपस्यधुतेर्गुने ॥ कोदिन ॥ पूर्वपासा च आनंदसा ॥
ननच ॥ मेसावे वृक्षत ॥ वेवुश्रय नस गकु ॥ विखयला कपानानामह ॥ सत्रवयनच ॥ त्या नापतिना सूर्यनहा
त्रिकित्सम ॥ चिगा ॥ विर्य नजसा ॥ षाविषयस्त्रविषमदा ॥ तयम कुपदा ॥ एकि निर्विषा विषइखना ॥ १९ ॥ त्यायथ ॥ २० ॥

॥ अत्र निः ॥
॥ ११५ ॥

हनि कणि के कनि न हिन अमन। पतु न। कन के। कय न। ह सा ह सा ह सु ॥ खल कु म न ग ल सा ह ॥ म म क सा ह ॥ हि नि सा ह ॥ मि न
ह सा ह ॥ ह सा ग ल ॥ कि ला सा व वि च र्चि का ॥ पि न को ता ह नि क्षा य के च्छे ल व ति स फ मि ॥ ना ग म द ष थ मा ह ॥ ज ने ला क
य यो वि खा ॥ नि वी धा र ग वा नू द्वा वृ द्ध स थ ह न वि ष ॥ ना ग द्वा र थ मा ह ॥ ज ने ना के द्र या वि खा नि वि षा र ग क च म
स थ ह न वि खे ॥ ना ग द्वा र थ मा ह ॥ ज ने ना के द्र या वि खा ॥ नि वि खा र ग वा न सं घ ॥ सं घ स थ ह न वि खे ॥ वि ष स थ थि
वा नि सा ॥ च न न स थ वा क न वि खा ॥ स र्व स थ नि वि षा ॥ ह मि स का म तु वि खे पू र्ण पा र्श्व वा स का म म तु स्वा हा ॥ वृ द्ध न
नि यो ना मा नो ना ध र्म ॥ च अ ध र्म ना ॥ सं घ न नि र्जि ता ति थ ॥ ६० ॥ उ न भू स ना क्रि ना ॥ सा मा वे न न न न सा ग ना ॥ अ ग्नि ना व र्जि ना
का षा उ द के ना मि प ना मि ना ॥ वा न न नि र्जि ता ना घा न न व र्ज न म थ न ॥ स थ न द वा नि षू कि स थ न प थि वि सि ष्ठा ॥ स
थ वृ द्ध थ ध र्म थ स थ ज य नु मा ॥ म र्ता ॥ सा य थ दं ॥ अ म न बृ ग्म पृ थ ॥ वि रू रू स र नि वा नि नि स र्व थ सा ध नि ॥ अ प ना मि ना
ध न ध न नि ॥ उ द ग र्क ॥ उ द्वा व र्क ॥ जे न म ग फ म ॥ जं रु नि स्वा हा ॥ प रं रु नि स्वा हा ॥ व न प रं रु नि स्वा हा ॥ ज य स्वा हा ॥ वि ज य

॥ ११५ ॥

साहा॥ अक्रात्य नाथ अत्राकि न ग्व ना अमिताय नमित्र न नाचिम न ४ वज्रसुवा नामगृहित्वं सवदा॥ नेवं ह्यंश किनचि
हिनत्वं॥ यथष अष्ट न नाय महायुतिनां। नामानि किर्तय १ नृगुहार्थ॥ न नरा अति न विषवगमुं। कुमन कायकन
संपचिते॥ सचद सो अय न न उपसि न॥ उल्लि फगमु व ध केच समुखं॥ अनसा न ना अत्राकि न ग्व ना। नख पुख पु
पठे षुगमु ४॥ सची उग्र हि तं पिरवयगमुं॥ रजितं पा निधन निप नय ४ नम सु न व ध अन न ल व नाय। न मा सु न स
पुकाग कामन॥ सत्ये पु किष्टाय पुता च मा च स सर्वव कामा सरुता रुव कु म म म सर्व सत्वान च वृक्ष निर्मित मिष्टा रुव मना
च पु कं पिना न। पाव द्वाद साव षा ति कु माना ॥ हितं क नि॥ यत्न मां म क नि कु म विद्या सु द वृ म न निर्मितं। स फ धा सा सु
मूर्धा अज क मो व म श्रु ति॥ साय थ दं॥ अ न न य रु व न न न दि मि नं ड॥ म लू नि गि ति व सि ति। ग न नि श ग त ल। वृ ल ल। अ
न अ ल रु न ल रु। रु ल म ॥ स पु क ष ति स्वा हा॥ क्रि पु स ति षु नां ग र्क ४ स म ग्व द्ध कु ० ड्रि यां ग र्क सु ता सु रि ता ल। कु मा च न स
कु ना न को ४॥ स सु ४ स नि षु नां ग र्क ४ का न न प नि प नि मू च न॥ नो ना न ह। ति सु ग नि अ न ना लो न स र्ष पा ४ उ षां न क स मा रा

॥ धन ली ॥
॥ १३५ ॥

विनक्तिविदुदानका॥ स्वाय ॥ अद ॥ वाधिरमहावाधिवामनमनरुनिनि। वररुलीवलरुल॥ सिखासिखसानवत॥ समसह
लासद। इनागमयलपाफे। सुनवरुलगरुमीनिनिवात्रिसिखाहा॥ नमारुगतनवृक्षमेनमावम॥ सिद्धकुमकुपदा॥
गनकुम्भिमाविषावम्भानमनेतुसाहा॥ स्वाय ॥ अद ॥ शुक्रमविक्रमरुतथाय॥ हनगम। दहनि। धधने। धनेधनेद
धिनि। नीमखत्वत्वम॥ खखम। सात्रम। चदेचपत्र। हनिमहनिमहानिनिस्वाहा॥ सर्वपापत्य॥ स्वाहा॥ स्वस्त्यु
ममसपपत्रिवात्रसर्वसत्तात्वा नोचसर्वदिग्दिग्य॥ स्वाहा॥ निहानिसर्वपापानिस्वाहा॥ वासुधैविषुलवेनगमकेसि
हस्यगार्थन॥ सविषगिनिगुकेनलननमपनामितं॥ प्राणिगुयकत॥ गमस्तानिबिखीकनलननं॥ अकनसत्यवाक्
श्रीमन्तहवकुलजनविपविनादवताया॥ गिखीनाविश्रुवस्तथा॥ कुक्कुचदपसत्राथदवतायामहावला॥ कन
काखासुदवडा॥ श्रीमन्क॥ कास्यपस्यचः प्रसन्ना॥ गमस्तानिबिखीकनलननं॥ अकनसत्यवाक्
रुद्रामहस्वाहा॥ नात्रसोचमहाकात्रिच॥ अच॥ लिनिनथा॥ रुद्रदप्यचगम्यप्रतिगृह्णानुममाहतिपिनीनिना

॥ १३५ ॥

४ पूजिताह्वायामस्वध नु राजन॥ पञ्चमिष ॥ सप्तपुं क ना तुम॥ पचामिष ॥ सप्तपुं सर्वपुं गामि राजन॥ सर्वपां विष्णु
यानासु निष्ठा पृथिवी तसा॥ सर्वराजनसं सप्तपुं सप्तपुं कला तुम॥ चित्रदग्धयेथासु पुं वै गदगं हवदे न पुनः॥
तथा राजन सप्तपुं असप्तपुं क ना तुम॥ लोयेथदं॥ खखम॥ खखखखमूरव॥ विमसिव॥ जिजिमसि हूम गिमासिमसि
सि रसानि रसमोगी ममसपत्रिवानस्य पचामिखं सप्तपुं यथा हानमिनामिखं॥ यनदग्धयेथासु पुं सप्तपुं कर्वनु गदग
सायथदं॥ कलम कलल॥ खलम अग्रीसर्कामनि स्वाहा॥ विप्रवि वृद्धगन न उपेति सिखी न च वृद्धसु गन क्विग्वु
ककुत्तु च वृद्धकनकमनिचकासपविगन न दग क मनि क्विग्वु गन॥ पुन सप्तपुं कला तुम॥ पुन सप्तपुं कला तुम॥ काय
त न वा मनसा चला तु॥ पुन सप्तपुं कला तुम॥ पुन सप्तपुं कला तुम॥ पुन सप्तपुं कला तुम॥ पुन सप्तपुं कला तुम॥
मना उ दग्ध न के तुम अग्धपदा प्रमत्त॥ स्वस्त्य नमः सर्वसत्त्वा नाच स्वाहा॥ ॐ ताराय महासाहस्य प्रमर्दनी नाम महायान
सुवसमाफ॥ ॥ ॐ नमो गवत्ये आय महासाय विद्या न ह॥ नमः सम्यक् वृद्धस्य ४ सम्यक् वृद्धनाथाय च न

[illegible]

॥ अत्र ॥
॥ १२० ॥

कलरवपुत्ररकात्ररुत्ररवासाश्माकौश्माश्मश्मा (गमलायावलायापत्रिवलाया ॥ पिण्डहिंतिरमितिश्चित्तिश्चत्तु
त्तुत्तुत्तुत्तुत्तु ॥ १ ॥ मूरुमूरुमूरुमूरुमूरु ॥ १ ॥ मूलमूलमूलमूलमूल ॥ १ ॥ इतरुतरुतरुतरुतरु ॥ १ ॥ इरुइरु
इरु ॥ १ ॥ वावावावावा ॥ १ ॥ पापापापापा ॥ १ ॥ जालजालजालजालजाल ॥ १ ॥ दमदमनिकपनपनिपचपचनि
कलकलकलनि ॥ इइरिगर्जभा ॥ स्फुटानि ॥ नपनिगपनिपचनिपाचनिहलनिहलनिकिमिति। कमनि। मर्दनिमति
मभुति। के। अमंनिक। सकनि। मकलगंकनि। गर्कनि। गवनि। भवनि। गदुनि। कलनि। कलरुनि। इमश्मनि। सुवसु। अगा
यावलाया। पत्रिवलाया। वर्षकुदवे४ समकन। स्तितिकिसिस्वाहा ॥ नमोस्तुवधायनमोस्तुवाधायनमोस्तुमूकायानम
स्तुअनामनमोस्तुअकयनमोस्तुविमूकायनमोस्तुविमूकये ॥ यवाअशवाहितं पापधर्मायचस्तिना४ सत्वहियनित्यसूक्त
वेना४ अकिस्माधियकास्तुवाअस्तानयकुं समर्थ४ सुखानमोस्तुचपत्रिपात्रयकु। तर्वहियत्य४ सर्वापदेवत्य४ सर्वपिसर्ग
त्य४ सर्ववाधित्य४ सर्वग्रहत्य४ सर्वविषय्यथप्रज्ञाकुवकुवषसुनपस्युत्तनदागनं ॥ नमोस्तुवधायनमोस्तुधर्मायन४ सधाय ॥

॥ १३९ ॥

[illegible]

[illegible]

॥ अत्र लि
॥ १३९ ॥

भे ला नि हा । इ हा नि मा ॐ मा ध्मा व स क्का ॥ सुं वा तु म्वा । सम सु म्वा ॥ आठ नाठ नि ल क्क ॐ नाद । व न र्ख कु द व ॥ ॐ लि कि सि
स म के न न व मा सा न स मा सा नि ॥ मे धा मि स र्व स खे ष व स त्रि नि । व द्वा त्रि ति व स त्रि ति । क व र्क । क व न क मू त । ॐ नि स र्व स
उ ध २ पि यं क स ॥ आ व द्वा प त्रि वि ह न वा द क न । व र्ष कु द व ॥ स म क न व स र्ख ॥ न मा र्ग व न ॐ नु । ग म मि स का । ॐ
नि मा य । ग म हि का । ह र्म । त्रि का य । अ स न स न न । अ क न । अ क न नु । आ स न पा स न पा प नि क ल । न मा र्ग व र्ख व र्ख नां
खा हा ॥ अ ख क मा गि । ना वि प ग्गी गि खि जी न १ पृ ष्ठी क स मू त ॥ उ प ग म वि ग्ग व नु क गि नि र्ख मू त क क क्क न्द वा म ॥ व द्वा
स्व ना म मू त्रि उ ड्म व न न । अ ध मू त उ प ग म का स प ॥ अ ग्ग क्क मू त मू त्रि ग्ग । क्क पृ ष्ठी व ॥ उ प र्ख वा धि स म वा प ग्ग न म ॥
ए न र्ख व्ध मू ह र्धि क ष्वा द व ना मू दि न ग ना उ द ग्ग ना ॥ क र्व कु सा नि के खि क्क नि र्ख ॥ न य ॥ ॐ लि मि लि कि त
चि ति । चि त्रि व र्णी क लि वा ति उ ड् ना स र्मा द व स व स न ॥ इ र्क क ल ॐ मू त ॥ ॐ नि स र्व ना । क ता लि ना ना य नि पा ना य
नि प ग्ग नि प ग्ग नि । क पि त्र व र्क नि ॥ ॐ नि वा मि स ध्म कु द्वा मि ग म कु प दा ॥ स्वा हा ॥ न य ॥ क नि मू त व स मू त । स म क म

॥ १३९ ॥

ल। नठनाठ वसनाठ। ॐ हू मिह। पा नसूठ। अठ काम। म नठ काम। अठ काम न। का ॐ लि कि सि ला। जा हि का॥ उद्धः
 मा हि नमठा। नमा वृक्षा वां सस्ति वाधि पदला कु स्वस्ति वा धू च नृ ष्या द॥ स्वस्ति वा वृत्त गामा र्ण स्वस्ति पु त्या ग नृ च। सः
 स्ति पु त्या ग नृ च स्वस्ति ना नृ स्वस्ति दि वा स्वस्ति म ध्व नि नृ नृ सर्व प्र स्वस्ति वा ला नृ सा चे पां पा प मा ग म न॥ सर्व दि व म व
 त्या न सर्व न नृ वृ ह द का ॥ सर्व वृ ह द महा धिका ॥ सर्व आ र्ह का नि ना ग या ॥ अ न न स त्प वा के न स्व स्ति र्व नृ स म न न ॥ अ
 न न या म हा मा यू र्था वि घा ना ह न था ग ना ह खि न या म म सर्व स त्वा ना र्थे न का वृ नृ गु पिं प नि न नं त्रि व नृ व र्ष ग नं प स ॥
 स न दा ग नं स्वा हा॥ न य था॥ ह लि हा त्रि ति च त्रि चालि नि। नृ म स्ति नृ म नि। मा ह नि स्तु म् नि। स्व य मु व स्वा हा॥ न य था॥ स म
 नृ २ स्वा हा॥ न य था॥ व त्क २ अ। म नृ ध्या न नि व नृ नि व नि। व नृ मालि नि पू र्णी चा चि च ॥ स्वा हा॥ न य था॥ व र् नि २ म टि क २ का
 का टी। २ वि श्रु म ति २ इ इ इ इ॥ ६ ॥ नृ नृ नृ नृ नृ॥ ७ ॥ च त्र च च च च॥ ८ ॥ स्व ४ स्वा हा॥ न य था॥ सा त्रि शि ति २ म
 नि। हि त्रि २ म नि। कि त्रि ति हि त्रि ति। नृ २ पि द्म ल च नृ २ व नृ म नि॥ ह न वि र व व नृ म नि स्वा हा॥ न य था॥ आ ला म ला नि ति म ला

पुपंकन। नरु २ मासर्वसत्ता नाचनक्रं कर्बनु जिवतुवर्षसंगपसातु सत्रदा सनं ॥ नयथा ॥ हनखतखतुमलमिति मत्तमद
यनि मरुतिमरुमल्लितिक ॥ इरुतुतुतुतुतुतु ॥ १ ॥ त्रुतुतु ॥ ४ ॥ मठिमठी ॥ २ सिधिसिद्धि ॥ २ ॥ स्वस्तिस्वस्ति
२ ॥ ममसपनि वात्रससर्वसत्ताना स्वाहा ॥ नयथा ॥ हिनि २ मित्रि २ नतुव नतुवर्क ॥ चिदिहि तिहिल हिलिहिति ॥ १ ॥
मितिमिति सीतिमिलिमिति ॥ १ ॥ इरुतुतुतुतुतुतु ॥ १ ॥ चिटिचिटि चिटिचिटि ॥ १ ॥ हिर्कहिर्क ॥ २ ॥
मिर्कमिर्क ॥ २ ॥ नतुव नतुवर्क २ हात्र २ धन २ हन २ रुत २ चत २ चतु २ स्वाहा ॥ नमः सर्ववद स्वाहा ॥ एत कवद ना स्वाहा ॥
श्रुना ना स्वाहा मेनी मा सवाधि सत्तमा स्वाहा ॥ सर्ववा धि सत्ताना स्वाहा ॥ नृना म मिना म मिना स्वाहा ॥ सुकन म मिना स्वाहा ॥ अगाप न
ना स्वाहा ॥ सम्यग्गना ना स्वाहा ॥ सम्यकु नित्य ना ना स्वाहा ॥ वृक्ष ॥ स्वाहा ॥ ०० न्याय स्वा ॥ पुत्राप नय स्वाहा ॥ असा ना य स्वाहा ॥ अन्नय स्वा
हा ॥ वायु दे स्वाहा ॥ वनना य स्वाहा ॥ यमा य स्वाहा उधाय स्वाहा ॥ वैश्वनाथ स्वाहा ॥ यका धिप नय स्वाहा ॥ धनना सुय स्वाहा गभर्वाधि
प नय स्वाहा ॥ विनू टका य कृष्ण धिप नय स्वाहा ॥ विनूपाक य ना ना म धिप नय स्वाहा ॥ वैश्वनाथ य यका धिप नय स्वाहा ॥ नवाना

॥ कवका ॥

॥ १४ १ ॥

स्वाहा॥ नागनां स्वाहा॥ असूत्रनां स्वाहा॥ गन्धनां स्वाहा॥ गन्धर्वाणां स्वाहा॥ महानागां स्वाहा॥ किन्नराणां स्वाहा॥ यक्षाणां स्वाहा॥ नाग
सर्पनां स्वाहा॥ प्रह्लादाणां स्वाहा॥ पिशाचाणां स्वाहा॥ रुद्राणां स्वाहा॥ क्रुद्धाणां स्वाहा॥ पूषणां स्वाहा॥ कृष्णाणां स्वाहा॥ सुन्दाणां स्वा
हा॥ उत्साहनां स्वाहा॥ कायाणां स्वाहा॥ अयस्मानां स्वाहा॥ अस्मानकाणां स्वाहा॥ चतुर्थांशस्वाहा॥ तृतीयांशस्वाहा॥ नक्षत्राणां
स्वाहा॥ ग्रहाणां स्वाहा॥ धातुिषाणां स्वाहा॥ अग्निनां स्वाहा॥ सिद्धवतां स्वाहा॥ सिद्धविद्याधराणां स्वाहा॥ ज्ञेयस्वाहा॥ गन्धर्वाणां स्वा
हा॥ जातुनीयस्वाहा॥ अमितायस्वाहा॥ अरुनियस्वाहा॥ सुमनियस्वाहा॥ माहिनियस्वाहा॥ चापटियस्वाहा॥ डामिडीयस्वाहा॥ अवधियस्वा
हा॥ अथमर्बतियस्वाहा॥ मानग्रीवास्वाहा॥ नागहृदयायस्वाहा॥ गन्धर्वाहृदयायस्वाहा॥ मानस्विनीयस्वाहा॥ महामानस्विनीयस्वाहा॥ षण्
वतियस्वाहा॥ मोनिहृदयायस्वाहा॥ पुनरुदयायस्वाहा॥ समकुहृदयायस्वाहा॥ समयायस्वाहा॥ यनिसत्रायस्वाहा॥ महप्रतिसत्रायस्वाहा॥ सितव
रतियस्वाहा॥ महासिववह्नि॥ इन्द्रधरायस्वाहा॥ महादधरायस्वाहा॥ मुचिनिद्रायस्वाहा॥ अरुनियस्वाहा॥ सुमनियस्वाहा॥ अनीयस्वाहा॥
शुक्लायस्वाहा॥ अस्वकुमार्यायस्वाहा॥ अयनाडिनायस्वाहा॥ सर्वभूतकामायस्वाहा॥ मयनानायायस्वाहा॥ महाधनदियस्वाहा॥ मनु
ष्याणां स्वाहा॥ महामाययै विद्यानागिस्वाहा॥ मयनकाकायस्वाहा॥ स्वस्ति सर्वस्वतां स्वाहा॥ नागीस्वस्ती दिवास्वस्ति मध्वन्दिनस्ति

१२९

स्वस्ति सर्व महा नायं सर्व वृक्षदिस कुदः । नमोस्तु वृक्षाय नमस्तु बाधयः नमोस्तु मृकाया नमोस्तु भाननाय नमोस्तु भाननाय नमोस्तु
नमोस्तु विमूक्याय नमोस्तु विमूक्याय ॥ यत्रास्ति वाहिनपापधर्मी सैषा नमस्तु सैषा नमस्तु चममसर्वसत्त्वा नाचनककुवकुस्वस्तिमातुः
स्वस्ति पीतुः स्वस्ति गर्ह्य स्वस्ति द्विपदा नास्वस्ति चतुष्पादनां स्वस्ति वरुणदना स्वस्ति प्रहवपयपिना नास्वस्ति ना ममसर्वसत्त्वा
नाच स्वाहा ॥ स्वस्ति रवकु उद्विष्टान् चिष्टसामकु सागच्छन्ति पृथुनिषु सगमानस्यगामे सानागनस्य स्वस्ति नागनस्य
१४ चोत्तरयात १४ अग्नीरयात १४ उदकरयात १४ अमित्ररयात १४ वधकरयात १४ प्रथर्थिकरयात १४ प्रथमित्ररयात १४ उत्तमा
दकरयात १४ पनचक्ररयात १४ इतिरयात १४ ॥ अकोलमित्ररयात १४ ॥ धननिकमरयात १४ चतुमित्ररयात १४ स्वस्ति वरुण
१४ नागरयात १४ अमूलरयात १४ मन्त्ररयात १४ गन्धरयात १४ गन्धर्वरयात १४ किन्नररयात १४ महानगरयात १४ यकरयात १४
नाकसरयात १४ पुत्ररयात १४ पिशाचरयात १४ हनरयात १४ कूफांतरयात १४ पुत्रनरयात १४ कपपुत्रनरयात १४ कन्दरयात १४ काया
रयात १४ अमला नरयात १४ अला नरयात १४ स्वस्ति । कृत्वा कर्म काखादिकि न आवनाउ चिष्टप्रषकइतु कइ ॥ इति न

॥ ध्यान ॥
१५२

ॐ या इ प्रकित इ सि वि न इ हं ॥ दि ता व ॥ न र पा न ॥ स्व सि दं कु कू पि न क पा मा वे ग र्ण ला ह सि ग र या ॥ ४ ॥ स्व सि सर्व त्प ॥ न नो स्व सि
दि वा स्व सि म ॥ अ दि ने सि ॥ न ॥ स्व सि सर्व म हा ना य ह व व ॥ अ दि सं तु व ॥ न मा मु वृ द्ध म न मा ॥ व ॥ न मा मु कू य न मा ॥ न
न मा मु ग भ क य ॥ न मा मु वि मू क य ॥ न मा मु वि मू क य न मा मु वि मू क य ॥ य क्ता म ॥ वा हि न पा प ॥ म्मि स्त वा न म म्म च सर्व स त्वा ना ॥
प नि पा न य कु ॥ न य था ॥ अ ठ क ॥ म ठ म द व द न ॥ अ व न ग व ल ॥ नु न ॥ च न ग व न प र्ण ग व न रं चि कू चि मू चि स्वा हा ॥ न य था ॥ ॥
द मि द ख ल ॥ वि ख ल हि ति ॥ मि ति ॥ क तु म ल ॥ अ म न अ म ना व नि ॥ द ति ग व न ॥ इ म दा इ म हि ति ॥ कू चि ॥ मू चि ॥ स्वा हा ॥ न य था ॥
म नि ॥ क व टि म ठि म ठि नि के ॥ ह न ॥ च न ॥ ख न ॥ ह न ॥ ह न ॥ सि नि द न द नि नि ॥ द नि ल ॥ ग क टि म क टि ॥ न ठ न ठि नि ॥ ग ति ॥ ग ति ॥ १५२ ॥
ग ति ॥ स्वा हा ॥ न य था ॥ हि ठा मि ठि कू ठि मू ठि कू ठि मू ठि ॥ न ठि ठि कू ठि द क द नि न ग क नि च क नि ष क नि का च न ना व नि व न व न द न
सि धि स्वा हा ॥ न य था ॥ न नु न न ल न ल ॥ न ल न ल ॥ न ल च ल वी ल वी ध न ॥ वि रू ध न ॥ अ त ग विल ॥ विल ग म सि ॥ मि ति मा ल ॥ म
ति मा ल ॥ मि ति मा नि नि ॥ ॥ क ले क ले इ ले क ले ॥ ॥ ह द पा मि ति वि स्वा हा ॥ न य था ॥ अ तु ल प तु न म तु न ॥ ख लु त ग मू र मू न द
अ मू व नि म ल म ठि नि के ॥ अ म न सि धि ॥ ह न ह न ह न ह न ॥ ॥ प ग प ग प ग प ग ॥ ॥ प स प ति सि धि स्वा हा ॥ न य था ॥ दि

[illegible]

॥ अत्र ॥

॥ १४३ ॥

हृदयमिति २४ ॥ हृदय २ हात्रि निद किश वना ॥ गिवसूनपानि ॥ वाधिवाधिवाधिवाधि सत्वपत्रिकात्री यस्मात् ॥ नयथा ॥
हिसिम्भिसि २ मानिके नि ॥ किनिका नि की नि कि नि ॥ ॥ किनियवस्ययनत्रक १० कचिशारु रुम ॥ धन धन ॥ हन हन
हृदय २४ ॥ ॥ हन विख हन विष ॥ वृध १० हन विविष पुत्रे क वृध नश हन विख ॥ अहन नश हन वि
ष ॥ अनागमि नश हन विष ॥ सकदागमि नश हन विष ॥ अनापने नश हन विष ॥ सखादि नश हन विष ॥ असूनमायाह
विष ॥ नागविह न विष ॥ नृगु न हन विष ॥ रुग्ण कि हन विष ॥ माहा माय्याधि ना हन विष ॥ निह न वि ॥ हमा सुक्राम
उ विख सखि हव नु मम सर्व विषात ॥ वत्स ना विखात ॥ हना हल विखात ॥ कत्त कट विखात ॥ उष्ट्र विखात ॥ मूल विखा
त ॥ चूर्ण विखात ॥ इक्षि विखात ॥ विष्टु विखात ॥ मद्यसंकर विखात ॥ सूर्य मूरि क कीट लूम क नर मधु मक्रिकाश्रम न वना
कैमू क नैलान क विषात ॥ मन्त्र विषात ॥ वृष्टि क विखात ॥ गत्र विखात ॥ स की विखात ॥ अख धि विखात ॥ विद्या विषात ॥ स
रु सर्व विषात ॥ मम सर्व सत्वा नाच स्वाह ॥ नयथा ॥ अलाज कुल ॥ मालाज कुल ॥ चाणदिज कुल ॥ मथनि घात निग्रसे निः

॥ १४३ ॥

हिमि गिनीयति ॥ सिनित नृभवति ॥ हाहाहाहा ॥ १ ॥ सिंह धिनि विधि नि कूत्र २ वसन ॥ पुन पुन सि ॥ वन वट सि ॥ मीनि २ कपि
कपि लकपि लमूल ॥ हा हि र सर्व इ पा ना जसु न कलामि ल मून कनामि ॥ सहस्र पादा नि ग्रहं कनामि ॥ सहस्रि द (ग) हि
द वो हि उ हिं गानि सूत्रपति ॥ वज्र वज्र वज्र वज्र वज्र ॥ १ ॥ वज्र पट्टय स्वाहा ॥ नमो ॥ कल २ नं न प २ न धम २ न गन २ न कूटि
२ मूटि २ मिटि २ गन २ मन २ हन २ नन २ टिनि २ टटटट ॥ १ ॥ दाही दा वा दा दा ॥ १ ॥ वावा वावा वा ॥ १ ॥ हत हत ह
ल हल हल ॥ १ ॥ सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि ॥ १ ॥ स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति ॥ १ ॥ मम सर्व सत्त्वाना च स्वाहा ॥ स्वस्ति स
र्व पुम काट ॥ कान नाटिक ॥ कान पासा न ॥ मय्युद भुन ४ वु म्भुद भुन ४ ॥ ४४ द भुन ॥ अषिद भुन ४ द व द दाट ४ नाग भु
भुन ४ अमूल द भुन ४ मनू द भुन ४ गनू द भुन ४ गन्धर्व द भुन ४ किन न द भुन ४ महान ग द भुन ४ यम द भुन ४ नाज
स द भुन ४ प्रु द दान ४ पि सा च द भुन ४ ह न द दान ४ कू मा द भुन ४ पू न द भुन ४ क न पू न द भुन ४ उ त्मा द द भुन ४
जा या द भुन ४ अप सान द भुन ४ ग सा न क द भुन ४ व ना न द भुन ४ ना ज द भुन ४ ची न द भुन ४ अग्नि द भुन ४ उ द क द भु

[illegible]

१५५

हा ॥ अस्माखनपुन नाइल महासितवति विद्या योद ॥ अह नपद गगाया सूत्र ग्रन्थि वषाहसु नधार्य नार्य माना या क ॥ १४ ॥ नधार्य
 माना या मना धाऊ नस नस नरु रुता हवति ॥ १५ ॥ ये खनपुन ४ महासितवति विद्यायां ३ कनरा गङ्गा नदि वानिका समेव
 एगवतु रिर्हाषिना रुषिषेक ॥ ॥ अर्य महासितवति नाम महा विद्या नाहि पत्रिसमाका ॥ ॥ कुं नमारु
 गवले अर्य महापुनिस नाये ॥ साकर्थ सिद्धिप नमवइतत्त चिराधर्मा र्थ कामसं सगुवनाय ॥ ॥ धिना आ
 याउता सननेत्यसद्या ॥ पुत्रा विधान नित्रना गगुन ननु ॥ ॥ अर्यामिमा पुनिस नासु निमातु नाथा नरु विधान च नाइगन
 समनां ॥ संवर्णि कसु निगुगु पुद द्वितीये सर्वा र्थ सिद्धि चर्यायु नमामि रुय ॥ ॥ नपथा ॥ नमः हर्वतथा गगनां नमो नम
 ४ सर्व बुध वाधिसुत्वं बुधर्मसद्यत्य ॥ विप्लगर्कु विप्लविमत नगर्कु वरु दाला गर्कु गिर्गह ॥ ॥ गगनवि ॥ ॥ ॥
 नि सर्वपापवि ॥ ॥ धनि ॥ ॥ नवति गगन विचा त्रिनिहि त्रिगेमति १ गिनि १ गामनि १ गह १ गगमनि १ गमुनि
 १ गकि १ गमनीगत १ गुरु १ गुरु १ गुरु निचू लम चित्त नय विज्ञय सर्व रुय विगने सर्व गह संरुन नि सिनि शपत्रि १

भा. १४॥
१५६॥

चिनि २ सम का कर्षति सर्वग क्रयु मर्थ नित्ररु मा सपनिवा न सर्व सत्वा नाच चिनि २ सर्व रय ल ४ सुर्व प ड व ह्य
चिनि २ दि नि २ वि वि ध वि ना स नि मू चि २ म नि २ चि ति २ च ने क म ने रु य वि रु या व ह रु ग व नि न स म कू ट मा र
ध नि । व ह वि वि ध वि चि इ व ग ध नि नि रु ग व नि म ह वि द्या द वि ॥ न रु २ मा सर्व सत्वा नाथ स म न्ना न्म व रु सु र्वा
पा य वि स ध नि । इ न २ न रु २ मा सर्व सत्वा नाथ नाथ ने प्रा ना न ग न भा न प त्रा य ना न प नि मा च य सर्व इ ध र्य ४
च ति २ च १० चि ति नि २ व ग व नि : सर्व इ ष नि रु न नि वि रु य वा हि इ न २ म न २ च न २ आ य ४ पा नि नि सू त व न प
म र्थ नि ॥ सर्व इ व ग न प जि न चि नि २ स म का व ला कि रु पु र स पु रु वि रु र्त्त सर्व पा प कि रु ध नि : ध न २ नि ध न स म
न रु च ले २ वा न य इ ष न्म न य आ सा ग्रा व प ध न क म न कि ति २ व न दा स ह ॥ कुं प रु वि रु र्त्त रु न २ हि नि २ रु नि २
म ग न वि रु र्त्त प वि रु म् वि रु कि ति २ व न २ रु ति न सि ष र्त्त न स म रु म् सा नि ता व ला वि रु रु र्त्त । इ त २ सर्व इ व ग
॥ स म का क र्ष नि । स रु व रु रु न २ वा न य २ मा सर्व सत्वा नाच ना ग वि ला कि न स रु २ उ रु २ चि नि २ ह नि रु न कि

१५६॥

निर्गमसर्वग्रहस्तु निपिगले मच २ नृविचननन २ नागवित्तकिनि नात्रयं मासर्वसत्त्वाश्च त्रगवति नृषु दान्मल्य
षु सर्वेषु समन्त नदिमावधनवज्रपाकात्र वज्रपासवधनवज्रपात्रा विगुह्यु निरुगवति गर्भुविष्णुधनि वृत्ति
पुत्रिनिहस्त २ क्रातुनिवर्ष नृदवसमन्त नदिमादकन नृमन्तवर्षनिदय तावना निनि नृहितिचतु मासर्वसत्त्वाश्च
गन्वचनान्मन्तवधनवपुष नृ २ मासर्वसत्त्वाश्च सर्वरुयेत्य ४ सुवापडवत्य ४ सर्वापसत्त्वाश्च ४ सर्वइष्टरुयेलीनसु ४
सर्वकनिकनलह विवाहइष्टस्वप्नइति मित्रा मन्तलपापविष्णुधनि सर्वयज्ञसनागविदनिनि चन २ वत्तवनिदय
जय नृ सर्वेषु सर्वकालसिद्धि नृमन्तविद्यासाधयमन्तलद्या नयविद्यानृय २ मिथ २ पुत्रय २ मन्तसाविद्याकन
मूर्तेनयारु निजयवति तिष्ठतीष्टरुगवति समयमन्तपानय सर्वनथा गन्तुदयगु ४ ववसाकयमासर्वसत्त्वाश्च
षु महागन्तुनृयषु सन २ पुस २ सर्वावनस विष्णुधनिसमन्त कात्रे मन्तलविगुह्य विगनमन्त सर्वमन्तलविष्णुधनि
निर्गमसर्वपापविगुह्य मन्तविगन नृगवति वज्रवति ॥ नृलाक्ष धिष्ठित स्वाहा ॥ सर्वनथा गन्तुमूर्त्तिहिति कृत्वा ॥ सर्व

अनलि
१६७

सर्वद बहिरि वि क स्वाहा ॥ सर्वत आ ग ना ह द या धि पि न ह द य स्वाहा ॥ सर्व त था ग न स म य सि द स्वाहा ॥ ॐ नु ॐ नु व ति ॐ नु
वो व ता कि न स्वाहा ॥ वि भे व भे धु वि क ले ४ स्वाहा ॥ वि धु न म स्तु ते स्वाहा ॥ म ह स्व ने व न्दि त पू जि ये स्वाहा ॥ वि न्ने ध न व न्ने पा नि
व न वि र्धा धि पि न स्वाहा ॥ ध न त्रो षु य स्वाहा ॥ वि न्ने ध का य स्वाहा ॥ वि न्ने पा का य स्वाहा ॥ वे शु व त ना य स्वाहा ॥ चा तु र्म हा ना ना
य न स्तु ना य स्वाहा ॥ य मा य स्वाहा ॥ य म पू जि त न म स्तु ना य स्वाहा ॥ व न्ने ना य स्वाहा ॥ मा न्ने ना य स्वाहा ॥ म हा मा न्ने ना य स्वाहा ॥
शृ ग्म ये स्वाहा ॥ वा य स्वाहा ॥ ना ग वि ता कि ना य स्वाहा ॥ द व ग ना य स्वाहा ॥ ना ग ग ना य स्वाहा ॥ य क्र ग ना य स्वाहा ॥ ना क्र
स ग ना य स्वाहा ॥ ग ना य स्वाहा ॥ शृ सृ न ग ना य स्वाहा ॥ ग न्ने ग ना य स्वाहा ॥ कि न न ग ना य स्वाहा ॥ म हा न ग ना य स्वाहा ॥
हा ॥ म न्ने ग ना य स्वाहा ॥ शृ म न्ने ग ना य स्वाहा ॥ सर्व ग्र ह ना य स्वाहा ॥ सर्व रू ण ना य स्वाहा ॥ सर्व ध न ना य स्वाहा ॥ सर्व पि ता वे त्वा
स्वाहा ॥ सर्व पि ता वे त्वा ४ स्वाहा ॥ सर्व पि त्मा त्रे त्वा ४ स्वाहा ॥ सर्व कृ णा त्वा ४ स्वाहा ॥ ॐ धृ न्ने २ स्वाहा ॥ ॐ नु न्ने २ स्वाहा ॥ ॐ कृ न्ने २ स्वाहा ॥ वृ न्ने २
स्वाहा ॥ शृ न्ने २ स्वाहा ॥ हने २ सर्व ग्र ह ना य स्वाहा ॥ द ह २ सर्व रू ण ना य स्वाहा ॥ प च २ सर्व ध न ना य स्वाहा ॥ य म मा हि ते वि न स्तु

१६७

पांसर्वेषां कालयद्वचिह्नं नास्वाहा ॥ इति गायस्वाहा ॥ पञ्चसि गायस्वाहा ॥ इत्येकांशाय स्वाहा ॥ वज्रकालाय स्वाहा ॥ समकालाय स्वाहा ॥
मानिरुद्राय स्वाहा ॥ पूर्णरुद्राय स्वाहा ॥ कानाय स्वाहा ॥ महाकालाय स्वाहा ॥ मातृगणाय स्वाहा ॥ महामातृगणाय स्वाहा ॥ अकनीषां स्वा
हा ॥ नाकसिनां स्वाहा ॥ अतपि गवता किनीनां स्वाहा ॥ अकाशगमिनीनां स्वाहा ॥ समूतवासिनीनां स्वाहा ॥ नायिचला नां स्वाहा
॥ दिवसचरो नां स्वाहा ॥ गिरिस्थानां स्वाहा ॥ विराचनां स्वाहा ॥ गर्गहन्तॄणां स्वाहा ॥ गर्गसंभ्रान्तिनां स्वाहा ॥ इत्युक्तं ॥
स्वाहा ॥ स्वः स्वाहा ॥ रुः स्वाहा ॥ लुवः स्वाहा ॥ उवः स्वाहा ॥ चिनिः स्वाहा ॥ विनिः स्वाहा ॥ धननिः स्वाहा ॥ अननिः स्वाहा ॥ अग्निः स्वा
हा ॥ नोवाय स्वाहा ॥ चिनिः स्वाहा ॥ मितिः स्वाहा ॥ वृक्षः स्वाहा ॥ मृषः स्वाहा ॥ मत्स्यः स्वाहा ॥ सिमावः स्वाहा ॥ सर्वगद्रुज
कृयः स्वाहा ॥ रुक्यः स्वाहा ॥ चिदः स्वाहा ॥ होदः स्वाहा ॥ रुगीः स्वाहा ॥ वधः स्वाहा ॥ माहयः स्वाहा ॥ मनिविगधः स्वाहा ॥ सूर्यः स्वाहा ॥
विगधः स्वाहा ॥ विश्वधनिः स्वाहा ॥ चन्द्रः पूर्णचन्द्रः स्वाहा ॥ ग्रहः स्वाहा ॥ नक्षत्रः स्वाहा ॥ विश्वः स्वाहा ॥ गिवः स्वाहा ॥ गनी
त्यस्वाहा ॥ पृथ्वीः स्वाहा ॥ स्वस्त्यः स्वाहा ॥ सिवः स्वाहा ॥ पृथ्वीकनिः स्वाहा ॥ वनकनिः स्वाहा ॥ वनवधनिः स्वाहा ॥ ग्रीवधनिः

॥ धात्रि ॥
॥ १६८ ॥

नि स्वाहा ॥ श्री कानिनि स्वाहा ॥ मृचि स्वाहा ॥ नमृचि स्वाहा ॥ मृत्रुचि स्वाहा ॥ वगवति स्वाहा ॥ सर्वतथा गरुपुवत्र विगनेरुयसमयस्वमा
रुगवनि सर्वपाप स्वस्ति रुवकु मम सर्वसत्त्वा नास्ति स्वाहा ॥ कुं मृनि शिवि मृनि २ धनि चत्ति चत्तनवगवति रुयविगनेरुयसोहात्रिनी
वाधि २ वाधय २ वृद्धि २ वृद्धिनि २ सर्वतथा गरुदय रुष्ट स्वाहा ॥ कुं मृनि २ मृनिवत्र अहिषि कुरु मा सर्वसत्त्वा नाच सर्वतथा गरु
सर्वहिषा केमरा कतच मृडा मृदिने ४ सर्वतथा गरुदया धिषि नवज स्वाहा ॥ समकुवा नामाला विगुद्ध सुत्रि नचिं नामनिम
हामृडा दया पत्राजिता नाम धात्रिनि ॥ अमकुपदा सिद्धा ४ सर्वकर्मपत्रा ४ गल ४ ॥ कुं अमनवत्रवत्रवत्रवत्रविम
बहुं हं हं हं हं स्वाहा ॥ अमनविला किनि गुरु स्रुनि अकुर्वनि हं हं हं हं स्वाहा ॥ अपत्राजित हृदयं कुं विमलविपुत्रग
यवसे अमपहं हं हं स्वाहा ॥ कुं रुत २ समुत्र २ रुद्धीयवलवि ॥ धनि हं हं हं हं स्वाहा ॥ कुं मनि धनि वज्रिनि महय
सन हं हं हं हं स्वाहा ॥ उपहृदयविद्या ॥ आर्यमहापति सनाया ४ पथमकृतपसमाफो ४ ॥ ॥ अकुमकुपदाः
सिद्धा ४ समग्रं वृद्ध नराधिना ॥ नमो वृधाय ॥ नमो धर्माय ॥ नमो सदाय ॥ नमो रुगवने गम कृमनय महाकात्रिकाय ॥

॥ १६८ ॥

नथागनायार्ह न समासेक संवक्ष्य ॥ नमः समस्तैः ॥ समास्तु वृद्धा लावनेनां नमस्तु वृद्धा गभस न वृद्धयः ॥ अहमिदानीं प्रवक्ष्यामि सर्वसात्वा नृकमात्रा ॥ ॐ मां विद्यां सहानं ग्रां महावेलपेना क्रम्य ॥ यस्या एषि नमाद्रायामुनि नावत्तमयाग न ॥ श्री लो व
मात्तकायाश्च ग्रहाः ॥ सर्वविनायकाः ॥ विद्याश्च सन्निधेयं कचिरुत्तमं ॥ अद्वि ल यगताः ॥ तद्यथा ॥ ॐ श्री निरगिनि निरगि निवर्ति श्री क
सविस्व पापविगत ॥ श्री का सगगन नन ॥ श्री का सवि वा नि नि ॥ इति नगि खल ॥ मनि मो कि क ख चि न ॥ मो नि धन सू के
॥ सू कु ॥ सू न व सू र्ब ॥ सू व र्ब गे न ॥ श्री नाग न प्र सु त्त व ॥ नमः सर्वेषां वृद्धा नाह नि न न ग सां ॥ वृद्धा सू वृद्धा ॥ रग व नि सू न र्ब नि सू न म
सू पृथ ॥ सू द म सू द न के व न व न के ॥ रग व नि रू ड व नि रू ड सू रू ड ॥ विम न ग य रू ड ॥ विम ले ग म रू ड ॥ प च ॥ चं ठि व लि व ग च ॥
म रू च लि ॥ ध्या नि ग न्ध नि ॥ गे नि च ॥ नि मा न गि व च सि ॥ सू म ति पृ क सि ॥ ग व नि ग भ व ति ॥ ग कं नि ठ मि ठि द मि ठि सो डी नि ॥ सर्व
थ सा ध नि ह न ॥ सर्व स ग्र न द ह ॥ सर्व इ ष्ट नृ प न पि सा च ठा नी ना म नृ षा नां च ॥ प च ॥ ह द य वि धं स य जि वी तं ॥ सर्व इ ष्ट य हा
॥ ना स य ॥ सर्व पा पा नि म नि म रू ग व नि ल रू ॥ मा स य नि वा न स ॥ सर्व स त्वा य सर्व ग्र सर्व दा सर्व रया प ड व रू ॥ सर्व इ ष्ट ना च व रू

॥ अत्र ॥
॥ १२ ॥

न क न र स व कि लि ष ना स नि म्मा ह ॥ म म्फ द ॥ धु नि वा नि नि मा नि नि । च न वि च न । चि ति २ चि ति २ नि ति २ नि तु य धा नि ॥
प च न स म न च ॥ नि मा नं गी न्ध सि । व व सि । म्म ति पृ क्ति ग व नि । सा व नि ॥ ग क नि ॥ ५ मि ति दा मि ति ॥ पं च नि पा च नि ॥
म र्द नि ॥ स न ल । स न ले ह । हि न म ध्वा । तू षु वि दा नि नि ॥ वि धा नि नि ॥ म हि ल २ म हा म हि ल नि ग उ नि ग उ रं । म इ म हि ति
दा के च के च क्वा कि नि ॥ क ले २ का नि नि २ ग व नि ग व नि ॥ स र्व वा धि हा नि नि ॥ च्छि २ च्छि नि म्हा च्छि नि नि मि २ नि मि भ्वा नि ॥ ७
ला क द ह नि ॥ ते धा नु क वा व ला क नि ॥ व ज प ३ पा स म्फ न्ना सि च क्ति सू त चि क्ता म नि म हा वि घा धा न नि त्क २ स र्व स्था न ग नं ॥
स र्व रि ष्ट र य ४ स र्व म नू षा म नू षा र य ४ स र्व वा धि त्वा । व ज व न व ति व न पा नि ध न ॥ हि नि २ मि ति २ कि ति २ चि ति २ सि ति २
व न व न ५ स र्व न ज य ष स्वा हा ॥ स र्व वा प वि दा नि ति स्वा हा ॥ स र्व वा धि ह न नि स्वा हा ॥ स र्व य नि स्वा हा ॥ स र्व स क्क र य हा । न ति स्वा हा ॥ स्व क्ता
र व नु म म स र्व स त्वा नां च स्वा हा ॥ सा नि क नि स्वा हा ॥ पृ ष्ठि क ति स्वा हा ॥ व ल व न्ध य नि स्वा हा ॥ ज य नु ज य च नि क म स वि म स स्वा
हा ॥ वा प न स्वा हा ॥ स र्व म ध्वा ग न मू र्ध स्वा हा ॥ रु नि म हा सा नि स्वा हा ॥ १२ ॥ ३ ॥ ह ली रु ति व न व ति स र्व न धा ग न ह द या प नि नि ॥ ३

॥ १२ ॥

[illegible]

[illegible]

॥ अत्र नि ॥
॥ १११ ॥

॥ नृनृ ॥ ८ ॥ नृनाथ नाथ निसिरुनि नृनिपूषुनि ॥ नृनाथ नाथ निगच्छत निपूषुनिगच्छत ॥ पनायत निपूषु ना
यत ॥ यदि य मरुचिरु नप नायत नप मरु ॥ वृक्षो साका नृकं मरु एवं मा सपयति ॥ पुविगति ॥ सर्व सत्त्व हिता ॥
सुयामे ग्री विहात्रिका नृनिकाम दिना विहात्री उधका विहात्रि ॥ एतम कुपदा १ सिद्ध १ सिद्ध ग ॥ अत्रि नादिना सर्व
पानि दव ना हिरुगाना च हिनेषी नां हान नाथे तम नाय स ॥ धर्म नयापि च ॥ उगतमि नय १ सर्व साम्ना स्था गो
गम मरु व १ निसकि कायस हृषा विध सा विनरुता १ ग ॥ नृचिरुय नाया स १ सर्व स्वस्तिक निषाति ॥ यो ग
यो क्रमा ॥ र मित्रि नृगय नि नायक १ दगक १ सर्व धर्मी नां सर्व १ स्वस्तिक निषाति ॥ ग विजग गना सासां कृतय
न सूरव व १ ॥ नृथा यं सर्व सत्ता नां सर्व स्वस्तिक निषाति ॥ यन सर्व गी ग ॥ नृमे तु चिरु नना पि ना पात्रि नृपुत्र
नृथे सर्व स्वस्तिक निषाति ॥ गतिर्य सत्ता नां नृनि य पना य ॥ संसा नव र्दमा नां सर्व स्वस्तिक निषाति ॥ था व
॥ सर्व धर्मी नां मवि सर्वा कक १ गुचि १ गुचि वाक १ स्वचिक ल १ सर्व स्वस्तिक निषाति ॥ यो मि नृ नृ मरु विने मरु

१११

हा सर्वस्य पदः ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥
 कनिष्ठा ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥
 धर्मचक्रपवनहर्तृ आर्यसत्त्वानिवदनः ॥ सर्वस्य सिद्धिः कनिष्ठा ॥ यनतिथिः कनिष्ठा ॥ सर्वस्य सिद्धिः कनिष्ठा ॥
 गना सर्वस्य सिद्धिः कनिष्ठा ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥
 नूरावेन देवता नाम न वचः ॥ याथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥
 नामार्गः सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥
 सर्वस्य सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥ सिद्धिः सर्वस्य ॥
 रूपाणि समागता निश्चिन्ता निरुमावधवा नृनिर्गुणं कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् ॥
 नृनिर्गुणं कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् ॥ नृनिर्गुणं कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् कुर्वन् ॥

अवका नासद्या नोनमा लोके इह तानां ॥ नमो अगपत्रा नो ॥ नमो सुरुतागमिना ॥ नमो लोके समर्गता नो ॥ नमो ४ सः
म क पुति पत्रो नोनमो ४ देव पा नो ॥ सा पा न गुरु समर्थ ना ॥ नमो ४ सिद्ध विद्या धना नोनमो देव विधि ना ॥ नमो देव बुद्धि म
॥ नमो ४ न्याय ॥ नमो ४ आय नमो ४ उ मापति सहि काय ॥ नमो ४ रगव न ना नाय नाय ॥ प व मू डा नमो ४ काय ॥ नमो ४ रगव न म स
का नाय ॥ वि पू न नग न वि डाप न क नाय ॥ अ धि मू की स ग न वा सि निय ॥ नमो ४ रगव न मा रू ग ॥ नमो ४ काय ॥ नमो ४ रगव
न ग था ग न कू ल सा ॥ नमो ४ रगव न प म कू ल सा ॥ नमो ४ रगव न व र कू ल सा ॥ नमो ४ रगव न त न कू ल सा ॥ नमो ४ रगव न म नि कू
ल सा ॥ नमो ४ रगव न राज कू ल सा ॥ नमो ४ रगव न कू मा ल कू ल सा ॥ नमो ४ रगव न इ ट सु दर्ग न पु ह न न ना नाय न था ग ना या
ह न के सम कू वू द्या य ॥ नमो ४ रगव न कू मि ता ला य न था ग ना या ह न सम कू वू द्या य ॥ नमो ४ रगव न कू ला या य न था ग ना या
ना या ह न सम के स वू द्या य ॥ नमो ४ रगव न कू वे र्या य न था ग ना या ह न सम कू वू द्या य ॥ नमो ४ रगव न सु पू थि न ला
न नु ना या य न था ग ना या ह न सम कू वू द्या य ॥ नमो ४ रगव न कू तु ना ना य न था ग ना या ह न सम कू वू द्या य ॥ नमो ४ रग-

॥ ४७ ॥
॥ १० ॥

सुखसिंहवक्रुममसर्वसत्त्वानाचत्रस्तह॥ नात्ररयात्तुचोनरयात्तुअग्निरयात्तुइदकरयात्तुविस्तरयात्तुगग्रयात्तुपनचक्र
रयात्तुइहिंद्रयात्तुदनिडरयात्तुदधेनिरयात्तुअकालमरुतयात्तुधननीकमरयात्तुइकापारुतयात्तुनाजदुहयात्तुचक्रम
गरयात्तुनागरयात्तुविद्युतरयात्तुफवाल्करयात्तुसूपत्रिकरयात्तुसर्वसुखदवापस॥ अणयासारयात्तुग्रहरयात्तुदवरयात्तु
रयात्तुनाकसरयात्तुगभवतयात्तुदसूनरयात्तुगत्रुतरयात्तु४किन्नरग्रहान४महानग्रहान४मनूषग्रहान४अमनूषग्रहान४रु
नग्रहान४पुनग्रहान४पिगचग्रहान४कृष्णग्रहान४पुनग्रहान४कटपूरनग्रहान४सुकुदग्रहान४उरुमागुग्रहान४क
याग्रहान४अपस्मानग्रहान४आस्त्रकग्रहान४आकिनिग्रहान४ककआकिनिग्रहान४नेवविग्रहान४आमिकाग्रहान४सक
तीकाग्रहान४मोहननिग्रहान४समिकाग्रहान४समिकाग्रहान४आलवनग्रहान४केतवासिनिग्रहान४कटकटवासिनिग्रहान
सर्वग्रहान॥ २१ ॥ आशुहानि॥ गर्हहानि॥ नृविनाहानि॥ मात्साहानि॥ सिंहनकाहानि॥ वाताहानि॥ विनिः
काहानि॥ असूयाहानि॥ सोदनिकाहानि॥ विक्राहानि॥ चिराहानि॥ ११ ॥ अथवासुखसर्वग्रहानाविद्याचिंदयाः

१०३

मसिनाकित्रयामिवर्जनपनिवाजनकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ शुककृताविद्याचिन्दयामसिनाकि
त्रयामिवर्जन॥ वृषकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ शुक्रकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ नानायूनकृता
विद्याचिन्दयामसिनाकित्रयामिवर्जन॥ महापद्मपत्रिककृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ महाकातकृताविद्याचिन्दया
मसिनाकिलयामिवर्जन॥ मातृकागणकृताविद्याचिन्दयामसिनाकित्रयामिवर्जन॥ कापासिकृताविद्याचिन्दया॥ मसिनाकिलयामि
वर्जन॥ सर्वत्रकृताविद्याचिन्दयामसिनाकित्रयामिवर्जन॥ पद्मसिन्धुकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ श्रुथवनकृता
विद्याचिन्दयामसिनाकित्रयामिवर्जन॥ कोमासिकृताविद्याचिन्दयामसिनाकित्रयामिवर्जन॥ यमात्रिकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिल
यामिवर्जन॥ कृतनागकृताविद्याचिन्दयामसिनाकित्रयामिवर्जन॥ वक्रकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ विनायककृतावि
द्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ कृमातृकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ वर्जपानिकृताविद्याचिन्दया॥ मसिनाकि
त्रयामिवर्जन॥ चतुर्माहात्म्यकृताविद्याचिन्दयामसिनाकित्रयामिवर्जन॥ चतुर्हस्तीकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्
जन॥ गन्धर्वकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥ जयकनमध्वकसिधिकलकृताविद्याचिन्दयामसिनाकिलयामिवर्जन॥

[illegible]

इह इह चिह्नो द्वे द्वे चिह्नो पापापचिह्नो कृपिता कृपितचिह्नो अमृता अमृतचिह्नो नृणां मम सर्वसत्त्वानां नृणां
कूर्वकुरुवर्षगत्तपस्य उ सत्रकारेण ॥ यकचिह्नं यकं ग्रहं गजो हना गजो हना अधिना हना वसा हना मानसा हना
मदा हना मार्गा हना गागा हना निविका हना वत्पा हना ॥ मा सा हना गन्धा हना पुष्पा हना धूपा हना दिपा हना
रुता हना आरुता हना विष्ठा हना मूत्रा हना चिरा हना पूजा हना खगा हना स्तम्भा हना सिंहानका हना वागा
हना विनिष्का हना नृमा हना सप्तनिका हना पापचिह्नो इह चिह्नो द्वे द्वे चिह्नो ॥ ३९ ॥ देवग्रहं नृगग्रहं
हनुं यमग्रहं नाग्रहं गन्धर्वग्रहं असुरग्रहं गरुडग्रहं किन्नरग्रहं महानगरग्रहं मनष्यग्रहं
हनुं अमनष्यग्रहं मनुग्रहं यतग्रहं रुतग्रहं पिशाचग्रहं कृष्णग्रहं पूषनग्रहं कदपूर
नग्रहं रुक्मग्रहं उग्रमातृग्रहं क्रापाग्रहं अस्मानग्रहं आकाशकग्रहं आकिनीग्रहं कनकाकि
नियग्रहं अवतियग्रहं सुमिकाग्रहं गामिकाग्रहं सुकृतिग्रहं मानन्दियग्रहं कम्बुकामिनियग्रहं

धनगी
१५७

तः श्रुत्वा नैवेन गह्वरः ॥ कुरुं मात्रिणि गह्वरः सर्वगह्वरः ॥ २२ ॥ सर्वकृत् ॥ चकारिका ॥ उति नित्यका ॥ तृतीयका ॥
चतुर्थका ॥ सफाहिका ॥ अर्द्धमासिका ॥ मासिका ॥ देवमासिका ॥ अर्द्धदेवमासिका ॥ मूर्द्धिका ॥ निश्चकला ॥ विषजाना ॥
हृन्नाना ॥ ऐरुका ॥ पिसाचिका ॥ मानषाकला ॥ अमानषाकला ॥ वानिका ॥ पैहिका ॥ अष्टमीका ॥ सानिपातिका ॥ स
र्वजला ॥ गिलावर्हिका ॥ चापनयकुम्भसर्वसत्त्वानाके ॥ अर्द्धरुवदकं ॥ आत्राचकं ॥ अत्रिनागः ॥ नासात्रागं ॥ मुखनागं ॥
कण्ठनागं ॥ हृद्नागं ॥ गत्रयहं ॥ कनकगुल ॥ दन्तसूत्र ॥ उग्रसूत्र ॥ हृदयसूत्रं ॥ मर्द्दगुल ॥ पार्श्वगुलं ॥ वक्षिगुलं ॥ गुणसूत्रं ॥ यानिसूत्रं
पञ्चनसूत्रं ॥ उदरसूत्रं ॥ जघासूत्रं ॥ पदसूत्रं ॥ अंगपञ्चगुलं ॥ नापनसूत्रं ॥ चापनयकुम्भ ॥ २३ ॥ हृत् ॥ पुनर्वनागः ॥ अकिनि
हृत्तदङ्क ॥ कण्ठकिटिहृत्तदङ्क ॥ पित्तकपिहृत्तदङ्क ॥ गण्डनागपामर्दसूर्यः ॥ आहनिगं ॥ अश्वः ॥ स्वासः ॥ कासः ॥ नागः ॥ मूर्द्धागत्रः
विषया ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ मानषासिः ॥ कनकहृत्तदङ्कः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः
मखत्तः ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः
२४ ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः ॥ अर्द्धरुवदकः ॥ कानागः ॥ कानः ॥ मूर्द्धागत्रः

१५७

[illegible]

॥ अत्र लिखितं ॥
॥ ११८ ॥

५१
बुद्धानां गवतां पृथक् नमः आगतारविष्मि ॥ अथ मासर्वं तथा गतां षष्ठिना न पदं नामापनाजीना महापु संगि
नामहाविद्यानां हि ध्यानयमानः ४ अथ चानि जावमचानि हविष्मि ॥ अथ निना मोनि हविष्मि ॥ अथ चिनां सचि
हविष्मि ॥ अथ पेवागिनां मय वासि हविष्मि ॥ यापि पंचान कर्ष्य कानि सात्तापि नि इटपा पा हविष्मि ॥ पूर्व
कर्मावित्तं नि नवसं पत्रिग कृत्ति ॥ यः कश्चित्मा ह्यमम सर्वं तथा गतां षष्ठिना न पदं नामापनाजीना महापु
संगिना विद्यानां हि ध्यानयमानः ४ अथार्थि पुरुष तिलरुते ॥ आपृ पृथ्वनश्च पतिनरुते ॥ ५० नमो त्वा सुखावस्था
कथा तु वृष पय क सचरा गदधमा हमान् अपि वता हविष्मि ॥ यः कश्चित्म नृपमा ना बा (गमा) नावयसुमा ना
वामर्ष्यु पदवोयसु (नमि) या मा सापत्र चक्रा गम नष्टु नमो गवतां इति नमः समा कसर्वं ४ सर्वं तथा गतां षष्ठिना
नयना नामापनाजीना महापु संगिना मसविष्मि ना हि ध्यानयमानः ४ अथि त्वा म हमासुको नमः महती पुंजी कृत्वा स
र्वनगन दानेषु पुनगय कृत्वा मवान गनवानि नमः वागन पदवा विहाने वा अत्र आ यतनश्च वा ॥ ५० मा म प नाद्रि

५० जंटे

महप्रसंगिनामिहविद्यानिहिं॥महतासत्काननपुवगयत्॥एवमित्तमात्रनदगगभनकृत्वारविषाकि॥सत्तेनूपदवर्षपसर्गे
पायासापेनचक्रानिसुममविषाकि॥यस्मिन्नविषयेब्दं सर्वतथागेनादिबसितानपद्वेनामापनाजिगमहाप्रसंगिनामहावया
त्रागीपुचनयिषातिधनयषाकिवाचयिषाकि॥महागेनवसुतस्मिन्निविखयचकासनकातदवावर्षधनामोत्सुकमाप
त्वातिरयथा॥अनका नागनागा॥वासूकिनागनागा॥गखयाना नागनागा॥कर्कटकनागनागा॥तक्रनका नागनागा॥पद्मनाग
नागा॥महाप्रसंगिनागा॥नद्यापदनागनागा॥अनचतागनागा॥अनका ननका नवर्षधनामोत्सुकमापत्सुक॥का
ननकातगर्जयिषाकि॥वर्षककमजलीगल्याकृद्राका नागा॥नासितानपद्रामूद्रावध॥वृद्धा॥अनकहया॥तमानत्रयया
य॥तद्यथा॥कुंअमसुश्नेग्रायस्वाहा॥अस्याधनी॥अयमूपचानक्षमनूषमान॥अमानवापसूमानवाचित्रिकामहिःसिखित्वा
कण्ठवन्धयित्वा॥अनकां सर्वसिद्धिस्तुवना॥अपदवालि॥वउपनामयिषाकि॥॥कुंईंकांममसर्वसत्त्वानापीनका कनूत्वा
हा॥कुंवज्रयानिहंरु॥कुंसर्वतथागनाफीषश्रवलाकिनमूर्धितना नासि॥कन२पुन२वक२वद्व२विधन२किन्द२ति

आवाहनं तस्मै स्यात् संग्रामवा उपद वान चाविवाद वा सर्व विज्ञपि ना हविष्यन्ति ॥ रगवानाह ॥ किमकु नायनरिक्ता शिसम्
या नस्मै नानायनमाया विस्महवनामि ॥ जने कमाया जालनसत्वा विह ० यमिसंग्राम विज्ञय पुनमनि पृच्छसि ॥ नानायनवव
माह ॥ ०० हलगवन कामासूत्रनु आसूत्र मायार्जिनाह ॥ मनाश्च देवा ४ केवि द्विध्वसिना ४ तद्वग यदु रग वन धर्मपथाय ॥ यनसत्वास
ग्रामविज्ञपि ना हविष्यन्ति रगवानाह ॥ ०० कपूर्व नानायन अतिरु ध्वनिमध्वा नाहित क पर्वत तत्रे आनाम नागा वरुव ४ ॥
नन कालेन नन समय न विस्मयत्रा नामरु ध्वगो र्ह नमस्क वृद्धा विद्या च तथ संपन्ना ४ सुगतेना कवि दनू रन ४ ॥ एव
खड्गमगथिः साक्षा देवा नांच मनूयानांच वृद्धा रगवती विस्मयत्रा नापास का साते ॥ मया ०० मानि महामाया विज्ञय वाहिनि नामः
विद्या मकु पदानि उ गृह्णानि क्षत्रीयानि वाचिना निपर्यवाप्सति ॥ अत्र मादिक निपर्यवाच विस्मयत्रा संपका सिनानि ॥ अस्मां धन
॥ ४५ ॥ एतव ननाय ॥ न कचिच्छु न विनिपातय न्नो न रय चात् न्नरु वति वर्षगत सहस्राति धर्म न नाग कानयित्वाप चात्सु खन
नग ना नत्र मद्यानया ग्रामिव धान ॥ ४५ ॥ एतव नना नति पत्रि हगमा न्ना नाम वाधिसत्त्वश्च कर्हि नागा वरुव ४ सफनत्तमत्वा

॥ श्रीगणेशाय ॥

१६०॥

[illegible]

प वा नाष्टि ॥ अष्टासु नू नः ॥ सिवग ना नू थाग्र हात्रा कानि न नम सुते ॥ अरु वः सुर्वधर्मी नां रुत धर्मीय का सक ॥
धर्माधर्म विपु का सि सर्व धर्म नमो सुते ॥ अथ ना नाय ना रग व नं ए न मा सा धू रग व नि नि ॥ कृत्वा प का पु का को रूत
॥ अदं म वा ॥ ॥ च नू रग वा ना रु म ना न व द वा ना ग म य क ग र्वा सू न ग ठे नू कि न्ना म हा न ग वि धा ध ना स ना द ये
॥ सा च म वा ॥ ॥ व त्रि पु र्व स द व मा नू ख सू न ग नू रग र्वा थ ला को रग व ना ला खि तं म न्ना न्द नि नि ॥ ना ना
य न य नि पृ च्छ आर्य महा मा या वि ज य वा रु नि ना म धा त्र नि स मा फे ॥ ॥ अं न मा रग व ने आर्य महा त र्ज व
ना धे ॥ न मा रग व न आर्य प ना डि न ते ला वं मा ग्र म ह वि धा ग वे नि स र्व रु त रु या व ह म हा व र्ज व ज्ञा स न अ जि न अ
प ना डि न स क ल न नु न्ना म नि वि ख णा ध नि ना ख नि क्का ध नि क ला ति नि सं द्रा स नि मा न नि सू प ल द नि प ना र य
वि ज य ॥ अ म्नि सु म्नि मा हि नि व र्ज वा ना व र्ज आ गि नि का म ग्ध नि ख र्ज व ना ॥ न य था पु ठ ग्र ह ध र पा धा न वि
नि र धू न र व र्ज ह रु णा ख य र ष ष्ठा ण्ण क पा ल धा न नि म हा प्रा न्नु वि न सा धि न न सि न मा ला ग्र स्था न धा न शि स र नि

[illegible]

॥ ॐ नमः सधर्मपूजे काम्ये ॥ ॐ वज्रघण्टा ॥ ॐ त्रयशपत्र ॥ २ संपुत्र ॥ २ सर्ववृद्धयः ।

हू नमहावाध इवत्वाध नि य ईं रू स्वाहा ॥ ॐ तिजानि पात्रमिना नाम धात्र तिसमाफं ॥ ॥ ॐ नमावीर्यपात्रः
मिनाये ॥ ॐ जमा घसि नमहाविर्यपात्रमिना मज्जा विपति सत्वत्रमनिमन २ महा मून महामेघी कानू निक सर्वस-
त्ववत्स नमहा केनू ॥ ४ सर्वसत्वक्रम नाय ईं रू स्वाहा ॥ ॐ तिविर्यपात्रमिना नाम धात्र तिसमाफं ॥ ॥ ॐ नमाध्यानपात्र
मिनाये ॥ ॐ नमा सर्वगथागत नमाघ महाकात्रुणी धानपात्रमिना सत्ताधिं सर्वसत्वविमात्र अयुक्त मय ४ वृत्र २ धृत्र २ हं २ रू स्वा-
हा ॥ ॐ तिध्यानपात्रमिना नाम धात्र तिसमाफं ॥ ॥ ॐ नमापुष्पापात्रमिनाये ॥ नमा जमा घपास महापुष्पापायसू-
त्र ॥ ४ विमहापुष्पापास २ महापुसत्र २ समकवधि अवत् किने वृषापाय पायदर्थद नगी महापुष्पापास धात्र तिसुज २
महापुज ईं रू स्वाहा ॥ ॐ तिपुष्पापात्रमिना नाम धात्र तिसमाफं ॥ ॥ ॐ नमारुगन्धपात्रमिनाये ॥ ॐ नमा
धर्मकायसकाग कायनिर्मानकये ॥ नयथा ॥ ॐ दानपात्रमिना जिलपात्रमिना किपात्रमिना विर्यपात्रमिना ध्यान
पात्रमिना पुष्पापात्रमिना सर्वधर्मसूत्र २ महासूत्र गायवाधि २ महावाध य ईं रू स्वाहा ॥ ॐ तिषद्यालपात्रमि

कानाम धनसिमाफं ॥ ॥ ॐ नमः सफिनां तथ गगनां समुद्रं वृद्धं कानां ॥ तथ ॥ चतुर्वलचन्द्र स्वाहाः
 ॐ निचन्द्रनरगवोनां नाम धनसिपुनिदिनंय ॥ शिवात्रयदाचयतिखापयन् ॥ लृष्टं नवात्रयं त ॥ तस्य सर्व
 पापं पत्रिक्रयया नचतुर्वर्गस्तपापमिने ॥ अथ चन्द्रनाम धनसिमाफं ॥ ॥ ॐ नमो हवने जमे नाय ॥ ॥
 वमणां नमः कसिनामयैरगवान्भवत्पाविहन्मिमा ॥ जगवने नार्थपितु स्याताम महानिहसंधनसार्ध
 मर्द्धतुयादग विहिरुसने ॥ अथ खेत्रमा निरुद्धा महाजगस्य नाप कियनरुगवास्त नापसेका नः उपसकर्मि
 गवन्तः ४ पाक्षेसितसावन्दि त्वाच काने सुदका कर्मि त्वामहायजसनाप निरुगव नमि तदवाचते ॥ ॐ दं रुद्र नरगव
 नमस्तु यंयः ४ कश्चिद्वलपूना वाक् लरहिनावालिह वाहिनि वाडपाग कावाडपाजिका वा ॥ तत्र न्वा बोधात्रयिष्य निवाच
 यिष्यन्ति नसासर्व कार्या नि कलिषामिनाते कृत्वा दिवस ना प्रिकृत्वा धनयिष्यन्ति ॥ वाचयीष्यन्ति तस्य धनं न्यहिन
 धसुर्वर्त्तुलाजने प्रापयिष्यन्ति ॥ नमान्नत्तुयाय ॥ नमो मानिरुद्धाय महायजस्य नापकयसेपसिद्धं ॥ ॐ हिति २ मानि

१६४

[illegible]

अथ श्री
१६५

हिमांसनभागं॥गकिहिनमनाथचसर्वपापसमवित्तं॥त्वाविना नान्यमदवित्राहिमांसनभागं॥गमेनीलम्भीमहामायाउ
मादविसृजस्वति॥सर्वस्ममवरुमाग४गहिमांसनभागं॥गभचन्द्रमधुप४वन्दनादिहिनवच४विसृष्टपत्ननत्त॥वा
क्तंरुन॥श्रुष्ट्याचन्द्रसांचप॥०त्वन४षमासे४सिधिमप्राप्तिनाशकृयातिवातयत्॥मात्रार्थिलनमात्रंधनार्थिलनध
नं॥विद्यार्थिलरुनविद्या४ककाव्याकलनादिक॥श्रुदप॥०स्फुटप्रपठित्वाउसंयमपुवि॥गनन४कसागकृजययकि
सदापुष्टवजायत॥पिदामामपिसुखनजापदानतथाह्यात्॥यश्रुदप॥०तस्मात्तुगुरुनगसय४॥०किउयगात्राश्रु
समाफं४॥॥ॐ नम४श्रीचित्रासागरय४॥समाकृवृद्धये॥नवंमयाग्रुतमकस्मिन्मयहगवान्दोपनन्दनागना
जरुवनविहृतिस्म॥श्रीमनित्रत्नगर्भमहाभयम४महाकूटगभमहनाहिरुसिधनसार्धमहगचक्षुधिसत्त्वसधनसा
हमिहगचनागजाज४नसार्ध॥नयथा॥नन्दनचनागनागन॥उपनन्दननागनागन॥सागन४वनाभेगनागन॥नून
नफनचनागनागन॥मनिस्त्रिनामनागनागन॥वनूत्तनचनागनागन॥ककनचनागनागन॥धुननाधुनचनागनागन

१६५

वागु कि नाचनागनाजन॥मचित्तिन्दु नचनागनाजन॥न नाव॥नचनागनाजन॥नवंप्रमूखेनागनाजपूर्वममेथुनसिन्धुनाग
काटिनियुगनसुहृन्मैःसुहृन्मन्निपतिनेःसनिष॥ननखतपूनःसमयेनसर्वेनेनागनाजन॥सपतिवात्राःउत्तयासनः
एतत्तनासंगमनिकृत्वाःदक्रि॥निगांनूमलुलानिपृथिव्याम्यनिष्ठापयनरुगवाःसनाजालिहृत्वापमयासंखयेःपत्रम
विविधनूचित्रेपृथग्धमन्मालाविलपनेथै॥चिवनक्तुध्वजपगाकापट्टदामवाद्यहृयगाशवचनेःसगीतिनत्र
कसमनत्रपतदायमूकाहनाःनागपृथमूकाजालिगातागुगुगुगायनमहानंप्रकायनामहानादंनदगात्रमनीयाचधर्म
साकनदनेःमहतागुतजिन्नवपविचिशीकाननरुगवकमहिलादयनपुदक्रिनिहृत्वेकानतसु॥१॥प्रकानाकृत्वा
पुष्टिधनानिःकृष्टीकिं॥महाकात्रहवमहामघनिःनोदविहृमिःनसूत्रकडुर्नामधनशासर्ववधरुषिनाधिषिगाः
नूमनिगासर्वसुत्वानामर्थयहिगायसुखाय॥याज्ञनावृष्टीवर्षमिःश्रुतिवृष्टिंक्षत्रयनामत्र॥काकात्रेपुसमयति॥सर्व
नागमसुधीदयति॥सर्वदवानुपहादयति॥सर्वमानानिधंनयति॥सर्वसत्वाःसर्वसूखसमर्पितान्कत्राति॥नमः॥मः

५५५॥
५५५॥

महाह्वा नावहासग्री कजा तस्मिहटविक्रमवजसहजनेजलमविजनि मीलनकगुर्यपरविनाइ यष्टि॥ एतएतसकन २३३
महन २महापुह विधूत महाभाहा च कात्र॥ महाहागुधपत्रिपूर्य मे गुमय विमनमनक च भिगाम्बुधन जल जल जल जल
तजला मूधल॥ वाधुद्धू मूमदसवलचगुवेसा नय अफदगभव तिका वद्ध धर्मगह मरु पृथनासि॥ सूक्त धर्मममचीता
मि न विजमसु विपुल वि (अषपाफनिसधर्मा॥ सर्वला कधुद्धू (गुध वत्रपवत्र॥ अनरुन नम (इधन २ धिनि २ धन २ गन मरु
अ कयाप॥ चचचच॥ चिनि २ पत्रमवूद्ध नमरु महापुहा पात्रमिहसाहा॥ नमो ह्वा नसागत्रवेना च नायन थागताया॥ कुं नम
० सर्ववूद्ध आधिसत्त्वसत्पनसंय (थद॥ सन २ गिनि २ सूत्र २ नागना॥ जव २ जि वि २ सूत्र २ महानाग आगता॥ वूधसत्पन ०
हजं वूद्धिपुचवर्ध च न २ चिनि २ वूत्र २ महानाग धीपति ना आगक्त थहा २ महानाग ० वूद्धसत्पन ० हजं वूद्धिपुच
वधं वत २ विनि २ वूत्र २ वूद्धसत्पन धर्मा सत्पे सत्पे सत्पे न सर्व नागना वाहयी धति॥ मेह चिरु नेकने नाचिरु नउपे
का चिरुन॥ सर्व वूद्ध वाधिसत्त्वोधिफनसत्पे नममाना ग्रय नागक्त महानाग धिपत यस्मे नथ वेधा ना वद्धधर्मा

५५५॥

ॐ वाधिसुचगु नारुन २रुनि २गु २रुमहाजताम् मद्य वाविधाने स महापुजगपत्रिक न मेयुचिरु नाग कुरुत स न कवन
गस नं सामु ४ घट २ धिटि २ धू २ उग्र कोधमहावगता लज्जिक्कामहाविषा ॥ अग कुरु थ मे गु चिरु ४ पुवर्ष धमिह
जम्बु द्विप स्वाहा ॥ कन २ कि लि २ कृत् २ महाद का वा सि नि ४ ॥ महापु कुरु या ना हि या यिन ४ अग कुरु थ मे यु चिरु न
हम्बु जं द्विप वर्ष धा ना उत्सु जन ॥ तथा गत सत्ये न तथा गत धि कुरु न न वरुणा नि ना स्तु पय ति नि ल २ त्रि ति २ नृत्ती २
विगत सिद्धा व न सर्व पु जं ग धि का थ तथा गत सत्ये न य म २ धि मि २ शु म २ स्वाहा ॥ आवा ह्या धि सर्व ना मे यु चिरु न
धि चिरु न पूर्व म न न २ त्रि ति २ नृत्ती २ स्वाहा ॥ वि कट ना ना वि कृ गो ष न ज्ञा न ज्ञ महाव ना न हा महा न ग ना आ वा
ह्या मि ॥ १ ॥ १ ॥ महापु ज ग म स न न प न म का नृत्ती का नां सर्व पु ध न ग कृ ति ना नां वि गत कृ ग न ना तथा गत नां ना मा धि
४ ने ग द २ गु ३ २ स्वाहा महा ना ग म कृ पु ति ह न व न प ना कृ मा न जी ध ना ४ वर्ष धा ना ४ पुवर्ष न हम्बु द्विप ग न २ गि नि
गु २ २ स्वाहा ॥ १ ॥ १ ॥ महा ना ग म ना ४ स्व कुरु ल म न स न म न स न क व र्ष धा ४ ना उत्सु जन सर्व न व स ण धि कुरु न न महा वि ल म

॥ ५३१ ॥

॥ ५३२ ॥

कस्मात् ॥ वृक्षसंस्थानि न न प्रवर्षत हस्तमृदीपस्वाहा ॥ गच्छसंस्थानं प्रवर्षत हस्तमृदीपस्वाहा ॥ चतुर्मासा
जसंस्थानं प्रवर्षत हस्तमृदीपस्वाहा ॥ वृक्षसंस्थानं प्रवर्षत हस्तमृदीपस्वाहा ॥ महानागं वर्षत ॥
अथापि न सस्य न हस्तमृदीपस्वाहा ॥ वर्षत महानागं ॥ सकृदागमिसंस्थानं हस्तमृदीपस्वाहा ॥ वर्षत महानागं
॥ महानागमिसंस्थानं हस्तमृदीपस्वाहा ॥ वर्षत महानागं ॥ अहं सस्य न हस्तमृदीपस्वाहा ॥ वर्षत महानागं पुष्पक
वृक्षसंस्थानं हस्तमृदीपस्वाहा ॥ वर्षत महानागं ॥ सर्ववृक्षवाधिसंस्थानं हस्तमृदीपस्वाहा ॥ वर्षत महानागं ॥ सर्वत
आगता न संस्थानि न हस्तमृदीपस्वाहा ॥ सर्वदेवानां संस्थानं समयेन सर्वपादवागि हस्तमृदीपस्वाहा ॥ सर्वनागानां
संस्थानं प्रवर्षत हस्तमृदीपस्वाहा ॥ सर्वयज्ञासंस्थानं न न सर्वसत्त्वास्वाहा ॥ सर्वगन्धर्वाणां संस्थानं न न सर्व
पासापदवानिमनूषास्वाहा ॥ सर्वसूत्राणां संस्थानं विनिवर्त्य न सर्वविषमं न कृतास्वाहा ॥ सर्वगैरजासंस्थानं न
छिन्नं न सर्वनागानां न हि हस्तमृदीपमहावर्षा न उल्लस्ये स्वाहा ॥ सर्वकिना न संस्थानं समयेन मायप्रह्लादय

॥ ५३३ ॥

ॐ सर्वसत्त्वान् स्वाहा ॥ सर्वमहानगतासु न विधिना वक्ता ॥ वर्षा न उल्लङ्घ्य न पच वर्षा च न ॥ निस्वहा ॥ सर्वमनूषा
भंसन् न पत्रिवा न य न सर्वमनूषान् स्वाहा ॥ कन २ कि २ कू २ दन २ दि २ इ २ न २ नि २ नू २ गु २ ग्री २ पु २ वा
हि २ नि २ म २ हा २ म २ द्य २ न २ म २ द्य २ म २ द्य २ म २ वि २ कू २ ष २ त २ म २ द्य २ सि २ नि २ म २ द्य २ ग २ क २ म २ द्य २ ज २ त २ म २ द्य २ प २ रु २ म २ द्य २ प २ त्रि २ वा २ न २ वि २ पु २ त्र २ म
वा २ रु २ षि २ त ॥ म २ द्य २ न २ ह २ प २ वि २ त २ स २ सा २ ग २ य २ स २ सा २ ग २ म २ सा २ ग २ य २ स २ ह २ न २ गि २ त्रि २ क २ न २ द २ त्रि २ वा २ सि २ नि २ ना २ ग २ मा २ य २ रु २ ग २ व २ कि २ मे २ हा
म २ द्य २ सि २ नि २ म २ द्य २ नि २ त्र २ म २ सि २ स २ स २ र्ग २ म २ हा २ वा २ त २ म २ लु २ ति २ ग २ म २ च २ ने ॥ म २ हा २ ना २ ग २ वि २ कू २ षि २ त २ रु २ ग २ व २ कि २ पा २ ष २ तु २ सा २ य २ न २ व
त्रि २ नि ॥ वृ २ द्ध २ स २ न २ ह २ न २ वृ २ द्ध २ पि २ स्वा २ हा ॥ य २ न २ श २ च २ न २ द्य २ त्र २ द्य २ ति २ नि २ य २ म २ न २ व २ ग्रा २ र्थ २ म २ हा २ म २ द्य २ मा २ ति २ नि २ वि २ य
स्वा २ लो २ य २ ये २ मा २ ति २ स २ र्व २ न २ ग २ म २ द्य २ त्रि २ म २ द्य २ प २ द २ व २ कू २ ष २ त २ सि २ स २ र्व २ वि २ षा २ य २ ग २ म २ च २ ने २ म २ द्य २ वा २ हा २ हि २ नि २ ग २ न २ नि २ नि २ ना २ द
नि २ न २ दि २ त २ रु २ ग २ व २ कि २ ना २ ग २ व २ कि २ ना २ ग २ न २ स ॥ दि २ त २ वा २ द २ य २ द २ वि २ म २ हा २ म २ द्य २ मा २ ति २ नि २ वि २ य २ रु २ ता २ क २ ता २ य २ मा २ ति
नि २ त २ थ २ ग २ न २ स २ न २ स २ र्व २ ना २ ग २ व २ र्ष २ त २ मा २ वि २ ल २ म २ न २ रु २ द २ म २ द्वा २ पि २ स्वा २ हा ॥ य २ न २ श २ च २ न २ द्य २ त्र २ द्य २ ति २ नि २ य २ म २ न २ व २ ग्रा २ र्थ २ म २ हा २ म २ द्य २ मा २ ति २ नि २ वि २ य

॥ ध्यातव्यं ॥
॥ १५८ ॥

[illegible]

१६८

[illegible]

धा न ता न
१६०

सर्ववृद्धाधिष्ठातेन सवर्षाधिरुक्ता गतसंस्तुतवर्षाहजमृद्विष स्वाहा ॥ नमः सर्ववृद्धाय ॥ सिद्धिस्तुमस्तुपदानिमस्वाहा ॥
आर्यमहामद्यन्त्रिनाद। इति नमस्तुतकठ नाम धात्रि सर्ववृद्धाय पि नं समापे ॥ ॥ ॐ नमो हगव न गम क मून
ये ॥ ॐ नमो चि न्य सा गने ॥ ॐ समो क्व वृद्धाय ॥ एवं मया प्र गम क सि न्मये हगवान् न्नाप न्द नाग नाज ह च न सौ ॥
विद्ये धा विह न कि स्म ॥ श्री मनि त्र त्व ग क्म महामद्य म सु ल क्म ग म ह ना रि क्म स ध न सा द्म मह ना च वा धि स त्वा म ध न सा
ध म ह ना च नाग नाज ग ॥ न सा द्म ॥ क ध धा ॥ न न्द न च नाग नाज न ॥ उ प न न्द न च नाग नाज न ॥ सा ग न ॥ च नाग ना
ज न ॥ अ न व न फे न च नाग नाज न ॥ म न सि नाग नाज न ॥ महाम न सि ना च नाग नाज न ॥ म चि लि न्द न च नाग नाज न
सं खि न च नाग नाज न ॥ अ ल प ज्ञ ॥ च नाग नाज न ॥ सु सि ध न च नाग नाज न ॥ क क्वा ङ के न च नाग नाज न ॥ वि द्यु स्म
वे न च नाग नाज न ॥ अ व ल स सि सि ना च नाग नाज न ॥ महाम ध वि क्म वि न च नाग नाज न ॥ महाम ध स्म र न न च ना
ग नाज न ॥ म ध जि न च नाग नाज न ॥ व र्ष स म्भ व न च नाग नाज न ॥ व र्ष व न न च नाग नाज न ॥ उ क्ता पा न न

१६०

च नाग नाशन॥ अकानगर्जितनच नाग नाशन॥ गर्जितनच नाग नाशन॥ विघृत्यमाचननच नाग नाशन॥ धन
निधनच नाग नाशन॥ अपसावनच नाग नाशन॥ सुदर्शननच नाग नाशन॥ विद्याननच नाग नाशन॥ महामघ
गर्जितनच नाग नाशन॥ महारुसुशुणनच नाग नाशन॥ श्रीननच नाग नाशन॥ अननच नाग नाशन॥ पा॥
नच नाग नाशन॥ श्रीधनच नाग नाशन॥ इहर्हिस्व नच नाग नाशन॥ इहर्हिनि। नादविगर्जितनच नाग
नाशन॥ कम्बनच नाग नाशन॥ आकर्षनच नाग नाशन॥ श्रीक॥ नच नाग नाशन॥ श्रीरुडनच नाग नाशन
॥ गङ्गुनसुधनच नाग नाशन॥ किलिकिलिसुधनच नाग नाशन॥ पुस्तकनच नाग नाशन॥ वर्षसुखन
च नाग नाशन॥ महावातविकृष्टिनच नाग नाशन॥ वायुमूर्धनच नाग नाशन॥ नङ्कनच नाग नाशन॥ श्रीम
नच नाग नाशन॥ रुडनच नाग नाशन॥ मङ्गलेनच नाग नाशन॥ मधुसूदनच नाग नाशन॥ मधुनन्दिनच
नाग नाशन॥ मधुसंस्तुपुलनच नाग नाशन॥ सक्तुदिनच नाग नाशन॥ विष्णुर्दिनच नाग नाशन॥ वासूकिनाच

॥ अत्र लिख ॥
॥ १७० ॥

नागनाशन ॥ अत्र नववर्षक वचन नागनाशन ॥ सुप्रसन्न वचन नागनाशन ॥ प्रियदर्शन वचन नागनाशन ॥ अमाद्य नंदि नाच नाग
नाशन ॥ मद्यम ॥ तसंकादन वचन नागनाशन ॥ अपत्राजित वचन नागनाशन ॥ अमाद्या स्वतत्त्व नागनाशन ॥ सुप्रसन्न
वचन नागनाशन ॥ वागसमूह वचन नागनाशन ॥ वागजाल वचन नागनाशन ॥ मनिवृत्त वचन नागनाशन ॥ एतेर्म निश्च महा ना
गनाससहमे ॥ सर्वे वचन नागनाशन नाम ह्यनागम ॥ अमाद्या महानाग विवर्षित न आका (गग) न कु खन महा वागवर्ष पु मंच कां रुगव
न ॥ सुप्रसन्न वचन नागनाशन ॥ ननखत्र पून ॥ समय नरुग वागमहा नाग ॥ साधू का नमदा न ॥ साधू साधू नागमहा ना
गमहा नाग ॥ आचुत ल नागमहा नाग ॥ सुप्रसन्न वचन ॥ पट ॥ मग ॥ हा हा विद्युत् ला पु मू के मा नामहा वागवर्ष अगवर्ष ध
नाउत्तु गथवर्ष थमहा नाग ॥ सत्र थ ॥ वृद्ध सत्त्व संध्य संध्य आग कु थ नाग आग कु थ महा नाग ॥ पूर्व वर्ष धं रु मू दीप ॥
गुप ॥ मू ॥ हि हि ॥ चत्त ॥ महा नाग ॥ हृदय सर्व नाग ॥ ना आकट सचादय ग्रीधु च न साहा ॥ महामद्य विवर्षित लं कोल व
हा ॥ सर्व वचन गिखत्र हृम पाट्र चित्र दाम मू के का हा न पु त्त्वित महा समुद्र मध्ये ॥ दिवा नत्त्व विना ना साहित कू सुमप

॥ १७० ॥

नमो नमो महामुद्रमये ॥ सुक्तं नमो गगन नमो मधिष्ठाय नमो भद्रपल नमो मानदिव्य इषा पुत्र मूकिका हा नमो मुद्रमये ॥
ना नाग मित्र वृद्ध विकृर्षि ना धिष्ठा नमो न निर्वाष समुद्रमये ॥ तथा गगन विना वृहत्ता संका न विचित्र सुदृग्नि
महा नमो वृहत्ता समुद्रमये ॥ सुक्तं नमो गगन नमो मधिष्ठाय महामय विकृर्वत्ता स्व नमो न निर्वाष समुद्रमये ॥ ना नाग मि
दिव्य विना नमो वृहत्ता समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥ महामय समुद्रमय महानिर्वा
ष दिव्य नमो वृहत्ता समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥
यत्र महामय समुद्रमये ॥ विचित्र नमो वृहत्ता समुद्रमये ॥ सुक्तं नमो गगन नमो मधिष्ठाय महामय विकृर्वत्ता स्व नमो न निर्वाष समुद्रमये ॥ ना नाग मि
वृहत्ता समुद्रमये ॥ गगन महामय वृहत्ता समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥
वृहत्ता समुद्रमये ॥ गगन महामय वृहत्ता समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥
वृहत्ता समुद्रमये ॥ गगन महामय वृहत्ता समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥ सर्वपङ्क्ति गगन नमो महामय वृहत्ता मूकिका नमो महामय समुद्रमये ॥

धनसि २॥

॥१७१॥

नाग १॥ अगच्छ २॥ धृधृधृ॥ हाहाहा हां हां हं हं महामयनाद न्नदनामहावा मपु मूचकवर्षथ वृद्धसंस्थनहजमूदि
पस्त्राहा॥ हाहा नागनागानं सर्वनागानां स्वावर्षथ जमूदीपस्त्राहा॥ धृधृ २॥ २॥ हाहाहा संघटयथ महानागपृथिवीमेतु
संघटयं धृधृ २॥ किनि २॥ चिनि २॥ मिनि २॥ दिनी २॥ किनि २॥ सर्वक्रुणा निपूत्रिपूत्रयथः सर्वसंस्थानि विज्रुतगुप्तापधिपुत्रा
ह्यकुमेयचिद्रागच्छथा वृधसंस्थनधर्मसंस्थनमयसंस्थनवज्रपानिसंस्थन॥ सर्ववर्षनागानां संस्थन॥ १७२॥ महाना
ग १॥ स्वाहा॥ पाठनागनागानं सचादयामि वृद्धसंस्थनजमूदिपुवर्षथ स्वाहा॥ १७३॥ नागनागानं सचादयामि धर्मसंस्थनहज
जमूदीपपुवर्षथ॥ स्वाहा॥ अनकं नागनागानं सचादयामि संस्थनहजमूदिपुवर्षथ स्वाहा॥ वासूकिनागनागानं
सचादयामि॥ वज्रपानिसंस्थनहजमूदिपुवर्षथ स्वाहा॥ नक्रकनागनागानं सचादयामि॥ वृद्धसंस्थनहजमूदीप
पुवर्षथ स्वाहा॥ १७४॥ नागनागानं सचादयामि ०० सुसंस्थनहजमूदीपपुवर्षथ स्वाहा॥ १७५॥ नावधं नागनागानं सचादया
मिविर्षुसंस्थनहजमूदिपुवर्षथ स्वाहा॥ मानिनं नागनागानं सचादयामि नूडसंस्थनहजमूदीपपुवर्षथ स्वाहा॥ मनसि

१७१

[illegible]

॥ ब्रह्मनाम ॥
॥ १७२ ॥

गताय ॥ महामिद्यनत्राय प्रथमनाय ॥ महामिद्यनत्राय ॥ ननायथे नथा गताय ॥ महामिद्यप्रतिष्ठितनायनथागता
य ॥ महामिद्यस्वास्वतमिद्यनन्दिनेनथागताय महामिद्यनत्राय नत्राय गताय ॥ महामिद्यहिमहिषनायनथा
गताय ॥ महामिद्यज्वनिपपाताय नथागताय ॥ महामिद्यविकार्वननायनथागताय ॥ महामिद्यमगत्याय नथा
गताय ॥ सर्वविद्यानामधिष्ठातनसर्ववाधिसत्त्वानामधिष्ठातनसर्वनागनां सत्यनसर्वनागहृदयासुखीदयामि
शोचुं मागच्छथ नत्रयानमननगच्छहिथलला नागमहानाग ॥ इल २ सन २ धव २ सन २ कट २ मावित्तमथवृद्ध
ननागच्छधर्मसत्यनागच्छनसद्यसत्यनागच्छथसर्वनागमहानाग उपर्ययनिसत्यनवर्षथनमृद्वीवस्वाहा ॥
हाहाह ॥ काहाहागयः काहाहामहानागविकूर्वन्नां कूर्वन्ना कूर्वन्ना ॥ ४ महावर्षयमूचतुमनियाम्ममहानाधर्मना
दाप्रमूर्धे कापुलावयनां गुले २ नाग २ चह २ नागिहाहाहिहिना नागिनिना नागविकूर्वा निमान निमान नागि
निनागनत्रनालकपिनकसि ॥ चिकूतद्विष्टरयानिक श्रुके २ माविलम्ब ॥ थविशूद्रातिधानत्रयपित्तिकाले श्रुकाले

॥ १७२ ॥

गर्भिनि सर्वमद्य विकृतिं हि सुकृद नि सर्वत्र प्रमापूत नि चक्रव कवर्हि हि नि श्वेगि २ सत्र २ काति २ महा काति हृदय
विम ॥ अट मट सर्वनाग कर्षतिः पूतये २ पूतइह नत्त कय विकृति व जिनि रुल ॥ कलनाग त्र पि स्व रूपेणि
महारुणि रूप नया वर्षति सर्वनाग सं काद नि स्वाहा ॥ कुं न मा न त्र नया य ॥ नमथ ॥ वज्रपा नय महायज्ञ सनापत
य ॥ व २ मूत्रपि ॥ स्वाहा ॥ चिवल कर्षी के स जे न गृहि व न्ध कार्य ४ पूर्वमव धर्म मोक्ष न क कृ न अ वि धन न ॥ अ
यं वा नम तु ति पति वरु ४ सर्वनाग ना हृदयं नाम ४ यं वा च यि न वं ४ अ व व च्छि नं प्रि स फा हं ॥ ॥ मय न पूर्व स्या ॥
दि नि नि ग्रा षो नाम नाग राजा स प नि वा ना अति खि न वं ४ द कि ॥ सा दि सि प च गी षं प म्भ ट ना नाम नाग राजा स पः
नि वा ना अति खि न वं ४ प चि म सां दि सि अ व ता स मं सि खा नाग राजा स प गी षं नाग प नि वा न न ति न्नि खि न वं ४ उ चो र्द न
॥ मद्य सं चा द ना नाम नाग राजा न व गी षं गि या प यि न्वा ॥ स प नि वा न ४ नि त्र वि ना न व म्भ नि ध ज स र्वा च नि ला व ति ४ क
रु च्यां ४ नाग ना वि म धू त्र व ति ४ वि म धू त्र हा न वं स फ र्दि ॥ नाग हृदय य न मा य नाग ना य चि न्ना प नि न वं ४ व ष ध

॥ धननिः ॥
॥ १७३ ॥

नाम के यतु श्रुत्या नांच सद्यमानां ॥ अकविद्युच्चकात्रमलासखा ॥ स्वस्ति कोलाचिका लाजमत्स्यमाना तथा मधुरजानि
चिदिध्यानितुकात्र ॥ गवसि ४ कर्हवा ४ नमारुगवतमद्यसखावगारको यतथा गताया हंतसम्यक् वृद्धाय
नमारुगवत नमारुगवतमद्यनायातथागतया हंतसम्यक् वृद्धाय ॥ नमारुगवतमद्यदकायतथागतया हंतस
म्यक् वृद्धाय ॥ नमारुगवतमद्यविनदकायतथागतया हंतसम्यक् वृद्धाय ॥ नमारुगवतमद्यनासायतथागतया
हंतसम्यक् वृद्धाय ॥ नमारुगवतमद्यगर्जकायतथागतया हंतसम्यक् वृद्धाय ॥ कुं नमारुगवतमद्यनिनीदिना
यतथागतया हंतसम्यक् वृद्धाय ॥ नमारुगवतमां स्वस्ति रवतु सर्वसत्त्वानामेती हवतु सर्वरूपं तत्त्वय रवतु
सर्वविद्यार्जना नां साम्यं तु सर्वदर्शनय ॥ नमः सर्वसिद्धि वनविष्कम्भि ॥ सिद्धयस्तु सर्वतथागतविधि ४ सर्ववृद्धावः
लोकितविधि ४ तद्यथा ॥ सुट्टस्वाहा ४ य ४ कश्चित्तिजत्राग ४ ॥ हिंदुर्वाहि इति वा ॥ उपागको वडपागिका वागु
चिवमुपाहन ४ मेयुचिरु ४ मानितथाग नामानि निखिस्वागु चिनां वा समनस्तु यमित्वा सफधूपकटक्का

॥ १७३ ॥

धनश्री
११५

गतां महाविनामनि हलनसागनगमन आकर्षय २ जयं धन २ मन्त्र २ जय २ क्रिद्रिद्रु सुर्वतथागनसमयतिष्ठति
महागुनसागनसं ॥ धनमां सर्वसत्वा नाचरुगवनि सर्वपापविमत्रजय २ जय लक्ष्म २ सुहाय २ विगना
वल ॥ हरयहनन हं हं मन्त्र ॥ धन ॥ जय पुन ॥ उषीष वावत्तकि न समन मूष सप्तके वाव लाकि न ॥ महामाय
महातजा धन २ जमाद्य विमत्र आकर्ष २ आगहय २ हन २ समुन २ हृषितनु जमहामुज विना कि न जय २ सिद्ध २
वाधनि २ सुवाधनि २ साधनि २ ससाधनि २ किमधनि २ हन २ सर्वपाप सर्वतथागु न समय बाधा पु सननु ममय
धं विन धं कु पाप सर्व कि लिष हन मनि विसूद्ध ॥ धन २ विमत्र विक सि मप म् कवचि ननु ज प धा न मिनाप
निघनि शि सर्व तथागता कीष वव ला कि न स्वाहा ॥ ॐ धन ॥ वावत्त कि न स्वाहा ॥ मन्त्र ॥ धन निवात्र ॥ स्वाहा ॥ यमद धुयः
स्वाहा ॥ यमद न स्वाहा ॥ ॐ सहन नि स्वाहा ॥ ॐ समुन नि स्वाहा ॥ ॐ सन्धन नि स्वाहा ॥ ॐ पुनित्र नि स्वाहा ॥ ॐ नशाव नि स्वाहा
ॐ यमद न स्वाहा ॥ ॐ सहन नि स्वाहा ॥ ॐ समुन नि स्वाहा ॥ ॐ जयव नित्य स्वाहा ॥ ॐ सर्वतथागनमूडा धिष्ठा ना धिदित स्वाहा ॥ ॐ

११५

नमः ४ भुवः सर्वं तथागतं हृदयगतं कृत्स्नं २ धर्मधातुगतं सहनममानुसमं २ संश्रयः २ मम सर्वपाप सर्वदथाग
गतं समकाशीषविमनः ५ इहं इहं ॥ अं वं नमः ४ स्वाहा ॥ ॐ ति आर्यग्रीविकोमनितो कञ्चलनामधनतिसमाफ
४ ॥ ॥ ॐ नमो नमो नमो नमो ॥ नमो वृद्धाय ॥ महाकोटनिकायः रुनिकाल इह दयायपनमात्मसमं तथागतं चिरं
यत्ने धनुः कर्मसुखं सर्वार्थं इह खकत्रकात्रि ॥ ॐ दं सर्वसत्त्वातां चानुरायासमाकुर्वधाय ॥ बोधिपुतिं धापयति ॥ ॐ
श्री ४ इहं सुगतं वज्रं तुषा ४ स्वाहा ॥ ॐ ति वृद्धं रुद्रात्रकस्य नामधनतिसमाफ ४ ॥ ॥ ॐ नमो रुद्रगवयः आर्यग्रीवः
आरुमतं तथागतं गार्हस्त्यं सुखं वृद्धाय ॥ नमः ॥ ॐ पञ्च २ पञ्चाद्वसुखावतिमनूचं कुत्वाहा ॥ ॐ ति गार्हस्त्यं
यकात्रगतं सुखार्थं ॥ ॐ रुद्रात्रगतं गार्हस्त्यं सुखं वृद्धाय ॥ ॐ ति आर्यपञ्चाद्वसुखावतिमनूचं कुत्वाहा ॥ ॐ ति गार्हस्त्यं
॥ ॐ नमो रुद्रगवयः ॥ ॐ नमो ४ श्री नमो सिखिन ४ नमः ॥ ॐ नमः ४ श्री सुवर्णपूषाकलनग्निकेतुनामं तथागतः
स ॥ ॐ नमो ४ श्री महादिपनाशनामं तमं तथगतः ॥ ॐ नमः ४ श्री त्रिचित्रकेतुनामपाधिसत्त्वस्य ॥ ॐ नमः ४ श्री सुव-

[illegible]

अन० १२
१७६

दिनाशगतनिद्रः स्वप्ननासति॥ नमस्त्यक्तं सूर्यं नयनयुतिराखन॥ तद्विरूपाकुलान विखमदलनामनि॥ नली
नखविन्याससि वगकि समन्वित॥ ग्रहवता यज्ञयनागनियवने तुन॥ मनुमृत्तिमिदं साग्रं नमोकारे कविगन
यः खलु त्यायसाधिमाने दवाहकी समन्वित॥ सायमापातत्रुत्वा य समन नमर्वरुयप्रहा॥ सर्वपापमुसमनं
सर्वशक्तिनासन॥ अरिषिका एव दुर्लभं सफलितं न का निहि॥ अस्मिन्महत्त्वमासायसो न बोध पदं व्रजत॥
विखनस्य महाध्यानं स्मृतं वार्थजंगमं॥ स्मृतं अत्ययज्ञा किं खदि तं पितमव वा॥ उग्रदल विखेना नायनमोहि
विना॥ गत॥ ॥ अथ यथावेव सत्त्वा नादी विस्फाति वरिं सा॥ पूयकामा नरुत्पुधन कामा नरुधनं॥ सर्वा
कामानवाप्नोति न विद्येयुनिह न्यसा॥ निगीसम्यक् वृद्ध वेनाच नराखितं रुग वत्थे आर्याना त्रादव्या नमस्कारे
कविगति नामला इ समाफ॥ ॥ ॐ नमः श्रीमहा कालाय॥ निलवर्णं समा नूधं पुत्राली टंचगुर्जुनं कलिकं
पालवर्णं केखलु रूधुनलः स्वानः गमु रजः नमः कुपुं संशामा यदव न॥ सा धयमनु विधाने नमः कालमहामति॥ ॐ नमः

१७६

श्री २

नथाऽजभाकर्तृमूर्तमंगुवात्रसत्रः कन्यागणिसंगमविक्रमः तत्र नसिगनशीसूय ॥ ध्वस्तुद्रुसिधमकादिनशत्रु-
 लिखितं विक्रममहाविहारायावशाचार्यः श्रीकूलधनेन धनधननवायारुत ॥ ॥ दानपनिगुतविनैः कूलज-
 निः श्रीकूलधने कायचा श्रीचक्रविलमा मश्रीगुरुलक्ष्मिः तानश्रीधनधनः सानश्रीरुधनः सिधनधनं ॥
 जललाक्षिसयाधर्मचिरुत्पनिशयाऽऽत्रसिसंगुहपुलकदय काशसंपूर्णया नाहले ॥ ॥ गंधवामगुधवा-
 ममहाखानकिय ॥ ॥ धृगुदं वेगकसकयाश्रुमिसूकवानरुद्रु कै नकिंश नसः नधपनिसाग्वदकुताव-
 हाकनेन कनथचिनाश नथसंविद्योचकाशः ग्वगुलिया नन्यायकाशः ग्वाव नपिसाग्वदः जावा उगु कया चगुदसिः ग्वा-
 दिन वात्ररुद्रु कूलधकात्रनधगाक झूलाशः वाक्षनेन हूमिसहाक पुयाडाः दद कातकयाडाः ग्वावलसंउग्रश्वगु-
 रुत्रचासंगयाडाः हाकनेन कनथचिनाशः दवलथसंविद्योचकाशः ग्वावलयातन्यायकाशः ग्वागानसकया-
 वतुथिरुद्रु दववृगविद्योचकाशः ॥ र्वसिनेय नमजियाडाः गाद्रुति नदवविद्योचकल ॥ ॥ श्री

श्री २
 नसिगनशीसूय
 कूलज-
 गंधवामगुधवा-
 ममहाखानकिय
 धृगुदं वेगकसकयाश्रुमिसूकवानरुद्रु कै नकिंश नसः नधपनिसाग्वदकुताव-
 हाकनेन कनथचिनाश नथसंविद्योचकाशः ग्वगुलिया नन्यायकाशः ग्वाव नपिसाग्वदः जावा उगु कया चगुदसिः ग्वा-
 दिन वात्ररुद्रु कूलधकात्रनधगाक झूलाशः वाक्षनेन हूमिसहाक पुयाडाः दद कातकयाडाः ग्वावलसंउग्रश्वगु-
 रुत्रचासंगयाडाः हाकनेन कनथचिनाशः दवलथसंविद्योचकाशः ग्वावलयातन्यायकाशः ग्वागानसकया-
 वतुथिरुद्रु दववृगविद्योचकाशः ॥ र्वसिनेय नमजियाडाः गाद्रुति नदवविद्योचकल ॥ ॥ श्री

असि

थिगुदेवेसाखरुपुयावदुधिमंगुवा ८ तपु नृपादि
विचित्रविक्रमसाहदेवयातनागारिषकविले ॥
इमहा नागधिनागसूयनाहनरुल ॥ ॥

मिसनदमहा नागधिनागसूयनाहनरुल ॥ ॥
॥ श्रीपेठरुहयारिद्या नृपमानथपुनृश्रीनाग नृपि ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आम्रमवधि
201
ASHA ARCHIVES

१०८



आम आम

201